प्राचीन हिन्दी-पत्र संग्रह

संपादक

धीरेन्द्र वर्मा :: लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

प्रकाशक

इलाहाबाद यूनीवर्सिटी

१९५९ ई०

प्रकाशक
इलाहाबाद यूनीवर्सिटी

पृष्ठ: २५२
प्रथम संस्करण
१९५९ ई०

मुद्रक
पी० एल० यादव
इंडियन प्रेस, प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद

विषय-सूची

भूमिका

प्रस्तुत संग्रह में संकलित पत्रों, इक़रारनामों आदि का संबंध भारतीय इतिहास के उस काल से है जब कि भारतीय राजनीतिक जीवन अनियमित और अराजकतापूर्ण हो गया था और तत्कालीन परिस्थिति से लाभ उठाकर एक विदेशी सत्ता अपने को स्थापित करने में संलग्न थी। यह सत्ता ब्रिटिश सत्ता थी। इस विदेशी सत्ता की स्थापना से भारतीय इतिहास ने अनेक दृष्टिकोणों से नए मोड़ लिए। भारतीय शक्तियों में से उस समय मराठों की शक्ति सर्वोपरि थी। शिवाजी की मृत्यु (१६८० ई०) के पश्चात् मराठों की शक्ति का उत्कर्ष अवश्य हुआ, किन्तु उनमें पारस्परिक वैमनस्य और कलह की निरंतर वृद्धि होती गई, और फलतः उनकी शक्ति बिखरती गई। तो भी उन्होंने मुग़ल-साम्राज्य का विध्वंस करने में बड़ा भाग लिया और औरंगजेब (मृ० १७०७ ई०) के बाद देश के राजनीतिक जीवन में अपना प्रमुख स्थान बना लिया। वास्तव में पेशवा-पद के उदय (बालाजी विश्वनाथ, १७१४–२० ई०) के बाद मराठा शक्ति का पुनरुत्थान हुआ और महाराष्ट्र में शांति और सुव्यवस्था की स्थापना हुई। मराठों की शक्ति का यह पुनर्संगठन १७१४ ई० और १७२० ई० के बीच हुआ था। दिल्ली के मुगल सम्राट् नाममात्र के सम्राट् रह गए थे। षड्यन्त्रों, प्रतारणाओं और विद्रोहों की धधकती हुई ज्वाला से मुग़ल-साम्राज्य झुलस गया था। चारों ओर प्रतिद्वन्द्वी दल स्वार्थ सिद्धि में लीन थे। १७४८ ई० में मुहम्मदशाह की मृत्यु अठारहवीं शताब्दी के इतिहास की एक प्रमुख घटना है, क्योंकि उसके बाद फिर अराजकता और अव्यवस्था उत्पन्न करनेवाली शक्तियों का दिन-पर-दिन ज़ोर बढ़ता गया। मुहम्मदशाह के राजत्व-काल में ही मराठों की शक्ति फिर से बढ़ी थी। पेशवा बाजीराव (प्रथम) (१७२१-१७४० ई०) ने बुन्देलखण्ड और सूबा 'हिन्दुस्तान' को हस्तगत कर दिल्ली के मुगल-सम्राट् से 'चौथ' वसूल की थी। उसकी मृत्यु (१७४० ई०) से एक वर्ष पूर्व अँगरेज़ों ने उसके साथ एक संधि स्थापित की थी जिसके अन्तर्गत उन्हें कुछ व्यापार-संबंधी अधिकार प्राप्त हुए थे। बाजीराव के तीन पुत्र थे—बालाजी (१७४०-६१ ई०), राघोबा और, एक मुसलमान स्त्री से उत्पन्न पुत्र, शमशेर बहादुर। शमशेर बहादुर को पेशवा ने बुन्देलखण्ड दिया और शमशेर बहादुर के उत्तराधिकारी ने अपने को बांदा का नवाब घोषित किया। १७५८ ई० तक मराठा राज्य की सीमाएँ लाहौर और मुलतान तक फैल गई थीं। राज्य का यह विस्तार राघोबा के सैनिक नेतृत्व के अन्तर्गत हुआ था। किन्तु शीघ्र ही उन्हें पानीपत (१७६१ ई०) के मैदान में अहमदशाह अब्दाली द्वारा परास्त होना पड़ा। वास्तव में मराठे उत्तरी भारत की मैदानी लड़ाइयों के अभ्यस्त न थे। इस पराजय के फलस्वरूप उनकी राजनीतिक, आर्थिक तथा नैतिक स्थिति को भारी धक्का पहुँचा। केन्द्रीय

मराठा-संघ टूट गया और उसके स्थान पर पाँच छोटे-छोटे मराठा-राज्यों की स्थापना हुई---ग्वालियर में सिंधिया, इन्दौर में होल्कर, बड़ौदा में गायकवाड़, नागपुर में भोंसले और पूना में पेशवा।

परन्तु इतने पर भी मराठों की शक्ति अभी बिल्कुल क्षीण नहीं हुई थी। मालवा, राजपूताना, रुहेलखण्ड तथा दिल्ली पर उनके आक्रमण जारी रहे। मराठों में पेशवा माधवराव प्रथम (१७६१-१७७२ ई०) अत्यन्त कुशल और बुद्धिमान् शासक था। उसने अपने काका राघोबा की महत्त्वाकांक्षाओं को कुण्ठित करने में सफलता प्राप्त की। किन्तु माधवराव की मृत्यु के बाद एक ओर तो मराठों में पारस्परिक कलह की वृद्धि हुई, और दूसरी ओर, निजाम की बढ़ती हुई शक्ति ने उनके लिए एक नया संकट उत्पन्न कर दिया। अँगरेज़ भी भारतीय सत्ताओं के पारस्परिक झगड़ों से लाभ उठाने के अभ्यस्त हो गए थे। उन्होंने इस अवसर से भरपूर लाभ उठाने की चेष्टा की। शीघ्र ही राघोबा और अँगरेज़ों के बीच सूरत की संधि (१७७५ ई०) स्थापित हो गई। इस संधि के फलस्वरूप, आगे चलकर अच्छे परिणाम दृष्टिगोचर न हुए और उनकी अंतिम परिणति प्रथम मराठा-युद्ध (१७७५-८२ ई०) (जिसे कभी-कभी दो कालों में बाँट दिया जाता है---प्रथम मराठा-युद्ध १७७५-१७७९ ई० और द्वितीय मराठा-युद्ध १७७९-१७८२ ई०) में हुई और भारतीय राजनीतिक जीवन में तीव्र गति से होने वाले परिवर्तनों के साथ-साथ अँगरेज़ों और मराठों के पारस्परिक संबंध भी परिवर्तित होते गए। इस बीच में फ्रांसीसियों ने नाना फड़नवीस (१७७४-१८०० ई०) से एक गुप्त समझौता कर लिया था जिसके फलस्वरूप अँगरेजों द्वारा अधिकृत दक्षिण-पश्चिम भारत के भूमि-भागों के लिए संकट बढ़ गया। पूना की सरकार के विरुद्ध राघोबा की ओर से अँगरेजों ने युद्ध आरंभ कर दिया। परंतु वारगाँव (बड़गाँव, १७७८ ई०) की लड़ाई में अँगरेज़ों की अच्छी पराजय हुई। वारेन हेस्टिंग्ज (१७७२-१७८५ ई०) द्वारा भेजी गई सेना को भी पराजित होना पड़ा। इस पर अँगरेजों ने भेद-नीति से काम लिया और महादाजी सिंधिया (१७३०-१७९४ ई०) को अपनी ओर मिला लिया और नागपुर के भोंसले को रक्षा करने का आश्वासन दिया। अंत में नाना फड़नवीस को भी संधि की शर्तें मानने के लिए विवश होना पड़ा। महादाजी सिंधिया या माधवराव की मृत्यु के उपरान्त बम्बई सरकार द्वारा अधिकृत भूमि-भाग पर से मराठों को हमेशा के लिए अधिकार छोड़ देना पड़ा। राघोबा ने तो पूर्णरूपेण अँगरेज़ों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया था। तत्पश्चात् जब हैदरअली (ज० लगभग १७२८-१७८२ ई०) ने अँगरेजों के विरुद्ध संगठन करना प्रारंभ कर दिया तो निजाम और मराठों ने अँगरेज़ों के सम्मुख संधि-प्रस्ताव प्रस्तुत करने की सोची। इन बातों का अन्त १७८२ ई० की सालबाई की संधि में हुआ। इस संधि से अँगरेज़ों को कोई विशेष लाभ तो नहीं हुआ, किन्तु उनकी भेद-नीति को फलने-फूलने का अवसर अवश्य प्राप्त हुआ। इस संधि के अनुसार उन्होंने माधवराव द्वितीय (मृ० १७९५ ई०) को पेशवा मान लिया। १७८२ ई० में हैदरअली की

मृत्यु हो जाने पर उसके पुत्र टीपू (१७८२-१७९९ ई०) ने अँगरेज़ों के साथ अपना संघर्ष जारी रखा। अँगरेज़ों ने भी स्वरक्षा की दृष्टि से निजाम और पेशवा के साथ तरह-तरह की संधियाँ स्थापित कीं। १७९९ ई० में श्रीरंगपट्टम की संधि द्वारा अँगरेज़ों ने टीपू पर पूर्ण विजय प्राप्त की।

१७९५ ई० मे पेशवा माधवराव द्वितीय की मृत्यु के बाद मराठों की पारस्परिक फूट और कलह निरन्तर बढती गई और वे आपस में लड़ने लगे। १८०० ई० मे नाना फड़नवीस का भी देहावसान हो गया। इतिहास-लेखकों के मतानुसार उसकी मृत्यु के बाद मराठो मे कूटनीति और दूरदर्शिता का अभाव पाया जाता है। पूना पर अँगरेजों का प्रभुत्व स्थापित हो जाने पर १८०२ ई० मे पेशवा ने बेसीन के संधि-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। इस संधि से पेशवा की स्वतंत्र सत्ता का बहुत-कुछ अपहरण हो गया। बेसीन की संधि से अन्य मराठा-सत्ताधारियों मे आक्रोश की भावना उत्पन्न हुई। दौलतराव सिंधिया (१७९४-१८२७ ई०, महादाजी सिंधिया का पौत्र) और बरार (नागपुर) के रघुजी भोंसले (१७८८-१८१६ ई०) ने मिल कर अँगरेजो से मोर्चा लेने की ठानी। किन्तु १८०३ ई० मे वेलेजली (१७९८-१८०५ ई०) ने उनकी शक्ति तोड़ देने का सफल प्रयास किया (तृतीय मराठा युद्ध, १८०२-१८०५ ई०)। १८०५ ई० तक यशवन्तराव होल्कर (१७९५-१८११ ई०) की सैनिक शक्ति कमजोर पड़ गई थी और उसे भी अन्त मे अँगरेजों से संधि करनी पड़ी। सिंधिया, भोंसले और होल्कर की शक्ति क्षीण हो जाने का प्रभाव तत्कालीन समस्त भारतीय राजनीतिक गतिविधि पर पड़ा जिसके फलस्वरूप अँगरेज़ों को उड़ीसा से लेकर बम्बई तथा राजस्थान तक के भूमि-भाग पर अधिकार प्राप्त हो गया। मराठा संघ-शक्ति अब अन्तिम साँस ले रही थी। कुछ समय तक अँगरेज़ों और पेशवा के संबंध अच्छे रहे। किन्तु लॉर्ड हेस्टिग्ज (१८१३-१८२३ ई०) के समय में अँगरेज़ों और पेशवा का फिर संघर्ष हुआ, क्योंकि पेशवा अँगरेजो के साथ स्थापित संधि से संतुष्ट नही था। फलतः मराठों और अँगरेज़ों के बीच फिर युद्ध के काले बादल मँडराए (चतुर्थ मराठा-युद्ध, १८१७-१८१९ ई०)। हेस्टिग्ज ने १८१७ ई० मे पेशवा और दौलतराव सिंधिया को संधि-पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश कर दिया। कुछ वर्षों के अनन्तर मराठों की बची-खुची शक्ति का भी अपहरण हो गया। अस्तु, अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दियों में अन्तिम महान् राजनीतिक शक्ति, मराठा-शक्ति, पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में अँगरेज सफल हुए। मराठों में पारस्परिक फूट और कलह पैदा हो गई थी। वे नवीन रण-नीति मे भी बहुत अधिक कुशल न थे। ऐसी परिस्थिति मे अँगरेजों ने अपनी स्वार्थपूर्ण नीति से प्रेरित होकर तथा कुशल कूटनीतिज्ञता और सामरिक शक्ति के आधार पर उन पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। यह क्रम १८२० ई० के लगभग तक पूर्ण हो गया था।

मराठो और अँगरेज़ों के राजनीतिक संबंध के साथ-साथ पिंडारियों का उल्लेख करना भी आवश्यक है। पिंडारियों का संबंध किसी विशेष जाति या धर्म से नही था,

यद्यपि पिंडारियों को दक्षिण भारत की एक पठान जाति माना जाता है। उनका आविर्भाव मुग़ल-साम्राज्य के अंतिम दिनों की अराजकतापूर्ण परिस्थितियों के कारण हुआ था। वे वीर लड़ाके थे। साधारण जन उनसे आतंकित रहते थे। उनका कार्य-क्षेत्र बुन्देलखण्ड, मध्य भारत, मालवा, राजस्थान और उत्तरी भारत का कुछ भाग था। अँगरेजों का विरोध करते समय मराठों ने पिंडारियों को अँगरेजी राज्य की सीमाओं पर छापा मारने के लिए उत्साहित ही नहीं किया, वरन् उन्हें अपनी सेनाओं में भी नौकरियाँ दीं। अमीर खाँ, करीम खाँ और चीतू तीन प्रमुख पिंडारी सरदार थे। अमीर खाँ जसवन्तराव होल्कर, और करीम खाँ तथा चीतू दौलतराव सिंधिया के यहाँ उच्च सैनिक पदों पर कार्य कर चुके थे। १८०८-९ ई० में गुजरात में और १८१२ ई० में मिर्ज़ापुर और शाहबाद नामक कंपनी के इलाकों पर उन्होंने आक्रमण किया था। १८१२ ई० में पिंडारी लोग बुन्देलखण्ड में भी घुस आए थे। एक शेख़ बादल नामक पिंडारी का उल्लेख प्रस्तुत पत्रों में भी हुआ है। इसलिए अँगरेज़ों ने उन्हें दबाना आवश्यक समझा। मराठों से संधि करते समय वे प्रायः एक यह शर्त रखते थे कि मराठे, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, पिंडारियों के साथ किसी भी प्रकार का संबंध नहीं रखेंगे। साथ ही अपनी सैनिक शक्ति द्वारा वे पिंडारियों का अस्तित्व मिटा डालना चाहते थे। मराठों की शक्ति समाप्त होने के लगभग साथ-ही-साथ लॉर्ड हेस्टिंग्ज़ ने पिंडारियों को बिल्कुल दबा दिया।

मराठों और अँगरेज़ों के जिस राजनीतिक संघर्ष, और मराठों के जिस अंतिम पतन का ऊपर उल्लेख किया गया है, प्रस्तुत संकलन में उपलब्ध सामग्री का कुछ अन्य प्रकार के विषयों के अतिरिक्त, उससे और उस संघर्ष-काल से अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध है। अप्रत्यक्ष रूप से इसलिए, क्योंकि इस सामग्री का संबंध मराठों और अँगरेज़ों के संघर्ष से सीधे न होकर, उसके उस प्रभाव से है जो ज़मींदारों, जागीरदारों, क़िलेदारों आदि पर पड़ा और जिसके फलस्वरूप उन्हें अपने राज-नीतिक संबंधों को फिर से नवीन रूप देना पड़ा। ऊपर की विजयों, या पराजयों, या पारस्परिक संधियों, या समझौतों का छोटे-छोटे सत्ताधारियों पर प्रभाव पड़ना और अनेक स्थानीय परिवर्तन होना अवश्यंभावी था। जिस काल से प्रस्तुत सामग्री का संबंध है (१७९३-१८१४ ई०) उस समय उत्तर-भारत में अँगरेज़ी राज्य की सीमा के दक्षिण-पश्चिम में सम्बलपुर, पटना, सिरगुजा और सिंहभूमि समूह की रियासतें थीं (जिनको सामूहिक रूप में 'इक्कीस महाल' कहा जाता था)। १८०३ ई० में रघुजी भोंसले के साथ की गई संधि के अनुसार सम्बलपुर और पटना समूह की रियासतें अँगरेजों के अधीन हो गई थीं। १८०६ ई० में, रायगढ़ को (जो सम्बलपुर रियासत के अन्तर्गत था) छोड़कर, सभी रियासतें मराठों को लौटा दी गई थीं। १८१८ ई० में अँगरेजों ने फिर उन पर अधिकार प्राप्त कर लिया और १८२६ ई० की संधि के अनुसार वे अँगरेजी राज्य में बिल्कुल मिला ली गईं। अँगरेज़ों ने १८२१ ई० में इन रियासतों के राजाओं और जागीरदारों को सनदें दीं। अँगरेज़ी

सरकार ने प्रारंभ से ही कोई निश्चित नियम निर्धारित नहीं किए थे। फलतः राजाओं और जागीरदारों में अपनी-अपनी स्थिति के संबंध में अनेक भ्रम और सन्देह उत्पन्न हो जाते थे। स्पष्ट है अन्तिम निर्णय अँगरेज़ों के हाथ में रहता था। वे अपने दृष्टिकोण के अनुसार फ़ैसला करते थे। कभी वे परम्परागत संधियों, समझौतों और उत्तराधिकार-नियमों का पालन करना उचित समझते थे, तो कभी मनमानी करना। सिरगुजा समूह की रियासतों पर १८१७ ई० में अँगरेज़ों ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया था। लेकिन १८१८ ई० में पारस्परिक फूट और कलह के कारण वहाँ अशांति उत्पन्न हुई और अगरेज़ों को वहाँ अपना एक सुपरिंटेंडेंट रखना पड़ा। सिंहभूमि समूह की रियासतों पर मराठों का प्रभुत्व कभी नहीं रहा। १८१८ ई० में राजा घनश्याम सिंह ने स्वतंत्र रूप से अँगरेज़ों के साथ मित्रता स्थापित कर ली। किन्तु १८५७ ई० के विद्रोह में सिंहभूमि के शासकों द्वारा भाग लिए जाने के कारण अँगरेज़ों ने उसे ज़ब्त कर लिया।

इस संग्रह में नागपुर और उसके आस-पास के भूमि-भाग का भी उल्लेख है। नागपुर का इतिहास रघुजी भोंसले के उस उदय-काल से संबद्ध है जब कि उन्होंने नमदा और गोदावरी के मध्य से लेकर पूर्व म समुद्र तक अपने राज्य की सीमा का विस्तार कर लिया था। आगे चलकर जब माधोजी ने अँगरेज़ों के विरुद्ध मराठों, निज़ाम और हैदरअली का साथ देना चाहा तो अँगरेज़ों ने १७८१ ई० मे उनके साथ संधि स्थापित कर ली। माधोजी की मृत्यु १७८८ ई० में हो जाने के उपरान्त श्रीरंगपट्टम की सधि एक महान् ऐतिहासिक घटना थी। आथर वेलेज़ली ने अहमदनगर के क़िले पर अधिकार प्राप्त कर असाई की लड़ाई में सिंधिया और भोंसले की संयुक्त सेना को पराजित किया। अरगाँव के युद्ध में भोंसले को फिर मुँह की खानी पड़ी। उनकी पराजय का क्रम असई, बरहानपुर और गवीलगढ़ में पूर्ण हुआ। अंत में १८०३ ई० मे उन्होंने अँगरेजों के साथ देवगाँव की संधि कर ली। इस संधि के अनुसार रघुजी भोंसले के अधिकांश भूमिभाग पर अँगरेज़ों का अधिकार हो गया। १८०४ ई० में पेशवा के साथ की गई संधि के बाद अँगरेज़ों को वहाँ और भी बल मिला। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि बरारवालों की आय बहुत घट गई और उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। १८०६ ई० में सम्बलपुर और पटना समूह की रियासतें बरार वालों को देकर उनके अभाव की पूर्ति करने की चेष्टा जरूर की गई, किन्तु रघुजी भोंसले के कारण उन्हें कोई विशेष लाभ न हो सका। १८१६ ई० में रघुजी की मृत्यु के उपरान्त नागपुर का इतिहास अनिश्चित गति धारण करता रहा। १८५५ ई० में अँगरेज़ों ने उसे अपने एक चीफ़ कमिश्नर के अन्तर्गत रख दिया और इस प्रकार नागपुर राज्य की स्वतंत्र सत्ता का अपहरण हो गया।

चम्पतराय और छत्रसाल की शौर्य-भूमि बुन्देलखंड का भी भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। वहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य वीरों और कलाकारों दोनों का मन मोहित करता आया है। इस भूमि ने अपना वैभव और गौरव सुरक्षित रखने

के लिए अनेक वीर-रत्नों को जन्म दिया। राजा छत्रसाल के समय में मुहम्मद खाँ बंगश ने बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया था, किन्तु बाजीराव पेशवा की सहायता से राजा छत्रसाल ने उसे भलीभाँति पराजित किया और वह बुन्देलखण्ड की सीमा से बाहर खदेड़ दिया गया। बाद को छत्रसाल ने बाजीराव को अपने दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार कर अपना राज्य अपने दो औरस पुत्रों, हृदयशाह और जगतराज, के बीच और बाजीराव के बीच विभाजित कर दिया। इस प्रकार तत्कालीन सूबा 'हिन्दुस्तान' में सर्वप्रथम मराठों का राज्य स्थापित हुआ। कालान्तर में उन्होंने अपने इस राज्य की सीमाओं का निरंतर विकास किया। उधर छत्रसाल के दो औरस पुत्रों के उत्तराधिकारियों का दिन-पर-दिन पतन होता गया। जब माधोजी सिंधिया ने शमशेर बहादुर के पुत्र अली बहादुर के सैनिक नेतृत्व में बुन्देलखण्ड के विभिन्न भूमि-भागों पर आक्रमण किए तो अनेक सामन्तों और जागीरदारों ने दिल्ली की वश्यता छोड़ कर मराठों की अधीनता स्वीकार कर ली। लेकिन बुंदेलखण्ड की विपत्तियों का अन्त यहीं नहीं हो जाता। राजा छत्रसाल के औरस पुत्रों के उत्तराधिकारियो की पारस्परिक कलह ने अली बहादुर की महत्त्वाकांक्षाओं को प्रश्रय दिया। हिम्मत बहादुर ने उसकी आर्थिक सहायता की। हृदयशाह के पुत्र हिन्दूपत के राज्य पर वंश के विद्रोही सेवकों---बेनी हजूरी और खेमराज चौबे---का अधिकार हो गया था। बेनी हजूरी पन्ना में और खेमराज चौबे कालिंजर में जमा था। जगतराज के राज्य की भी दुःखद कहानी है। इस प्रकार बुन्देलखण्ड के अधिकांश में अली बहादुर को अपनी सत्ता स्थापित करने में किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव न करना पड़ा। केवल कालिंजर में उसका डटकर मुकाबला किया गया जहाँ १८०२ ई० की लड़ाई के समय उसकी मृत्यु हो गई। किन्तु मरने से पहले उसने पूना के पेशवा के साथ एक समझौता कर लिया था जिसके अनुसार बुन्देलखण्ड में स्थापित अली बहादुर के राज्य पर पेशवा की सर्वोपरि सत्ता स्वीकार कर ली गई।

किन्तु अँगरेजों ने बेसीन-संधि की शर्तों के अनुसार बुन्देलखण्ड की आय का बहुत बड़ा अंश हड़प लिया। यह बात दौलतराव सिंधिया, जसवन्तराव होल्कर और बरार के राजा को बुरी लगी और सबने मिलकर गंगा के दोआब में स्थित अँगरेजी राज्य पर आक्रमण करने की सोची। किन्तु इसी समय हिम्मत बहादुर ने स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण से प्रेरित होकर अँगरेजों को अपना राज्य सौंप दिया जिससे अँगरेजों के पैर बुन्देलखण्ड में भी सर्वप्रथम दृढ़तापूर्वक जम गए। मराठों के मुक़ाबले में उन्हें राजनीतिक और सैनिक दृष्टि से अत्यधिक लाभ हुआ। १८०४ ई० में हिम्मत बहादुर की मृत्यु के बाद अँगरेजों ने उसके वंशजों को जागीरें और सनदें प्रदान कीं। अली बहादुर के पुत्र, शमशेर बहादुर और जुल्फ़िकार अली, अयोग्य शासक सिद्ध हुए। बुन्देलखण्ड में पेशवा की सत्ता नाम-मात्र ही की रह गई। १८१७ ई० में उसकी शक्ति का ह्रास हो जाने के बाद बुन्देलखण्ड पर एकमात्र अँगरेजों का प्रभुत्व स्थापित हो गया और बुन्देलखण्ड की वीर-भूमि पराधीन हो गई। अपनी कूटनीति का व्यवहार करते हुए और होल्कर से बचाव

करने की दृष्टि से अँगरेज़ों ने बुन्देलखण्ड के सामन्तों को उनके अधिकारों सहित बनाए रखा। लेकिन अली बहादुर के समय में दिए गए उनके ये अधिकार इसी शर्त पर सुरक्षित रखे गए थे कि वे अँगरेज़ों के प्रति वफ़ादार बने रहेंगे। प्रस्तुत संग्रह में सम्मिलित इक़रारनामों, सनदों आदि से इस बात का प्रमाण मिलता है कि बुन्देलखण्ड के विभिन्न सामन्त, जागीरदार और ज़मींदार या तो अँगरेज़ों के दबाव के कारण, अथवा मराठों से आतंकित होने के कारण, नतमस्तक हुए और उन्हें अँगरेज़ों की शर्तें स्वीकार करनी पड़ीं। आगे चलकर कुछ रियासतें तो इक़रारनामों की अवधि समाप्त हो जाने के कारण अँगरेज़ी राज्य में मिला ली गईं, और कुछ १८५७ ई० के विद्रोह में भाग लेने के कारण जब्त कर ली गईं। यह सामग्री बुन्देलखण्ड वैभव के पूर्णास्त की दुःखद कहानी प्रस्तुत करती है।

इस संग्रह का अवलोकन करते समय पाठकों को कालिंजर के चौबे-वंश का भी उल्लेख मिलेगा। वास्तव में जब हृदयशाह को कालिंजर का क़िला अपने पिता छत्रसाल से मिला था, उस समय चौबे रामकिशन वहाँ का क़िलेदार था। अली बहादुर के आक्रमण के कारण बुन्देलखण्ड में जब अराजकता फैली उस समय चौबे लोग कालिंजर के मालिक बन बैठे और उन्होंने अली बहादुर का डट कर मुक़ाबला किया। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, कालिंजर के युद्ध के समय ही उसकी मृत्यु हो गई थी। जिस समय बुन्देलखण्ड पर अँगरेज़ों का प्रभुत्व स्थापित हुआ उस समय कालिंजर का क़िला चौबे रामकिशन के सात पुत्रों के अधिकार में था जिनके नाम थे :—बलदेव, भरतजू, गोबिंददास, गंगाधर, नवलकिशोर, शालिग्राम और छत्रसाल। बलदेव की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिए क़िले का नायकत्व उसके पुत्र दरियावसिंह के हाथ में रहा। यद्यपि दरियावसिंह बुन्देला राजाओं का वंशज नहीं था तो भी घाटों के ऊपरी भूमि-भाग को छोटे-छोटे सामन्तों के पास रहने देने की नीति का अनुसरण करते हुए अँगरेज़ों ने अपने प्रति वफ़ादारी की शर्त पर उसके साथ समझौता कर लिया। अजयगढ़ के किलेदार के साथ कुछ झगड़ा होने के कारण उस समय दरियावसिंह को कोई सनद न दी जा सकी। किन्तु शीघ्र ही दरियावसिंह और अँगरेज़ों में संघर्ष प्रारंभ हो गया। १८१२ ई० में अँगरेज़ों ने कालिंजर पर आक्रमण किया। उन्हें जितनी सफलता मिलनी चाहिए थी उतनी सफलता तो नहीं मिली, किन्तु दरियावसिंह ने इस शर्त पर उनकी अधीनता स्वीकार कर ली कि उसके वंशवालों के पास उस समय जो ज़मीनें थीं उनके बदले में उन्हें और ज़मीनें दी जाएँगी। क्योंकि उसके वंश में आपस में बहुत झगड़े चले हुए थे, इसलिए अँगरेज़ों ने यह निश्चय किया कि उसके वंश के प्रत्येक सदस्य को अलग-अलग व्यक्तिगत रूप में सनदें दी जायें। उन्होंने चौबे खानदान के वकील गोपाललाल को एक अलग सनद देने का निश्चय किया। पुहकरप्रसाद और गयाप्रसाद क्रमशः गोविन्ददास और गंगाधर के पुत्र थे। बटवारे के समय पुहकरप्रसाद और गयाप्रसाद की मृत्यु हो चुकी थी। दो हिस्से दो स्त्रियों को मिले थे—एक तो छत्रसाल की माँ का था, और दूसरा भरतजू

की विधवा पत्नी का। छत्रसाल की माँ ने अपनी तथा अन्य हिस्सेदारों की मर्जी से अपना हिस्सा छत्रसाल चौबे को देने का निश्चय किया। भरतजू की विधवा पत्नी का हिस्सा नवलकिशोर को मिला। किन्तु १८१७ ई० में उन दोनों के हिस्से अलग अलग कर दिए गए। वंश के उत्तराधिकार-नियम के अनुसार ये हिस्से निरन्तर छोटे होते गए और अन्त में उनमें से अनेक अँगरेज़ी राज्य में मिला लिए गए।

बुन्देलखण्ड के प्रसंग में, अन्य अनेक स्थानों के अतिरिक्त, रीवा, चरखारी, बिजावर, अजयगढ़, छतरपुर, मैहर, लोगासी, बेरौदा, बेहरी, जस्सू आदि के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। रीवा के राजा जयसिंह देव से अँगरेज़ों ने सर्वप्रथम संधि स्थापित की थी। १८१२ ई० में जब पिंडारियों ने रीवा की तरफ़ से आकर मिर्ज़ापुर में लूटमार की तो, यह कहा जाता है कि, उसमें राजा जयसिंह देव की दुरभिसंधि दिखाई दी। दबाव पड़ने के कारण उसने अँगरेज़ों से संधि की थी। किन्तु संधि की शर्तों का पालन न कर सकने के कारण उसने युवराज विश्वनाथ सिंह को गद्दी पर बिठा दिया और रीवा ने पूर्णतः अँगरेज़ों की अधीनता स्वीकार कर ली। चरखारी के विजय-बहादुर को अली बहादुर ने जागीर बख़्शी थी, क्योंकि जब छत्रसाल के वंशज आपस में लड़ रहे थे उस समय उसने अली बहादुर की सहायता की थी। विजयबहादुर उन बुन्देला सामन्तों में से माना जाता है जिन्होंने सर्वप्रथम अँगरेज़ों का प्रभुत्व स्वीकार किया। अँगरेज़ों ने उसे एक सनद १८०४ ई० में प्रदान की और दूसरी १८११ ई० में। विजय बहादुर की मृत्यु १८२९ ई० में हुई और उसका उत्तराधिकार, काफ़ी भगड़े के बाद, रतनसिंह को प्राप्त हुआ। बुन्देलखण्ड में जब अँगरेज़ों का पदार्पण हुआ था उस समय केसरीसिंह बिजावर का शासक था। वह जगतराज के पुत्र वीरसिंह देव का पुत्र था। उसने भी अँगरेज़ों की अधीनता स्वीकार कर ली थी, किन्तु चरखारी के राजा विजयबहादुर और छतरपुर के कुँवर सोने साह के साथ भगड़ा होने के कारण उसे कोई सनद न दी जा सकी थी। १८१० ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र रतनसिंह गद्दी पर बैठा और उसे अँगरेज़ों से सनद प्राप्त हुई। १८३६ ई० में उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका भतीजा लछमनसिंह उत्तराधिकारी बना। अजयगढ़ के राजा को प्रारम्भ में 'राजा साहब बाँदा' कहा जाता था। अली बहादुर ने वहाँ के राजा बख़्तसिंह की दुर्दशा कर डाली थी। किन्तु अँगरेज़ों की सहायता से वह पुनः अपनी पूर्वावस्था को प्राप्त हुआ। १८०७ ई० में अँगरेज़ों ने उसे सनद प्रदान की। १८०८ ई० में उसकी पेंशन बन्द कर दी गई। इस समय लछमन दौआ नामक एक वीर साहसिक ने अजयगढ़ राज्य और क़िले का बहुत बड़ा भाग अपने क़ब्ज़े में कर लिया था। उसे अपनी ओर मिलाने के लिए अँगरेज़ों ने उसी स्थिति में उसे इस शर्त पर स्वीकार कर लिया कि वह उनके साथ विश्वासघात नहीं करेगा। किन्तु शर्तों का पालन न कर सकने के कारण वह शीघ्र ही हटा दिया गया और उसके भाग का बहुत बड़ा अंश अजयगढ़ के राजा को दे दिया गया। १८१२ ई० में राजा बख़्तसिंह को सनद प्राप्त हुई। १८३७ ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात्

उसका ज्येष्ठ पुत्र माधोसिंह गद्दी पर बैठा। वह निस्सन्तान रहा और १८४९ ई० में परलोक सिधार गया। पन्ना के राजा किशोरसिंह के पितामह राजा हिन्दूपत का एक सेवक था जो आगे चलकर कुँवर सोने साह जू के नाम से विख्यात हुआ। बुंदेलखण्ड पर मराठों के आक्रमण के समय वह एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक व्यक्ति बन बैठा था। १८०६ ई० में अँगरेजों ने उसी को सनद दे दी। १८०८ ई० में उसे मऊ और उसके पुत्र प्रतापसिंह को छतरपुर दिया गया। १८१२ ई० में कुँवर सोने साह जू ने अपनी रियासत अपने पाँच पुत्रों में विभाजित की जिसके फलस्वरूप प्रतापसिंह का हिस्सा बहुत कम हो गया। अँगरेजों ने यह बँटवारा स्वीकार नहीं किया और सोने साह की मृत्यु हो जाने पर बुन्देलखण्ड-स्थित अपने एजेंट को आदेश दिया कि प्रतापसिंह के साथ समझौते का प्रधान आधार पिछला बँटवारा ही माना जाय। उन्होंने हिम्मतसिंह, पृथ्वीसिंह, हिन्दूपत और बख्तसिंह नामक अन्य चार भाइयों को उसके अधीन रखा। १८१५ ई० में उनके आदेशों का पूर्णतः पालन कर दिया गया और पाँचों भाइयों को अलग-अलग सनदें मिलीं। १८२७ ई० में प्रतापसिंह को 'राजा' की पदवी प्रदान की गई।

मैहर रियासत प्रारभ में रीवा के मातहत थी। जब अँगरेजों ने बुन्देलखण्ड में अपने पैर जमाए तो उस समय ठाकुर दुर्जनसिंह मैहर रियासत का मालिक था। १८१४ ई० में अँगरेजों ने उसे सनद दी। १८२६ ई० में उसकी मृत्यु के पश्चात् मैहर रियासत उसके दो पुत्रों, बिशनसिंह और प्रागदास, में बाँट दी गई। मैहर जिला बिशनसिंह के हिस्से में पड़ा। जहाँ तक लोगासी से संबंध है, हृदयशाह का पौत्र दीवान धीरजसिंह बुन्देलों और अली बहादुर के शासन-काल में सात गाँवों का मालिक था। अँगरेजों का अधिकार स्थापित हो जाने पर उसने एक इक़रारनामा लिख दिया और वह अपने पद पर सुरक्षित बना रहा। वृद्धावस्था के कारण उसने १८१४ ई० में अपने द्वितीय पुत्र सरदारसिंह को गद्दी पर बिठाना चाहा। उसके ज्येष्ठ पुत्र पद्मसिंह ने चार वर्ष पूर्व उसके प्रति विद्रोह किया था, इसलिए वह उसे अपना उत्तराधिकारी बनाना नहीं चाहता था। अँगरेजी सेना की सहायता से ही दीवान धीरजसिंह ने उसका विद्रोह दबाने में सफलता प्राप्त की थी। किन्तु अँगरेजों ने न तो दीवान धीरजसिंह को गद्दी से हटने दिया और न सरदारसिंह को ही नई सनद प्रदान की। किन्तु उनसे नए इक़रारनामे अवश्य लिखा लिए गए। बुन्देलखण्ड के इतिहास में बरौंदा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह रियासत राजपूतों की राजवंशी जाति के अधिकार में थी। १८०७ ई० में अँगरेजों ने मोहनसिंह को सनद बख्शी, किन्तु वह बेचारा १८०७ ई० में ही इस दुनिया से कूच कर गया। उसका अधिकार उसके भतीजे राजा सर्वजीतसिंह को मिला। बेहरी रियासत की दृष्टि से दीवान जुगलप्रसाद का नाम उल्लेखनीय है। वह जगतराज के कन्या-पक्ष का वंशज था। उसके पितामह ने जगतराज की पुत्री से विवाह किया था और उमरी, चिली और दादरी गाँव जागीर के रूप में प्राप्त किए थे। बुन्देला राजाओं के शासन-काल में ये गाँव उन्हीं के पास बने रहे और

अली बहादुर ने उन पर जुगलप्रसाद का अधिकार स्वीकार किया। जब अंगरेज बुन्देलखण्ड आए तो उस समय जुगलप्रसाद के पास केवल उमरी गाँव रह गया था। दादरी गाँव नाना गोविन्द राव ने कालपी जिले के कुछ गाँवों के बदले में ले लिया था। कुछ समय के पश्चात् अँगरेजो ने इन सब गाँवों का मालिक दीवान जुगलप्रसाद को ही माना। चिली तो उसे मिला ही, दादरी के बदले उसे परगना जलालपुर में जमीन दे दी गई। १८१४ ई० मे जुगलप्रसाद का देहांत हो गया। उसका अधिकार उसके भतीजे फैरनसिंह को प्राप्त हुआ। कोटरा सहित जसो रियासत (बुन्देलखण्ड) [illegible] के पास थी। १७६६ ई० में उसने अपनी यह रियासत अजयगढ़-वंश के पूर्वज, गुमान-सिंह, चरखारी-वंश के पूर्वज, खुमानसिंह, और जैतपुर राज्य के संस्थापक, पहाड़सिंह, के बीच बाँट दी। उत्तराधिकार-नियम के अनुसार बालक मूरतसिंह जस्सू रियासत का मालिक बना। अली बहादुर ने रियासत को अपने अधिकार में करके उसे मूरतसिंह के पिता चेतसिंह के एक विद्रोही नौकर गोपालसिंह के हवाले कर दिया। १८०७ ई० और उसके बाद जस्सू रियासत को लेकर अजयगढ़ के राजा बख्तसिंह से बड़ा झगड़ा हुआ। अन्त में अँगरेजों ने १८१६ ई० मे मूरतसिंह को सनद दी और जो झगड़े बच रहे थे उनका निबटारा किया।

इन प्रमुख रियासतों के संक्षिप्त विवरण से यह ज्ञात हो जाता है कि बहुत दिनों तक अँगरेजो ने अली बहादुर के शासन-काल में स्थापित उत्तराधिकार-नियमों का पालन किया, यद्यपि अपनी सुविधानुसार उन्होंने उनकी अवहेलना भी की। साथ ही उन्होंने राज-वंशों के विद्रोही सेवकों तक को सहायता प्रदान की। जो उनका साथ देता था वे उसी को अपनी सैनिक शक्ति की 'छत्रछाया' में ले लेते थे। उपर्युक्त रियासतों के कई शासकों ने कभी-कभी विद्रोह करने की चेष्टा भी की। किन्तु अँगरेजों की संगठित सैनिक शक्ति और कूटनीति के सामने उनकी एक न चली और अन्ततोगत्वा उन्हें अँगरेजों की अधीनता पूर्णरूपेण स्वीकार करनी पड़ी। गोपालसिंह बुन्देला भी एक ऐसा ही वीर था जिसने बुन्देलखण्ड में अँगरेजी शासन का प्रारम्भ से ही विरोध किया। वह छत्रसाल के पौत्रों, दुर्जनसिंह और हरीसिंह, का कामदार था। अली बहादुर ने जब बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया तो उसने कोटरा पर अधिकार जमा लिया था। अँगरेजो ने उसे पराजित करने की अथक चेष्टा की। जब उसे शरण लेने को कोई आधार न रह गई तो वह हारकर अँगरेजो के सम्मुख क्षमा-प्रार्थी हुआ और १८१२ ई० में उसे सनद मिल गई। १८३१ ई० मे वह वीरगति को प्राप्त हो गया। इसी प्रकार नया गाँव का लक्ष्मण-सिंह भी बहुत दिनों तक अँगरेजो से मोर्चा लेता रहा। किन्तु विवश होकर उसे भी उनकी अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। १८०७ ई० मे उसे सनद मिल गई थी, लेकिन १८०८ ई० में उसका परलोक-गमन हो गया। उसके बाद उसके पुत्र जगतसिंह ने अँगरेजों से मित्रता बनाए रखी। बूरागढ़ के क़िलेदार राजाराम ने भी अँगरेजों की अधीनता स्वीकार करने से इंकार कर दिया था। राजा अजयगढ़ के माध्यम द्वारा अँगरेजों के लाख चेष्टा करने पर भी वह हाथ न आया। अंत में गोपालसिंह और लछमनसिंह की

भाँति उसके लिए भी आत्म-समर्पण के अतिरिक्त कोई चारा न रह गया और १८०७ ई० मे उसने अँगरेजों द्वारा दी गई सनद स्वीकार कर ली। १८४६ ई० में वह इस दुनिया मे चल बसा। सोहावल रियासत पन्ना राज्य के अधीन थी। लाल अमानसिंह ने अँगरेजों से सनद लेकर ताबेदारी का इक़रारनामा लिख दिया। कोठी और उँचहरा रियासतों की भाँति ही सोहावल रियासत से व्यवहार किया गया था। बीच में लाल अमानसिंह ने अपनी रियासत अपने ज्येष्ठ पुत्र के हाथ सौंप दी। १८३० ई० में एक व्यापारी का रुपया चुकाने की दृष्टि से अँगरेजों ने उसे अपनी निगरानी में ले लिया था। लेकिन १८३३ ई० मे वह फिर लाल अमानसिंह को वापस कर दी गई, क्योंकि इस समय तक उसका पुत्र मर चुका था। कोठी और उँचहरा रियासतें भी पन्ना राज्य के अधीन थीं। कोठीवाले बघेला थे। उनके स्वत्वों का अपहरण न तो बुन्देला राजाओं ने किया था और न अली बहादुर ने। इसलिए अँगरेजों ने भी १८१० ई० में लाल दुनियापत को सनद बख्श दी। उँचहरावालों की भी कोठीवालों के समान स्थिति थी। १८०९ ई० मे लाल शिवराजसिंह को सनद मिली। १८१८ ई० में उसका पुत्र, बलभद्रसिंह, गद्दी पर बैठा। इसी प्रकार अलीपुरा रियासत के दीवान प्रतापसिंह को भी १८०८ ई० में सनद प्रदान कर अँगरेजों ने उसे अपने सरक्षण में ले लिया था। दीवान अपरबलसिंह और दीवान चथारी ने अँगरेजों से सनदें प्राप्त कीं। सुरीला के राजा तेजसिंह को, जो जगतराज का प्रपौत्र था, अली बहादुर ने उसके अधिकारों से वंचित कर दिया था। राजा हिम्मत बहादुर के कारण अँगरेज़ों ने उसका अधिकार फिर स्वीकार किया और १८०७ ई० में उसे सनद प्रदान की। बड़गाँव तथा अन्य अनेक ऐसी छोटी-छोटी रियासतों ने भी किसी-न-किसी विवशता के कारण अँगरेजों से सनदें प्राप्त कर उनकी अधीनता स्वीकार की। उनमें से कुछ का उल्लेख प्रस्तुत संग्रह में मिलेगा।

उपर्युक्त संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है, और उसकी पुष्टि प्रस्तुत पत्रों, सनदों और इक़रारनामों से भी हो जाती है, कि अँगरेजों की दृष्टि मराठा-शक्ति को छिन्न-भिन्न करने की ओर थी। मराठों के परस्पर वैमनस्य, फूट, स्वार्थ-लिप्ति और संघ-शक्ति के अभाव ने अँगरेजों को सफलता प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। अँगरेजों ने भेदनीति का अनुसरण करते हुए कभी एक का साथ दिया, तो कभी दूसरे का। अवसरानुकूल उन्होंने कभी हस्तक्षेप की नीति का अनुसरण किया, तो कभी अ-हस्तक्षेप की नीति का। इस पर वेलेजली की सहायक-संधि-नीति या मांडलिक संबंध-नीति (Subsidiary Alliance System) ने अपना प्रभाव प्रदर्शित किया। इस सहायक-संधि-नीति के अनुसार अँगरेज देशी नरेशों को आर्थिक सहायता देते थे, उनके यहाँ अपनी सेना रखते थे, उस सेना के व्यय का उत्तरदायित्व भी देशी नरेशों पर रहता था, देशी नरेश बिना अँगरेजों की अनुमति के न तो किसी से युद्ध कर सकते थे और न संधि कर सकते थे, और वे अँगरेजों के अतिरिक्त अन्य किसी यूरोपियन को अपने यहाँ नौकरी भी नहीं दे सकते थे। देशी नरेशों को अपने

यहाँ एक अँगरेज रेज़ीडेंट भी रखना पड़ता था जिससे वह शासन-संबंधी मामलों में परामर्श करता था। पहले तो देशी नरेश ऐसी संधि को अपमानजनक समझते रहते थे, किन्तु अँगरेज़ अपनी कूटनीति द्वारा ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर देते थे कि बड़े-बड़े भारतीय सामन्तों को सहायक-संधि-नीति स्वीकार कर लेनी पड़ती थी। इस नीति के अन्तर्गत देशी राज्यों को अँगरेजी राज्य मे मिलाया जाना सरल हो गया। सहायक-संधि-नीति के स्वीकार करते ही वास्तविक सत्ता अँगरेज़ रेज़ीडेंट के हाथ में चली जाती थी और देशी नरेश नाममात्र के नरेश रह जाते थे। वास्तव में वेलेज़ली की यह नीति भारतीय नरेशों के लिए बड़ी घातक सिद्ध हुई। सच बात तो यह है कि मराठा शक्ति के नाश के बीज वेलेज़ली और उसके भाई आर्थर वेलेज़ली ने बोए। सहायक-संधि-नीति के व्यवहार से उन्हे और उनके उत्तराधिकारियों को अभूतपूर्व सफलता मिली। छोटे-बड़े सभी सामन्तों के साथ उन्होंने यह नीति बरती।

प्रारंभ मे नेपाल के साथ अंगरेज़ों के सबंध केवल व्यापार की दृष्टि से थे। उनके पारस्परिक राजनीतिक सम्बन्ध १७६७ ई० में गोरखों के आक्रमण, और काठ-माण्डू के नेवार राजा के स्थान पर गोरखा-राज्य स्थापित होने से प्रारंभ होते है। गोरखों ने इतनी अधिक शक्ति प्राप्त कर ली थी कि अँगरेज़ों ने उन्हीं को नेपाल का शासक मान लिया। पहाड़ी प्रदेश को अपने अधिकार मे कर लेने के पश्चात् गोरखे हिमालय की तलहटी वाला भाग उसी शर्त पर चाहते थे जिस शर्त के आधार पर वह मकवानपुर के राजा के पास था। इससे गोरखों के राज्य की सीमा का विस्तार गोरखपुर तक हो जाता था। अँगरेज़ों की गृद्ध-दृष्टि कुमायूँ-गढ़वाल के इलाकों पर थी। इससे दोनों का संघर्ष अवश्यंभावी था। किन्तु जब गोरखों की दृष्टि तिब्बत पर पड़ी तो उनमें और चीनी सम्राट् में संघर्ष हुए बिना न रह सका। अँगरेज़ों के हस्तक्षेप करने से पूर्व ही गोरखों को चीनियों के हाथों बुरी तरह पराजित होना पड़ा। १८०० ई० में नेपाल के राजा रणबहादुर ने अपनी एक रानी को रीजेंट बनाकर अपने जारज पुत्र गीर्वाण जोध विक्रम साह को गद्दी पर बिठाकर काशी-वास करने का निश्चय किया। अँगरेजों ने इस अवसर से लाभ उठाना चाहा और १७९२ ई० की संधि के अनुसार उन डाकुओं और लुटेरों को बन्दी बना कर वापस भेजने की मांग प्रस्तुत की जो नेपाल राज्य की सीमा से मिली अँगरेजी राज्य की सीमा पर उत्पात मचाते थे। सारन और गोरखपुर जिलों मे दोनों की सीमाएँ मिलती भी थीं। इस संबंध में कैप्टेन नॉक्स द्वारा अक्टूबर, १८०१ ई० में एक संधि हुई जिसके अनुसार वह प्रथम अँगरेज़ रेज़ीडेंट नियुक्त हुआ। किन्तु रणबहादुर की बड़ी रानी ने काठमाण्डू में आकर सारी शक्ति अपने हाथ में ले ली और उसका और अँगरेज़ों का संघर्ष फिर प्रारम्भ हो गया। इस संघर्ष के फलस्वरूप २४ जनवरी, १८०४ को लार्ड वेलेज़ली ने नेपाल दरबार से अपना राजनीतिक सबंध-विच्छेद कर दिया। रणबहादुर भी नेपाल लौट आया। किन्तु अपने भाई के साथ संघर्ष में वह मारा गया। कहा जाता है वह बड़ा अत्याचारी था। लेकिन उसके एक नवयुवक सहायक, भीमसेन थापा, ने बालक गीर्वाण जोध

विक्रम को अपनी सुरक्षा में ले लिया और शासन-संबंधी सभी सूत्र उसके हाथ में आ गए। तत्पश्चात् नेपाल राज्य और अँगरेजी राज्य के बीच सीमा-संबंधी अनेक झगड़े चलते रहे। १८०८ ई० तक गोरखों ने बुटवल, शिवराज आदि स्थानों पर अधिकार कर अपने राज्य का विस्तार कर लिया था। १८०९ ई० में अँगरेजों ने गोरखों से युद्ध करने की ठानी, लेकिन गोरखे उस समय युद्ध बचा गए और अधिकृत स्थानों से हट गए। १८११ ई० में उन्होंने फिर बुटवल और बेतिया की सीमा पर स्थित कुछ स्थानों को हस्तगत कर लिया। बेतिया की जनता का कुछ गोरखा-विरोधी रुख देख-कर लॉर्ड हेस्टिंग्ज ने १८१४ ई० मे गोरखों पर आक्रमण कर दिया। गोरखो ने वीरभद्र के नेतृत्व में अपूर्व रण-कौशल प्रदर्शित किया और अँगरेजों को पूर्ण विजय प्राप्त न हो सकी। किन्तु अँगरेज सेनापति जनरल ऑक्टरलोनी को, जो लुधियाने से बढा था, सफलता मिली और उसने सेनापति अमरसिंह को हरा दिया। नेपाल सरकार ने १८१६ ई० मे सिगौली की संधि स्वीकार कर ली। इस संधि के अनुसार नेपाल राज्य ने तराई पर अपना अधिकार छोड़ दिया और कुमायूँ पर अँगरेजों का स्वत्व स्वीकार कर लिया। अब एक अँगरेज रेजीडेंट भी नेपाल की राजधानी काठमाण्डू मे रहने लगा। सिगौली की संधि द्वारा अँगरेजों को अनेक महत्त्वपूर्ण राज-नीतिक लाभ प्राप्त हुए।

१८३२ ई० में भीमसेन थापा के विरुद्ध विद्रोह के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे। १८३९ ई० में थापा-वंश का अस्तित्व मिट गया। उसके बाद तो अँगरेजों का विरोध और भी खुले रूप में होने लगा। किन्तु १८५७ ई० के विद्रोह में महाराजा जगबहादुर ने अँगरेजों की सहायता की।

× × ×

ऊपर जिन ऐतिहासिक और राजनीतिक बातों का उल्लेख किया गया है उनका सीधा सबंध प्रस्तुत संग्रह में संकलित सामग्री से है। 'हिंदुई' शब्द के प्रयोग, दास-प्रथा पर प्रतिबंध लगाने, और पिंडारियों की दृष्टि से, उदाहरणार्थ, क्रमशः पत्र-संख्या ४०, १२९, ११६ और १३२ देखने योग्य है। कुछ पत्र ऐसे भी हैं जिनका ऐतिहासिक या राजनीतिक दृष्टि से कोई महत्व नहीं है (जैसे जिला बिहार की कचहरी मे पेश रामलोचन दारोगा का मुकदमा)। किन्तु इन सभी पत्रों, इक़रारनामों, सनदों आदि का भाषा के अध्ययन की दृष्टि से महत्त्व अवश्य है। इनमें खड़ीबोली के साथ हिन्दी की कुछ अन्य बोलियों के मिश्रित रूप मिलते हैं। अधिकांश पत्रों की भाषा प्रधानतया खड़ीबोली है जिसे 'हिंदवी' कहा गया है (पृ० ९, ११)। कहीं-कहीं भाषा और लिपि का 'हीदुई', 'हिंदुई' नाम भी मिलता है (पृ० १५, ६९, ७०, २१४)। भाषा की कुछ अव्यवस्था बेपढ़े तथा कम पढ़े बोलनेवालों तथा लेखकों के कारण भी मालूम होती है। अनेक पत्र लेखकों के द्वारा मौखिक ढंग से लिखवाए गए हैं। इस प्रकार की खड़ीबोली का एक उदाहरण नीचे दिया जा रहा है:—

'एक घरी दीन चढ़ा था। तब हम दारोगा रामलोचन के पाश रोजी के वाशते जो दशतक चीठी होते है गऐ थे। उहा शे अपने घर को गए। जब दारोगा के दरवाजा प्र वाहर आऐ तब देखा जो रधीआ मोहन मुद्इ का छोकरी, रोती चली आव है। तब हम देखा औ चीन्हा जो रधीआ हे।' (पृ० ९)

कुछ पत्रों की भाषा उर्दू की तरफ भी झुकी हुई है, जैसे :—

'श्री श्री वडा साहव गरीव प्रवर सलामति। सरकार का खेरमल्लाह मोंदाम का वेहतर चहिये जिस्से हमारा भला होवे। सरकार के अकबाल से इहा खेरसलाह है। आगे इहा का हगामा फसाद मरहठे का पेस्तर दफेअ अरज लीया है। हजुर मोवारक मो रौसन हुआ होगा।' (पृ० १८)

कुछ पत्रों में भोजपुरी का प्रभाव स्पष्ट है :—

'आगे राउर खत आऐल। समाचार पावल।' (पृ० ३२)

'जवन काम कहीह तवन हम करी।' (पृ० ३३)

'फौज गैल है।' (पृ० ३७)

'आगें जे वात होंते रहे से गुजरल। अब फीरगी डेरा नगर दाखील भेल।' (पृ० ३८)

'आगे वहुत दीन भेल साहेव के समाचार नहीं मीलल है से धीला चीत लागल है।' (पृ० ५७)

बहुत कम पत्रों की भाषा में भोजपुरी के साथ अवधी का मिश्रण मिलता है, जैसे :—

'से तो हम जैवे करव। वीन ही कहवे तो काहे जाव। हम तो राउर राह वहुत देखन।' (पृ० ६८)

'खत आवा। हवाल मालूम भा।' (पृ० २५०)

बुंदेली या ब्रजभाषा के रूप भी बहुत ही कम प्रयुक्त हुए है, जैसे :—

'सो हम सौ तौ यौ किम्पौ जब तै बुंदेलन को राज है तब से रहौ आयौ है।' (पृ० ७६)

'काहू सौदागिर राहगीर कौ माल जिस गाव के पास चोरी वा लुटो जाई सो गाव के जिमीदारन सौ उनकौ माल देवाई देई।' (पृ० ८०)

'अरु आपने कर दई व्रती।' (पृ० १३८)

'सो हमको लिवाई जैहे।' (पृ० १३४)

नेपाल की तराई से लिखे दो-तीन पत्रों में नेपाली का मिश्रण मिलता है। (पृ० २७३, २७५)

इन पत्रों को पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में ही खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग व्यापक रीति से होने लगा था, यद्यपि उसने अभी साहित्यिक आदर्श रूप अवश्य ग्रहण नहीं किया था। अदालतों तथा इकरारनामों की भाषा में प्रायः फ़ारसी शब्दों का मिश्रण अधिक स्वतंत्रता के साथ होता था, क्योंकि इन क्षेत्रों में अब तक फारसी चल रही थी। निजी पत्रों में खड़ीबोली पर लेखक की

अपनी बोली का प्रभाव मिश्रित हो गया है। यही कारण है कि अनेक पत्रों में भोज-पुरी, बुँदेली आदि का प्रभाव प्रधानतया व्याकरण के रूपों में दिखलाई पड़ता है। किन्तु इन सब प्रकार के मिश्रणों के पीछे खड़ीबोली का ढाँचा स्पष्टतया विद्यमान है। खड़ीबोली के विकास के अध्ययन में इन पत्रों से प्राप्त भाषा-सामग्री अत्यत उपयोगी सिद्ध होगी।

इन पत्रों से उन्नीसवीं शताब्दी की देशी पत्र-लेखन-शैली के अतिरिक्त खड़ी-बोली की समन्वयात्मक शक्ति, मुहावरेदानी और तद्भव-प्रधानता का परिचय प्राप्त होता है। वर्तनी की दृष्टि से भी उनका महत्त्व कम नही है।

× × ×

इस संग्रह में पत्र काल-क्रमानुसार रखे गए है। रियासतों के अनुसार उनका वर्गीकरण परिशिष्ट १ मे दे दिया गया है कुछ पत्रो की पुनरावृत्ति जान-बूझकर की गई है. जैसे, ९५ और ९६, ११२ और ११६, १२६ और १२७, १४२ (ख, ग, घ) और १४३ (क, ख, ग), १४२ (क) और १४४, १४६ और १४७। विषय की दृष्टि से ये पत्र लगभग समान हैं। किन्तु शब्दों के प्रयोग और वर्तनी के अध्ययन की दृष्टि से वे तुलनीय हैं। भाषा-विज्ञान के विद्यार्थियो को उनमे रोचक सामग्री उपलब्ध होगी।

इस संग्रह की अँगरेज़ी मे भूमिका लिखने के लिए हम प्रयाग विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रोफ़ेसर तथा अध्यक्ष श्री डॉ० बनारसीप्रसाद सक्सेना, के अत्यन्त आभारी है। अँगरेज़ी में लिखित भूमिका के साथ-साथ हिन्दी में भी भूमिका दी गई है। दोनो भूमिकाएँ दो भिन्न, किन्तु परस्पर पूरक, दृष्टिकोणों से लिखी गई हैं। पाठकों से निवेदन है कि वे दोनों का अवलोकन करें। श्री प्रकाशचन्द्र गुप्त और श्री 'मोहन' अवस्थी के प्रति भी हम अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिन्होने समय-समय पर सहायता प्रदान कर हमारा कार्य सरल बनाया।

हिन्दी विभाग
इलाहाबाद यूनीवर्सिटी
७ सितंबर, १९५९ ई०

संपादक

१
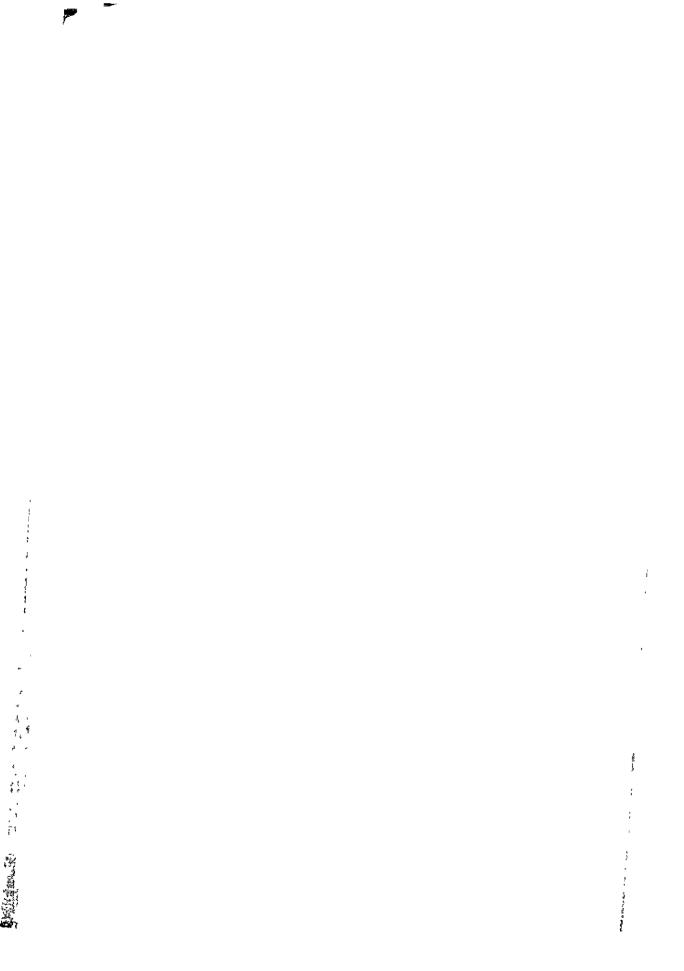
श्री लक्ष्मीकांत

अदना पत्र सरकार राजमान्ये राज श्री रघोजी भोसले सेना धुरंधर तहायें कला सचेत्रा के लैसली साहेब सुमासेन ईसमंती सेन मयाल फताहा सीरगुजीया के फीरीयाद हमारे हजुर आई। बरवे प्रात सीरगुजा के अमल है ते परंतु चुटीया नागपुर वाला के हातसा वरवे का अमल कर के पैसा लेते हुव ये बात अछी नहीं। मात सीरगुजा हमारा है। सो दरोबस्त सीरगुजा के अमल जाहा तोडी होवेगा वाहा तुम बोलने ही अवर चुटीया नागपुर के चौथाई हम लेते थे सो जब तुम्हारा अमल हुवा तब सो चौथाई मीलती नहीं। सो अब दरोबस्त दर साल हुई हजार के जमा अमानत रही है सो तुम्हारे सो बुझाये लेवेंगे अवर बरवे के जमादार साल हुई। साठ हजार तसलमात चुटीया वाले तर्फ है सो सकुजी भोसले ईन कुं दीलवायें देना। ईते रोज सो हम कुं मालुम नहीं था। बरवे वाले ने तुम कुंअरजी फीरीयाद लीखा सो अर्जी व प्रवाना चप्रासी के हात तुम ने भेजा तद वही अंजी व अपनी अंजी हमारे हजुर सीरगुजा वाले ने भेजे तद येकसां मालुम हुवा। अब तुम्हारे हमारे भाईचारा है अैसा नवाव व पेसवा कहते हैं। जो अंगरेज सो भाईचारा कर के हमारे काम पर चीत देते नही सो हम ने तुम से भाईचारा कर के तुम हमारे होके हमार प्रगन सीरगुजा के रहे थे सो तुम वट्टा का पैसा लेते हुव सो ना लेना। हमारे काम कुं घोटाई ना करना। हमार घाजगी प्रांत सीरगुजा के पाल के प्रगन उठारी के भया से बाच कर के जमा खाते रहे सो उस को तुमो ने कैद कर के पैसा मागते हव। तुम्हारे गया वाले का मसीभर अमल है। सो दोनों में गया वाले अगर हेदरावात के नवाब ये दोनो में कोई न लेना। हेदरावाद के नवाब बेलोजा के मोकरर जीमीन भाइ वाठाउठारी वाले के मसीयाव भर अमल है। मसीयाव के अमल तुम ने अगर कोई लेना उठारी के अमल हमारे है। पाल प्रगना हैई सो वहा तुम मत बोलना। अवर कोई बात की छेड़ाछेड़ी मत करना। छेड़ाछेड़ी करोगे तो बात बीगड़ जावेगी। ये बात गया वाले सीटन साहेब व हेदरावाद के नवाब ईन कुं कहलाय भेजना। उठारी की मामलत जगा हमारे सीरगुजा के पेठ मो रुजु करवाई देना और बरवे के अमल बदलना। नागवन सीघ कुं ताकीद कर के बरवा रुजु करवाये देना नहीं तो चुटीआ नागपुर की जगा खराब होवेगा सो ना करना। ये काम घातर सकुजी भोसले पठाया है सो मसाला

रुपये पाँच हजार तुम ने देना। ये पाँच हजार जे चुटीया नागपुर सों समुज लेना। संकुजी भोसले कहे सो प्रमान करना और सुकुजी भोसले ईन कुं २२ रोज रुपये पाँच षरच कुं देना। ये कहे सो मालुम करना। मीः आः सु० ७ सं: १८४९*

२ (क)

श्री श्री वासुदेव गये सहाये

नकल

श्री श्री वड़ा साहेव गरीव प्रवर सलामत।

आगे सरकार का खैर सलाह मोदाम रहा का वेहत्र चाहीअं जीममो हमारा बेहत्री होऐ। सरकार का अेकवाल सो हमारा पैर सलाह है। आगे हुजुर सो प्रवाना आ आवो मनोहर गांगोली आअे तीस सो हकीगत मालुम भजी। हुजुर का लीगनें वमौजीव सजावल को काम सपुरद कर दीआ। सुनने मो आआ की कपीतांन साहेव कुच करी कै वरदा डेरा आआ सो सुनकै हमारा जीव महाइत उदास हुआ। मो आपके मेहरवानगी सो कपीतांन साहेव तमाड आऐ। थोरा षजाना दाखील हुआ वौ मुवलक पैसा वाकी है। सो आप मेहरवानगी करी कै कपीतांन साहेव को लीषा जाऐ जो दो कोंपनी सीपाही तमाड तैनाथ रहे तो मुलूक वरजाऐ रहे वौ वाकी षजाना भी आदा होए। आगे प्रगनें नवागढ भोजराऐ भुइहार हमार नौकर है। सो तीन साल मो मालगुजारी ऐक पैसा नहीं दीआ वौ हमसो रुजू भी नहीं है। अब वरवै का राजा वौ सुरगुजे का राजा वौ जसपुर का राजा तीनो मो मीलकै भोजराऐ नीमकहराम हमारा परगना पैराल कीअे है। सो आप षावीन्द हैं। दो कापनी तीलंगा वौ ऐक तोपका हजुर सो हुकुम होए तो इस नीमकहराम को मार कै नीकाल देहि। साहेव षावीन्द है जीममो हमारा भला होऐ सो कीआ जाऐ। ज्याद अरज। मी० जेस सुदी ३ रोज संवत १८५२ साल—

अरजी महाराज श्री श्री देवनाथ साहु देव का—†

(ख)

नकल

श्री श्री वड़ा साहेव गरीव प्रवर सलामति

सरकार का षैर सलाह मोदाम का वेहत्र चहीए जीस्ते हमारी भला होए। सरकार के एकवाल से इहा षैर सलाह है। आगे कैफीयत पेसत्र दफेआत अरज लीया है

*Foreign Dept., 7th Jan., 1793, No. 25

†Foreign Dept., 24th Dec., 1795, No. 415

तीस्ते रौसन हुआ होगा। ऐक हजार ऐक रुपैंआ १००१) षजाना मौजुद हुआ सो हरसाल कीआ है बमौजीव चलान के दाषील होगा। गरीव परवर सलामत हमारे ज्मीदार जागीरदारों का उरगुलान हजुर मो षुव रौसन है। सो दो तीन ज्मीदार वसीआ वरह गैआ। दिवान जैकीसुन राए वौगैरहे तो नीकाले गओ थे। भोजराऐ नवागढ वाला वाकी था सो जेरवार हुआ था। परगना जगह सभवें अमल खराब हो गआ था। पहार भी अमल हो गआ था। ऐक पहार षोह मो रह गआ था। इसके वाद नवइआ राजा वो जसपुर परगना का राजा असला सुरगुजा वो सुरगुजा के राजे ने सभ मीली नवागढ का मदत कीआ। सभ मीली नरंगा करके नागपुर लुटने का इरादा रखा है। साक्ष सुवुह मे जाहीर होगा वलीक कासीर परगना मोतसील नागपुर वो सीकरी प्रगना दुइ प्रगना लुटे गए। वरवै ज्मीदारी हमारा अंगरेज वहादुर का अमला सो सुरगुजा नीचे करनें का इरादा वा धीन है। इसप्र सुरगुजा वाला भी दरपै है। जब तकी हमार मुलुक भर का वाल था अपना जागीरदार ज्मीदार तक तब तक हमही वहुत थे। अब दो तीन राज मोतफीक होंकै नरंगा कीआ है सो साहेव षावीन्द वाली मुलुक है। मुलुक कंपनी का है। हम वावस्ते दामन है। जो षत्र लीआ जाता है तो चुआडो का तंवीह होता है। हरी तरह मालगुजारी फरमावरदारी में हमारा वोहदें वराइ है। सो ऐक चकती कपीत्तान साहेव को आवै जो तवां तीर कंपनी वमौजीव दरखास्त के आवै तो कजीआ रफा हो जाता है। नही तो वडा रंजीस का वात आऐ लगा है। मोफसील वोकील जाहीर करेगे। पनाह दामन दौलत का है। जेआदा हद अदव। मा० जेठ सुदी ९ रोज संवत १८५२ साल

अरजी महाराजे श्री श्रीदेवनाथ साहदेव

३

राम १

नकल चीठी

ली० शाहुजी वो षाशी मेहत्र वो शाकीर मेहत्र जुमल पंच का शलाम। इहा खैर है। तुम्हारा खैर चाही जीश से खातीर ज्मा होइ। आगे म्हघु मेहत्र वो शाकल पंच को मालुम। महंघु मेहत्र तुम्ह शभ पंच को लेकर चले आवना। तुम्ह पंच तलवाना दीवो है जो कोइ मुल्हाइवो जा फेरा वो पचमहला वो धीनाइवो दुखन मेहत्र वो फेर अशीन चक जमनगढ सभ को जीई आवता। तलवाना का वात लगेगा शो तुम्ह चल आवना। ताकीद कर कर देर न होई। खत के देखते आवना। आगे वुध के रोज कलकता का प्रवाना पडा गआ है खुव वात होगा। शभ पंच के आवनें से

शवाल कीआ जाईगा। पंचमील अवकी वास है नहीं तो जेरवार करेगा। हुकुम नाम हो जागा*

४ (क)

मोहर अदालत
दीवानी जीला
बीहार १२-५०

हुकुम इसलहार जह कै पहीले इसके तारीख उनइसह १९ माह मइ शन १७९६ इशवी को बमौजीब चीठी मीशतर फररै साहेब कौलीकटर जीला बीरभुम के वाशते हाजीर होने राजाराम शाकीन मौजे बहादुरपुर परगने हवेली बीहार वो मोहीब अली शाकीन मौजे लहसुनां प्रगने शाहाबलीआ के शमना। इजहार उन्हो का शाहेब मौशुफ के इहा जरुर था। चीठी तलब उन्हो का मारीर पाआ था लेकीन उन्हो शे चपराशी के ताइ मुलाकात न हुआ। अब चीठी शाहेब कासल कलकता का लीखा हुआ पंदरही माह जुलाई शन १७९६ अगरेजी का इस मज-मुन से पहुचा के शाइद वै शभ इश डर शे के जीला बीरभुम के मंजील दुर है आना होगा मुलाकात चपराशीवो शे मुलाकात न दीहीन। वाशते दुर होने उर उन्हो के शाहेब कलकते से हुकुम दीहीन के अब इजहार उन्हो का बीच कचहरी अदालत दीवानी जीले बीहार के होगा। इस वाशते इशतहार वो। वो। डीढोरा दीआ जाता है के वे शभ इह डर बेजार को न रखें। कीश वाशते के अब इजहार उन्हो का बीच कचहरी अदालत दीवानी जीला बीहार के होगा चाहीइ के अपनो वेला इकठौ कर और मर्लाक माईन अरशो दश रोज के कचहरी अदालत दीवानी जीला बीहार के हाजीर होएँ। मतारीख २७ माह जौलाइ सन १७९६ इशवी मोतावीक ७ माह शावन शन १२०३ फशली को लिखा गआ†

(हस्ताक्षर फारसी लिपि में)

*Foreign Dept., 26 August, 1796, No. 303
†Foreign Dept., 22nd October, 1796, No. 393

(ख)

मोहर अदालत
दीवानी जीला
वीहार १२-५०

नाम तुम्हार केआ है	आतमाराम
कहाँ रहता है वो केआ काम करता है	वीरभुम मो रहते है वो कलकतर उश जीले के है तीन्ह के हम चपराशी है
जीले वीहार मो कीश वाशते आऐ हुव	सरकार के काम वाशते आऐ हैं
कवन शरकार वो कीश काम वाशते आऐ थे	तलव चीठी वनाम राजाराम के जीला वीरभुम के कलकतर के दशखत शो लाऐ थे
उअह हुकुम अमल मो ले आवने के वाशते केअ हुआ	जव हम चीठी शाहेव कलकतर का ले कर के इहा आऐ तव ईश जीले के चपराशी को हमारे कुमुक के वाशते तैनात कीआ गएआ। हजुर शो तव हम इहा का चपराशी के साथ वीहार गऐ। उहां शे काजी का आदमी शाथ ले करके मौः वहादुरपुर मो जहां उअह रहता है गऐ। उहां राजाराम नही मीला। ऐक कुशाध ने कहा जो शाहेवगंज गए आवा। कुशाध ने कहा जो दश रोज आगे अगर आवते तो पकरा जाता। अव घर मो नही है शाहेव-गंज गए आवा। उश के उहां इशतहार वो मोनादी फेरा गआ। जव उह नही मीला तव फीर के चले आऐ
जव तुम्ह शाहेवगंज उहां शो फीर के आऐ तव ईहा केअ हुआ	जव इहां फीर आऐ तव इहां भी चपराशी हजुर का उस के तलाश करने वाशते हमारे शाथ मीला। हम हजुर के

	चपराशी के साथ बहुत तलाश कीआ मगर कही ईहां भी राजाराम नही मीला
तुम्ह अपने दील मो जानते हुव जो कीश वाशते नहीं मीला	इवह हमको मालुम नही जो कीश वाशते नही मीला

फारसी लिपि में हस्ताक्षर आदि

(ग)

मोहर अदालत
दीवानी जीला
वीहार १२-५०

नाम तुम्हारा केआ है	हनुमांनदत
कहां रहते हुव केआ काम करते हुव	वीरभुम मों रहते है वो उश जीले के कलकतर के कचहरी में चपराशी हैं
जीला वीहार मों कीश वाशते आए हुव	मोहीव अली वो राजाराम ईन्ह दोनो असामीओ के गीरफतार करने के आऐ है
जब तुम्ह इंहा आऐ तब केअ हुआ	हजुर शो ईश अदालत का चपराशी हमारे शाथ उश के गीरफतार करने वाश्ते तैनात हुआ वो काजी प्रगने के आदमी को शाथ ले कर के मौः लहशोना जहां मोहीव अली रहता है जा करके उश को तलाश कीआ न्हीं मीला। उश गांव के लोग कहने लगे जो इहां शो भाग गएआ
फेर तव केआ हुआ	आखीर काजी ने अरजी हजुर के वाशते लीख दीआ। तव हम चले आऐ
उस गांव मो ईशतहार फेरा गएेआ था	ईशतहार वो ढींढोरा फेरा गएआ था तब भी न्हीं मीला
तब केआ हुआ	फेर उहां शों फीर कै साहेबगंज आऐ
तुम्ह अपनें दील मों जानते हुव जो कीश वाशते भाग गए आ	हम नहीं जानते

तुम्ह जानते हव जो उशके पकरने वाशते आउर भी कुछ नकशा हो शकता है	अब केआ हो शकता है

(घ)

मोहर अदालत
दीवानी जीला
वीहार १२-५०

नाम तुम्हरा केआ हे	आतमा राम
कहां रहता हैं वौ केआ काम करता हैं	वीरभुम मो रहते है वौ कलकतर उश जीले कैं हैं तीन्ह के हम चपराशी हैं
जीले वीहार से कीश वाशते आऐ हव	शरकार के काम वाशते आऐ हैं
कवन शरकार वौ कीश काम वाशते आऐ थें	तलव चीठी वनाम राजाराम के जीला वीरभुम के कलकतर के दशखत वो लाऐ थे

मोहर अदालत
दीवानी जीला
वीहार १२-५०

उह हुकुम अमल मो ले आवने के वासते केआ हुआ	जव हम चीठी शाहेव कलकतर का लेकर ईहा आऐ तव इस जीले के चपराशी को हमारे कुमुक के वाशते तैनात कीआ गआ। हजुर शाहेव हम इहां का चपराशी के शाथ वीहार गऐ। उहां काम का आदमी शाथ ले कर कैं मौ० वहादुरपुर मो जहां उह रहता है गऐ। उहां राजाराम न्ही मीला। ऐक

	कुशाथ में कहा के शाहेबगंज गआ। ऐ कुशाथ में कहा जो दश रोज आगे आगर आवने तो पकरा जाता अब घर भी नही है। शाहेबगंज गएआ बाद उस के उहा इश्तहार की मोनादी फेरा गआ। जब उह नही मीला तब फीर के चले आऐ—
जब तुम्ह शाहेवगंज उहा शो फीर के आऐ तव ईहा केआ हुआ—	जब ईहा फीर आऐ तब ईहा भी चपराशी हुजुर का उसके तलाश करने वाशते हमारे शाथ मीला। हम हुजुर के चपराशी के साथ बहुत तलाश कीआ मगर कहीं ईहा भी राजाराम नही मीला
तुम्ह अपने दील मो जानते हुत्र जो कीश वाशते नही मीला	इअह हमको मालूम नही जो कीश वाशते नही मीला

हस्ताक्षर आदि (फ़ारसी लिपि)

५

(फ़ारसी लिपि में) १२०० उमेदराय

(फ़ारसी में)

× × ×

शवाल शाहवे मजशरट शौ—
तुम्हारा ईजहार कौन हरफ मो लीखा जाए
जवाब
हमारा ईजहार हीदुवी मो लीखा जाऐ
चुनाराम ने जाहीर कीआ जो हम पर

मोहर नालीश कीआ है शो शभ झुठ
है। दावा अपना शावीत करे

(फ़ारसी में)

× × ×

शवाल शाहेव मजशटरट के तरफ शो
तुम्हारा इजहार कौन हरफ मो लीखा जाऐ
जवाव
हम हीदवी वात वोलते है

आग आइ जाहीर कीआ की ऐशोका माह शावन था। दीन तारीख इआद नही है। एक घरी दीन चढा था। तब हम दारोगा रामलोचन के पाश रोजी के वाशते जो दशतक चीठी ढोते है गए थे। उहा शो अपने घर को चले। जव दारोगा के दरवाजा प्र वाहर आऐ तव देखा जो रधीआ मोहन मुद्दइ का छोकरी रोती चली आव है। तव हम देखा औ चीन्हा जो रधीआ है। तव कहा जो रोती कहा जाती है औ काहे रोती है। तव कहीश जो मोहन के कवीला ने मारपीट कीआ है और मोहन भी मारा है शो दारोगा की हा नालीश करने जाते है। तव हम डांटा जो की वह नालीश करने जाती चल हमारे घर हम मोहनशीघ को डांटेगे। तव हम अपने घर ले गए। वाद इसके मोहनशीव की हां जाऐ के कहा जो तुम्ह अपना छोकरी जो कीवो मारपीट करते हो। नालीश करने जाती थी हम फेर के अपने घर लाऐ है। तव मोहन हमारे घर रधीआ को लावने चला। हमारे घर गआ तव नही देखा जो रधीआ कहां गइ है। तव हमारे कवीला कहा जो नोनी कांमीन की हां जाऐ के रही है। तव हम दोपहर शो कुछ वेला कम था तव जाऐ के देखा जो शच नोनी कामीन की हां है। तव मोहन अपने घर गआ। वाद इशके शाम को हम तालाव शो हो के दारोगा के दरवाजे प्र पहुंचे औ नुनी कामीन वजार शो उहां पहुंची औ मोहन भी अपने घर शो उहा, उश ही वखत आ आ। तव हमारे रुहवरु मोहन कामीन शो कहा जो हमारे छोकरी को कीवो रखा। तव कामीन कहा जो हम छपा के न रखा है आप ही हमारे घर मो आइ है। तव मोहन हमको शाथ लेके नुनी के घर गऐ। उहा रधीआ शो मुलाकात हुआ। तव मोहन कहा जो रधीआ चल। तव उअह कहा जो हम तुम्हारे घर नही जाहीगे। तव हाथ पकर के मोहन खैंच के उठा के गाली देते ले चला औ रधीआ भी रोती चली। जव दारोगा के दरवाजे प्र जो उश दरवाजा के शामने जाने का राह था पहुची तव नही गइ। वहुत रधीआ गुल कीआ औ मोहन वहुत उशको गाली दीआ। तव रधीआ कहने लगी जो हमको पहले भी मारपीट कीआ गाली दीआ अव भी इहा मोहन मारता है गाली देता है। तव वहुत जो गुल हुआ तव दारोगा के मकान शो चुनाराम वरकंदाज आऐआ औ कहा जो कौन गुल फशाद कर रहा है। अव ही दारोगा वहुत गुल शुना है शो चलो दारोगा के पाश। तव रधीआ कहीश जो हमको

मोहन मारपीट कीआ। गाली दीआ है शो इहा शो हमको जोर शो ले जाता है औ गाली देता है। तीश प्र चुनाराम रधीआ को औ मोहन को दारोगा के पाश लेगआ। तब दारोगा पुछा जो कौन गुल करता था। तब रधीआ कहा जो हमको मोहन गाली दीआ औ मारपीट कीआ है शो अब ही तुम्हारे दरवाजे शो पकरे जाता था शोइ गुल करते थे। तब दारोगा मोहन को कहा जो कीवो मारपीट करता है। तब हमारे रुबरुह मोहन कहा जो हमारी लौंडी है हम नही मारहीगे। तब दारोगा कहा अब ही जाव काल्ह इश को बुझहीगे इश वखत रात हुआ। तब रधीआ को मोहन कहा जो चल। रधीआ कहीश जो हम नही तुम्हारे घर जाहीगे रुपा के घर जाहीगे। इश प्र मोहन रधीआ को छोड दीआ। रधीआ हमारे घर न गइ। मगर हम देखते थे ओ नोनी कामीन के घर गइ। हम एतने जानते है। शेवाऐ कुछ नही जाने

शवाल मुदइ शो

जब हम डेढ पहर रात जात दारोगा की हां गऐ थे तब दारोगा ने हम को गरदनीआ देके नीकाल दीआ औ राधा को अपने मकान मो रखा था इआ नही

जवाब

हम डेढ पहर रात की बात नही जानते है औ न देखा जो राधे को दारोगा अपने पाश इआ मकान मो रखा है

शवाल शाहेब मजशटरट शो

बडे फजीर उशके रधीआ दारोगा के पाश गइ थी तुम्ह देखा था

जवाब

बडे फजीर दारोगा की हा न गऐ औ न उहां रधीआ को देखा था

शवाल शाहेब मजशटरट शो

मोहन का घर औ तुम्हारा घर केता तफावत प्र है

जवाब

हमारे घर शो मोहन का घर जैशे कचहरी का मकान शो शीपाही लोग को गारद का मकान है ऐतनै तफावत है। अशी कदम तफावा होगा। उसके दरमीआन मो शीरीफ दारोगा का घर वो बाडी है औ मोहन का घरबारी है—

शवाल

तुम्हारे रुबरुह बाद ही मोहन रधीआ को मारा है इआ तुम्हारे शो आउर भी रधीआ कदही कहीश था जो मोहन मारपीट कीआ है

जवाब

इसके शेवाऐ आउर कदही मोहन को मारते रधीआ को न देखा औ न कुछ राधे कहीश था औ न शुना था। मगर जब शो अबरीक राधे शो कजीआ हुआ तब शो रधीआ का कंचनी वैरागीन के पाश जाके रही है औ उश शो कुछ इलाका है इआ नही है हम नही जानते है। कंचनी बैरागीन है—

(फ़ारसी लिपि में)

× × ×

शवाल शाहेब मजशटरट शो
तुम्हारा इजहार कौन हरफ मो लीखा जाऐ

जवाब

हमारा इजहार हीदवी मो लीखा जाऐ हीदवी बोलते है। शेख बंगु गोआ इ जाहीर कीआ की ऐ शों का शावन महीना था दीन तारीख इआद नही है। शाम को हम रामलोचनदत दारोगा के पाश शलाम के वाशते गऐ थे तव उस वखत देखा जो रधीआ रोती कांदती दारोगा के पाश गइ औ उश के शाथ मोहन भी गआ था। तव दारोगा कहा जो कौन रोती है औ गुल करती है तव रधीआ कहा जो हम को मोहन के जनाना मो मारा है औ गाली दीआ है औ मोहन भी गाली दीआ है शो इस वखत जोर शो पकर कँ ले जाने चाहते है। तव मोहन दारोगा शो कहा जो कोइ इशको मारा नहीं है रुठ गइ थी शो लीऐ जाते थे। तव दारोगा कहा जो इश वखत जाते जाव रात हुआ। भला वडे फजीर इश वात को वुझेगें। तब मोहन हमारा हाथ पकरा औ कहा जो देखो भाइ घर का छोकरी है उश कों जो मारेगें तो दारोगा उश को भी शमुझने चाहते है। तव हम कहा जो भाइ अइआम अँसा ही है। फीरंगी का वखत है। अव तो अँशा है जो औरत खशम प नालीश करे तो उअह नालीश भी सुना जाता है। ऐतने जानते है। वश उश वखत राधा भी मालुम नही जो कहां गइ औ मोहन भी चल गआ। हम भी अपने घर चले गऐ

शवाल मुदइ शो

उश वखत दारोगा राधा को अपने मकान मो न रखा औ हमको अपने आदमी शो न नीकाल दीआ था

जवाब

हमारे रुहबरुह दारोगा राधा को अपने मकान मो भी न रखा औ न मोहन इआने तुम्ह को अपने आदमी शो नीकाल दीआ। राधा भी चली गइ औ तुम्ह चला गआ था

शवाल अैः शो

राधा का वात कहते हो जो दारोगा अपने मकान मो न राधा राखा भला जव हम चआ आऐ नालीश करने को तव तक राधा कहां रही थी

जवाब

हम इअह वात नही जानते है जो राधा कहां रही थी औ न शुना था जो राधा कहां थी

शवाल अैः शो

जीश रोज शो तुम रघुनाथपुर शो चले हो उश रोज शो तुम्ह को मुदअले शो मुलाकात हुआ था

जवाब

मुलाकात हुआ था

शवाल अः शो

कुछ मोहन इआंने हमारे मोकदमा का बात मुदअले पुछा था

जवाब

मोहन इआंने तुम्हारा मोकदमा का कुछ बात जीकीर न हुआ था

शवाल शाहेब मजशटरट शो

जब तुम्ह चत्रा को चला औ आप शो कहता है जो दारोगा सो मुलाकात हुआ था तब दारोगा कुछ कहा था जो चत्रा केआ वासते जाता है

जवाब

जब चत्रा को चले तब मुदइ के शाथे चले। दारोगा सो बाग मे मुलाकात हुआ। दारोगा कुछ न पुछा था चत्रा कहे को जाते हौ

शवाल शाहेब मजशटरट शो

जब शो कजेआ हुआ तीश के कैक रोज के बाद तुम्ह राधा को देखा

जवाब

जब कजेआ हुआ तब शो अब ही चत्रा चली है तब राधे को देखा था औ उसके दरमेआन मो कदही न देखा था

शवाल अः शो

कंचनी बैरागीन को जानते हौ

जवाब

कंचनी बीशटमी को जानते है। हमारे घर शो पाच छौ तीर के तफावत मो दुशरे महुला मो रहती है। औ कंचली को ऐक घर है औ कंचनी के घर मो राधे को हम नही देखा है

(फ़ारसी लिपि में हस्ताक्षर आदि)

× × ×

सवाल साहेब मजसटरट सो

तुम्हारा इजहार कौन हरफ मो लिखा जाए

जवाब

हीदु मो इआ बंगला मो लीखा जाए

कन्हाइ बडही जाहीर कीआ के एसो का सावन महीना जो गुजरा दीन तारीख इआद नही है। पहर दीन चढा था। हम गली मो दारोगा का मकान के आमने सामने है तहा दरखत काटते थे। तब उस राह मोहन चला जाता था और कहुता था जो हमारे राधे छोकरी कोन कौन तो चीवडा औ मीठाइ कै फुसलाए के रखता है। फेर मोहन कहा जो कौन रखेगा चुना बरकंदाज औ जगरनाथ रखता है। इस पर बुनाराम मो दारोगा के दरवाजा पर खडा था उअह इअह बात सुन के मोहन को कहा जो तुम्ह

हमको तोहमत देते हौ अच्छा दारोगा आवते है तब इसका तहकीकात होगा। तब मोहन कहा जो तेरे कहने सो रहेगे। तब चुना कहा जो न रहेगा तो फँस ही जाएगा तो तोहमत देके। तीस पर चुना मोहन का कमर खैच के भीतर मकान दारोगा के लेगए आ मालुम नही जो उहा केआ हुआ। जब एक घरी डेढ घरी हुआ तब मोहन बाहर जाए कै कहा जो देखो चुना मारीस है। हाथ मो लेहु चला है। तब हम कहा जो केआ जाने चुना न तुम्ह को मारा है इआ कीस तरह लेहु बहा है। एतने जानते है मगर केहुनी मो लेहु थोरा चला देखा था और मारपीट का कुछ नीसान न देखा था औ राधे छोकरी सो वाकीफ नही है और न उसको कदही देखा है। हमको रामलोचनदत लकडी काटने को मगाए आ साम मजुरी दीआ व ले गए बेडो अपने घर को

(फारसी लिपि में हस्ताक्षर)

× × ×

शवाल साहेब मजीसटरट शौ

तुम्हारा ईजहार कौन हरफ मो लीखा जाऐ

जवाब

हमरा ईजहार हीदुई मो लीखा जाऐ

गीरी माझी जाहीर कीआ के ऐशो कु शावोन महीना दीन तारीख ईआद न्ही है। हम नदुवाडा शौ रघुनाथ प्र आऐ थे और उश वोकत शाम हुआ था। फेर हम बी व दारोगा के कचहरी के मकान के तरफ जो रास्ता है ताहा आए। तब देखा जो मोहन औ ऐक (इसके आगे का शब्द कटा होने के कारण पढ़ने में नहीं आता) रधीआ छोकरी को लीऐ चला आवीता है। फीर जब दरोगा के कचहरी के नजदीक आआ (?दूसरा आ कटा हुआ सा है) तब रोने लगी और शोर कीहीश जो तुम्ह ई आने मोहन हमको घर शो नीकाली दीआ। अब तेरे घर न्हीं जाहीगे। ईश गुल होने पर चुनाराम बरकंदाज दरोगा के डेउडी शो बाहार आऐ कै रधीआ को कहा जो चल तुम्ह को दरोगा बोलावोते है। अर रधीआ औ मोहन दरोगा के कचहरी भीत्री गऐ। हम दरवाजा बाहर खडे रहे। ऐक लहमा के बाद देखा जो चुना बरकंदाज मोहन को धका देते दरवाजा प्र लाऐआ और मोहन को कहा जो तुम्ह जावो छोकरी न्ही पावैगा। फीरी तुरंते हम घर चला गऐ और मोहन का भी घर नजदीके था। उअह भी अपने घर चले गऐआ—

शवाल————मुदै शौ

उशके बाद तुम्ह कदही दरोगा के मकान मो राधे को देखा था

जवाब

हम उशके बाद ऐक रोज जो तुम्ह रधीआ को लावोने को भेजेवो था तब दरोगा के मकान मो गऐ थे। तब उश मकान मो रधीआ को दवा कुटते देखा था औ उश रधी शौ कहा जो चल मोहन घरे। तब वोह कहा जो न जाहीगे और उश वाकत

दारोगा रामलोचनदत अपने मकान पर न था मालुम ने जो कहा गाआ था और जो पहीले दारोगे के दरवाजा प्र खड़े थ तीश को तीन नार रोज वाद उश रोज देखा था। बाद उश के उहा ने (दे)खा।

रधीआ या राधे को जो मोहन परवरीश कीआ है शो जानते हो केतना रोजशो

जवाब

हम देखा था जो अंदाजी शात वरीश का रधीआ थी तब शो मोहन परवरशी कीआ है और अब अटकल शो कहते है जो उश का उमर शतरह अठारह वरीश का होगा

जौन रोज हम वरकंदाज चुना नीकाल दीआ दारोगा के कचहरी शो उशके बीहान दरोगा हमारे औ कवीला के पकरने वेआदा भेजा था ईआ न्ही जो रधीआ तुमह लोग प्र नालीश कीआ है

जवाब

हम ईआ बात ने जाने—

(फारसी लिपि में हस्ताक्षर)

× × ×

सवाल शाहब मजीशटरट शो

तुम्हारा इजहार कौन हरफ मो लीष जाऐ

जवाब

हीदवी मो लीषा जाऐ

मनोरथ वारी जाहीर कीआ के हम रघुनाथपूर मो जो गारद शीपाहीओं का है तहा देषा जो मोहन राधे छोकरी को लीऐ चला आव है। मगर इअह न्ही जाने शो कहा सो आवता था। जव थाने के मकान के नजदीक आगे और तब राधे वहुत गुल करती आवती थी तव चूनाराम वरकंदाज थाने के मकान सो वाहर आऐ के रधीआ सो कहा चल दरोगा तुम्ह को वोलावते है। तव रधीआ दारोगे के कचहरी मो गई औ पीछु शो मोहन भी गआ। तव रधीआ दारोगा के कचहरी मो रोने लगी औ हम शो मोहन सो कजीआ हुआ है। अब हम उश के घर न जाहीगे। इश पर हमारे रूवरूह दारोगा मोहन के वदे कहा जो कोइ है नीकाल देव। तव मोहन कहा और दोहाइ दीआ जो अऐशा हुकुम तुम्ह को नीकाल देने का नही है। फेर हम चले आऐ अपने डेरे पर और उस वक़्त हमारे रूवरूह मोहन कचहरी सो नीकाला गऐआ था। दोनो औ राधा औ मोहन को खेडे कचहरी मो छोड आऐ थे

२ सवाल मूदइ शो

फेर तुम्ह राधे छोकरी को कदही दरोगा के मकान मो देखा था

जवाब

फेर हम दो तीन रोज के वाद राधे छोकरी को दरोगा के कचहरी मो एंक रोज दावाइ कुटते देखा था। मगर इआह न्ही जानते जो कीश का दावाइ कुटती थी

औ दो रोज उश के बाद बैठा देखा था दारोगा के रशोइ का मकान जो है तहा। वशऐ ही तीन रोज दीन को राधे को दरोगा के मकान मो देखा था

३ सवाल रामलोचन मुदाआलेह सो

तुम्ह जो कहा जो चुनाराम वरकंदाज दारोगा की हा रधीआ को पकर ले गएआ था शो कौन दीन कौन तारीष कौन महीना कौन संवत सन कौन वेला दीन था इआ रात था

जवाव

दीन तारीख रोज ऐको नही जानते है। महीना सावन था। दो घरी रात आऐआ था तब चुनाराम वरकंदाज रधीआ को तुम्हारे कचहरी के मकान मो ले गऐआ था

४ सवाल शाहेव मजीशटरट शो

जव चुनाराम वरकंदाज रधीआ को लेने को वाहर कचहरी शो आऐगा औ रधीआ को कचहरी मो ले गऐआ उश वकत चुना वरकंदाज के हाथ दशतक देखा था

जवाव

दशतक इआ चीठी ऐको न देखा था

राधे छोकरी मोहन मुदइ की कौन है

जवाव

हम शुना है जो राधे छोकरी मुदइ का लौडी है और हम ऐशो का आ शान्ह सो उश के इहा देखा थ। आगे की वात न जाने और इअह न जाने जो कैशी लौडी पा सक है इआ कैशी है—

(फारसी लिपि में हस्ताक्षर आदि)

× × ×

(फ़ारसी में कुछ लिखा जाने के बाद)

सवाल साहेव मजसटरट सो

तुम्हारा इजहार कौन हरफ मो लीखा जाए

जवाव

हमारा इजहार हीदुइ मो लीखा जाए

हम कुछ नही जानते है

१ सवाल साहेव मजसटरट सो

रामलोचनदत मुदाले की हां रावे को तुम कदही देखा था

जवाव

नही देखा है और दारोगा के घर मो कदही हमारा आमदरफत भी न्ही है और हम कुछ सुना भी नहीं जो राधे को दारोगा अपन इहा रखा है

२ सवाल मुदइ सो

हम राधे को वहुत रोज सो परवरीस कीआ है

जवाब
तुम राधे को बहुत रोज सो परवरीस कीआ मगर हम साल स्वंत जानें नहीं के चारी वरीस हुआ पाच वरीस होगा

× × ×

सवाल साहेब मजसटरस सो
तुम्हारा इजहार कौने हरफ मो लीखा जाए

जवाब
हमारा इजहार हीदुइ मो लीखा जाए
कचनी रंडी जाहीर कीआ के रधीआ छोकरी दस रोज हमारे घर मो आए के रही थी। मगर उअह कहती थी जो दो महीना सों मोहन के घर सोनीकले। लेकीन इअह नहीं कहा था जो दो महीना कहा था और हम राधें को दारोगा रामलोचनदत के मकान मो कदही न देखा न उन्ह के मकान मों हमारा आमदरफत है और न राधें कहा था जो रामलोचनदत के मकान मों थे। दारोगा के मकान सों हमारा घर बहुत दूर पर है
(फ़ारसी में हस्ताक्षर इत्यादि)

× × ×

(फ़ारसी में कुछ लिखे जाने के बाद)

सवाल साहेब मजीशटरट शो
तुम्हारा इजहार कौन हरफ मो लीषा जाऐ

जवाब
हमारा इजहार हीदुइ देसी जुबान मो लीषा जाऐ
राधा रंडी जाहीर कीआ के हमको लडकइ सो मोहन सीघ मुदइ पाला है। मगर हम इस साल का सावन महीना पंदरह दीन गआ तब मोहन के कबीला शो भात कपरा वास्ते कीजीआ हुआ था। मोहन के कबीला शो भात कपरा मागा। तब कहा जो तुम खसम करो। भात कपरा वोही देगा। तुम्ह हमारे इहा कामीन इआने लौडी के तनीक शो कमाइओ। इस पर हम कहा जो जब खसम करहींगे तब तुम्हारे कीहा केव कामीन इआने लौडी त्रीह सो रहेगे। इस ही पर मोहन के कबीला हमको बहुत मारपीट कीआ। तीश पर हम दोहाइ शाहेब का दीआ वो मोहन के कबीला घर मो खून करता है। तब दो आदमी आऐ कै छोडाऐ दीआ। तब हम रोते रोते रघुनाथपुर के थान मो रामलोचनदत दारोगा के कचहरी मो गऐ नालीश करने और रोने लगें। तब दरोगा की हा उश वकत कचहरी वरखाशत हुआ था और उश वकत तीन पहर दीन का वेला था। तब दारोगा कहा जो केव रोती है। आज जाऐ कचहरी वरखाशत हो चुका। काल्ह तोहारा तजवीज कर देगे। तब हम रुपा एक हरकारा है उस के घर मो जाऐ के रहै। वीहान होते दारोगा के कचहरी जब चले दरवाजा पर पहुचे के उश ही वकत शुना जो दारोगा आशमान राऐ को गीरफतारी को जाते है और हमारे

रुवरुहरि आना दारोगा का वाहर हुआ। तव हम फीर क वजार मो भीख मागने गऐ। तव शो ऐक महीना करीव होगा गुलजारीमल के घर मो जाऐ कै रहै। वाद इशके दश रोज कंचनी रंडी वैरागीन के घर मो जाऐ कै रहै। फेर इश मोहन चत्रा शो पेआदा ले गऐआ। तव हीआ को आऐ है। वस ऐतने जानते है

१ सवाल मुदइ सो

तुम्ह रामलोचनदत दारोगा की हा दो महीना के करीव रही थी इआने

जवाव

हम दो महीना रामलोचनदत दारोगा केहा नही रहे है और ऐको दीन न रहै है। वो ही ऐक रोज नालीश करने गऐ थे

२ सवाल शाहेव मजीशटरट सो

तुम्ह कहा के शावन महीना पंदरह दीन वाकी था तव शो मोहन कीआ शो नीकले है। भला ऐतना रोज गुजरान कैय कर कीआ

जवाव

हम ऐक महीना गुलजारीमल के घर मो लौडी इआने कामीन का काम करके गुजरान कीआ और एक कपरा पुराना वो ही पेन्हे को दीआ था और पंदरह दीन कंचनी रंडी की हा भीख माग के गुजरान कीआ था और दारोगा की हा कदही न गऐ है। ऐक ही दफे जो नालीश करने गऐ थे। फेर कदही न और हम को मोहन की रंडी मारपीट कीआ भात कपरा वाशते। तव हम मोहन के पाव पर गीरे। मगर मोहन पाव शो हमको ठेल दीआ। कुछ तशल्लह न कीआ। तव उश के घर शो वाहर हुऐ थे। तव रोते रोते दारोगा की हा नालीश करने गऐं। मगर आरजी न लिखाऐआ था। तव दारोगा कहा जो कालह तजवीज कर देगें। इश पर वाहर होने आवते थे जो मोहन पहुचा। हमको धका देते आपन घर को ले चला। तव फेर हम गुल करकै रोने लगे जो तुम्हारे घर न जाऐगें। तव दारोगा के कचहरी शो चुनाराम वरकंदाज वाहर आऐ आ कहा जो कौन रोती है गुल करकै। जव हमको मोहन को देखा तव दोनो आदमी को कचहरी मो दारोगा कीहा ले गऐआ। तव दारोगा कहा जो आपु जाहु रात हुआ। कालह तजवीज होगा। मगर उश रोज दो दफे दारोगा की हा गऐ थे। ऐक दफे पहीले। हम फेर दुशरा दफा मोहन के शाथ। तव वीहान हो कै जो दरोगा की हा गऐ मगर दारोगा शो मुलाकात न हुआ। शुना जो दरोगा चुटा पकरने जाते है तव चले आऐ। उश के वाद दारोगा की हा गऐ और न दारोगा को देखा है*

(फारसी लिपि में हस्ताक्षर आदि)

---

*Foreign Dept., 1798, Letter Recd. 19th January, No. 42

६

श्री श्री वासुदेव राय सहाये

कम्पनी

श्री श्री बडा साहब गरीब प्रवर सलामति

सरकार का खैरसलाह मोदाम का बेहतर चहिये जिस्ते हमारा भला होये। सरकार के अकवाल तें इहा खैरसलाह है। आगें इहां का हंगामा फसाद मरहटे का पेस्तर दफेअ अरज लीषा है। हजुर मोबारक मो रौसन हुआ होगा। तिस का नियायत हुकुम आज तकि कूछ नहि फरमाआ गआ। गरीब प्रवर सलामति जौ तौ हुकुम पलटन कोपनी का तैनात कर दिया जाये तो अब कि दफे सुरगुजा तकि दषल का हुकुम दीआ जावे। जो इअह हंगामा दफा होये नहि। नागपुर के सरहद मो निकालने का इअह बडा बात नहि है। ऐतना काम हम देसु आदमी जमा करी के करी सकते है। अबर दफे जौ इअह कांम हुआ सो घोषे मो हुआ। हम इस्वात पर कगम रहे जो मुलुक अंगरेज बहादुर का है। साहब लोग उनके सेआने मो नहि गये तौ उन का ताकति नहि जो मुलुक मो दस्तअन्दाज होय सके। इस धोषे में मुलुक बेहुरमत हो गया। लाषो का माल लुटी ल गये। इस्वास्ते अर्ज लिषा है। औ ऐक अरज और है जो इस मुलुक का एक आदमी हरीरांम साह सो हमराज है षरच दे कै फौज ले आआ है उसका हम तंमीह करेगे सो कदहीं हजुर मो नालीसमंद होये तो नालीस न सुना आये। ज्यादा अरज अमला लोग अर्ज करेंगें। ज्यादा अदब। माह बैसाष सुदी ८ रोज स्वत १८५५ साल———*

अरजी महाराजे श्री श्री देवनाथ साह देव

७

श्री श्री वासुदेवरायसहाये
श्री श्री बडा साहब गरीब
गरीब प्रवर सलांमती

सरकार का खैर सलाह मोदाम का बेहतर चहिये जिस्ते हमारा भला होये। सरकार के अकवाल ते इहा खैर सलाह है। आगे मरहठा फौज का हगांमा प्रगना लुटी के ताषता राज करने का एहवाल पेस्तर अरज लीखा है। हजुर मोबारक मो

*Foreign Dept., 3rd May, 1798, No. 284

रौसम हुआ होगा। अव पांच प्रगनां लुटीके वरवे के सरहद नागपुर के सरहद के मोत-सिल मो डेरा किआ है। उनका कूमक सवार पेआदा सो रोज व रोज जमाव ज्यादा होता जा है। अव साम सुवह मो दौर करने वाले है। सो साहव षामीदवाली मुलुक है। अव षवरगिरी सिताव लीआ जाये व अैसा हुकुम होये जो अव की दफे सुरगुजा तकि दखल होये। तव तो (मूल में इस स्थान पर कुछ नहीं लिखा) का मुलुका वरोवर रहता है व हम मालगुजारी मो हाजिर रहते हैं। सिताव खवर लेने का ऐही सुरत है जो तमांड मो कपितान साहव है उनको हुकुम होय जो सिताव कुंच करके आवे। इहा हमारा देसु विदेसी जमैअत जो होये सो ऐकठा होये उनका तंमीह करे व आगे सवन साहव पलटन समेत आये थ तो उनके सीआने मो नहि गये (मूल मे इस स्थान पर कुछ नहीं लिखा) का हुकुम नही। सो सुरगुजा वाला भी मरहठे का मालगुजार है। उनका तहसिलदार सवार रहता है। ओही सवार देसी वीदेसी ऐकठा करी आवत है। उनका अैसा सुरत (मूल में इस स्थान पर कुछ नहीं लिखा) का मुलुक ताषता राज करे। वइ घर का हुकुम तो उनके सीआना जाना नहि तो इसमे हमारा षरावी है। सो अव उमैदवार है जो जलद षवरगीरी होय व नहि तो हुकुम होय। जो ऐक साल का माल-गुजारी भरी मुलुक के मालगुजारो का भाया के देसी वीदेसी जमाव कै उनका सजाये पहुचावे। जव मुलुक अमल मो आवेगा तव मालगुजारी मो दसावसो हाजिर होहीगे। इन वातो का जैसा हुकुम होये सो वजाय लावे। ज्यादा अमला लोग अरज करेगें। ज्यादह अदव। माह वैसाष सुदी १ रोज स्वत १८५५*

अरजी महाराजे श्री श्री देवनाथ सहाये

८

श्री श्री वासुदेवराय सहायै

कम्पनी

श्री श्री वड़ा साहव गरीव
प्रवर सलामति

सरकार का खैर सलाह मोदाम का वेहतर चहिये जिस्ते हमारा भला होये। सरकार के अकवाल ते इहा खैर सलाह है। आगे वरवे हरी रामसाह का हगांमा सुरगुजा से पांचसौ सवार पांच सौ वरकंदाज ले आवने का ऐहवाल ये सार इतलाये अरज लिषा था। हजुर मोवारक मो रौसन हुआ होगा। अव ता: १४ वैसाख को फौज वरवे सो नागपुर प्रगने मो आआ। द्रोवस्त को राम्वे प्रगनां वपनारी प्रगना कडउ परगनां वकासीर प्रअरगी प्रगना लुटी जलाये साफ किया। सैकरा जानांना मारे परे व जोहर

*Foreign Dept., 6th May, 1798, No. 286

भये व वदी गये। मरदाना लोग गाम गाम मारे गये। मंवसी मालका लुटीका तादाद कहा तकि लीषे। ऐक चीठी जैकी सुनराये का आआ। पांच सात गाम लूटी का ठेकाना लीखा है। हजुर मो गुजरेगा। और जैसा कैफीअत आवेगा सो पीछे अरज लिखेगे। गरीव प्रवर सलामती। अव तमामी हो चुका। हम अंगरेज व्हादुर के गरामी रहे। जो मुलुक कम्पनी का है उनकर मकदुर नहि जो दसा अंदाज हों ही। आगे पलटन समेत लवन साहव आये थे तो उनके सरहद मो नही गये। इसिमेउ ऐ सेर परे। हमको मालगुजारी सों फुरसत नहो। औ सवार पेआदा जमावतें आइ रखे सो अव हजुर सों षवर लीआ जाता है तों मुलुक अमला मो रहता है। मालगुजारी मो हाजीर रहते है व जव मुलुक वदअमल होगा तो हम माल-गुजार कहा के होहीगे। सो साहव षामोद वाली मुलुक है। इतला ये अरज लीखा है। हमारा ज्यादा मकदुर नहि सेवाये पनाह दामन दौलत का ज्याद अदर

अरजी——*

महाराजे श्री श्री　　　　माह वैसाख वदी १५ रोज १८५५

देवनाथ साहदेव

९

नकल व मौजीवअसल परवाने
व मोहुर अंकुजी भोसले सैना
धुरधर वनाम वलभद्र साह
जमीदार सुरगुजा——

मोसारुअलै नाम वलिभद्र साहू जमीदार प्रांत सुरगुजा। यांसि अकुजी भोसला सैना धुरंधर सुरसैन तीसाति सैन मया अलफ सन १२०८। ऐसा जो चोदिया नागपुर वाले के जगह तुम्ह नै लुटके लाये है वरवावाले जमीदार कों पेट मों लेकर ऐसा हुजुर मो जाहिर हुआ। सो इअह वात अछी नहि है। वो जगह फिरंगी का है औ उनका हमारा

*Foreign Dept., 14th May, 1798, No. 307

घर घरौजं दोस्ती है। उनके वोकील हमारे पास इस वाबे आए हैं। इस सवव पचीस सवार सँ सेकुजी कदम कों तुम्हारे पास भेजे है। सो देखते ताकीद। जो माल मवेसी लुटकर लाए हौ सो सुनली के छाडा तागवंत सो सब दे रखने। उनके पावती लेकर हजुर मे भेज देने। इसमे उजुर न करने। कभीं उजुर करोगे तो फेर वात रहने के नहि है। आगे ता: मह्लष्टी———*

१०

स्वस्ति श्री साहेब मेहरवान वडा साहेव गोरनर वहादुरजी : के श्री राजै अजीतसींघ कै सलाम। आगे साहेव कै परवाना चपरासी आइ। वडी खुसी भइ। आगे जे भइ सी हमरे इहा है। हमरे कायम से तआर है। अवर जे गुनहीन के है से वीना तीलंगाना ही पाइत से हम के दुसैती लगा। हम के साहेब हम के देख जे वीना हमरी हुकुम भइसी लीहे पाटे सेन हम के मानैन भइ सी दे ही से ऐह वात के मेहरवानगी करव। दुसै तीलंगा भेजी देइ। सव काम नीकली जाइ। औगुन ही के मुह मारा जाइ। जे पुनी अैसा वात फेरी कवही न केड करै। वीना तीलंगा के आऐ काम नाही वनत। हमरे कायम है से तआर है। जव के मरजी होइ तव के तआर है औ हमार ओकील साहेव के हुजुर टीका है जे अरज कहै करै से हमार कहा मानव। आगे साहेव अपने हाथ से ऐक वीरा पान हमरे ओकील के हाथ देव जे मे। हम साहेव के खुसामती करी से। अतना हमार अरज मानय। आगे हमार लोग घाट के उपर ही छा पोती आके वसा है। चारी हजार क देव इआ से हम अमल नाही पाइत। से ओह खातीर जौ हमकी छुकीहा तौ साहेव के हजुर जाइ कै अरजी दीहेनी। साहेव वीना जाने इहै कही तहै। जे राजा हम से सकसी करत है से हम साहेव से गुनहक वात कवही न करवे। वुदी साहेव कै है। आगे सुभ मी : अगहन वदि ५ केलीखर मुकाम वरदी——

श्री साहेव मेहरवान वडा साहेव के हजुर खत पहुचै :———†

११

राम १

स्वस्ति श्री वडा साहेव मेहरवान। गरीव परवर वडा साहेव के ली: श्री राजा अजीतसींघ देव देवाना कै सलाम। आगे परवाना आइव। वडी खुसी भै। वरदा

*Foreign Dept., 6th November, 1799, No. 356
†Foreign Dept., 23 November, 1799, No. 377

के आसो बभनन के बावही से हमरे इहा बरदा नाही है। खुनी के गांव बन्दा है। से हम के साहेब दोस्त कै बोला से दुइ सै तीलगा देइ तौ बरदा दी आइ देइ और मैं इसी औखनी के चइ कै हम नौने के हजुर घर कै पठइ देइ औ हमार लोग औजी भी है। तब नेके हमार उकील अरजी करै। तब नेके मंजुर करब। आगे औआदा—

सुभ मीः अगहन बदी ११ सनौ के लीखा मोकाम सब नदी—
जौक जाती खुनी स बरा चराइ तौ रानी के बाहर कै देब—
स्वस्ति श्री बड़ा साहेब के हजुर अरजी पहुचै*

१२

अखलास आसार राजे बलभदर साही जीमीदार परगने सुरगुजे बआफीअत बाशन्द। अगरचे मोकदमा वाजे तकरार का जो तुम्हारे तरफ से वो राजा मरहुम का तरफ से वो जो आदमी के हुकुम बरदार वो बीच मुलुक तुम्हारे है उन्ह का तरफ से हक मो सरकार अंगरेज बहादुर के हुआ है सो नही कहना। बेहतर है वो फरे करे जिकर उस का करना महज नालाऐक वो सीरीफ बेहासील है। लेकीन तुम्ह वो राजा मरहुम वो तुम्हारे हुकुमपरदारे मजकुर बहुत बर बीच मुलुक वो देआर अंगरेज बहादुर के हजुम लाऐ कै जबरदसती वो जोराबरी बे जाऐ कार, ऐसे परगना बरबा को अपने कबुजे वो तसरुफ मो लाऐ कै गाव परगने मजकुर को वो भी बहुत गाव परगने नागपुर को आग लगाऐ कै जलाऐ छोर कै बहुत रहने वाले गाव मजकुर को नाहक कतल कीआ वो बहुतो को कैद वो पाऐं जंजीर कर कै साथ अपने ले गऐ। और भी भवेसी वो माल वो असबाब वो जीनीस गाव मजकुर का बेठ कर कै भी लूट कर कै लूट तराज कीआ है। वो बाऐस दोसती दीली वो दोसती दिली वो दोस्ती तहदीली के जो मदत बहुत से दरमेआन अंगरेज बहादुर वो हर काम तुम्हारे इआ ने माहाराजै रघुजी भोसीला के काऐम है। वो गवरनर जनरल साहेब बहादुर दाम अकबालहु नै लसकर फतेह नीसान अंगरेज बहादुर को मना कीआ जो हरगीज वासते बदला लेने जुलुम वो जोराबरी वो कामे बद के जो तुम्हारे से जाहीर मो आआ है। सरहद अपने से बाहर नही जाही वो बदला हरक तो ना मोना सीवकात लेईवा भी। गवरनर जनरल साहेब बहादुर दाम अकबालहु नै इआतबार इस बात पर कीआ था जो राजा मरहुम वो तुम्ह वो रफीक तुम्हारे माफीक हुकुम हाकीम अपने जो कइ ऐक बेर मोकदमे मालुमे मो मना कीहीन है हरक तो नालाऐक वो नामोनासीब अपनो से बाज आए कै सर राहरासती वो रासतबाजी पर आऐ होगे। मगर जब गौरनर जनरल साहेब दाम अजलहु नै पर-

*Foreign Dept., 26 November, 1799, No. 384

अकसड़ आतवार अपने दरीआफत कीआ तव नेहाऐत नाखुस है के साथ इस वात नसीहतो अंगरेज वहादुर की वौ मेहरवानगी हजुर की जो हाल पर राजा मरहुम के वौ तुमारे वखसीस होती रही है वौ साथ अइह सव हुकुम अपने के जो वहुत वेर मोकदमे मनाही हरकतो मालुम के पाऐ हो अव तक जुलुम वौ वीदत रैअतो पर जे मुलुक अंगरेज वहादुर के हाथ नहीं उठाए हव। काम काज वेजाऐ अपने से वाज नही आए हव। वलीक वाद पहुचने पीछले परवाने महाराज रघुजी भोसीला के जो ता० २० माह सावन सन १२०९ फसीली के तुमारे कने पहुचा था औ अहवाल उस का खत मो जव साहेव जीले रामगढ के जो लीखा हुआ पचीसवीं माह मजकुर वौ सन मजकुर का था भी लीखेव था। उस के वाद भुखनसीघ वौगैरह चेरो हंगामे पर दाज के जमा कर कै साथ ले कै और जमइअत वहुतो को तावेदारो वौ हुकुमवरदारो अपने से सामील कर कै तमाम गाव वौ सभ देहात सरदार मुलुक पलावुका लुटत राज कीआ। इस वासते हजुर से गवरनरजनरल साहेव वहादुर दामजीलहु के जरुर हुकुम हुआ के वदोवसत ऐवज लेने काम काज वंद का वौ वदोवसत वदला लेने वीदत वौ जुलुस का जो हाथ से राजा मरहुम के वौ हाथ से तुमारे वौ रफीक लोग वौ मददगार तुभारे के जाहीर मो आआ है कीआ जाए। वौ भी हुकुम हुआ के तदवीर मीलने का माल वौगैरह असवाव वौ चीज जो लुट गआ है कीआ जाए। वौ आगे पर वासते पनाह रैअत वौ परजे के इस तौर सो वदोवसत कीआ जाऐ के जामीन मालवर जो लाऐक कवुल करत वौ पसद हजूर के होऐ तुम सो लीआ जाऐ। जैसा के वासते सराजाम वौ अंजाम देने हुकुम मजकुर के लसकर फते नीसान हमारा आवता है वौ तरफ से गवरनर जनरल साहेव वहादुर दाम दौलतहु के हुकुम हम पाआ है कि तुभ सवाल सभ को जीस माफीक तपसील कीआ गआ है जलदी कवुल मनजुर करो सवाल पहीला—आदमी वो अपने को के वीच परगने वरवा के तुमारे तरफ सो है जलदी उठाऐ कै अपने पास वोलाऐ लेव वौ हर ऐक तलुक वौ इलाका अपने परगने मजकुर सो उठावो वौ अगर दवा जीमीदारी परगने मजकुर का इआ दुसरा दवा कोइ तरह का रखते हव तो इजहार करो व मोकदमे दावै तुभारे गवरनर जनरल साहेव वहादुर हुकुम तहकीकात का फरमावहीगे वौ माफीक कानुन वौ आइन अंगरेजी के दावे मजकुर को फैसल करहीगे। सवाल दोऐम—भुखनसीघ वौ होरीलसीघ वौ पहलवानसीघ वौ लछुमनसीघ वौ सीवराजसीघ वौ करनसीघ वौ उमरसीघ वौ वंचनसीघ वौ काकलुखटपार वौ राजकुमार केसरीसीघ वौ वीमनसीघ वौ चुरामनसीघ वौ मोतीराम वौ जगजीतसीघ वौ चुरुपसीघ वौ खरगसीघ वौ हरखुसीघ जमा सतरह आदमी चेरो हंगामे परदाज को है हवाले वौ सपुरद लसकर फतेनीसान के हमारे करो—सवाल तीसरा—तुभ कौलकरार करो जो हरगीज आदमी अपने को हुकुम नही देहुगे के सरहद मो अंगरेज वहादुर के जाऐ कै लुटपाट करै। अगर नागहानी आदमी हमलाइआन तुमारा जाए कै सरहद मजकुर मे लुटपाट करैगा तो आदमी वो मजकुर को गिरफतार कर कै हवाले सरकार अंगरेज वहादुर के कर देहुगे वौ माल असवाव

लुटा जाऐगा सो फेर देहगे। जो कुछ नोकसान सरहद मजकुर का होगा सो नीमा करहीगे—सवाल चौथा आदमी वो सरहद अंगरेज बहादुर को जो वख्त सौ राजा मरहुम के कैद है वौ तुमारे वखत मो कैद हुए है तुरंत माफीक दरखासत उन्हो के छोड देव—सवाल पचवा—तुम कौल अहद करो के जो कुछ कमवेस परगना बरवा वौ नागपुर सो बाऐस पहीले हुजुम राजा मरहुम के वौ सबब तुमारे वौ तानेदारो तुमारे वौ सबब हुजुम पीछले के परगने पलावु मो जो नोकसान पडा है सो खाहे कीमत उस का इआ वो ही चीज सभ ऐक ऐक कर कै फेर देहगे। जैसा के फरद हीसाब चीज मजकुर का वो भी फरद कीमत चीजो माल कर का तरफ से राजा परगने नागपुर के वौ तरफ (इतना भाग खंडित है) परगना पलावु के साथ परवाने के जा (इतना भाग खंडित है) चीज फरद मजकुर मे सो महकार करोगे तो तजवीज वौ (इतना भाग खंडित है) होगा कीस वासते के हजुर मो न्हीं मनजुर है के कोइ चीज इआ कीमत कोइ चीज का फाजील तुम सो लीआ जाऐ—सवाल छठी—चाहीऐ के तुम तुरंत जामीन अपना जो पसंद वौ मनातर (यहाँ खंडित है) हजुर मो भेजे रवाने इस तरफ करो के मौजी व सफाई (यहां खंडित है) र वौ दोसती जाहीरी का तुमारे जाहीरी मो आवे वौ जीस वखत तुमारे तरफ से वोहदेदार कौलनामे का वौ जीमा करने वाला जामीन वौ सवालो हजुर का खाहे वाकीफ इआ मोखतार मे मोखतारनामा वासते बदोवसत वौ दुरसत सवालो के वौ दुसरा कौलकरार जो सवालो मजकुर सो इलाका रखै है आवगा अव्वल मोलाकात मे दखल पावैगा। अगर आप आवहीगे तो भी बेखतीस हम सो मुलाकात होगा। अगर कुछ देरी वौ दीरंगी तुमारे तरफ से व मोकदमे बदोवसत कबुल करने सवालो के होगा तो हुकुम गवरनर जनरल साहेब बहादुर दामअकबालहु का ऐसा है के जलदी तदबीर लेने बदला का कामकाज बंद राजा मरहुम का वौ तुमारा वौ बदोबसत बदला लेन जुलुम सीतम कम जो हाथ से राजा मरहुम के वौ हाथ से तुमारे हक मो रहअत वौ परजे मुलुक अंगरेज बहादुर के हुआ है कीआ जाऐगा। तब आखीर को नतीजा उस तदवीर वौ वदोवसत का ऐसा होगा के मुलुक तुमारा तुमारे कबजे सो बाहर आवे कै तहत वौ ततरुफ मो गवरनर जनरल साहेव बहादुर वौ महाराजे रघुजी भोसीला के आवेगा। वौ उस वासते के दरमेआन गवरनर जनरल साहेव बहादुर वौ महाराजे रघुजी भोसीला के बहुत मुदत से वौ बहुत दीन से हद भर दोसती वौ नेहाइत अखलास है इस वासते गवरनर जनरल साहेव बहादुर महाराजे साहेव मवसुफा को खत व मोकदमे चलानी पलाटन फतेह नीसान हमारे तरफ मुलुक तुमारे के लीखा है। वौ भी हम ने अभ्भी महाराजे मवसुफा को खत अपना वासते मोकदमा मालुम के वौ व मोकदमे मजाल मसलहत अंजाम होने हुकुम सभ हजुर के लीखा है। वौ हर चंद के के मनजुर हुजुर बरतरका ऐसा है के बदला पीछएले दीनो का वौ जामी जीआइदे का आसान तरह सो अंजाम पावैं। लेकिन जीस सुरत मो सहुलीअत सो नही होगा जब सखती सो बदला लीआ जाऐगा। तो नतीजा करनी तुमारे इस माल वौ जान तुमारे का होगा वौ नेहाइत सखती

वौ सखत मोसीवत तुभारे मसलहतकरों पर पडेगी वौ वदला लेने मो कसुर वौ फतुर सभ मसलहतकार वौ तावेदार तुभारे मोकरर तवाह वौ खराव हो हीगे वौ कैसी कुछ खरावी कै तवाही तुम्हारे मुलुक मो पडेगी। वौ हीसाव कसो ऐसा मालुम होता है के तीन लाख सात हजार चार सव ऐकावन रुपैआ पाच अना ऐक पाइ जीमे तुभारे वावती लुटने परगने नागपुर वौ परगने पलावु के चाहता है सो लाजीम है के जवाव जलद इस परवाना का लीखोगे। ता: १४ माह दीसमर सन १८०१ अंगरेजो मो: २५ अगहन सन १२०९ फसीली—*

१३

गरीव प्रवर आदीलजमां सलामती। आगें अरज अंरा जो प्रवाना हजुर का पहुँचा ऐहवाल सव दरीआफत मो आआ। वे मजमुन वे महावरे लीखने का हुकुम हुआ। सो हम अपने जानीव तो वे मजमुन नहि लीखा था। जीहि मजमुन सो श्रीमत महाराजै साहेव सेना धुरंधर महाराजै श्री रघुजी भोसलै वहादुर दाम ऐकवालहु को समुझत हंही उस हि माफीक वा कवाऐद अंगरेज वहादुर को समुझते हंही। वौ वमोकदीमे प्रगने वरवै के जो वात हम नै माफीक हुकुम श्रीमत महाराजै साहेव के आप के हुजुर मो अरज लीखा था सो सव वातें हमारा आप के दरीआफत मो खीलाफ मालुम होता है। आप फरमावते है जो श्रीमत महाराजै साहेव सैं वौ श्री गवरनरजनरल साहेव व अंगरेज वहादुर सो दोस्ती वौ ऐगांनगीहद जेआदे है सो इअह वातें हम लोगों प्र रोसन है। जो नेहाऐत ऐखलास दोनों साहेव मो है तिस ही वास्ते हम जैसा खावींद श्रीमत महाराजै साहेव को वैसा अंगरेज वहादुर को समुझते हंही। इस्वास्ते हम अपने जानीव खीलाफ वाते हुजुर मों नहीं लीखा था। चाहीजै जो उंमैदवार है जो जैसा दोस्ती ऐखलास दोनों साहेव मो है तिस माफीक करन साफ हजुर सो फरमाआ जाऐ वौ हमारा लीखना स्व हजुर मो खीलाफ समुझने मो आआ तो जो कोर के जीमीदार इआ दूसरे सखस हजुर मो आप के हमारे नाम का नालीस कीआ है। तीस का ऐक भला आदमी वौ ऐक भला आदमी हमारा वौ ऐक भले आदमी अंगरेज वहादुर के तरफ से श्रीमत महाराजै साहेव के हजुर मो जाऐ। इस मोकदमे कों तजवीज अदालत हजुर महाराजै साहेव के होऐ। उहां जैसा इनसाफ हक राजवी के रोऐ सौ फरमाआ जाऐगा। सो माफीक हुकुम वजाऐ लावहीगे। आप ने हमारा लीखना स्व खीलाफ फरमाआ। तीस वास्ते इस मोकदीमे कों हजुर मो श्रीमत महाराजै साहेव के मोकरर कीआ है वौ प्रगने वरवै तो पुसतोंह सै हमारा है वो अमल तसरुफ मो भी हमारे है। सीवाऐ इसके तीन प्रगना हमारे त्रफ का आप के जीमीदारो ने दवाऐ कै अपने सीकम मों

*Foreign Dept., 23 December, 1801, No. 321

कीऐ है। औ अल प्रगने चुटीआ नागपुर मो कोरामें वौ प्रगने पालामुमो छेछारी वौ डटांरी। इस मोकदमे का हम नै श्री महाराजै साहेब के हुजुर मो अरज कीआ था सो इस वातों का तजवीज मो अदालत हुजुर के होगा औ भुखनसीघ वै रोजै रह के मोकदीमे मो लखा फरमाआ सो हमारे जगह मो सीरीफ अपने जान की पनाह वास्ते आऐ थे वौ हम ने अपने मदत अंगरेज वहादुर के मुलुक मारने लुटने को नहीं दीआ है। जब आप का कदम मोवारक का अवाइ इस त्रफ हुआ तब चेरो लोग हमारे जगह सो भागी के अपने मुलुक मो गऐ इस दहस्त सो जो माऐद के फौज अंगरेज वहादुर का आआ है। हम लोगो पकड़ा देहीगे औ सरकार से छव स्वाल लीखा आआ सो हमारे दरीआफत मो खीलाफ मालुम हुआ। पहीले स्वाल के जवाव हुकुम हुआ की वरषै सो आदमी अपना उठाऐ मागो। दावा अपना छोडो सो पुस्तों मै इलाका हमारा उठा नही। आजु कीस सुरत सै उठेगा। तव नालीस अदालत मो करने का हुकुम हुआ। सो इस ही वास्ते हम हुजुर मो श्रीमत महाराजै साहेव के अदालत मोकरर कीआ है। उहा जैसा हुकुम होगा सो वजाऐ ले आवहीगे : जवाव दुसरे स्वाल का: भुखनसीघ पहलवानसीघ सीवराजसीध वौ लछुमनसीघ गैरह जमा सतरह आदमी १७ सो अव हमारे अमलदारी मो नही है। अंगरेज वहादुर के अमल मो है। तलास करी लीआ जाऐ। तीसरे स्वाल का जवाव जब अंगरेज वहादुर के अमले से हमारे जगह मो कोई लुटमार नही करहीगे तव हमारे जगह का कोइ अगरेज वहादुर के जगह सै लुटमार न करहीगें। अगर नोकसान होगा आप के मुलुक का तो हम नीसा करी देहीगें यौ आप के अमल से हमारे जगह का नोकसान जाऐगा तो आप को भी नीसा कर देना पडगा। चौथे स्वाल का जवाव। कौन आदमी राजा मरहुम के वकत सै वौ हमारे वकत से कैद मों है जो छोडी देही जो कोइ इस वातो का दावेदार है तीस को खडा कीआ जाऐ। सावीत पहुँचाऐ देही। जो कौन आदमी कैद मो है। पंचवा स्वाल का जवाव। नागपुर वरवे पलामु के लुट नोकसान का लीखा फरमाआ सो वरवै तो हमारा मोकरर वाजीव है। तव नागपुर पलामु का वात सो हम अपने सुपद वौ वे दावा के कोई जगह का चीज नही लीखा है। दोनो मुलुक प्र कैक चीजो का हमारा दावा है वौ इस वातों को जो अदालत मो श्रीमत महाराजै साहेव के हुजुर मो जो फैसील होगा सो हम को मंजुर कवुल है। छठऐ स्वाल का जवाव। जामीन वौ मोखतीआर का हुकुम हुआ सो जामीन वौ मोखतीआर हमारा दोनो हुजुर मो श्रीमत महाराजा साहेव के जाऐगा। जो हुजुर मो नफा होगा सो कवुल है। वौ वदला दावा लेने का हुकुम हुआ जो श्री गवरनर जनरल साहेव वहादुर का हुकुम हुआ है सो आप मोखतीआर मालीक है वौ हम सै तो अंगरेज वहादुर के त्रफ से कोइ वातों का कसीर नही हुआ है। तव जबरदस्ती के राह सों आप के मरजी मों आवै सो कीआ जाऐ। वौ हुकुम हुआ जो मुलुक तोहारा तसरुफ मो श्रीमत महाराजै साहेव वौ अंगरेज वहादुर के आवैगा सो तसरुफ मो श्रीमत महाराजै साहेव के तो हर हमेसा सो है। जव महाराजै साहेव अंगरेज वहादुर को सपुरद करी देहीगें तव हम अंगरेज वहादुर सो दस्तवदस्ते हाजीर होहीगे। औ हुकुम हुआ जो सलाह-

कार वौ नजदीकी तोहारे जो इस कारवार मो है तीस का सजाऐं होगा। सो इस वातो मो तकसीर तो हमारा है। आप को दुसरे सो तालुक नही। इअह वात तो आप के इनसाफ सो वहुत दुर है। औ आप सो स्व वातो का स्वाल जवाव होता है। तहा वरवे प्र नागपुर का फौज आप के मरजी साथ इआ वेइलाऐं आऐ है। सो इस वातो का हमारे उन के तकरार होने चाहता है। तीस्वास्ते अरज स्रकार मो कीआ है। ता: ९ स० १२०९ फसली माह पुस सुदी ८ रोज मो: वीक्रामपुर*

अरजी महाराजै श्री श्री वलभदरसाही देव

१४

जीमीदारान वौ जागीरदारान औ रैआआन तमाम रहने वाले छोटे वडे पर-गनै उदैपुर मो तालुके सुरगुज को मालुम करना के वमौजिव हुकुम गोरनर जनरल साहेव वहादुर वौ मालीक सलाह महाराजै रघुजी भोसीले के वासते अवादी मुलुक सुरगुजै वौ सलतनत राज राजै वलभदर साही जमीदार के वौ इहा सो दुर करने सजाए देने सरकस हरमजादे पीतमर साही सुवेदार वौ सगराम सीघ लाल के लसकर फतहे नीसान का हमारा इस मुलुक मो आआ है। लेकीन हजार मेहनत वौ मौसकत कीआ गआ के राजा वलभदर साही हाजीर होऐ। अपने राज पर वरकरार काऐम रहे वौ सुवेदार वौ लाल मजकुरान गीरफतार होही। लेकीन राजा वलभदर साही अव तक हाजीर नही हुआ के उस को सरफराजी तमाम सो राज सौपा जाऐ। वौ राजै कलेआनसीघ जीमीदार परगने उदैपुर का हजुर मो खीलाफ करार कीआ वौ हुकम हजुर का नही सुना वौ अपना वेहतरी नही दरीआफत कीआ। तव भी उस को मीलावने का वासते वौ राज सलतनत का वासते लसकर हमारा परगने उदेपुर मो पहुचा है। लेकीन राजा कलेआनसीघ का मीलने का वासते सात रोज का मइआद दीआ गआ था। हाजीर नही हुआ। छीप रहा। मगर वहुत खफगी हजुर मो इस वासते नही था। वौ देखादेखी मो सामने लसकर के रैआ तो काम इसी वौवैल चुहाड वदजात नै वेठकर कर कै ले गआ। वौ कइ ऐक वदगी चीज वौ कागज सुरगजा का तरफ सो लसकर मो आवता था। लसकर का आदमी सो चुहाड वदजातो नै कोट का घाट पर लुट लीहीन वौ आदमीवो को जान सो मार डालीन्ह वौ जखम कीहीन वौ रसता वंद कीहीन वौ तरफा सो महाराजै रघुजी भोसले साहैव के हरकरा हमारे वासते चीठी लीऐं आवता रहै उस हरकारा मो सो ऐक हरकारे कडराजै घाट पर मार डालीन्ह जान सो। इस वासते खावीद का अपने नीमकहरामी कीहीन। वौ अव इस वासते परगने उदैपुर को लुटा मारा जलाआ जाता है। वौ भी इस के कैफीअत का

*Foreign Dept., 27 January, 1802, No. 53

इसतहार दीआ जाता है कै इस के दरीआफत करने सो हुजुर का रफाहीअत वौ सत्रुर मालुम करैगा वौ अपना कसुरी समुह कै अपना आफसोस करैगा। सो जानना। ताः ९ माह अपरेल सन १८०२ अंगरेजी मो: २२ माह चैत सन १२०९ फसली*

१५ (क)

(फारसी लिपि में)

जो सरत सभ के वासते मोलाहीजे हुर बाजी पंडीत साहेब वकील माहाराजे रघुजी भोसले वहादुर के तरफ से करनैल जुनस साहेव सरदार फौज अंगरेजी के वासते वंदोवसत वौ दुरुसती (अस्पष्ट) अवदी मुलुक सुरगुजे के आगें पर बीच मोकाम सुरगुजे के लीखा हुआ। सरह इअह है—सरत १—जो दलील सभ नीता करने वालों वौ दलीले जाहीर उपर जुलुम वौ जवरदसती संगरामसीघ लाल वौ पीतमर साही सुवेदार के वीच वकत रहने वौ हुकुमत परगने सुरगुजे के वीच हक रैअत वौ परजे मुलुक अंगरेज वहादुर के करते थे खुव तरह से तुम्हारे मोलाहीजे मो गुजराना गआ वौ इकस्तरे तकसीरवारे मजकुर की जैसा के चाहीजै वौ लाऐक है सावील पहुचौ। पस चाहीजै के आप तरफ से माहाराजै साहव के करार देह के अव तकसीरवारे मजकुर कधी बीच मुलुक सुरगुजे के नही आवही नौ कीसी ऐक वजह से दखल अपना नही कर ही। वलीक जीस सजाऐ के लाऐक हो ही अपने सजाऐ को पहुचाऐ जाही वौर हरगीज उन्हो के सलाऐ मो जताऐक छोड़ वाउ नही होऐ—सरत २—चाहीजै के तुम्ह तरफ से माहाराजे साहेव वहादुर के ऐकरार करो के जो लोग अदना इआ आला रहने वालो मुलुक सुर-गुजे सो वाद उतरने के नहर पार के वीच लसकर हमारे जाऐ कै मील कर कै खैरख्वाही वौ रीफाकत हमारा कर कै काम सभ खैरख्वाही का इआ ने जासुसी इआ साथ रहना इआ राह देखलावना इआ खवर हरीफो की हजुर मो पहुचावना इआ सेवाऐ इन्ह कामो के जो इलाका कीआ गआ उन्हो को कीहोल है ऐवज वौ रइसत मो इस वात के उन्हो पर कधी काटे नोकसान वौ जुलुममाल वौ जान का नही पहुचै। वलीक

*Foreign Dept., 26 April, 1802, No. 166

कभी कुछमात वौ ओकीरं इस मात का उन्हो से न करही—सरत ३—तुम्ह तरफ से माहाराजे साहेब के मोखतार हव। अगर कोइ दावा सदर कीसु तौर का उपर परगने वरवै के जो कदीमुल अइआम से तहल वौ तसरुफ वौ तअलुक ये अंगरेज वहादुर के है रखते हो तरफ से माहाराजे साहेब के इनकार करो वौर अगर जीमीदार सुरगुजे का दावा जीमीदारी का परगने मजकुर सो होगा तो अदालत अंगरेजी मो रुजु करैगा—सरत ४—हरचंद वा ऐस लड़कापन वौ नेआजमुदेकारी राजा वलभदरसाही के वौ कमससीवी उस के जो अव उरा के उपर गालीव है जवाव मोकदमे वौ मआमल गुजरे का जो हुए आ उस से तलव करना मोनासीव नही है। वलीक उअह जगह मेहरवानगी वौ रहम के है नही जगह खफगी वौ गोसे का है। लेकीन उस वासते के खलासी राजा मजकुर का हाथ से संगरामसीघ लाल के वेठौर वे ठेकाने है वौ आबादी कौ वंदोवसत वौ इजराऐकार मुलुक सुरगुजे का वेदुन कोइ सरदार के वहुत दुसवार है वौ बीच सुरत नही मोकरर होने सरदार लाऐक के रफाहीअत रैअतो परजे मुलुक अंगरेज वहादुर का जो नजदीक सुरगुजे के है नजर मो नही आवता। इस वासते मोनासीव है के हुकुमत सदर वौ सरदारी मुलुक मजकुर की गुजरेने अइआम लडकाइ राजा मजकुर-त की व सरत राजामंदी के वीच कुदरत वौ कवुजे लाल-जगरनाथ सीघ के हुवाले वो सपुरद होऐ इस सरत पर के लाल मवसुफ इजराऐ काम मुलुक का मोहर वौ सन्द सो राज मजकूर सन्द सो राजा मजकुर के करता रहैं वौ दर सुरत नही खलास होने राजा मजकुर के भी इसी सुरत से इजराऐ काम मुलुक का कीआ करै वौ दर सुरत मर जाने राजा मजकुर के आलम लड़काइ मो इआ आलम जवानी मो जव के उअह कोइ लड़का न्हीं रखता होऐ तो तीलकराज का लाल जगरनाथसीघ के हक उस का है पावैं सरतं ५—जेव आइंदे मो वासते मजवुती रफाहीअत वौ आराम रैअतो वौ परजे परगने हम सरहद सुरगुजे के नेहाऐत जरुर है के कोइ सखस अैसा मातवर वौ लाऐक चाहीजे के लेआकत तंवीह करना वौ अदव देना हंगामा करने वालो वौ फसादीवो का रखना होऐ वौ भी तंबीह करना वौ अदव देना वौ सलाऐ करना वदजातो का खसलतो पैदाऐस वौ आदतो जनम का उस के होऐ उस वासते के लाल जगरनाथ सीघ वीच सभ काम के कावील इआतवार वौ लाऐक इआतमाद के पाआ जाता है। मगर जे वाऐस जोर वौ जुलुम वौ जवरदसती फसादीवौ के वहुत माल वौ असबाब बीज उसका खराव वौ वरवाद हुआ असवाव जाहीर मो उस को लेआकत का मो जरुरीआत लीखें हुऐ सदर की मालुम नही होती है। मोनासीव है के अफसर जागीर सुरगुजे की जो वाऐस वाजे सवव के खाली है तरफ सेह हमारे अपने कवुजे मो रखता रहैं वौ इअह वात तरफ से माहाराजे साहेव के भी कवुल वौ मनजुर वौ मजवुल वौ उस तवार होऐ—सरत ६—जेव कवुजा वौ तसरुफ करने में जागीर मजकुर के भी ताकत वौ हुकुमत लाल मजकुर का साऐद के चंद मुदत (तक का) तक माफीक जरुरी आत मालुमे के नही होगा इस वासते मोनासीव है जो तरफ से माहाराजे साहव के सीवाहम एं कारकुन माफीक दरकार वकद ऐह ते आज के वासते थानेदारी सुरगुजे के

आवही वौ मोकाम सुरगुजा मो मोकाम कर कै माफीक कहने वौ बतलावने लाल मजकुर के अमल मो लावही वौर हुकुम वौ काम लाल मजकुर को मुलुक मे मजबुत वौ रेवाज जैसा के चाहीअै वैसा देह। जव ताकत उस की माफीक जरुरीआत मालुम के होऐ तव अगर सलाह होऐ तो सीरफ थानेदार इआने फकत सीपाह मजकुरत लेकै हजर मो माहा-राजै साहेव के जाहो—सरत ७—चाहीअै के तुम्ह वेतहासे अैसा वंदोवसत करो के राजा वलभदरसाही वहुत जलदी मे मुलुक सुरगुजे मो दाखील होगे वौ जब पहुचे तब सपुरद लाल जगरनाथसीघ के रहै वौ उस वकत मो वीच मुलुक के उसतहार वंदोवसत काम सुरगुजे का माफीक लीखने सदर के होऐ वौ भी दुरुसती वौ आराम वंदोवसत मालुमे का अमल मो आवै वौ भी दोनो तरफ से करार वौ मदार वौ कौल वौ करार मजवुत कीआ जाऐ—सरत ८—अगर राजा वलभदर साही वकतरवानगी लसकर हमारे तकी इस मुलुक मो दाखील नही होगा तो पहीले रवानगी लसकर मजकुर के हुकुमत वौ मोखतारगी मुलुक सुरगुजे को माफीक ऐकरार दोनो सरकार इआने सरकार गवनर जनरल साहेव वहादुर वौ सरकार माहाराजै साहेव वहादुर के सपुरद लाल मजकुर के कीआ जाऐगा—सरत ९—अगर चे सभ नोकसान ऐस वरस का जो सरकारदारी वौ वदजाती से हंगामा करने वाले सुरगुजे के की वावजुद मना करने माहाराजे साहेव के वेखलीस वौ वे अटक वीच सरहद अंगरेजी के सवव लुटमार के हुआ है वहुत है। वौ हरचंद माफीक काऐदे साफ वारीक के चाहीऐ के पहीले सभ नोकसान वौ खरचा आवने पलटन का फसादीवो वौ हंगामा करने वाले सो लीआ जाऐ वौ वीच कुरत वे मकदुरी फसादीवो के सेऐ रासती वौ वाजवी वौ सवाव से लाऐ कतल व जर वौ माल नोकसानी के सरकार उस तरफ के है काम वासते के मना करना वौ रोकना वौ हरकतो नालाऐक सो वाज रखना फसादीवो का कवुजे कुदरत वौ अखतीआर मो उस तरफ के था। लेकीन वो फसादीवो को सेवाऐ तन वौ जान अपने दुसरा मकदुर वौ तमाम अदा करने साल नोकसान का न्ही है वौ अव हमारे दरीआफत मो ऐकान है के अगर रहने वाले इस मुलक के ताकीत वदने वौ मकदुर अदाऐ करने माल नोकसान का रखते तौ भी अैसा तौर के जौस मो वे तकसीर लोक अगह तकसीर वारो के पकडही हरगीज गवरनर जनरल साहेव वहादुर इस वात को पसंद न्ही फरमावते वौ रवा नही रखते वौ सेवाऐ इस के अव वीच मोकदमे तलव करने माल मालुमे के तरफ माफी सेआई मार दो नीत मो वाजीव है। गवरनर जनरल साहेव वहादुर से हुकुनामा नही पाआ है इस वासते हम को मनजुर है के इसह मोकदमा इस मोकाम मो फैसल वौ रफा न्ही होऐ। वलीक इस मोकदमे का इनफसाल दोनो सरकार पर मवकुफ है। इस सरत पर फैल न्ही इफा होने वौ फैसल होने से इस मोकदमे के इस मोकाम मे इनकार दाव का तसीअर न्ही होऐ—सरत १०—चाहीऐ के तुम्ह तरफ से माहाराजे साहेव के कौलकरार करो के वीच वंदोवसत सदर के कुछ तफावत वौ तजावज वौ तागीरी वौ तवदीली न्ही होगा वौ जव तक लाल जगरनाथसीघ वमौजीव सीरीसत के अदाऐ करने मे मालगुजारी सरकार के वौ

मो हुकुम मालीक अपने के हजीर रहै तब तक जाऐ मेहरबानगी
र सरकार माहाराजे साहेब के होता रहै---सरत ११---अगर नागहानी
बासद आगे पर कोइ बदजात वासते लुटने के बीच परगना तहम
के जाऐ कै लुट मार कर कै माल (या) असबाब लै आवे
ीफ वो तकसीरवार कोम्पनी का मुलुक मुरगुजे मो आऐ कै पनाह
तुम्ह करार करो के माल वो असबाब लुट का वो हरीफ
को तुरंत मागने पर हवाले अमले कोम्पनी अंगरेज बहादुर
ो जब तुम्ह इअह सरत सभ जो लीखा गआ है कबुल वो
व हम कुंच कर के अपने मुलुक वो सरहद मो आहीगे। वो जेब करज
ोआदती से संगरामसीघ लाल वो पीतंमर साही सुबेदार के उपर राजै
के हुआ था वो अदाऐ करना] करज मजकुर बीच फहम दरीआफत
जकुर के महज उपर लुटमार मुलुक के मवकुफ था अब मोनसीब
के सभ करजदारे महाजन मजकुर तलवी करज का अपने राजा वो
ा से नहीं करही। अगर करजदार महाजनान मजकुर तलवी करहीगे
ुर को मोखतारगी काम लीखइऐ क कैद कर बइ देब राइ होगा।
मइ सन १८०२ अंगरेजी मोतावीक माह जेठ सन १२०९ फसीली

सही

(ख)
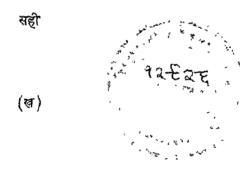
खलपरताप उदीत परताप सपुंन महाराजधीराज श्रीजुवराज श्री श्री
देव श्री महाराजधीराज कुमार श्री श्री लाल संगरामसीघ देव ऐतो
छमनसीघ तथा भूखनसीघ वो सीवराजसीघ वो भोगतासीव वकस सीघ
छेम कुनो चाहीजे सुनी के खातीरजमा होऐ। आगे राउर खत आऐ।
। आगे तुह लीखे जे हम आऐ के सरकार के चरन तर गीरत हइ से
बात के अंदेसा मत राखो। राउर मरजी दरही आइ से इ बात करो
बात के अंदेसा मत रखो। रउरे आइ वो हमार काम पर जोल जवाल
मदन घर से वो कमाऐ के देइ तो रउरा मनसा माझी के हाथ आइ।
खवास के हम भेजते हइ। वो गहवर ठाकुर गइले है। जे कुछ रउर
। वो हमार कहाउत रउर से कहीहे से जानब। बहुत का लीखो। आगे

हम ठकुराइ के छोड के हम रौरे के पेट मे लेत हइ से बात के नीमाह करे के चाहो। चइत वदी ४ रोज समत १८५८ साल—
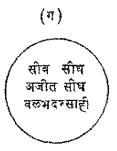
(ग)

सौसती श्री परवलपरताप उदीतपरताप सेपुंन महाराजधीराज श्रीजुवराज श्री श्री वलीभदर साही देव ऐ तो लछमनसीघ वौ सीवराजसीघ वौ भुवनसीघ वौ होरीलसीघ वौ पहलवानसीघ के। कवुलनामा लीखी देल। जे जयत कवुल करे है से भरी लेह। जेआजती नही करी। वौ जवन कामकाज करी से पेट में के के करी वौ उन कर सीव सीव मान मरजाद राखी के काम करीवो। चारो भाइ के घर के परजा छाडी कै सभ के लेइ—

मीती असाढ सुदी १४ रोज संवत १८५८ साल के मोकाम सहर वीसरामपुर मह

गोआह सुवेदार पीतंमरसाही — गोआह वांहदार जगनन्नाथ

गोआह दसखत ठाकुर धुंधाराम — परवानगी लाल संगरामसीघ देव कै

(घ)

सीव सीघ
अजीत सीघ
लभदर साही

सौसती श्री परवलपरताप उदीतपरताप सपुंन माहाराजाधीराज श्री जुवराज श्री श्री वलीभदर साही देव श्री माहाराजधीराज कुंमार श्री श्री लाल संगरामसीघ देव ऐतो मआ पतर श्री राजमारन कुंअर भुवनसीघ वौ वखतौरसीघ वौ लछमनसीघ कै। आग इहा कुसलछेम है। राउर कुसलछेम चाहीजे सूनी कै खातीरजमा होऐ। आगे राउर खत आऐल। समाचार पावल। रउरे वेसे लीखेन आगे रउरे हजुर आइ सभ वात राउर वारा पर होइ नही तो कीवु वाहेदार वौ वैजु खवास के हम महरी भेज लहइ। रउरे भेंट करव रउरा खातीर वात होइह से करी देहै। वहुत का लीखी।

राउर खत वनवरा ले आएेल रही। से रउरे वडा आदमी वलाएेन तेह पर हम भेज लंहइ से जानव

मीती चैत सुदी ११ रोज संमत १८५८ साल

(ङ)

श्रीराम १
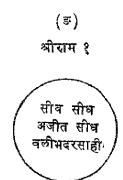
सौसती श्री परवलपरताप उदीतपरताप सपुन महाराजधीराज श्रीजुवराज श्री श्री वलीभदर साही देव श्री महाराजकुमार श्री श्री लाल संगराम सीघ देव ऐतो श्री भुखनसीध वौ सीवराजसीव वौ लछुमनसीघ वौ पहलवानसीघ के। मालुम आगे सुवेदार हजुर आइन। से तुह कुछ सलामी ले कै रतारातो आइह। जवन काम कहीह तवन हम करी। देव सवार पेआदे के काम होइ से देव से खरच देना जाइ से जानीह। आऐ मे देरी मत करीह। मीती असाढ सुदी ९ रोज संमत १८५८ साल

(च)

सौसती श्री मउआर भखनसीघ श्री सीवराजसीघ वौ लछुमनसीघ वौ पहलवान सीघ ली : सोसती ठाकुर धुधाराम श्री सुवेदार पीतमरसाही कैस जोहार। आगे कुशलछेम दुनो चाहीजे सुनी कै खातीरजमा होऐ। आगे सरकार के खत जात है वेलावे के से तोह हजर आइह। इहा कुछ वात के अतर नही है। खरीच तोहार होइ

फा० ५

फौउद मे कमती नही है से तुहसी ताव आइह। अवन तुह कहीह से हम करी देव। वहुत क. लीखी। मीती अषाड सुदी ९ रोज संवत १८५८ साल—

(छ)

सौसती श्री मउआर भुखनसीघ वो लछुमनसीघ वो होरीलसीघ वो पहलवानसीघ ली: सोसती श्री ठाकुर धुघाराम श्री सुवेदार पीतमरसाही श्री वोहदार परानाथ कैस जोहारी। आगे कुसलछेम दुनो साहीजे सुनी के खातीर जमा होऐ। आगे सलामी वावत दस भइस है वो अव की पहलवान सीघ तीनो जन सात भइस कहो गएेल है। जमा सतरह मुडमइस १७ वेन मातवरदेव वुझ्वा भर मती देव औपचीस गाए है से न आ जाऐ देव। २५ वीच मती करव ओ चीठी के अवज ले के ऐक सवाग सीताव आउव वो चीठी के सामील सतरह भइस वो पचीस गाएे लेते आनव हमरो आपन वारों सीपाह के समुझासे के होइह औ रउरे आपन कर काटा से होसीआर रहव। अवे जआऐ के देरी है। हमरल जाऐ देरी नही है। वहुत का लीखी मीती सावन वदी ३ रोज सवत १८५८ साल। सही भीठुआ के जवानी जनी है—

(ज)

सोसती श्री परवलपरताप उदीतपरताप सपुन महाराजधीराज श्रीजुवराज श्री श्री वलभदर साही देव ऐतो मआ पतर मउआर होरीलसीघ औ लछुमनसीघ औ भुखनसीघ औ पहलवानसीघ के। आगे कुसलछेम साही। दुनो जे सुनी के खातीरजमा होऐ। आगे भइआ देवान वीगुसीघ के चउसठी मुड भइस देह ६४ वीच मती करीह। ताकीत वुझीह। मीती आषाड सुदी पुरनवासी सन १८५८ साल। आगे असी गाऐ मधे सऐतालीस मुड गाऐ ४७ देव। वीच मती करव। ताकीत वुझव।

(झ)

सोसती श्री पवरलपरताप उदीतपरताप सपुन महाराजधीराज श्रीजुवराज श्री श्री वलभदरसाही देव श्री महाराजधीराज कुमार श्री श्री लाल संगरामसीघ देव एतो मआ पतर मउआर भुखनसीघ तथा होरीलसीघ औ सीवराजसीघ औ लछुमन-सीघ औ पहलवानसीघ के। आगे कुसलछेम दुनो साहीजे। सुनी के खातीरजमा होऐ। आगे खत आऐल। समाचार पवल। रउरे लीखेन है जे फवद भेजव। चीठा जात है से फवद के समुझाव करत हइ। पीछे से जाइवो वो दुनी सरदार वो कीनुधीह घर

सै ऐ डेठ सव आदमी सुधा गएेल है से सामील हाल होऐ के काम करव वौ मुलकी भी रहै तव से आपन काम करव। होऐ (तनीक वरखा पातर) तव सवार पहुची है से जानव। वौ चीठी वावत असी रुपैआ ८० घटल है से भेजी देव। आगे राउर खातीर फीरीगव ठकुराइ के खत आऐल रहै तेह पर हम सावीक मुदा ठकुराइ पर लीखी भेजल हइ। से अव तो रउरा वदले हम देखाव परेन से अव अंतर मती वुझव। वहुत का लीखी। आगे रउरे चारीस वाग मधे ऐक सवाग खत देखत मातर आउव वौ पलामु मे सोहरा उठाऐ देव जे हम चाकर राखल है दुइसऐ सवार। मीती सावन सुदी रोज १२ सवत १८५८ साल

		रुपैआ
भइसी	३०	१५०
भइसा	४	२०
		१७०*

१६ (क)

श्रीराम १

इजहार जुवानवदी भुखनसीघ चेरो साकीन चादो परगने पलामु सवाल १—तुम्हारा कीआ नाम कीस का वेटा कौन जात कहा रहता है—जवाव। हमारा नाम भुखनसीघ। वाप का नाम धुतराऐ। जात चेरो। साकीन चादो। परगने पलावु मो रहते है—सवाल २—जीस वखत पलावु मो लुट होने लगा तुम्ह ही फौज का सरदार था—जवाव—हम ही फौज के मालीक सरदार थे—सवाल ३—पोखरी मो रामजी चौधरी मारा गआ तव तुम्ह साथ था इआ नही—जवाव—हम फौज का साथ नही थे लेकीन हमारे हुकुम सो फौज गआ था—सवाल ४—इअह सभ दगा फसाद सुरु से आखीर तक जो पलावु मो हुआ है इस का कीआ सवव कीस वेवरे सो हुआ है—जवाव—पदरह सोरह महीना हुआ के अदालत का हरकरा लछुमनसीघ चेरो को गीरफतार कर कै चतरा लीऐ जाता था। तीस पर हम वौ सीवराजसीघ वौगरहे चेरो मदत कर कै हरकरा सो लछुमनसीघ को छोडाऐ लीआ और तुरंन्त लछुमनसीघ अपना लड़का वाला लेकै सुरगुजे मो वैठाऐ दीआ वौ उअह वौ हम औ सीवराजसीघ औ होरील सीघ औगेरह चेरो एकठा हो कै सलाह कीआ वौ चोरी चुहाडी करने लगे। इस के वाद सुवससीघ चेरो साकीन पदुमा पलावु का हमारे पास आऐ क कहा के अव राजा चुरामन राऐ सो वौ अखौरी सीव चरनराम सो भी वीगार हु आवौ। हम लोग सो तो वीगाड

*Foreign Dept., 15 June, 1802, No- 237

हही है। सो अव अखौरी भी चतरा जाते हैं। कहीन हैं के तुम्ह चतरा आवो। इस का सलाह देहगे। वोभी सुवंससीघ कहीन के अह वात अछा नहीं कीऐव जो दंगा फसाद मुलुक मो उठाऐ वत वकी ऐव तो खुव तरह सो करो। चतरे का दरवार अखौरी समेत हम वनावहीगे औ इस काम को समुझ बुझ कै करो। उहा का जो हकीगत होगा सो तुम्ह को लीखहीगे—सवाल ५—ऐक चीठी जो लीखा हुआ अगहन सुदी १२ रोज का है सो सुवंससीघ चेरो का लीखा हुआ है की नहीं पहचानो—जवाव—के इस चीठी को हम पहचानते है सुवंससीघ का लीखा है। इस का मुदा ऐही है के दरवार मो दरवारी सो अखौरी वुझ कर तव काम करहीगे वो चतरा के दरवार वैसे वनावहीगे वो हमार वहुत खातीर जमा लीखेन है—सवाल—६—ऐक चीठी दुसरा के जीन्हो नै अपना नाम नही लिखा है सो कीस का है जो माघ सुदी ४ रोज का लीखा। कीआ मतलव सो लीखा है—जवाव। ऐ भी चीठी सुवंससीघ नै हम को लीखा है। मजमुन इस का ऐही है के तुम्ह जलदी कीऐव वो तुम्हारा मुदइ ठकुराइ सीव परसाद सीघ है उन्ह को उपर सो तोडावते वो हम सो मुलाकात करो। कीछ देने को ठहरावो। तव दरवार मो काम वनैगा—सवाल ७—ऐक चीठी जो तुम्ह ने सुवंस सीघ को लीखा है पहचानो। तुम्हारा है इआ नही माघ सुदी ५ रोज का लीखा—जवाव। हमार ही लीखा हुआ है। अपना दसखत पहचानते है। सुवंससीघ को लीखा था के हमारा मालीक तुम्ह हव इआ अखौरी है। अवकी दफ दरवार वनावो। औ तुम्ह सो जो करार ववेज हुआ है तेही छोडी दुसरा वात नही होगा—सवाल ८—तुम्ह मुलुक मो दंगाफसाद करने लगा तव तुम्ह को कीआ वुझने मो आआ था—जवाव। दरवार कारो ऐसो हमारे मो ऐसा आआ के धुम फसाद करने सो हम अपने हक इनसाफ को पहुचहीग—सवाल ९—जो सुवंससीघ का जुवानवंदी तुम्ह ने सुना है सो तुम्हारे वुझाने मो साच है इआ खीलाफ है—जवाव। हमारे वुझने मो वो सारीमात मो सुवंस सीघ का जुवानवन्दी सभ साच है—सवाल १०—राजा चुरामन राए इआ ठकुराइ सीव परसादसीघ इआ आउर कोइ आदमी तुम्ह को कीछु दुख दीआ—जवाव—राजा वो ठाकुर वो ठकुराइ वो अखौरी सभ कोइ हमारे गाव मो वठी लगाइन वो दुख दीहीन तव हम ऐसा काम कीआ—सवाल ११—पहीले पखौरी राजा का साथ हो के तुम्हारे उपर वठी लगआ वो दुख दीआ वो फेर कीस तरह तुम्ह को चतरा का दरवार वनावने को कहा औ मुलुक लुटने का सलाह दीआ वो तुम्हारा रफाहीअत कीआ—जवाव—जव तक राजा का वो ठाकुर वो ठकुराइ का ऐक सलाह था तव तकी कीछु दुख हम को नहीं था। जीस रोज सो अखोरी राजा के पास आऐ सलाह देने लगे तव मुलुक मो औ हमारे गाव मो वंठी लगाइन वो दुख दीहीन वो और जव अखौरी को राजा से तकरार हुआ चतरा जाने लगे तव सुवंससीघ चेरो सो दरवार वनावने का वात औ मुलुक मो धुम फसाद करने का सलाह हम को कहलाए भेजीन—सवाल १२—सुना जाता है के तुम्ह कीछु रुपैआ चतरा भेजा था—जवाव—पंतुराम को दस रुपैआ दे के चतरा सुवंससीघ का पास भेजा था औ कहलाऐ भेजा के इअह रुपैआ सुवंससीघ अखौरी को देहगे औ

इअह वात अखौरी को समुझाऐ देहगे के दस रुपैआ नही है दस हजार रुपैआ के माफीक है—सवाल १३—सुवंससीघ तुम्हारा आदमी इअतवारी था। जवाव। सुवंससीघ हमारा मालीक दरवार के था औ जो वात के कहता था सो सभ वात हम को साच मालुम होता था औ हमारा इअतवारी आदमी था—सवाल १४—सुरु से आखीर तक इस हंगामे मे फसाद मो कोइ गाव अखौरी का लुटा है इआ नही—जवाव। के जव सुरगुजे का फौजं तरहसी तरफा लुटने को गआ था तव हमारे सुनने मो आआ के ऐक गाव अखौरी का हुरी है सो आधा गाव लुटा गआ। लेकीन हम फौज का साथ नही थे—सवाल १५— जो चादो मो सो कागज तुम्हारा जमादार नै भेजा था और फीर वरगढ कवन सा जो कागंज आआ है वौ भी तुम्हारे साथ आआ है। सो सभ कागज तुम्हारा असल है इआ नही—जवाव—जो कागज हमारा है सो सभ असल है। ताः १८ माह मइ सन १८०२ अँगरेजी मोतावीक १-जेठ स० १२०९ फसीली मोकाम सुरगुजा नगर—

सही भुखनसीघ चेरो साकीन
चादो परगने पलावु जो
जुवानवंदी लीखाआ सो
सभ साच है

गो: पलटनसीघ हवलदार
गो: भवानीवकस हवलदार
गो: लला उमरावसीघ घडीआली

(ख)

नं० १

सोसती श्री वावु भुखनसीघ ली: सोसती श्री राज राजभारन दीवान श्री वली-नाथ साही के जोहारी। इहा कुसलछेम है। राउर कुसलछेम भले चाहीजे। सुनी के हमारे चीत आनंद होऐ। आगे खत आऐल। हकीगत पाऐन तो वहुत वेस लीखेन। कहेन की राउर सीवाना पर हम सरन आऐल रही। तहा से हमरा लुटपेठ भइल। से सरन केल जेआ राखी गोहार करी। अस कहीन से वेसे कहीन। तव इ वात मे वीच नही है। से हम तो अव ही खाली परे हइ। से फौज हमार हाथ मे नही है। फौज गैल है। सोहागपुर से फीरे तो हम कौनो वात रौरा से कहीऐ। अव ही तो हमरा कावु नही चले वौ अइसन मनसुवा है तो इतो वड़ा काम है। तव काजे रउरे जवर से कमर वाधव। तव रउरे फौज पाव। अइसे वातेवात मे नही पावन। लुटपेठ के भरोसा मे वाप इतो कुछ नगद नगदाऐ सगरो के खरच वतवइ काम होइ से जानव। अतना के अकतीआर होऐ तो ऐक रउतारा लीखव तो हम फौज ये खत लीखीव।

बोलाऐ भेजब फौज के। तब फौज आइहे तो इहा तक रउरे के आएं के परी। रौरा आऐं से नही बनीह। बहुत का लीखी। भडारी के मुखजबानी नें मालुम करब। मीती चैत सुदी ९ रोज के सवत १८५८ के मोकाम लुडरा—

(ग)

नं० २

सोसती श्री मउआर भुखनसीघ पहलवानसीघ ली: सुबेदार श्री पीतमर साही के जोहारी। कुसलछेम दुनो चाही। आगे खत से मालुम कैल से रउरे रुका देखत जे दस बीस बदुक होऐ सै ले कै महरी घाट पर आद। जे भीम्बापत सल्लाह देबे के हो इह से हगुरे कहवे करब। आवे मे देरी मती करब। ताकीत बझब। मीती माघ बदी २ बौ मन शामाझी के तलास कै साथ लेते आऐब मोकरर

(घ)

नं० ३*

सोसती श्री परबलपरताप उदीतपरताप सपुन महाराजधीराज जोबराज श्री श्री बली-भदर साही देव महाराजधीराज कुमार लाल सगरामसीघ देव ऐ तो भुखनसीघ पहलवानसीघ के मालुम। आगे फीरंगी के फौज नगर शबील भेल। से अब शीह तरफ का बात अघे जहे। महरी के घाट पर फीरगी के लोग हो ही। बो बरगढ मे सुनत हइ जे फीरगी के डेरा दुइ कोपनी तीलगा रसद खातीर टोके है। से रौरे अब कौन बात देखत हइ जहा से रौरे से बने राह बाट रसद मारत लूटत मे करी। गाफील मती परी। रौरे खातीर तो हम सुरगुजा खराब कैल। से अपना जीव मे कीछु बात के धोखा मतु करी। बात ऐक है। तब अब रौरे से जइसन बने मे करी औ खबर बात देत रही बो ऐक सवा गजे बंदुक राउर पास होऐं से ले कै आइ देखत खत के। देरी न होऐ। माघ वदी १३ जुबानी जानत

(ङ)

नं० ४

सोसती श्री मउआर भुखनसीघ बो पहलवानसीघ श्री: सुबेदार पीतमर साही का जोहारी। कुसल दुनो चाही। आगे जे बात होने रहे से गुजरल। अब फीरगी के

*(मूल में पत्र क्रम इस प्रकार है : १, २, ४, ७, ५, ६, ३। यह तथा १ संख्या मूल में लिखी नहीं है—८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५)

डेरा नगर दाखील भेल। से रउरे अब कौन राह देखत हइ जेवने से बनाइबो। ऐक सबाग भीट सुधा इहा आइ औ राह घाट मे जे रौरे सेवने से रसद मारी। रौरे कीछु वात के धोखा मती राखी। अब तो जे होनीहार रहे से भेल। रौरे कौनो वात से छवडा मती होइ। जलद आइ। मीती माघ वदी १३

(च)

नं० ५

सोसती श्री महाराजभारन मउआर श्री वाबु भुखनसीघ के लीः माझी श्री भीखम साही कैस सुभ आसीस। हेतु कुसल दुनौ चाही तौ आनंद होऐ। आगे खत ते हेतु मालुम भेल। आगे लीख लीजे। आपन आपन चाकर के ताकीत करव। से वेसे तो है कहील जे धाट वाट मे मार से सलहैं। तव का है जे सब मुलुक मीले गेल। कइक वात कहसे पार लागी। तब ऐक वात का है। श्री श्री महाराज साहेव का सनद मगाउ। तब घाट वाट सभ वद करव। अव ही तोके कर भरोसा से करवे। अव ही तो अवसर नही हैं। जे हकीगत है पटउ कहवे। मीती वइसाख वदी ५ रोज सवत १८५९ साल—देवान दंदा श्री देवसीघ के परनाम आगे के के जीमीदार मील लेह से कर खुलस लीखव। आगे महाराज के सनद मगाउ कहा है सो जानव

(छ)

नं० ६

सोसती श्री वावु भुखनसीघ लीः सोसती श्री राजभारन देवान वलीनाथ साही के जोहारी। इहा कुसल छेम हइ। राउर कुसल छेम भले चाहीजे। सुनी कै हमरे चीत आनंद होऐ। आगे खत आऐन। हकीगत पाऐन तो वहुत वेस लीखेन। तव लीखेन जे राउर जगह हम खवर वदे लीखी भेजे रही से पहुचल की नाही। से पर हमार कसेल वदे जानत हइ। अस लीखेन से वेसे लीख लगेल। तव हमार कीहा तो नही पहुचल। पहुचे होत वोकर जवाव काहे नही आवत। सरेफ सेल वंदे जानत हइ सेस ते है। तव काजे हमर तोरफ से लखावी दहै। हम उन्ह करसे व कहइ तव राउरे जो ऐ जगह आऐन तो वेसे है। कौनो वात के दुसर नही है। हमार वात वौ खुठीआ के ऐके है। खुठीआ मो हइ तो का लुडरे मो हइ वौ लुडरे रहव तो खुठीअे हैं। से ऐह मे वीच नही है। तव हम का सीखावन लीखी। हम तो अधर मे परे हइ। हमार जे मालीक है से हमारा हाथ से छुटी गेल। हम तो वीना मालीक के हइ। हम कौन तरह से अपने के पनाह देइ। से हमार ऐको धरु नाही है। तव जीव धन के डर से कउ आकै मीलेन। से ऐको ठेकान वात (क क) करी नही है जे जे मील

लहइ से ऐको धरु वात नही है। हम रौरे के कउन तरह से पनाह देउ। हम तो मनी के गवाऐ पारे हइ। हम तो आधार हइ। मे जे दीन मनी पाव ते दीन हमार नजरी खुले तो का खुलवे करे नही तो हम अधा ठहरे हइ औ फौज मो जो हम गेल रही से कौन हाल लीखी। सभ तो अपने के मालुमे है। अपनी अपना के वात आऐ लागे है सो जानव। तवइ जगह मे जो हइ तो अछे है। कौनो वात के अदेसा मती राखी। अपने ही के रही। कौनो वात के फीकीर मती रहव। जे दीन हम अपना मालीक के भेटव से दीन अलवता जे कीछु कहव से सभ वेसे रहै। अव ही तो हमार ऐको कावु नही है। से जानव। वहुत का लीखी। मी: वैसाख वदी ७ रोज सवत १८५९ साल

(ज)

नं० ७

सोसती श्री सरवउपमा जोग महाराजभारन वावु श्री भुखनसीघ औ वावु श्री होरीलसीघ के ली: देवान श्री देवसीघ औ वावु श्री मनोहर सीस दुनो झन के जोहारी। आगे इहा कुसलछेम से हइ। आगे राउर कुसल छेम चाही तौ सुनी के परम आनंद होए। आगे खत आऐल। समाचार पाऐल। वहुत वेस मो लीखल गेल ते वात अछे है। जो कुछ वात का सफाउत आगा हइ है। इहा आगे अपने तइआर होउ। राह नीकालु। नीकस पऐसार कवो खच खावजे औ अपनै वरही आऐ वइसु इहा तइआर हइ राहवाट का वदोस लगाउ जे मे वात डोल मती। खाऐ से करी खरच कै वदल गाउ। आगे का लीखु। वहुत के वोल वोल ली से अछे हे। मीती वइसाख वदी ११ के रोज वावु श्री वीसुनसीघ का जोहारी। दुसाध का जुवानी जानव

(झ)

नं० ८

सोसती श्री महाराजभारन भउआर भुखनसीघ ली: पथा मार्झा के जोहारी। आगे इहा कुसल छेम है। राउर कुसलछेम सदा भऐ चाहीजे। हमार सुनी कै चीत परम आनंद होऐ। आगे हकीगत इ जे रउरा वारह हजार क मालीक हइ भाइ मुहहार सभ कऔ। अठारह हजार भाइ खैरवार के अपना पेट मे सरीख कइली है। से ही मे हमहु अठारह हजार इ मे सरीख हइह से रउरो खत आइल औ खरवारी सनमत आइल। से हमरन हतो कवन माफीक हइह। वीगरल भाइ के देखी तो हमरो रउरा सरीख मैं कै टहल मे रुजु रहीह। से अपने मालीक हइह। हमहु दस मवाग भेज

देत हइह। से भाइ सरीखी नजरी नीगाह राखल जाइह औ आउर लोग तलासत हइह। पछा से जइहे औ हमरा वदे दस रोज देरी है। वरवइआ राजा वो टोडीआर राजा मे रकस रवा है। माघ सुदी पुरनवासी तंकी से इहे दोह मत से अटक है। से आगे पुरुव के कम घटी तो वो जगह हमहु ऐकाघ टहल वजाऐ देव जो रउरा मेहरवानगी रही। आगे बैजनाथसीघ औ सुकरसीघ हमार घर के सवाग हे थी। ऐक सवाग भइ सरीख राखव। ऐक सवाग मीरदामें ऐ जात हथी से जानव। हकीगत जुवानी जानल जाइह। मीती माघ सुदी ८ रोज

(ञ)

नं० ९

सोसती श्री मउआर लछुमनसीघ वो भुखनसीघ जोग ली: महाराज कुमार लाल उमरावसीघ के आसीस परनाम। इहा कुसल है। राउर कुसल चाही। आगे रुका आइल। हेतु पावल। आगे रउरा लीखली। भीरमगली से घाट के ठेकाना फुरपद का होइत तो वीच नही होइत। ठेक नगर खवर घाट के जो हमी लत इसन लीखव। मीती जेठ सुदी १२ रोज सोमार। आदमी का ठेकाना वेठ का ठेकाना घाट का ठेकाना जसुद भेज कै मगाइ तव भीर के वीच नही होइ

(ट)

नं० १०

सोसती श्री भैआ होरीलसीघ औ सीवराजसीघ चुल्हाइराम कुअर करन सीव भआ उमरसीघ मउआर लछुमनसीघ कै ली: भुखनसीघ कैस परनाम राम राम। कुसल दुनो चाही। आगे हम इहा दाखील भेली। से ऐने वेसेवेस है। तव काजे रउरन्ह वो ने काम वजावे, मे कसुर मती करी। महाराज के हुकुम औ मेहरवानगी होएगेल। आपुस मे फुट लेह से जानव के करो भरम व लभेरम व मतीपाली वरोवरी कैं केऔ हंक रौरन्ही काम वजाइबे कर करु अव जाहवाह मती करीऐने। हम सभ तरह से तइआर भेली। पुरव के काम हमरा जीमा है। रौरन्ह कसुर ऐको वात से मती करी। मीती कातीक सुदी ५ रोज मंगर—

(ठ)

न० ११

सोसती श्री मउआर भुखनसीघ तथा सीवराजसीघ औ लछुमनसीघ वो होरीलसीघ औ पहलवानसीघ ली: सोसती श्री सुवेदार पीतमरसाही कैस जोहारी। आगे

इहा कुसलछेम है। राउर कुसलछेम चाही जे मुनी के खातीरजमा होऐ। आगे राउर खत आएल। समाचार पावल। रौरे लीखेन जे चीठा जात है औ जब सें मारे पानी के अवसान नही है औ हम वे अराम हइ। से सीपाही ममुझावत हइ। पीछे से पहुची है तव से वो डरी कीनु वाहिवार गइल है औ मुलाकात मीर से कै काम अपना करव। पीछे से हमहु फौद ले क आवत हइ। औ हमरन के भइगी गाऐ रहेल। से काहे नही देली। हमहु के आपन आदमीन्ह के समुझाऐ के है। मे गोनाय भेजव। वहुत का लीखी। सरकार के खत से हेतु जानव। मीती सावन सुदी १२ रोज सवत १८५८ साल

(इ)

नं० १२

सोसती श्री महाराजभारन वावु श्री मुखनसीघ जी: सवक फकीरसीघ वौ जयभा का सलाम औ जोहारी। कुसल दुनो चाही। आगे खत लीखली। जे ओने का काम वनाऐ से ऐनेक वात वेसे वदीस लागल है। अव क वात जइसन करे के होऐ तइसन करु हम नगर से दुनो भन अइली है। से जानव। ऐ अगह दीन नही वनल तेह से हम अटकली पचमी वीहफौ के साइत वनल। से हम आवत हइ। छेकारी कव दीस ऐने से वेसे वनल है। महाराज रउरा के एक गाव काटी पानी वदे देल ही जै। रागी वदेह ठली। तव महाराज कहली जे लाग गाव पलाम अमल करव। तव जै रागी देव मीलल से गाव क नाव वेती हव। से जानव। वहुत का लीखु; मीती अगहन सुदी १ रोज

(उ)

नं० १३

सोसती श्री वावु मुखनसीघ कै जी: वावु होरीलसीघ औ चुल्हाइ राम कैम आसीस राम राम। आगे इहा कुसलछेम है। राउर कुसलछेम चाही। आगे ऐने के जो हकार गेल रहे से झुठ भइल। से हमरन्ह लसकर के कै सवर मालक नहर परेटी कल पाटी तीन सै ऐ लोग है। से जानव। आगे फेर जो हकार भेज वाडी कतरी देले से हमरा थथमल वाडी से वोने के मतलव होरो से लीखव। तइसन हम करी करव। आगे रुपनाथसीघ के परनाम। चुल्हाइराम औ रुपनाथसीघ हेठ सै ऐ लोग ले के वीहफौ के सेरका अइली से पुरव के फउजी आइल होऐ। साहीपुर छेके के होऐ तो तइसन लीखव। कातीक सुदी ८ रोज खत से जानव

(ण)

नं० १४

सोसती श्री भुखनसीघ जी: बोहदार कीनुराम वौ माझी होरीलसीघ वौ माझी मनसाराम कै आसीस जोहारी। आगे दुनो कुसन ते बहुत आनंद होऐ। आगे खत आऐल से मालुम भऐल। आग वौडरी सरदार पाली फौद लेवे गेल है। रउरा खातीरजमा करव। ऐतवार के फौद इहा से उठी दाखील मदगुडी सोमार के आगे। पहलवानसीघ के बात अछा है। तत्र काजे खरच बड़ा कुसारी लहै से मग ले है। आग फौद पावेलेह। से चीठी बेगर फौद नइखे उठट। चीठी पहुचे तव फौद चले। बोलने के अटक है। मीती कातीक १४ बीहफै रोज।

(त)

नं० १५

सोसती श्री मउआर भुखनसीघ के जी: मउआर सीवराजसीघ वौ होरील-सीघ कैस आसीस वो राम राम। आगे दुनो कुसल चाहीजे सुनी कै परम आनंद होऐ। आगे महाराज का हा से पान आइल। से रउरा तुरंत आइव। इहा फौउदी केर कमी कवनो केर बीच नइखे से तुरंत आउ। ऐन जवर होऐ के चाही। से जानव। हसरी जवर भइल होऐ तो ले ले आउ नही तो चली आउ। राजा सहाऐ भइ। लेखत देखत तुरंत आउ। देरी मत करु। भीर समेत ले ले आउ। तुरंत इहा हसरी जवर होऐत होत बाड ऐलवार के फौद चाऐ के बाड से जानव। पादु भोगता केर जवानी जानव। आऐ मे देरी मतु करव। महाराज केर पान भेजत बाडी। से समुझी। लेवी ऐने केर कवनो बात क अंदेसा मतु राखव। आगा का लीखु ऐलने मे समुझ लेव। ततार खाव के सलाम। हुजुर से हम आऐ। खत से जानव। मनशा माझी केर सलाम बनौरामे टीकलवा ठाकुर गहवर केर सलाम। खत देखत तुरंत आउ *

१७

नकल परवाने के बनाम बलीनाथ साही जागीरदार लुंडरा वौ बनाम पौलंमर साही जागीरदार बांजपुर वौ बनाम देवसीघ वौ मनोहरसीघ जागीरदार खुठीआ वौ बनाम हरीहर साही जागीरदार धोधरा वौ बनाम गजराजसीघ जागीरदार करा वौ बनाम अवधुतसीघ चमारी राऐ मनीआरसीघ जागीरदार रामपुर वौ जगमोहन

* Foreign Dept., Recd. June, 1802, No. 266

सीध जागीरदार परहगावा के। इन्ह सभी का नाम लाल कीता पर्वाना ऐक मजमून का परगने सुरगुजे को लीखा गआ है। मरह इअह है—

वलीनाथ साही जागीरदार लुँडरा मो तालुके सुरगुजे मालुम नुमाएन्द के वमवव मरने करनैल जुनस साहेव के हजुर मो गवरनर जनरल साहेव वहादुर के हम हुकुम पाआ है। इस वासते इअह वात तुम्ह को लीखा जाता है के हजुर सो सुना जाता है जो तुम्ह अपना जेता के कताआ कसम वो करारदाद तावेदारी वो फरमावरदारी लाल जगरनाथसीघ के माफीक हुकुम वो मर्जी दोनो सरकार के गवरनर जनरल साहेव वहादुर वो माह।राजै रघुजी भोसले वहादुर के कवुल मनजुर का ऐव था सो इअह सभ कसम वो कौलकरार को तुम्ह नै तोड के वो वरवाद कर कै वो आउर अैसही जागीरदार वाह जीमीदार के कसम के तोडने वाले है उन्हों को अपने साथ ले कै वो उदैपुर पाए के लाल संगरामसीघ हरामजादे वदकार को सुरगुजे मो ले आए हो। वो भी तुम्ह अपना जमैअत ले कै। उस के साथ मसन जमा हाए हो वासते लुटन मारने मुलुक के। वो वासते तोडने वंदोवसत सुरगुजे का जो दोनो सरकार मो सरकार गवरनर जनरल साहेव वहादुर के वो सरकार महाराजे साहेव वहादुर के मोकरर कीआ गया है। सो काऐ इस मे इमह सभ वात नेहाएत कोतह अंदेसी वो जेआदा खरावी अपना तुम्ह दरीआफत कर के लाल संगरामसीध का साथ मील के ऐसा काम मो सरीक हुए हो। वो इस वासते तुम्ह को जरुर था के जीस माफीक करनैल साहेव मरहुम नै तुम्हारे उपर रफाहीअत जेआदा वो मेहरवानगी वेसुमार कीआ था वो तुम्ह को वो तुम्हारे मुलुक को इस वासते पनाह दीआ था के हुकुम वो करार वो वंदो-वसत वमोजीव लाल जगरनाथ सीघ का खैरख्वाही वो हुकुम मो हाजीर रहोगे। वावजुद के ऐसा मेहरवानगी करनैल साहेव का वो करारदाद अपना तुम्ह अपने दील मो अगर अपना वेहतरी दरीआफत करते व ऐसा काम मो सरीक नही होते व वो ऐसही वोफादारी की सरत पर तुम्ह को करनैल साहेव नै पनाह दीआ था वो तुम्हारा मुलुक वचाआ था। वलके अव मालुम होता है के तुम्ह इनतजारी दुसरा वोलावने लाल संगरामसीघ के भी नही देखा। अपने रजामंदी वो दरखासत सो लाल संगरामसीघ का पास उदैपुर लाऐ कै उसको सुरगुजे मो ले आऐ वो इरादा लुटने वो खराव करने मुलुक सुरगुजे के कमर बांधते हो। वो लाल जगरनाथसीघ जो दोनो सरकार की तरफ सो सुरगुजे मो वैठाला गया है उस का हुकुम उठावने का इरादा रखते हो। इस वासते मेहरवानगी का राह सो तुम्हारे दरीआफत कीया वासते लीखा जाता है के तुम्ह अपन जान का वेहतरी वो अपना लडके वाले का वेहतरी चाहते हो तो तुरंत लाल संगराम वदकार का साथ छोड़ के अपने घर पर आना वो लाल जगरनाथसीघ की तरफदारी मो हाजीर रहना। अगर इअह वात नहीं करोगे तो ऐकान जानना के जैसा के वंदोवसत सुरगुजे का दोनो सरकार सो मोकरर हुआ है उस वंदोवसत को जो आदमी तोड़ने का इरादा रखेगा तो इअह आदमी दोनो सरकार नेहाएत तकसीरवार वो गुनहगार होगा वो दोनो सरकार सो उस का खवर लीआ जाऐगा

वौ करार वाकी उसको नेसतनावुद कीआ जाऐगा के उस का कुछ ठेकाना न्ही रहेगा। मो ताकीत जानना। ता: २६ माह अगसत सन १८०२ अंगरेजी मोताबीक १४ माह भादो स० १२०९ फसली।*

१८

सीताराम

नकल परवाना जो भेजा गआ लाल जगरनाथसीघ को सरह इअह है—अखलास आसार लाल जगरनाथसीघ व आपरीअत वासंन्द सावीक अरजी का तुम्हारे पेसतर जवा लीखा गआ है उस सो कंफीअत मालुम हुआ होगा। वौ अव ता० १६ माह सावन का अरजी लीखा तुम्हारा हजुर मो पहुचा औ हवाल सभ रोसन हुआ। वौ अब हजुर से गवरनर जनरल साहेव वहादुर का मरजी दरीआफत करी कै तुम्ह को लीखा जाता है के जैसा के सरकार अंगरेज वहादुर का तरफ से करनैल जुनस साहेव मरहुम वौ सरकार माहाराजै रघुजीव भोसले का तरफ से हर वाजीवाद नैं सुरगुजै का वदौवसत वौ कौलकरार कीआ है वौ तुम्ह को मुलुक सौपा गआ है उस मो ऐक वात दुसरा होने न्ही पावैगा एही मरजी गवरनर जनरल साहेव वहादुर का है। वलके सदर सो इसी मोकदमे काअ वासते ऐक चीठी माहाराजै साहेव का पास भेजा गआ है वौ भी हम ने अपने तरफ सो दो कीता चीठी मलपुर पर व नाम केसो गोवीद सुवेदार तो को रतन (?) पुर को भेजा है सो उस मो ऐक चीठी तुम्हारे पास जाता है। तुम्ह कीसु सुरती सो सुवेदार का पास वमोकाम रतनपुर रवाने करना। वौ एक चीठी चुटीआ नागपुर का तरफ सो इस वासते भेजा जाता है के वरमहल सुवेदार का पास पहुचेगा वौ खवर पहुचने मो तपरावत न्ही होगा। वौ भी रंगी ठाकुर का अरज करने सो मालुम हुआ के कइऐक जागीरदार तुम्हारै री पराकत मो है। इस वासते उन्हो का नाम दस कीता परवाना मलपुर पर जाता है वौ भी उसी मजमुन के ऐक कीता का नकल तुम्हारे वुझने काअ वासते जुदा जाता है। चाहीऐ के तुम्ह नामवनाम जागीरदारान वौ जीमीदारान का पास भेज देना वौ उअह लोग अपना जमइअत लै कै तुम्हारा मदत करहीगे। वौ भी तुम्ह से लीखने सो मालुम हुआ के कइऐक जागीरदारान लाल संगरामसीघ के साथ मीले है। इस वासते उन्ह सभो का नाम को भी सरत कीता परवाना मलपुर पर जाता है सो उन्हो का पास भेज देना। वौ उस का नकल ऐक कीता तुम्हारे पास जुदा जाता है उस सो अहवाल मालुम करना। वौ भी दो कीता परवाना वनाम हुलाससीघ जमादार वौ वनाम दीन देआलदास कारकुन का मलपुर पर जाता है सो उन्ह को देना। वौ मालुम करना के तुम्ह को मुलुक का

*Foreign Dept., 13th September, 1802, No. 335

काम सौपा गआ है। इस वासते लाजीम है के तुम्ह अपने दील मो उस्तकलाल वौ मजबुती वौ पुसती वौ दुरअंदेसी रखना। अपन दील को कोताह न्ही करना। वौ ऐकीन जानना के जैसा के वंदौवसत सुरगुजे का दोनो सरकार सो हुआ है उस मो ऐक वात दुसरा न्ही होगा। इस वासते हर सुरती सो अपना खात्रीजमा रखना। वौ गोली वारुद काअ वासते तुम्ह नै अरज कीआ था सो नागपुर का राह सो वरवै राजा कमलनाथ साही का पास भेजा जाता है वौ राजा मजकुर लाल दल्जीतसींघ का पास खाडो भेज देगा वौ उहा सो तुम्हारे पास पहुचेगा। वौ तुम्ह अपना लड़का वाला को वरवै भेजने का इरादा रखते हो सो बेहतर है के तुम्ह राजा मजकुर का पास वमोकाम वरवै के भेज देना। वौ लाजीम है वमोकाम वरवै राजा मजकुर का पास वौ वमोकाम छेछारी भैआ जीव साही का पास अपना आदमी भेजना। वौ केरा ऐका वरकंदाज इअह दोनो जगह सो जेता मीले सो मंगवाए लेना। वौ आउर कोसु सुन्नी मो जीस मो तुम्हारे पास जमइअत जमा होऐ सो वंदौवसत वौ फीकीर करना। वौ तुम्ह ऐसा काम करना के तुम्हारे साथ जो जागीरदार मील्ले है उन्हो का जमअत मदत ले कै वौ भी अपना लोग जमा कर कै लाल संगरामसीघ को जेर कर कै मुलुक मो वाहर करना। वौ खुब खात्री जमा रखना। जो वन्दौवसत सुरगुजे का दोनो सरकार सो मोकरर कीआ गआ है उस मो जो ऐक वात दुसरा होगा तो इस वासते ऐक पलटन का केआ वात है दस पलटन जाने सकेगा सो खात्रीजमा रखना। अगर आउर कीछु चीज का दरकार होऐ इआ अपना अहवाल हजुर मो जाहीर करना होऐ तो इस सुरती सो इतलाए करते रहना। वौ हजुर मो सुना जाता है के चलगीसी वाला जागीरदार के भाइ को तुम्ह नै छोड़ दीआ है सो इअह वात वहुत नादानी वौ तमाम नासाऐक है। सो चाहीअै के अैसा काम नादानी का फेर कदही न्ही करना। वहुत खवरदारी वौ होसीआरी वौ मजवुती जमामरदी साथ काम करना। वौ हुलासमीघ जमादार को हुकुम दीआ जाता है के जव तक दुसरा हुकुम न्ही पावैगा तव तकी तुम्हारे पास रहैगा। सो चाहिअै के जमादार मजकुर का साथ हो कै वौ उस सो सलाह मसवरत कर कै काम करना। वौ तीन कीता परवाने का नकल जाता है सो जमादार को भी देखने देना। वौ भी एक कीता परवाना लाल संगरामसीघ का वासते मरकुफ जाता है सो उस के पास भेजा देना। वौ उस का नकल तुम्हारे पास जुदा जाता है वुझने का वासते सो जानना। ता: २६ माह अगसत सन १८०२ अंगरेजी मो १४ मादो रोज वीहफे व सन १२०९ फसीली—*

---

*Foreign Dept., 13 September, 1802, No. 336

१९

नकल अरजी लाल जगरनाथसीघ परगने सुरगुजे का सरह इअह है—सोसती श्री गरीबपरवर वंदेनेवाज सलामती श्री श्री करनैल जुन साहेब बहादुर ली: श्री महाराजकुमार श्री लाल जगरनाथसीघदेव कैस वंदगी सलाम। आगे साहेब कै अकवाल सो इहा कुसलछेम है। साहेब के कुसलछेम हर हमेसह के सुभ मंगल घरी घरी कै चाहीजे सुनी के हमारा खात्री जमा होऐ। आगे साहेब के कदम सुरगुजा सहर से गऐन तव सो साहेब के समाचार न्ही पावल सो दील हमारा लागल है सो मेहरवानगी साथ हवाल हजुर के लीख लआऐगा। आग इहा के समाचार सावन बदी १ रोज के अरजी गेएल है तेह सो मालुमे भैल होगा। आगे साहेब हमको सुरगुजा पर वैठारी गैऐन वौ दोनो सरकार मे कवलकरार हुआ था जे लाल संगरामसीघ वौ पीतमंर साही सुरगुजे का मेड पर न्ही आवेगा। सो इहा सुरगुजा मो लाल संगरामसीघ वौ राजा बलीभदरसाही के लेआने है अंधला हो कै पहार परुला बैठीन है। वौ सभ सुरगुजा के जीमीदार वौ रइअत मीली कै तीन सैए आदमी ज्मा होऐ के घमंड मचाऐ है। हम पर डाका मारे पर तेआर है। कवनौ जीमीदार वौ रइअत हमारा हुकुम चीठी न्ही माने। कहत है जे लाल संगराम-सीघ वौ राजा बलीभदर साही गादी पर वैठी है तव सव कोइ हुकुम राखव वौ मालगुजारी हाकमी देत जाव। से इहा सुरगुजा के आदमी हमे पाव भरी पानी कोइ न्ही देई। एक दुइ जीमीदार हमार आसरा राख है। से हम बलावत हइ तो संगरामसीघ के दहसत सो न्ही आते है। जीसका बात काम बनगा तीस का सामील होइ है। अपने अपने घर सो तमासा देखते है। आगे मरहटे कहत सो पीतमर साही वौ लाल संगरामसीघ के बहुत दमदारी देले है। तेह से जवरजस्ती लगाएल है। वौ हमारा आदमी खत कवनो तरअइ न्ही जाए पाव। घाट घाट को रसता वंद करे हैऐ। श्री महाराजै रघुजीव भोसला की हा खत हमारा वौ लला दीन देआल के खत जांसु सजाता रहै सो लाल संगरामसीघ वौ अधला वौ डाड गाव के जीमीदार न्ही जान दीऐ। तेह पर महाराजा साहेब के वोकील बहुत डरी गआ। जीव लुकाम के आऐ परा है। सो हमहुं के कहते है जे तुह भी सहर छांडी के अल कर जगह चली कै रहो। सो लाल संगरामसीघ वौ सभ जीमीदार हम पर डाक मारने के लगाऐ है। से हम कौनो तर पर नीकास न्ही। तीस पर एक आप के तर पर सो हमारा वेसतर है वौ नीकास दीस परत है। सो आप को मरजी मो आवे तो हम आप के भेला ताकी के पनाह पकरी कोर है। नही तो हुजुर सो हमारा कुमक करा जाऐ सै ऐ दुइसैऐ सीपाही आवै तो हमारा बेहतर होता है। न्ही तो हम भी जाते है। हमारे साथ आप के गारद वुडे चाहते है। न्ही तो आप मरजी करे तो हम आप के कदम तरे आवे। न्ही तो मरजी होऐ तो आप के मेडा मे आए के जान बचावै।

आप के जवन माफीक मरजी आवै तवन माफीक हम काम करे। आग घाट घाट वंद भएेल है वो वरीसात के सवव कौनो कइत के वरकंदाज न्ही आवे। नही तो तीन दुइसै राखी लेते। सो अव हम को आप के भरोसा है। आगे आग के मारद वडा महजर सो हमारे पास है वो सभ सीपाह वेराम परे है। से जाने के अगनाने है। आप के जैसा मरजी पावै सो माफीक हम काम करे। आगे हजुर सो कुछ वारुद सीसा के मेहर-वानगी होगा। वहुत का लीखी। आप तो सभ वात को मैजाने है। भोगी ठाकुर अरज करे सो हमारे अरज कै जानोगे। मी: सावन सुदी १ रोज संवत १८५९ साल मोकाम सुरगुजा वीसरामपुर सा०*

५०

नकल परवाना लाल संगरामसीघ को भेजा गआ सरह यह है—अजीजुलकदर लाल संगरामसीघ मालुम नंमाएन्द—अव हजुर मो सुना आता है के तुम्ह वेदहसत वो वेइवरत अपने सरकार खावीद के डआने सरकार माहाराजे रघुजीव भोसले वहादुर के वो वेपरवाह वो वेवजह सरकार अंगरेज वहादुर के तुम्ह अपने को सुरगुजे मो पहुचाये हव वो जमइत जमा करी के मुलुक लुटने का वो वंदोवसत सुरगुजे का जो दोनो सरकार सो तरफस सरकार माहाराजे रघुजीव भोसले के वो तरफ सो सरकार अंगरेज वहादुर के मोकरर कीआ गआ है उस को तोडने का इरादा रखते हव वो लाल जगरनाथसीघ जो दोनो सरकार सो सुरगुजे मो वैठाला गआ है उस को मारने का फीकीर करते हौव। लेकीन वडा तअजुव है के तुम्ह जरा ऐक अपने जान का वो अपने लडके वाले का नो हुरमत का दहसत अपने जीव मो न्ही लाआवो। ऐसा सखत काम मो हाथ डालने का इरादा रखा वो दोनो सरकार के वंदोवसत सोजीव अव तक तुम्ह राजा वलीभदर साही को लाल जगरनाथसीघ का पास न्ही भेज दीआ है। लेकीन तुम्ह जानते होहुग के आगे का वंदोवसत सो दुसरा कुछ वास होगा सो खुव तसउअर करना के जो वंदो-वसत दोनो सरकार सो कीआ गआ है वो लाल जगरनाथ सीघ को सुरगुजे मो वैठाला गआ है उसी वंदोवसत माफीक काम होगा वो जरा एक तफावत न्ही होगा। इस सुरती मो जो अगर तुम्ह अपना वो अपने लडके वाले का वेहत्री चाहो तो तुरंत राजा वलीभदर साही को लाल जगरनाथ सीघ का पास भेज देना वो तुम्ह जहा सो उठे के दुसरे मुलुक मो चले जाना वो चुपचाप हो कै वैठ रहना। अगर इस माफीक काम न्ही करोगे तो मोकरर अपने दील मो इआद करना के थोरा रोज वाद इस वासते तुम्हारा दोनो सरकार सो सजाऐ होगा वो नेहाऐत खफगी मो पडोगे। खराव हो जाहुगे। सो

Foreign Dept., 13 September, 1802, No. 337

खुब अपना जीव सो समुझंना। ताः २६ माह अगसत सन १८०२ अंगरेजी मो० ताः १४ माह भादो सन १२०९ फसली रोज वीहफै....*

२१

नकल परवाना के बनाम दीवान बीजेसीघ जागीरदार रामकोला वौ बनाम राजै उमरावसीव जीमीदार जेमपुर वौ बनाम राजै उमरावसीघ जीमीदार जेमपुर वौ बनाम राजै उमरावसीघ जीमीदार जेमपुर वौ बनाम लाल दलजीतसीघ जागीरदार खोडो वौ बनाम लाल उमरावसीघ जागीरदार महरी वौ बनाम बावु बरवंडसीघ जागीरदार मुरगुठा वौ बनाम कुंअर दलजीतसीघ जागीरदार पाल वौ बनाम सरदार बखतौरसीघ जागीरदार लेलम्बा वौ बनाम मुनंदसाही जागीरदार कोटसरी वौ बनाम लाल इसरीसीघ जागीरदार राजपुरी वौ बनाम भैआ हरीहर साही जागीरदार झील मीली के इन्ह सभों का नाम दस कीता परवाना ऐक मजमुन का परगने सुरगुजे को लीखा गआ है सरह इअह है—इजत आसार दीवान बीजेसीघ जागीरदार रामकोला मो तालुके सुरगुजा मालुम नुमाऐन्द के हजुर मो दरीआफत कीआ जाता है जो वाजे वाजे जागीरदारान नमकहरामान अपने कसम कीरीआ को तोड कै वौ अपने इमान को बरबाह कर कै लाल संगरामसीघ बदकार का पास उदैपुर जाऐ कै उस के साथ मील कै उस को सुरगुजे मो ले आऐं है वौ भी मुलुक लुटने मारने का इरादा रखते है वौ तरफ से माहाराजै रघुजी भोसले साहेब के हर बाजीवाद नै वौ करनैल जुनस साहेब मरहुम नै जैसा के सुरगुजे का बंदोबसत कीआ है वौ लाल जगरनाथसीघ को मुलुक पर बैठाला है उअह सभ बंदोबसत तोडने का इरादा रखते है। लेकीन तुम्ह खुब जानना के ऐसा काम करने सो उअह लोग पसेमान होहींगे वौ नेहाऐत खराबी मो पडहीगे वौ दोनो सरकार के गुनहगार होहींगे। कीस वासते के जैसा के बंदोबसत सुरगुजे का दोनो सरकार सो कीआ गआ है उस मो कोइ बात जरा ऐक दफाव न्ही होने पावैगा वौ नमकहराम लोग जो उस के साथ मीले है इस वासते उअह लोग नेहाऐत खराब वौ तबाह होहींगे। वौ मालुम होता है के तुम्ह उसी बंदोबसत माफीक अपने कौलकरार को जगह दे कै लाल जगरनाथसीघ के रीफाकत मो रुजु हव। इस वासते हजुर मो मौलाप खुसी का हुआ। वौ भी तुम्ह को लाजीम है के इस ही माफीक लाल जगरनाथ-सीघ का हुकुम मो हाजीर रहना वौ अपना जमेअत ले कै लाल जगरनाथसीव का पास हाजीर होना वौ ऐसा मेहनत कोसीस करना के जीस मो लाल संगरामसीघ हरीफ मजकुर जेर होऐ वौ सजाऐ को पहुचे वौ लाल जगरनाथसीघ का हुकुम मुलुक मो बराबर ले वौ बंदोबसत कीआ हुआ वहा से बरकरार रहै सो काम करना। वौ मालुम

*Foreign Dept., 13 September, 1802, No. 340

करना के इस वासते दोनो सरकार मो तरफ से सरकार माहाराजै साहेब वो तरफ से सरकार अंगरेज वहादुर के लाल जगरनाथसीन का मदत दीआ जाएगा। सो चाहीऐ के तुम्ह कीसह हरमजादे वदकार के कहने सुनने सो अपना दील मो दुसरा वात मत लावना। इस वासते के अगर इस माफीक तुम्ह काम करोगे तो तुम्हारा दोनो सरकार मो वेहतरी होगा। सो ताकीत जानना। ता. २६ माह अगसत सन १८०२ अंगरेजी मोताबिक १८ माह भादो सन १२०९ फसीली*

२२

श्री राम

नकल अरजी लाल जगन्नाथसीघ मोख्तारकार सुरगुजा मरकुमे ता: २२ माह भादो संवत १८५९ साल तारीख ता: १ माह अकतुबर सन १८०२ अंगरेजी को पहुंचा था सरह इअह है—सोसती श्रीगरीवपरवर वंदेनेवाज सलामत श्री श्री रसल साहेव बहादुर ली: महाराजकुमार श्री लाल जगरनाथसीघ देव कैस वंदगी मन्जाग। आगे साहेव का अकवाल सो इहा कुसलछेम है। साहेव का कुसलछेम सदा सरवदा सुभ मंगल हर साइत कै चाही जे सुनी कै हमारा खातीरजमा होऐ। आगे साहेव का परवना भादो वदी ५ पचमी के हमारे पास पहुचा। परवना देखी कै जीव बडा खुसी हुआ। आप लीखे जे कलकता हजुर मे अरजी भेजा है जैसा हजुर के हुकुम आवेगा तैसा हवाल पीछे सो जाऐगा सो आप अछा लीखे। सो इहा सुरगुजा मो बडा घमड मचाऐ है। सो इहा के घमड देखी कै तब भगी ठाकुर के हाथ अरजी भेजे है। सो अरजी हजुर मो जाहीरे भल होगा। आगे इहा लाल संगरामसीघ राजा वलीभदरसाही के ले के पहार परुला वैठी के घमड लगाऐ है। सभ सुरगुजा के जीमीदार मीली के हम के मारने के लगाऐ है औ आपके गारद के कहत है जे तुह उठी कै साहेव के पास जाव नही तो डुवाऐ देहगे। सो सभ जीमीदारी फौज कोस भरी के गीरीद मे घेरा करे है। हमारे की डाकलो के रसद नही आने पावे वो कतो हमारा आदमी खत नही जाने पावे। रसता मो लुटी लेते है। साझ सुबह हम कौ डाक मारने के लगाऐ है। सो साहेव हमारा खोज करते है तो हम बचते है। नही तो मारे जाते है। वो साहेब हमारा खबर न लीआ जाऐ तो मरजी आवै तो कतो भागी कै जान वचावे। आगे रतनपुर हमारा खत वो दीनदेआल कारकुन के खत जात रहे से लाल संगरामसीघ घाट पर लुटाऐ लीआ। सो साहेब के मालुम नहीऐ। बहुत का लीखे साहेव तो हमारा मालीक मोरवी है। जैसा कुछ हजुर मे बुझाऐ सो सही। मोकाम शहर वीसरामपुर

*Foreign Dept., 13 September, 1802, No. 341

आप ने जमीदारान लोगो के नाम परावाने भेजे लेकिन वे लोग अमल में लाते नही हुकुम अदुली करतेहुगे*

२३

श्री राम

नकल अरजी लाल जगरनाथसीध मोखतारकार सुरगुजे मरकुमे ७ माह कातीक संवत १८५९ साल वौ ता: ३० माह अकतुवर स. १८०२ अंगरेजी को पहुचा सरह इअह है—सोसती श्री गरीवपरवर वंदेनेवाज सलामत श्री श्री कपीतान रसल साहेव ली: महाराजकुमार श्री लाल जगरनाथसीध देव कैस वंदगी सलाम पहुचै। आगे साहेव के अकवाल तें इहा कुसल्छेम है। साहेव के कुशलछेम सदा सरवदा हर हमेस के चाही जे सुनी कै हमारा खातीरजमा होऐ। आगे हमारा अरजी ले कै फीरगी ठाकुर गऐ थे सो हजुर के मरजी माफी सभ जीमीदार वौ जागीरदार खातीर परवना ले आऐ। सो परवना हम जीस माफीक हुकुम आआ था तीस माफीक हम ने भेजवाऐ दीआ। सो चारी जीमीदार आप के परवना मजुर करीन। परगने झील मीली मइआ हरीहर साही वौ रमकोला वीजैसीघ वौ पाल के कुअर दलजीतसीघ वौ महरीलाल उमरावसीघ वौर जीमीदार नै आप का परवना मजुर कीहीन वौ अपने जीव में वहुत मोसताकी ले आऐ। वौ जीस वखत फीरंगी ठाकुर हजुर सो आऐ वौ नागपुर सो दुइजा सुद वौ पाय वडा आदमी वौ कुमारसीघ कुअर लाल सगराम-सीघ का पास आऐ अघला मो जमाव कीहीन रहै। तही आउ लोग आए के हम से वाद वौ वोकीला वोकीली करने लगे जे हम ने हजुर सो आऐ है। लाल जगरनाथसीघ वौ सगरामसीघ को सलुक करावने आऐ है। तेह पर हमने जवाव दीआ जो साहेव लोग वौ हर वाजीवादो ने दुनो सरकार सो कवल करार करी गऐ है तीस वात पर हम काऐम है। इस के उपर हम नै नही माना। हरचंद लागी रहै। हम नही माना। तव हम नै कहा की राजा वलीभदर साही को हम के देहु। हम गादी पर वैठाऐ लेहुवौ। हम ने हजुर मो अरजी भेजे जैसा हजुर सो हुकुम आवेगा जैसा हम करहीगे। तीस पर उऐ नही मानीन की हम फीरंगी को नही जानै। हम मरहटा को जानते है। सो हम को भोसीला को हुकुम आआ। राज पर वैठने के आगे महाराजे रघुजीव का हुकुम आआ। उस हुकुम से हम वहुत लाचार हुऐ। सो हजुर का दुइ जासुस पाय वडा आदमी वौ कुअर समेत आऐ। इस मो हम नै नही मोजाहीम हुऐ। सो इस मे साहेव लोग मालुम होहीगे की भोसीला के हुकुम था तव केव मोजाहीम हुऐ। इसअ वासते हम नै जगह छोड़ी दीआ। आगे रतनपुर के अमले मो जेते जीमीदारन है तीन्ह

* Foreign Dept., 6 October, 1802, No. 368

सभो का हुकुम था। सकती परगढ वो उदेपुर इस न जगह का फौद ले के [illegible] दीआ था। वो सुरगुजा के तमाम थे सो सभ जमा थे सो हजुर मो जाहीरे होगा। आगे अह वात हुलाससीव सुवेदार नही माने की हम नै सुरगुजा नही छोडहीगे। हम इन्ह से लर-हीगे। तीस पर हम नै मनै कीआ। आप के लडने से हमारा [illegible] सरकार मे न [illegible] होगा। तव सुवेदार नै कहीन की जीस मे तुम्हारा वेहतर होगा सोइ हम नै करहीगे। सो जगह छोड़ी कै महानै कीनारे आए थे। तीस के वाद [illegible] मे आआ जे दीलावर [illegible] व जमादार वो पीतमर साही सुवा हजुर सो सरफराज होगे कै सव [illegible] लाल सगरामसीघ के पास आऐ है सो हजुर मो इअह हवाला जाहीरे होगा। सो हम नै हजुर मो चले आवते रहे। सो सुवेदार हुलाससीव नै [illegible] करौ जैसा हुकुम आवेगा वैसा करोगे। सो आप का इरादा [illegible] है। जो सुरगुजा मे हम नै वरकरार रहो वो भोसीला के इरादा मे की लाल सगरामसीघ वो पीतमर साही वरकरार रहही इस हुकुम सौ लाचार है। लोग वो जीमीदार हुकुम उन्ह के मानत है। वो आप का हुकुम मे चारी जीमीदार मानत है। सो इन्ह का भी मकदुर नही [illegible] जे भोसीला से लडन का। वो आप जो हमारा पनाह राखतै है तव तो हमारा ठेकाना होता है वो नही तो हमारा कौन ठेकाना है। वो सुवा वो मुलुक हमारा दुसमन हुआ। सो जैसा आप के दरीआफत मे आवे तैसा कीआ जाऐ। आगे लाल दीनदेआल कारकुन हमारे पास आऐ थे सो अपना सरकार को वात सुनी कै वडा तवजुव माने। काहे जो अैसा वात सरकार हम सो नही कहते थे। हमारा आवने पीछे कैसा वात हुआ। सो हम नै लाला दीन देआल के हजुर १००० रुपै के भरना देइ के हजुर मे भेज दीगे वो अपना हवाल सभ लीखी भेजे है। सो हम नै जगह छोड़ी के कनहर कीनारे आगे है। सो हमारे पर डाक मारने को लगाए है। सो हमारा रह तव एह जगह नहा [illegible]। सो साहेब के जैसा हुकुम आवे सो माफीक हम काम करही। जहा साहेब के हुकुम होगे तवन जगह पर अपना जान वचावे वो हम सभ सुरत सो लाचार है। हमारा [illegible] सो साहेब सो पोसीदा नही है वो हम खरच वरच के वडा [illegible] मे परे है। ऐसा हम अपना [illegible] हजुर मो कहा तक लीखे। जैसा हजुर से [illegible] आवे सो माफीक हम काम करहो। वहुत का लीख ही। साहेब तो सभ वात के सेआने। हम आगे फारंग ठाकुर वो भीखारी के जुवानी हवाल हजुर मे जाहीर होइ—*

२४

श्रीराम १

नकल अरजी लाला दीनदेआल दास कारकुन सुरगुजै तरफ से महाराजे रघुजी भोसीले के मरकुमे २५ आसीन सवंत १८५९ साल वो ताः ३० माह अकतुवर

*Foreign Dept., 5 November, 1802, No. 435

शन १८०२ अगरेजी को पहुन्चा सरह् इश्रह् है—साहेव खोदावद राजै श्री रसल साहेव जी के हजुर अरजी लला दीनदेआल कै सलाम। आगे साहेव का समाचार भला चाहीऐ। इहा का समाचार आप के मेहरवानगी सो अछा है। आगे अरज अैसा जो इहा सगरामसीघ बीना हुकुम सरकार के थाने मो आऐ। हम नै सनद सरकार का मागे। तब कहने लगे की हम को तो सरकार का हुकुम भआ है की तुम्ह् अपनै राज पर वइठो। से जवरजसती आऐ कै थाने मो तमाम जीमीदार जमा कै आप का गारद वो हम को उठाऐ दीआ। सो हम तो सरकार को गऐ। लाल अगरनाथसीघ आपु का गारद हजुर को गऐ है। सो साहेव को मालुम चहीए। सगरामसीघ न अपने जवरजसती सो ऐह काम कीआ है। सो आपु सरकार हव। इस बात का सजाऐ दोआ चहीऐ। वो सरकार का नाम से झुठ कही कै जवरजसती से वोर हरमजदगी से ऐह काम कीआ है। सो साहेव को मालुम चहीऐ। वाकी हवाल राम हुलासमीध के जुवानी मालुम होगा। जेआदा अरज का लीखे—*

२५

श्री

राजश्री जगंनाथसींग लाल नर्फ बलभद्रसाय पास श्री किसो गोविंद सुभेदार प्रांत छेतिसगढ़ सुर संन १२१२ अैस। जों ईहा सरकार से हर वाति याद व ईनो को कर्नेल साहेबईन के नजीक सुरगुजा के जवावसाल ठहरावने षातर रवानगि किये सो ईनोनें व कर्नेल साहेब मील के तह ठहराये। जो तुम नें वलभद्रसाय के तर्फ से सुर-गुजा के कामकाज करनें औ सरकार से रुजू रहने औसर का अैवज संन वारा सैं दस के साल के वाकि व सन वारा सौ ग्यारा साल के वाकि व भये चूकौति सुधा जो है सो प्रविष्टक नें अैसा ठहरायें सो मालुम हुवा। ईस पर ईहा से लाला दीनदयाल ईन को भेजे है जो सरकार का अैवज दुसाला लाला मजकूर के हाथ कर आकर के भेज देनें और प्रांत मजकूर का कामकाज तुम वो लाला मील के येक चीत मे वारते जानें। सरकार से येकनिष्ठपना से रहनें। ईस मे हिलाहुरकत होगा तो ठिक नहि। वलभद्रसाय ईहा है। ईन की षर्च की षबर उपर के उपर लेते जानें औ लाला दीनदयाल ईनो की नेमणुक व मय पाह्रारा येक सालिना रुपये पांच सौ के कर दीये है सो नेमनुक बमोजिव अदा करनें। जतनें चाल सरकार से येकनिष्ठपना के करौगे उतनें विश्वास ज्यास्त होगा—†

---

*Foreign Dept., 5 November, 1802, No. 437

†Foreign Dept., 19 December, 1802, No. 521

२६

(डेढ़ पंक्ति फ़ारसी लिपि में)....

अव लसकर समेत हुजुर का डेरा वासने वंदोबसत मुरगुजा के आनता है। लेकीन सुनने मो आआ है के वमौजीव तलव लाल संगरामसीघ के अपने इलाका मालगुजारी तुम्ह देने को इरादा करते हो वो भी अपना जमैअत सो मदत करने को चाहते हो सो इअह् वात अपने जीव सो ऐकीन नगीअर करना के अगर मालगुजारी मो कुछ ऐक जो लाल सगरामसीघ मजकुर को देवगे तो हरगीज मालगुजारी मो अपने मोजरा नही पावोगे। वलके इस वागते गुनहगारी तुम्ह मो ठीआ जायेगा। वो भी मदत देने सो तुम्हारा कमाल नकसीर होगा। मो चाहीअै के उअह गम वात अपने दील मो समुझ कै काम करना। वो भी जीस वकत लसकर समेत हुजुर का डेरा तुम्हारे सरहद पर पहुचै रसद साराजाम वो जमैअत समेत तुम्ह हुजुर मो आइ कै हाजीर होना। इसी मो तुम्हारा वेहतरी है। सो ताकीत जानना—*

२७ (क)

लाला जगरनाथसीघ का जाहीर करने सो औहवाल मालुम हुआ के उहा पर वहुत देरी होने लसकर के तुम्ह अपने दील मो अंदेसा रखने हुव। लेकीन इस वात का माजरा तुम्ह को पीछे मालुम होगा औ तुम्ह ने लाल जगरनाथ सीघ का मदत देने को होऔ खैरख्वाही मे उन्ह के रुजु हुव। इस वासने हजुर मो खुसी जेआदा हुआ औ नाजीम तुम्ह को अैसा ही चाहीये के दील व जान सो अपने लाल जगरनाथ सीघ का खैरख्वाही मो हाजीर रहना वो भी उन्ह को मदत करते रहना। इस सुरत मो जव हजुर का डेरा उहा पहुचने पर कमाल खुसी तुम्हारे तरफ मो हुजुर मो होगा वौ भी वेहतरी तुम्हारा होगा। वौ अगर कीसी वात पर जो लाल संगरामसीघ सो तुम्ह मीलोगे तो उअह वात नेहाइत खराव तुम्हारे हक मो होगा। अपने दील मो अकीन जानना वो अव थोडा रोज मो हुजुर का डेरा उस तरफ आवता है सो खातीर-जंमा रखना—†

*Foreign Dept., 20 December, 1802, No. 522

†Foreign Dept., 20 January, 1803, No. 33

(ख)

श्रीराम १

सोसती श्री परवल परताप उदीतपरताप सपुनी महाराजधीराजकुमार लाल श्री जगरनाथसींघ देव लीः महाराज भारत कुमार देवान श्री दलजीत-सीघ कैस सलाम। इहा कुसलछेम है। रोउर कुसल छेम चाही जे खातीर जमा होऐ। आगे इन्ह बीच के हकीगत अइसन है की महाराज के तवाइ मीला वो वदे आवत है। से काऐ कर मर सीखापन दीह ले हमरे के सभ तरह स अव दोसी ऐ लगावत हही। ऐही मे हमरे पन्चगऐन से अपने मालीक हइ। एह वात के नीगाह करु वौ हाकीमी वदे लीखापढी करत हही। जे देव करु से हम दुवो दलै से वह ही वनावल से अपने मालीक हइ। ऐ कर हकीगत जलदी लीखव। मीती पुस सुदी १२ रोज संवत १८५९ शाल—

(ग)

राम १

सोसती श्री महाराजधीराज श्री महाराजकुमार लाल श्री श्री जगरनाथसीघ देव लीः सोसती श्री महाराजकुमार लाल श्री उमरावसीघ कैस आसीस सलाम। इहा कुसल है। राउर कुसलछेम अछा चाही जे सुनी कै खुसी रहै। आगे इहा के हेतु वात अस है जे हवेली परगना चालीस असवार पेआदा आऐल है से हम पंच सभ पर वडा दवा है वौ पालकी पर भी दवाव है। पाछे से लाल सुवा के अवाइ है। से पलटन वौ रउरा अटक वुझी कै वडा दवाव अव करते है ही से जानल जाइ। इ सभ इते वात कहते है ही जे पलटन नही आवै तेही त्राऐस वडा मनसुवा है। से लाल श्री परानसीघ के खत आइल है। मदत वदे से हम भीरी समेत रमकोला जात हइ। अव रउरा का देरी है। से वात जलदी से लीखव। जेआदा का लीखु। हमरा पाछे तो कोटसरी परल है। हमार परजा पुसतन के रहल है। से सुनंद पकरी के ले गेलन है। से हम सभो साइत जानी कै चुप लगाऐ रहली। से जानल जाइ। वहुत का लीखु। मीती माघ वदी १ रोज शमत १८५९ के साल

२८ (क)

आगे वसोकदमे आवने लसकर फतेहनीसान कोटाम नागपुर मो वहरादे वंदोवसत सुरगुजे के तुम्ह को मालुमे है। लेकीन अवही माफीक हुकुम गवरनरजनरल साहेव वहादुर के अैसा वंदोवसत हुआ के वसवव दोसती महाराज साहेव के वासने समुझावने वुझावने वंदौवसत सुरगुजे का जो साल गुजरे मो दोनो सरकार मो सरकार गौवरनर जनरल साहेव वहादुर वौ सरकार महाराजै रघुजीव भोसले साहेव के मोकरर हुआ है वौ लाल जगरनाथसीघ सुरगुजे का मोखतारगी पर वैठाले गए है। इसी वासते ऐक साहेव वडानागपुर महाराज का पास गए है वौ ऐक साहेव कोपनी समेत लाल मजकुर का लडकेवालको खवरदारी करने का वासते पलाम् का तरफ जाते है। लेकीन लाल मजकुर का लडकेवाले सुरगुजे सो उठी कै पलाम् आवहीगे वौ वंदौवसत होने तकी उहा पर रहेगे वौ लसकर हजारीवाग का तरफ फीर जाता है। इस वासते तुम को लीखा है के अगर अव तक तुम्ह माफीक करार वंदोवसत सरकार के काऐम हौव्। इस वात का कमाल वहेत्री तुम्हारा है वौ सरकार मो खुसी है। सा अव चाहीअे के माफीक करारदाद के अपने काऐम रहना वौ कोइ दोसरा वात अपने दील मो मत लावना वौ अकीन जानना के आगे का करारदाद वमौजीव वंदौवसत सुरगुज का काऐम रहेगा। हरगीज दोसरा वात न्ही होगा। सो तकीत जानना—*

(ख)

श्रीराम १

नकल चीठी कुअर दलजीतसीघ जागीरदार पालमो तालुके सुरगुजे ताः १ माह माघ सन १२१० फसीली सरह इअह है—

—स्रोसती श्रीगरीवपरवर वंदेनेवाज सलामत श्री श्री मेजर साहेव लीः कुअर देवान दलजीतसीघ कैस वंदगी सलाम। आगे साहेव के अकवाल ते इहा कुसलछेम है। साहेव के कुसलछेम हर हमेस के सुभ मगल चाही जे सुनी कै खातीरजमा होऐ। आगे साहेव के परवाना आऐल। समाचार पावल। जीव खुसी भेल। लीखल आऐल जे तुम्ह लाल संगरामसीघ को तुम्ह अमइअत भेजते हव्। मालगुजारी देते हौ। से हम तो आजु तक से हमारा ऐ ऐक आदमी नही भेजे है न मालगुजारी मे हम ऐक पैसा नही दीहे है। हम लाल जगरनाथसीघ के हुकुम पर है। साहेव जवन वातचीत हम से गुदसता साल करी गऐन सेइ वात पर हम है। हमरे पर लाल संगरामसीघ वडा दवाव

*Foreign Dept., 14 February, 1803, No. 52

करते है। कहते है जे हम से सलुक करो वौ मालगुजारी भरी देव। सो हम शाफ जवाब देल। तेह पर हम पर वडा खफा है। वहुत का लीखी। साहेब तो सभ बात के सेआने है—

(ग)

नकल चीठी सोभासीघ देवान ता: ९ माघ सन १२१० फसीली सरह इअह है—

—सोसती श्री परवलपरताप उदीतपरताप सपुन महाराजधीराज श्री महाराज कुमार लाल श्री श्री जगरनाथसीघ देव् जी: सदा कै सेवक देवान श्री सोभासीघ कै पाव टेकी कै सलाम। इहा साहेब के परताप सैं नीके हइ। साहेब कै कुसलछेम घरी घरी कै उदै मंगल सुभ चाही से सुनी कै हमारे चीत परम आनंद होऐ। आगे वहुत दीन भेल साहेब के समाचार नही मीलल है से दील चीत लागल है। इहा सुरगुजा के बातचीत से साहेब के सब बाल माहीरे है सो हमर कीहा रुपैआ वदे वहुत कहत करत है। से साहेब ऐक वुधी बात हुकुम होऐ। जवन बात मे हमर उबार होऐ तवन बीचार कै हुकुम होऐं। हमर कीहा मोकरर रुपैआ लेहै कै वीचार है। वौ ना देइ हम नसट जाइ वौ देइ तौ नसट जाइ। सो साहेब ऐक वुधी वताऐ देइ। वहुत जेअदा वीनती का लीखी—

(घ)

श्रीराम १

नकल चीठी कारी राऐ ता: ९ माह माघ सन १२१० फसीली सरह इअह है—

—सोसती श्री परवलपरताप उदीतपरताप सपुन श्री महाराजधीराज महाराजकुमार लाल श्री श्री जगरनाथसीघ देव् कै जी: इहा सदा सेवक सरदार कारीराऐ क सलाम। इहा कुसल साहेब के धरम तें नीके हइ। साहेब के कुसल मंगल सदा भले चाही जे सुनी कै हमरे आनंद होऐ। आगे ऐ बेच के समाचार नही पाइ से चीत लागल है। आगे हेतु बात अस है। परसीआ महतो के लेके वहुत मारत बांधत कीर ली परत है से जीव पाये के नही बुझाऐ परे। उन्ह के लरीका बाला अस आऐ कै टीके है। से अपन वीना मरत है। से अपने मालीक हइ। दस पाच रुपैआ के खरच साहेब देखल जाऐ। अथाह भैऐल परसा से पुरीआ पोच की नही आवें पावैं। से कवनो उपाऐ से खरच के बदी सकरी। अपने खावींद हइ। ऐक रउतारा साहेब देव हमार आदमी नोन तमाकु के वासते जात है। कहइ लुटावै तो साहेब खोज करी देघ। जेआदा का लीखी। गाठी असवार पैअदा हवेली पर टीके है—

फा० ८

(ङ)

श्रीराम १

नकल परवाने के ता: २५ माह जानवरी सन १८०३ अंगरेजी को वनाम लाल संगरामसीघ सुरगुजे को लीखा गआ था सरह इअह है—

अजीलुलकदर लाल संगरामसीध माजुम नुमाऐन्द वमोकदमे आवने लसकर फतेहनीसान का वमोकदमे कोटाम नागपुर के तुम्हारे सुनने मो अआ होगा। लेकीन अवही मरहठा मोहीम का उपर दुसरे तरफ है वौ भी दोसती वौ अखलास जो दुनो सरकार मो तरफ से सरकार अंगरेज वहादुर वौ तरफ से मरहठा के कदीमुल अइआम सो मनजुर नजर के है इस वासते ऐकवारगी लसकर सरकार अंगरेज वहादुर का वासते वंदौवसत सुरगुजे के आवने सो देरी नै राह पाआ है। वलके उसी वंदौवसत केअ वासते ऐक साहेव सरकार अंगरेज वहादुर का तरफ सो मरहठा का पास नागपुर मो गऐ है। वौ सरकार अंगरेज वहादुर का अैसा मनजुर है के माफीक वंदौवसत साल गुजसते के नेक तरह सो कारवार उहा का दुरुसत होऐ वौ कीसु का उपर जुलुम वीदत नही पहुचे। लेकीन इन्ह रोज सुनने मो अैसा आवता है के वखतौवरसीघ जागीरदार परसे का जो लाल जगरनाथसीघ का रीफागत मो था पाऐस रीफागत उन के उस के उपर जुलुम वौ वीदत नेहाऐत करते हव। सो इअह काम वहुत वे वेजाऐ नेहाइत खराव तुम्हारे हक मो है। इस वासते तुम्ह को लीखा है के जो आदमी के लाल जगरनाथसीघ का रीफागत मो सामील है उस वाऐग जो उन्हो का उपर कुछ ऐक सखती नालाऐक वेवजह पहुचावोगे तो अकीन जानना के इस वासतें तुम्ह नेहाऐत खरावी परेशानी मो पडोगे वौ कदही कीसी तरफ सो कुछ ऐक वेहत्री का राह तुम्हारा न्ही होगा। सो अपने दील मो अकीन तसौअर करना वौ जीस सुरत मो के तुम्ह नेक तरह रासती वौ दुरुसती सो उहा का अपना काम अंजाम करोगे वौ कीसी का उपर जोर जुलुम नही पहुचावोगे वौ भी मौजीव तुम्हारा वेहतरी का होगा। सो ताकीत जानना—

२९ (क)

श्रीरामचंद्र देव स्हाय

स्वौस्ती श्री राजीमानराजै श्री संकर साही वावु सुवेदार ली: स्वोस्ती श्री महाराजधीराज कुमार श्री श्री लाल जग्रनाथ सीघ देव कैस राम राम। आगे इहा कुस्ल

छेम है। राउर कुस्ल छेम हर हमेस कै चाही जे सुनी कै खातीर ज्मा होऐ। आगे राउर खत आऐ वो लछुमनसीघ के जुवानी हवाल मालुम भऐल। रउरे वेस उतम लीखेन। हम तो नीहचे सरकार के जानत हइ सरकार के हुकुम वो दीनदेआल लला के कहेव मवजीव काम व हुकुम वजावत रहेन सो हमारा जान पर अवरे वआऐ लागल। तेह पर हमने पराऐ के हुजुर जात रहेन से हमारे खातीर घाट घाट वद करे। तेह पर हमने लला दीनदेआल से सलाह वुझे। तेह पर लला मजकुर कहे जे हमार वात वो हुकुम नही मानते है से तुह अपना जान वचावो। सो हमार जान वाचे के तरह सुरगुजा मे नही दीसाऐ। तव हमने नीकली के साहेव के पास आऐ। साहेव हमारा खातीर करी के राखल है। तेह पर सो साहेव के खत लछुमनसीघ लेहे वदे आऐ सो हम अपना मन सो कैसे आऐ सके। सरकार के सनद फीरंगी के पास आवे। वो फीरंगी सपुरुद करे तव तो हम आऐ सकते है वो हमने इहा है तो सरकार के सउपे पर इहा वठे है। जव साहेव हमार परवस्त के नजर राखी तो हम साहव के नजीके मे है। वहुत का लीखें। रउरे तो सभ वात के सेआने हवो। मी० फागुन सुदी ६ रोज स्मत १८५९*

(ख)

श्रीराम

स्वोस्ती श्री गरीवपरवर वदेनेवाज अंगरेज वहादुर मेजर वराटन साहेव का ली: सलामत। स्वोस्ती श्री म्हाराजधीराज कुमार लाल जग्रनाथसीव देव कै वदगी सलाम। साहेव का वदोवस्त षुसवहाल चाही जे हमै सुनी के वहुत षातीर ज्मा होऐ। इहा साहेव का मेहेरवानगी सौ षुस वहाल है। साहेव का परवाना हमारे वोआस्ते आआ। सरकार का मेहरवानगी हवाल जो लीषा गआ सो दरीआफत कीआ। इहा का हवाल अऐसा जो हमको आपका साथ छुटे डेढ महीना भआ। हमारा ऐक वंदोवस्त नहीं हुआ। परच के वडा लचार है। नोकर छोडावने के ऐको वंदोवस्त नही ठहरै सो हम आपका हुजुर आवते है। हजारीवाग वो मरहठा कै जासुस हमारे पास आआ था संकरवावु का भेजा हुआ। सो हवाल हमका लीषै। जद मरहठा को देआ पर आआ तद पीतंमरसाही उसको मीली के सुरगुजे मे ले आऐ। मरहठ मालगुजारी भरवावता है वो हम को लीषा ता भेट करने को। सो चीठी उसका हमारे पास आआ था सो हम आपका हुजुर मे भेजा है। चीठी का हवाल आप दरीआफत कर लेव वो हम उसको जुआव लीषा सो नकल आपका पास भेजा है। हम आपका पास लावते हुऐ। हमारा लडीका उठावने के हमारा वडे आदमी गआ है। महीने फागुन भरी मे लडीका मो कर पलामु आवैंगे वो पलामु आऐ पर दुइ सौ रुपेआ हम को परच कटरेट साहेव का पास मीला है। सीका वो सरकार मे उस दफे अरज लीषी भेजे थे। हम को परच वाडर मीलै जीस मे हमार वदोवस्त होऐ। सो आप हमार धनी हव।

*Foreign Dept., 26th March, 1803, No. 142

आप ही का बंदोवस्त करे सो हम सब वदोवस्त होगा। जीस में हमारा परवस्ती होऐ सो सरकार से कीआ जाऐ। जादे का लीषें। मी० फागुन सुदी १० रोज सवल १८५१

(ग)

श्री :

राजे श्री जगनाथसीघ लाल यासि संकर साहि वाबू सुमेदार राम राम। तुम्हारे समाचार भले चाही। इहांके समाचार भले है। आगे कहना यैसा जो तुम्हौंरे तर्फ से वोधी राम दूबे आए इनके जूवानी से कूल हकीकत मालूम भया। इसे जो कूछ कहने का रहा सो उनसे बोले है और उनोने बोले की सरकार के दो भले आदमी चलै। इस पर से सरकार से लछमन सींघ वारगीर व मानाजी नाएक भेजे है सो इनके व दूबे के जुवानी से कूल हकीकत मालूम करके वहूत दूरंअदेसी वीचार करके जो करने के है सो करना। तुम्हारे खातर गरीब सींघ हजूर मे वहूत तरहसे कह की वो सरकार को समझके वैठे है। तद हमने आपने वचन दीए की जो हमको समझ के रहैगा उसका वूराई हरगीज होने के नही और हमसे जुदा होकर रहैगा उसको धरती जगा देने के नही है। इसे मरहठा से जो दूरा भाव रषे है तेके भला रती भर नही भएआ। इएका खूव समझिहा और आगे जो कोउ करी तेह के भला होने के नही है। ए खूव समझें चाही और साइत एही है। फैर वखत चूके पर आगे सब अकार्त है। तेसे जो तुम का रूजू भए से अछा नजर आई तो दूवे कवूल करके गये है सो प्रमाने सरकार में सुरषूरु होना चाहीएगा। तूम्हार कौल वीक दूर होत है। आगे मरजी तुम्हौर है। अतेक कुछ समझ के करीहा। सो तुम्हौरे काम पर परी हमार सरकार के रीत है की सुचना कर देना। आगे जीसके जौन तरह मे भला नजर आवै सो करै। उसका वांएसा सोछावी सरकार से जरुरै होत है। सुरगुजा हमार आइ कूछ दूसर के ना होंए जे का हम छापव। सो मालीक दूसर के पाये मंजूर पडने के नही है। ए खातर जमा रखे न :

रु० २० खर्च को देना—

३० (क)

मुसफक मेहरवान दोस्तान कपितान ककरेल शाहेब अजतर्फ संकर शाहि वावू सुमेदार मूकाम दरजागा प्रांत सीरगुजा राम राम आंकि आपके पएरआ-

फिअत भला चाहीए। इहां आपके मेहरवानगी से षएर है। दिगर मजकूर राजे श्री केसव गोवींद सुभेदार के षत से अह्वाल मालूम भया होगा व हाली वी षत गया है उस परसे मालूम होगा। दुसरे हम श्रीमत के आज्ञां प्रमांने कूच करके मूकाम ममजकूर को दाषल भए। इसे इहाँ अपने पास षैरखाही वाकफकार लोग कोइ नहीं। इसे आपको अरजी लिषे है। जगनाथ सींघ उठकर उहां गए है सो उनके रवानगी हमारे नजीक कर देना। पीतामरसीघ व सगरामसीघ इनके पारपत्य सरकार आज्ञा प्रमाने करने मे आवने हैं। आगे जगा के वदोवस्त षातर वाकफकार होना। इसे जगनाथ सींघ के रवानगी जलद कर देना चाही। उनका वदोवस्त वि करने में आवैगा। दुसरे भारवरदारी के उट रहे सो कोडया मे भर गया। अव भारवरदारी को जानवर नही है। इसे आपको अरजी लिषा हो। सो मेहरवानगी करके हुंथीलाहल मोटा एक अगर उट दो लछमन सीं वरोवर भेज देने तो हमारा वडा काम पर पडता। जादा अर्ज क्या लिषे। आप वडे है व हम को तो श्रीमंत के हुकूम है की उहा षत पत्र लीषते रहना व हम सव वात से हाजर है। वरकडचीलर सरंजाम षातर लछमन सींघ अरजी करंगे।* (हस्ताक्षर, जो पढ़े नहीं जाते)—

(ख)

मुसफक मेहरवान दोस्तान कपीतान ककरेल शाहेव अजतरफ केसौवगोवींद सुभेदार राम राम आंकी आपका षएरआफियेत भला चाहिए। इहाँ षएर है। दिगर मजकूर सुरगुजा वाले पीतामर सींघ व सगराम सींघ इनके पारपत्य षातर सरकार से संकरसाहि वावू के रवानगी भया है। इसे इनके नजीक वाकफकार आदमी सरकार षैरषवाई के कोइ नही है। इस षातर आपको षत लिषे है। सो वावू मजकूर आपको षत लीषेंगे तो जगनाथ सीघ लाल के वीदा आप कर देइगे। तफावत ना करेंगे व उनका वदोवस्त षातइ सरकार से आज्ञा भया है उस प्रमाने वंदोवस्त वी करदेइगे।

(हस्ताक्षर, जो पढ़े नहीं जाते)

३१

श्री राम चंद देव साह—

स्वौस्ती श्री गरीवपरवर वदनेवाज अगरेज वहादुर कपीतान श्री श्री रफसेज साहेव जी व सलामत ली:। ठा: धुधा राम कै सवगी सलाम। आगे साहेव के प्रताप से इहा कुसल छेम है। साहेव के कुसल छेम हर हमेस कैं सुभ मंगल हर घरी कैं चाही जे सुनी

*Foreign Dept., 27th March, 1803, No. 145

कै खातीर ज्मा होऐ। आगे लाल साहव के पालकी के साथ हम भी आपना लडीका वाला समेत उठी के आप के कदम तर आऐ है। हमारे जान मारने के फीतुर लाल सग्राम सीघ वौ पीतंमर साही लगाऐ तव उठी के साहेव के कदम पर आऐ है। हमारे पर वडा खुन राखे है जे सुरगुजा के भेद वौ मालगुजारी के ज्मा साहेव से सभ भेद ठाकुर ने कहे। इसी वात पर हम पर इलाका दीऐ सो हम आपना जान ले के वौ व अंपर ही मुधा साहेव के पास आऐ है। सो हमार परवती साहेव के हाथ है। मी: चैत वदी १४ रोज संवत १८६०...*

३२ (क)

(मोहर: U श्री O राजाशाह वरखित प मुषो जी सुत वेंको जी भोसले सेना धुरन्धर निरन्तर)

मानामा ककरेल साहेव यास यंकोजी भोसले सेना धुरंधर सुर सन सन्ना समया वो रौन आलक सं १२१२ कहना ऐ सा जो प्रांत सीरगुजा के बंदोवस्ती यातर हजुर से संकरसाय वावू को भेजे है सो ईन के नगीच सरकार षैरषाही के आदमी कोई नही है। ई से जगरनाथसीघ सुरगूजा वाले तुम्हारे पास गया है सो उसके वावे वावू मजकुर तुमकु लिखेंगे। सो उन कु भेज देना ता: २७.....†

(हस्ताक्षर, जो पढे नही जाते, और एक छोटी मोहर)

नकल खत सुरगुजा के लाल जगरनाथ शीघ का ता: २४ मारचि शन १८०३

(ख)

राम १

शोशती श्री शरवउपमा जोग महाराजधीराज श्री राजकुमार श्री श्री लाल जगरनाथ शीघ ली: कीरपा बनाईल कैं सलाम। आगे इहा कुसल है। राउर कुशल भल चाही जे सुनी कै खातीर जमा रहै। आगे राउर खत से समाचार पावल। आगे महरी के लाल उमराव शीघ वौर डाका परल शाठी आदमी से लाल उमराव शीघ वौ शीलवत शीघ वौ रामजीवन शीघ तीनो सवाग वांचल मेला वौ शीलवत शीघ खवर वडा मार परल। वाइ टुट गइल। वौ शीपाहीन तरवार से मारलन। से जीऐ के जोग नही। खैलसे मुरकत है। मुहसें वौ रामजीवन शीघ का भी वडा मार

*Foreign Dept., 29 March, 1803, No. 147

†Foreign Dept., 12 April, 1803, No. 168

है। से सभ के लेगेलन् शहर मालपन सभ लेगेलन खडीआ ताहा दल छोडाऐ लेलन। लंगा कर कै लेगेलन। शो जानव। भहरी सभ पराऐल है वौ फौज के डेरा खोरमा परनाम पुर मो है देखी काहा दो जाला। गवार लोगन के जवानी सुने मो आवत है जे फौज व लाम जाइ शरौरन डहर छोडव शे का छुठ है का शाच छै। गोदा-इआ जाने से इहा के तो इहे इकी गती है। शे हम लोगन का जीव फकासे है काहे जो राह पर लागी चेहुइं लागी चे मनशा माफ़ी तो घरी घरी चीरावत है। शे ऐक रह की गती लीखव। इमरन तो रात भागीला। दीन वशीला से लीखव। जेआदा सुभ। चइत वदी १५ रोज संवत १८६० शाल—

(ग)

श्री

मुसफक मेहरवान दोस्तान कपीतान ककरेल साहेव अजतर्फ केसौव गोवींद सुभेदार राम राम आंकी। आप का षएरआफीअत भला चाही। ईहाँ षएर है। दीगर मजकूर आपका पत आया। मजकूर मालूम भया। आप लिष थे की मेजर साहेव को अरजी डांक वरोवर भेजे है जैसो जवाव आवैगा वो डाशा करैगे और इधर से षत मोहर के जलद भेजना। सो षत लीषे है। और संकर साहि वावू वी आप को पत्र लीहेगे सो दरिआफत कर के जगनाथ सीघ लाल के वीदा जद कर देने। अव ना करने। जगनाथसींघ वाकवकार है। उन के वाकवकारी से वावू मजकूर सूरगुजा के वदोवस्त करैगे और जो लीषने के सो आगे लीषे चहै (हस्ताक्षर, जो पढ़े नहीं जाते)

(घ)

श्री

मुसफक मेहरवान दोस्तान कपितान ककरेल साहिव अजतर्फ संकर साहि वावू सुभेदार प्रांत सुरगुजा राम राम आंकी। आप का षएरआफियत भले चाही। इहाँ षएर है। दीगर मजकूर आप के षत आया। मजकूर मालूम भया। तहां आप लिषे थे की एक षत आपरा व एक षत केसो गोवींद सुभेदार के मोहर के जलद भेजना सो डांक वरोवर खत आप के भेज के दीन रात कर के मगाइ के भेजे है। सो दरिआफत करके जगनाथसींघ के वीदा जलद करै चाही कैसे की सरकार आज्ञा हम को

एही है की पीतांमरसीध फीरंगी के दुसमन है सो उस का पारपत्य कैसा वी करके करना। सो इहां हम जव तज वी लगाइ रषे है। लेकीन दुसरा वाकफकार आदमी हाथ के नीचे नही है करके आप को पत लीपे है सो जल्द देषते षत लाल मजकूर के वीदा कर देना। अव देर ना करना व् भीरवरदारी के जान व् रषातर अरजी लीषा था जो तलास मे होएगा तो मेहरवानगी करके भेज देना। उसका दाम जो होहै सो आप के पास पहुचता कर देंइगे . . . . . (हस्ताक्षर, जो पढ़े नहीं जाते)

(ङ)

श्री

राजे श्री जगनाथसींघ लाल यौंशि संकर साहि वावू सुभेदार राम राम। तुम्हारे समाचार भले चाही। इहां के समाचार भले है। आगे तुम्हारे पत आए व लछमन-सींघ के जुवानी से हकीकत मालूम भया। इसे तूम कौनव वात धोपाइ न करोहा। ककरेल साहेव को वी पत तुम्हारे वास्ते लीषे है सो तूम देषत यत्र कूच कर के आवना। पीतामर सींघ व् जकरामसींव को नीकालै के हुकूम सरकार के है। आगे जगा के वंदो-वस्त तुम्हारे वाकफकारी से करने मे आवैगा षातर जमा से आवना व मरेजी मनैचा वगेरे के याद भेज हन सो ले देना। अगर ना करना। इसी वाइ लछमन सींघ जुवानी कहैगे सो हमारे कहे कर के जानना . . . . (हस्ताक्षर, जो पढ़े नहीं जाते)

३३

स्वास्ती श्री वंदेनेवाज गरीवपरवर अगरेज वाहादुर श्री श्री मेजर वरेटन साहेव सलानती। स्वास्ती श्री म्हराजधीराज श्री म्हराजकुमार श्री श्री लाल जगरनाथ सीघ देव कैस वंदगी सलाम। आगे इहा साहेव कै ऐकवाल से खैरआफीआत है। साहेव की खैराफीआत चाहीऐ जै सुनी कै प्रम मीत आन्दं होऐ। आगे श्री अरज आऐसा की आप का हुकुम आवेगा तो लाल उमराव सीघ आप कने सवाल कुछ करने

के आहीगे। आप हमार खावीद है। आवो सुरगुजा का हवाल आऐसा है जो संकर वाबु को मरहठा का सुवेदार को लाल सग्रामसीघ आवो पीतमरसाही ने मार को नीकाल दीऐं। वहुत आदमी मारे परे। संकर वाबु को तीनी जखमी हुए। सेना नगारा नीसान व मेवजार संगराम सीघ लुटाऐ कीऐं। आवों कारीराऐ सरदार को मान दीऐ। आवो पीतमर साही सु वाको तरफ से हजुरी जुझे। दवो त्रफ से दुइना मुद आदमी मारा पडे। आवो वहुत आदमी दुनो त्रफ कै खरच हुऐ। आगे म्हेरी हालत वहुत वेहवास है सो आप कने आरज को जात रहे सो हम कहे जे हुकुम मगाऐ देते हैं। ते वतहेसे आट के है। आगे कुदरी का लोग हमारा हुकुम न्हीं मानता है जो ऐक षवर आमलदार को लीख भेजव। मीः जेठ सुदी १५ रोज कै संव्रत १८६० के साल वार आतवार—*

३४

नकल खत सुरगुजै का—सरह इसह है सोसती श्री महाराजधीराज कुमार लाल श्री श्री जगरनाथ सीघ देव लीः सोसती श्री परवल परताप उदीत परताप सपुन महाराजधीराज जुवराज श्री श्री वलभदर साही देव वो महाराजधीराज कुमार लाल श्री श्री संगराम सीघ देव कैस सलाम। इहा कुसलछेम है। राउर कुसल मंगल चाही जे सुनी कै आनंद होऐ। आगे वहुत रोज भेल कुसलमंगल कहेतु नही पाऐन से लीखव वो जे कीछु के साइत होनीहार रहे से होऐ चुकल। अपने जो राज वो राजा के वेहतर करेल तव साएेल के फोरसे दोसरे वात भेल। से अपने मालीक वो सेआन हइ वो जीमीदार भैआ। पोआको राम पावले कुअर देवान वौर सव छोट वड जरहीन से सरकार मे आएं कै ऐक भइल। कवनो वात का अंतर नाही है। से अपने अव पाछील वात ऐक मती धरी जे करे के वोलाइस करे के भेजी के रौरा के ले आनी इहा आऐ। से चार जीमीदार के सलाह साथ जवन वात से राउर खातीर होइ सेइ वात है जेही मे राज राजा के वेहतर होऐ। अपनन्ही मे सव ऐक सुर होऐ के रही आइ से वात करी। सभ जीमीदारन्ही के खत जा है। वो ववा धरमदास के भेजे हइ। जवन वात कहे से वात के परमान करी जानव। कौनो वात के अंतर मती राखव। ऐकर खुलस जलद लीखव। मीती आसारह वदी ९ रोज संवत १८६० मोकाम नगर श्री श्री महथ वावा श्री वलीराम भारथी देव पाठक श्री जेठुराम कै आसीस खत से जानव अपने मालीकं हइ जेहमे राज राजा वने मे वात करी†

*Foreign Dept., 16 June, 1803, No. 232

†Foreign Dept., 20 July, 1803, No. 274

३५

नकल खत लाल जगरनाथ सीध का---सरह इअह है---सोसती श्री गरीबपरवर बदेनेवाज सलामत श्री श्री मेजर बराटन साहेबजी लो: सोसती श्री महाराजकुमार श्री लाल जगरनाथसीघ देव कैस बंदगी सलाम। आगे साहेब का अकबाल सो इहा कुसलछेम है। साहेब के कुसलछेम हर हमेस कै चाही जे सुनी कै खातीरजमा होऐ। आगे इन दीनन कै साहेब के समाचार नही पावल है। से जीव लागल है। से आपन खुसी मीजाज कै लीखाआ जाऐगा। हम तो साहेब का कदम के वडा भरोसा राखे है। आगे सुवेदार केसोगोवीद वो लला दीनदेआल के खत हमारे पास आऐ रहे सो सत हजूर मो जात है। हवाल जाहीरे होइ। बहुत का लीखो मी: असाड सुदी ११ रोज संवत १८६० साल मो: कुदरी*

३६

नकल खत सुरगुजै का---सरह इअह है सोसती श्री महाराजधीराज कुमार लाल श्री श्री जगरनाथ सी देव लीः सोसती श्री राजकुमार भइआ हरीहर साही वो सोसती श्री राजभारन देवान वीजै सीघ सोसती श्री राजमानन श्री देवान अली साही महाराज भारन कुमार देवान श्री दलजीतसीघ सोसती श्री राज भारन देवान वलीनाथ साही कै सलाम। इहा कुसल है। साहेब कै कुसल मंगल घरी घरी कै उदै मंगल चाही जे आनंद होए। आगे बहुत रोज भैल कीछु हेतु बात नही पाऐन से लीखल जाइ वो हमरे सभ मीली कै सरकार मे आऐन। सभ छोट वड जीमीदार मुलुक के ऐक भाऐन। अव सभ सरकार से वो हमरे जीमीदार सभ मे कीछु बात के अंतर नही है से अपने जो सभ बात राजराजा के बनावे के करने तव साइत के फेर से नही बनल। से अब हमरे सभ मीली ऐक सुर भऐन से अब अपने कौनो बात के अंतर मती राखी। अपने राज वो राजा के मालीक से आन हइ। अब अपने बीजे करी जे करे के मरजी करी कौलाइ से लाऐ के रौरे के ले आनी। जवन बात के मता लीव राउर होऐते से बात हमरे सरकार से करी देव। सरकार वोर से अब वीच नही है से सरकार के खत वो हमरन्ही के खत ले कै वावा धरमदास जात हइ। जवन बात कहै से परमान कै जानव। अब अपनी कौनो दोसर बात मती वझी। महाराज राउर लरीका है। रौरे से आन हइ। जे ही मे वेहतर मुलुक सभ के होऐ से करी। खत के जुआव जल्दी लीखल जाहु। मीती असारह

*Foreign Dept., 20 July, 1803, No. 275

बदी ९ संवत १८६० साल मोः नगर ठाकुर श्री गजराज सीघ क सलाम खत से जानल जाइ कौनो बात के अंतर नही*

३७

श्रीराम

नकल खत लाल जगरनाथसीघ का—सरह इअह है—सोसती श्री गरीबपरवर बदेनवाज सलामत कपीतान बहादुर श्री श्री रफसेज साहेवजी लीः सोसती श्री महाराजधीराज कुमार श्री लाल जगरनाथसीघ देव कै सलाम वंदगी। आगे इहा कुसलछेम है। साहेव के कुसलछेम हर हमेस के सुभ मंगल चाही जे सुनी कै खातीरजमा होऐ। आगे इन दीनन के समाचार नही पावल है से दील लागल है। आगे पहीले भगी ठाकुर के हाथ दीन देआल लला के खत हजुर मो गऐल है तेह से हवाल मालुम होऐत होगा। फेर राजा वली भदरसाही देव वो सगरामसीघ लाल वो सुरगुजा के जीमीदार के खत आऐल है। से खत हजुर मो जात है। हवाल दरीआफत करी कै जैसा हमे हुकुम आवै वैसो माफीक हम खत के जुआव लीखी भेजे। हमे तो हजुर के सीखावन साथ काम करना है। साहेव तो सभ वात के सेआने है। वहुत का लीखु। मीती सावन वदी १ रोज संवत १८६० साल मोः कुदरी मह ठाः धुधाराम कैस वंदगी सलाम पहुचै†

३८

नकल खत लला दीन देआल का—सरह इअह है

राजमान राजे श्री लाल जगंनाथसीघ राजे श्री वास राजै श्री दीन देआल लला के राम राम। आगे आप के समाचार सदा भले चाही। इहा के समाचार भले है आप के मेहरवानगी से कहना अैसा। जो जब से हम ने तुम्हारे पास से आऐ है तद से कुछ वरतमान नही मालुम भआ। सो लीखते रहना। औ हम नै कोडेआ से नागपुर को गऐ ते। पर तुम्हारा सभ समाचार सरकार मो कहने आवा है। कलकते से गोरनल के पतर तुम्हारा जवाव सवाल लगा है से तुम्हारे पर सरकार का वडा मेहरवानगी है। से तुम्हनै कोइ वात का दोखा मत करना। जद तुम्हारा हमारा मुलाकात होगा तद

*Foreign Dept., 20 July, 1803, No. 276

†Foreign Dept., 20 July, 1803, No. 277

सब बात कहने मे आवैगा। इस के पर लाल मंगरामसीघ वौ पीतमरसीघ का जवाब सवाल तुम्हारे पास आवैगा। उस बात मो तुमनें मत परना। तुम्हारा जवाब सवाल कलकते से लगा है सो तुमने बे फीकीर से रहना। हम लसगर मो है तीसे कोइ आवाने वाले इधर कौ आवे तौ तुम लीखते रहना वौ मोहन हमारे संग नागपुर सो गआ था तुम्हारा काम पर आवा है सो इस पर मेहरबानगी करी कै जो रुपैआ इस का होइ सो देना चाहीऐ। जो कुछ उहा के वरतमान होइ सो मोहन के हाथ खत मो लिख भेजना। हम नै तुम्हारे नोकरी मो हाजीर है। नागपुर से वौ इहा से नोकरी हाजर है। इस पर राजै श्री माव भारथी व घनसीघ जमादार घाट ले औ अठाइ हजार फौज है सो अउ सीवा पर डेरा है वौ संकर बावु के पास लडाइ भआ सो लडाइ से मारके जखम खाइ कै लसकर मो आवे है सो तुम्ह को मालुम चहीगे। जेआदा लीखने लगता नही। जे कुछ मोहन जुवानी कहै सो हमारे कहे जानने। तारीख जेठ सुदी १४ संवत १८६०*

३९

श्रीराम

नकल खत सुरगुजे का—सरह इअह है—सोसती श्री महाराजधीराज कुमार श्री लाल जगरनाथ सींघ देव श्री महाराजधीराज कुमार लाल हरीनाथ सीघ देव लीः सोसती श्री राजभारन ठाकुर रघुवर सीघ श्री सरदार बखतौवर सीघ कैस सलाम है। इहा कुसल है। राउर कुसल चाही तौ हमार सुनी कै खातीरजमा होए। आगे ऐत्र दीनन के का राउर समाचार है से लीखनवौ। इहा के हकीगत अस जे संकर साही बाबू के थाना मारी दीहे न तेह पर सभ जीमीदार के मीलाइन पाल को औ महथ बावा अलीसाही देवान भइआ के कुमार देवान बीजैसीघ देवान के हम के ले गइन। महाराज के हजुर से सभ ऐक अगी राजा जीमीदार सभ ऐक सलुक भऐन। कीरीआ सपत भऐल। मे रौरा के लेहे खातीरी ऐक-ऐक सवाग भइ लेहैं के तालक लेहइ दसइ के से रौरे का कहत हइ। जइसन गुनीकै ऐकर जुआव देव अछा। से तो हम जैवे करब। बौन ही कहवे तो काहे जाव। हम तो राउर राह बहुत देखन। रउरे हमर बीसवास नाही राखल। जब से पालकी ले गऐन हमर जीव अदेसा भऐल। से जहन सीघ मे सभ हकीगत कही पेठाऐन से रौरे हमर बीसवास नही राखैन से सभ हकीगत लीखब। मीती असाढ वदी १३ रोज संवत १८६० जो चार जीमीदार को चाहो तो ऐकर खुलासा लीखब

श्री ठाकुर भुधाराम सै हमार परनाम आसीसवात से जानव†

*Foreign Dept., 20 July, 1803, No. 278

†Foreign Dept., 20 July, 1803, No. 279

४०

श्रीराम १

इजत आसार बाबु कुमार सीघ बाआफीअत बासन्द—अजाजा के तुम को मए खत सुबेदार केसो गोवींद पंडीत के पंडीत मसारल्ले के पास रोकसद कीआ जाता है। इस वासते इअह हुकुमनामा तरजुमा खत मजकुर के हीदुइ मे हुजुर सो मरहमत कीआ गआ लाजीम के माफीक हुकुमनामे के मजमुन वौ मतलब खत मजकुर केताइ। लेहाज खातीर रख के बातचीत करने के वकत पंडीत मसारल ने से अमल मे ला के कोइ हुरफ तफावत वो तजावज नही करना वो जरा वो जहुर वजा लावने मे हुकुम लीखे हुऐ के छोड बाढ मत करना। ताकीत आकीत जानना। ता: १ माह नौअमर सन १८०३ अंगरेजी—सरह हुकुमनामा का इअह है उस वासते के जमाने साबीक मे मतलब अंकुजी भोसीले वहादुर का अैसा था के मदद वौ माउनत मे सरकार अंगरेज वहादुर के हीफज वो अमान मे रह के अपने मुलुक पर अजसले खुद मालीक वो हाकीम वकत रहे। हम चुनचे इस मौकदमे मे अफसर दरखासत औ नामाये आमा सरकार मे इस तरफ के पेस कीहीन था। लेकीन जो उस वकत मे वासते रपत दोसती के जो दरमेआन मे महाराजै रघुजी भोसीले वो सरकार अंगरेज वहादुर के मरबुत वो मजबूत था इअह बात माफीक मुराद नाना साहेव मवसुफ के सुरती पजीर नही होती थी। अव जो सरकार तुरफैन मे नकासन वैं दीगर हुआ। बखुबी मकसद नाना साहेब मवसुफ का हासील होने सकता है। मगर जो नाना साहेव इन दीनो कवजे वो कावु मे अपने भाइ के है वो मालुम नही के अव तक मामीला मालुम मनजुर है इआ नही वो इअह बात सुबेदार वो अमले रतनपुर के मालुम है इआ नही वो अगर जाहीर है तो मनजुर उन लोग को कैआ है वो वइस बात पहुचने इस मामीले के फील हकीगत अैसा है इआ नही जाहीर करना। इस औहवाल का खाली खतरा नाना साहेब मवसुफ के से नही है वो भी मौजीव कमाल नाकीरद कारी वो नादानी का मतसउअर है। इस वासते चाहीऐ के ओअल तुम्ह पडीत मजकुर के पास जाऐ कै खत हुजुर का अजनवी के माफीक हवाले करो। वाद इस के जीकीर चलने पर वातचीत के अपने तरफ से मजकुर करो के तुम ने व मोकादमे लडाइ वो भीडाइ के जो इन दीनो सरकार अंगरेज वो सरकार रघुजी भोसले से दरपेस है कुछ अंकुजी भोसीले से हुकुम पाआ है इआ नही। अगर उअह इनकार करे के कुछ हुकुम नही पाआ है वो वातचीत से उन्ह के साफ रीफाकत रघुजी भोसीले की जाहीर होऐ तो लाजीम है के जवाव खत का ले कर कै औ हवाल उस मुलुक का दरीआफत कर कैं हुजुर मो आवो। वो अगर कुछ वौऐ वो रीफाकत वो दरदमंदी अंकुजी भोसीले की जाहीर हौऐ तव लाजीम है के वेजाहीर होन आमेजीस वो लगावट सरकार इस तरफ की व इजहार पास दोसती अपने मजकुर करो की

अब जो फौज अंगरेज का तुम्हारे सीर पर पहुचा केआ तदवीर वो फीकीर पेस लावोगे। अगर कहे के माफीक जमीर नाना साहेब का दरीआफत कर कै काम करेगे वो अभ मो लावहीगे तव उस वकत मे मोनासीव है के तुम्ह लगावट अपनी कर कै थोडा थोड़ा ऐक उपर-उपर इजहार इरादे मुलुह साहेवो का वातो वात पेस लावना जीस सुरत मे के वाद अेसी वात वतकहाव के इरादा दीली वो औहवाल वे इलाका उन के मालुम होऐ के वरसरे सुलुह वो मसालहत हही। वो ख्व इस वात मे नेहाइत दील जमइ तुम को हासील होऐ तव औहवाल नामा वो पेआमा मसालहत वो मोआफकत का जो अंकुजी भोसीला नै सावीक मे सरकार इस तरफ से कीआ था दरमेआन लावना। वो तदवीर खलास होने अंकुजी भोसीला की उन्ह से दरीआफत करना। कवन तवर से खलासी अंकुजी भोसीला वहादुर की होगी वो मोनासीव वखत जानी के तुम्ह भी इस तवर पर मसलहत देना के अकुजी भोसीला आव ना फौज सरकार अंगरेजी कोता इक वहाना कर कै होले मे उहा से खलासी अपनी करे वो मुलुक मे कीसी ऐक आदमी पर मालुम न होऐ के सरकार अंगरेज वो सरकार अंकुजी भोसीला से कुछ लगाव वो मीलाप दरमेआन मो है वलक व असवावे जाहीर वो तइआरी लड़ाइ वो मोकावीले फौज अंगरेजी की दुरुसत करे वो सरकार इस तरफ से भी इरादा जाने का उनके मुलुक मे व असवावे जाहीर मनजुर वो मसहुर होगा वो भी उन को समुझाऐ देना के अगर फौज अंगरेजी मोलुक पर जीमीदारो इतराफ गीरद नवाह तोहारे मुलुक के जो आखीर वाजे वाजे उन्हो मे से (जीर्ण स्थान) वो कवजे मो तुम्हारे नही है जावे तो अपने खातीर मो मोजाका न लावहो वोगीरा खातीर न होगी जब के अमल अंगरेज का होगा ख्वाह वोही मुलुक इआ मुलुक दुसरा ऐवज दीआ जाऐगा। खातीर जमा रखे ता: १ माह नौअम्बर सन १८०३ अंगरेजी—सरह खत सुवेदार केसो गोवीद पंडीत का तरजुमा हीदुइ मो हअह है। सुवेदार साहेव मोशफीक वो शफीक मेहरवान वो तवजुअह के फरमावने वाले आरजुमंदो के सलामत बाद पहुचावने मरातीव नेआज वो आरजु मुलाकात जेआदा खुसी के जो वेसुमार (जीर्ण) वे नेहाइत है जाहीर दील दोसती खजाने के कीआ आवता है के सुकुर खोदाऐ का (जीर्ण) ऐहसान के औहवाल मे राखाहीस करने से तनदुरुसती मीजाज सफकत भरे हुऐ के मदत से अलाहताला के नजदीक खेरीअत के रह कर के लाऐक सीफत वो सुकुर के है। उस वासते के अकसर इतफाक भेजना वो भेजावना खत वो कीतावत दोसती वो ऐगानगत को नेआजमंद वो उस मोसफीक मो दरमेआन रहा है वो भी धवकत फैसल होने मोकदमे मुलुक सुरगुजे के जेआदा सभ वकत से दरवाजा कीतावत खुसी असलुव का तुरफीन से खुला था औ दरीआफत करने से कारवोवार मोकदमे मालुमे के जो उस तवजुह फरमावने वाले से जहुर मोआआ कमालदानाइ वो होसीआरी वो महज सराफत वो नजावत जाहीर हुइ वो इस वात को पहुची। पस खेआल मे खेरखाह के जो अइसी दानाइ वो अकीलमदी वो लेआकतोनजावत तुम्हारे की नकस थी। अव जो जनाव से गौरनर जनरल साहेव वहादुर दाम अकवालहु के अैसा हुकुम

बीच जारी होने के मीला के फौरन ऐसीरे रसम भेजना भेजावना दोसतीनामे का दरमे-आन दोसतो वौ उअह् सफीक के वतौर साइसते साथ उस ही ऐगानगत वौ ऐक जेहती के सकता है होने नेहाइत मौजी व हासील होने खुसी ताजे वौ वाऐस मील खुसी बेअनदाजे के हुआ। हक ताला इस रसम जे अदा होने दोसती वौ दोसती के ताइक जो नेआमत वे उमैद यौ वदल बेवदल सके कइ सुमार करने हासील होने मुलाकात जीनमानी तर्की के सरमाए खुसी सदमानी का है जारी रखी वो ऐहसान अपने वौ कमाल वकसीस अपने से इस वासते कुमार सीघ के ताइक के मरद्र सलीके सआर वौ नेक कीरदार वौ मात मीदज ले हमारा वौ आकीफ कार उस दोसती नीशानी का है व वोसीले ने आजनामे के रवाने खीजमतसंरीफ के कीआ गआ वौ कइ क वात सपुरद मसारन अले के जो पोसीदगी वौ दील दोसती पंजीर के से है वौ वीच जहुर वजुरग के मीलेगा उसके ताइक पोसीदगी वौ दील दोसती मजील के सेतसौअर फरमा के जुवानी से दोसती तरजुमा के मोतसउफर फरमावोगे वौ उमैद है के दो कलमे औ हवाल खैर-माल के स मए मोफसील पावने हुकुम अकाए नामदार अपने से इआने महाराज अंकुजी भोसीले वहादुर के से वीच मोकदमे लडाइ वौ भीडाइ के के वीच इन दोनों के वीच सरकार दौलतमदार कोंपनी अंगरेज वहादुर के वौ सरकार महाराजै रघुजी भोसीले के दरपेस है। खवर वाकी वौ खवरदारी तमाम व कसेह के कीस माफीक हुकुम पाआ। कीस वासते के तरफ से गौरनर जनरल साहेव वहादुर दाम अकवालहु के उस मोसफीक को लीखा जाता है के अगर फौज नागपुर इआने मरहठे का इआ फौज वौ जमइअत दुसरे जीमीदारी कुरु व जैवार उस के का इआ फौज मुलुक मोतालीके उस सफीक के वीच कवजे कुदरत वौ अखतीआर उस दोसती नीशानी के है वासते लुट वौ पाट इआ दुसरे हरज वौ हरकत तरफ वौ राह से मुलुक मोतालुके उस सफकत मीले हुऐ के वीच ममालीक महरु सरकार इस तरफ के आवने न सके वौ माकुफ रहने सके तो इस सुरत मे व मोकदमे कजआ वौ तकरार वौ मोनकसार जो सरकार मे तुरफन मजकुरैन के वाके है कुछ अरज वौ मोआखजा वौ हरगीज सरोकार न वेदीगर का उस मोसफीक सो नही होगा। उमैद उसतवार उअह् के माफीक लीखने सदर के हमारे ताइक ऐक दोसतो तह दीली अपने से तसउअर फरमाऐ कै जवाव व सवाल रकीमे ने आज से साथ औ हवाल खैरीअत मीले हुऐ अपने इआद वौ खुल फरमा कर कै खुस वौ खुस फरमाओगे। ता: १ माह नौअमर सन १८०३ अंगरेजी मोतावीक २ माह अगहन सं० १२११ फसीली*

---

*Foreign Dept., 21 November, 1803, No. 555

४१

श्री रामजी

स्वस्त श्री सरबओपमा जोग्य राव राजाजी श्री बगतावर सीघजी जोग्य लसकर का मुकाम मेवाड प्रांत सु माहाराजधीराज राज राजेन्दर माहाराज सुबेदार श्री जसवंत राव जी हुलकर आलीजा बाहादुर केन बंच। आहा का स्माचार भला है। राज का स्दा भला चाही जे। राज तेवारो काही बात नही है। अप्रंचें राज फीरंगी सु मुकाबलो करे सो बोत आछो काम करे। ओर फौजभीत जमा करे के हुसार रहोगे। खासा असवारी पण सीताब आवते हे ओर भला आदमी सीताब भेजोगे। मागसर सुदी १३ री छ. १८६०*

श्री बगतावर सीघ

४२

श्री सीताराम सहाऐ

नकल खत केसो गोवीन्द पडीत सुबेदार रतनपुर इलाके छतीसगढ के भाजा अजार प्रीथ जीमीदार राऐगढ की लीखा था। सरह इअह है—राजा श्री जुझार सीघ जीमीदार परगने राऐगढ वासी केसो गोवीन्द राम राम। उवर तुम्हारा समाचार भला चाही। इहा का समाचार भला है। खत अआ। जो तुम्ह नै खत भेजा मजकुर मालुम भआ वौ तुम्ह नै फीरंगी का वौ संभलपुर का मजकुर लीखा सो सही है। बहुत रोज भआ हम को खत आवता न्ही अैसा लीखा सो संभलपुर के वौ फीरंगी के मजकुर आन परा। सबब तुम्ह को लीखने मो न्ही आआ। हाल तुम्ह नै अपने का तपसील लीखा सो सही है। इसी मो तोहारा भला। फीरंगी सै जीमीदार कतेक मीलै उन्ह का कौन हवाल। उन्ह की हाल कैसी है सो तुम्ह को पर सभ मालुम है। सो ऐह सबब लीखना जीस मो तुम्हारा जगह रहै सो काम तुम्ह करना। मरहठा अमल मो कीसी का जान न्ही गआ। चार रुपैआ नीच उच लेने मो आआ सो फीरंगी छोड़ने के न्ही वौर जगह मील के अमल करेहीगे सो उन्ह

*Foreign Dept., 6th January, 1804, No. 9

के राज के जीमीदार का हवाल तुम्ह सुने हौव से हमने तुम्ह को लीखा है। अैसा न्ही तुम्ह ने चकरीअ का मजकुर लीखा सो अछा है। जीस मो तुम्हारा वात रहै सो करना। हाल फीरंगी उठे है। उन्ह का वंदोवसत करने को मरहठे का देर लगने की न्ही। परंतु जौवन जीमीदार वीगडेगा उस की वात हुरमत रहने की न्ही। जीसे रखना होगा उन्ह मुलुक वचाए लेहीगे। इह वीचार तुम्ह को ना लीखना। परंत तुमहारा खत आऐ से लीखा है जैसा तुम्ह वोलते हव वौ ऐसा करी कै वतलावोगे। इ खातीर जमा सरकार मो है। इस से तुम्ह अपना वीसवास वढावना होगा। सो कीसी वात का अंदेसा ना कर कै हजार पाच सै जमइअत जमा करी कै सरकार की जमइअत संभलपुर के तरफ गआ है उन्ह से मील कै जौवन जीमीदार ने घमंड कीआ उन्ह कै जीस घाट सै फीरंगी आवने वाले वो घाट रोक के उन्ह का आवना इधर ना होऐ सो करना। जद तुम्ह जमइअत करी कै सरकार चाकरी मो हजूर होहगे तुम्हारा साल धुकौती तुम्ह को माफ है सो खरच करी कै जमइअत ले कै पहुचना। इसी मो तुम्हारी वात सभ जीमीदार से जेआदा रहते तुम्ह रहोगे। जौवन आदमी वकत पर काम करता है वोही को खावीद चाहता है। सो सभ ऐही जान कै करोगे सो वहतर वीचार सो करना। ऐलो सरकार है वंदोवसत करने का सो दुसरे का भरोसा रखते न्ही। जीसे अपनी वात रखना होगा उन्ह थोरे बहुत जमइअत से सामील होना। जो चाकरी करेगा सो फल भी पावेगा और जे मजकुर तुम्हारे तरफ कावु देखा के जवानी से मालुम भवा (जीर्ण स्थान)। फीरंगी के खत आदेमी के साथ भेजा है सो तुम्हारे तरफ से जावेगा तो तुम ने आदेमी दे के पहुचावना। मीती माह...(अस्पष्ट) ..*

४३

श्रीराम १

नकल खत खंडेराऐ लीलकंठ के वनाम राजै परतापरुदर जीमीदार खरीआड को लीखा था—सरह इअह है राजै श्री परतापरुदर राजै खरीआड वाले श्री अखंडीत लछुमी अलंकार सदा राजेमान श्री खंडेराऐ लीलकंठ राम राम। तुम्हारे समाचार भले चाही। इहा के समाचार आप के मेहरवानगी सो आनंद है। कहना अस जो नागपुर के खवर राजै से वो फीरंगी से सलुक भआ। सभंलपुर मे फीरंगी है। इन्ह कर फीरंगी के अरखास आऐ। जो संभलपुर के कीला इन्ह के जीमा कर कै

*Foreign Dept., 13th January, 1804, No. 22

जाने अैसे ताकीत आऐ सो संभलपुर के भेजे है। सो तुम्ह कीसी वात के आंदेसा न करना। कारन जो भोसीले के अमल काऐम है। जो फीरंगी के तरफ संभलपुर मो जाऐ के कीया सरकार लोग को लुटे होगा उस का पारपत्तर होगा। श्री मरहठा रघुजी भोसीले नागपुर मो आऐ। फीरंगी का घाट बंद कीऐ। से धीआ वो होल्कर इन्हो नै राह दीऐ नही। कारन जो फरासीस फीरंगी इन्होंने आगरेज के सुरंग पटन ववई अैसो जगह मो अमल टीपु के वेटे नै कीऐ नागपुर को जो फीरंगी नागपुर वो पुना मो है इन्ह के फरासीस फीरंगी हौदरावाद मो दाखील भआ। तुम्ह वे फीकीर रहने। भोसीला के काम मजवुत है। ऐह पाती के पीछे हम आवते है। तुम्ह जवन वात हम के कहे सो वात मो काऐम रहने। मीती फागुन सुदी १० संवत १८६०—*

४४

श्रीराम

खोदावद गरीव परवर करनैल साहेव सलामती—हजुर का परवाना मेहरवानगी का इनाइत हुआ। हम सभ ऐक जगह होऐ कै हवाल परवाने का अपने जीव मो समुझा। अपनो जीव मो गवर कीआ। हम सभ पेसतर ऐहवाल कवल करार हजुर मे जुनाव आली के अरज कीआ है। हम हुकुम जुनाववाली का वो अमल कोम्पनी अंगरेज वहादुर का अपने खुसी सो कवुल कीआ। पनाह हम को दुसरा नही है तव केआ जुनाववाली के कदम का है। हमारा भला जुनाववाली से है। मरहठा का हुकुम वो अमल मे न भला हुआ है न भला होगा। वीलुक हमेस हम लोग को माल जान आवरु हुरमत का खतरा मरहठ के अमलदारी से रहता रहै। अव तलक हम लोग वहुत इस ही वाऐस से खराव होऐ चुका। फेरी हम लोग अव जीस के अमलदारी से अतना खरावी वो नोकसानी माल जान वाल वचा आवरुह हुरमती का खतरा लगा है उस का हुकुम अमल कीस तरह कवुल करेगे वो कीस तरह हम लोग का रहाइस उस के अमल मो होगा। हम लोग को खैरख्वाही वो दौवलत खाही कोम्पनी अंगरेज वहादुर का वो हुकुम हजुर का अपने सीर जान से मनजुर है। हमारे सभ का भला हजुर का कदम वीच रुपा है। मगर हुकुम मालगुजारी वावत जो हुआ उस का सुरत अैसा है की हम लोग अपना दसतुर माफीक मालगुजारी अपने राजा को देते थे। राजा मे मरहठा वुझ लेता था। जब से मुलुक

*Foreign Dept., 25th March, 1804, No. 173

मरहठा का सीर हुआ तब से मालगुजारी का कीछु ठकाना मोकरा नही है जीस से जेतना मरहठा मार बाध लुटपाट कै पावता था सो लेता था। इअह बात सभ हजुर मो मरहठी दफतर से सभ मालुम होगा वौ अब आप खाबीदवाली मुलुक है मुलुक आप का है। इस का गुजाइस पैदावार बुझ कै जीस माफीक हुकुम होऐ उस माफीक हम लोग हाथ बाधी कै हजुर मो मालगुजारी देने को हाजीर है साल ब साल वे उजुर वौ हम लोग अपने बालबचा समेत हजुर के खैरख्वाही वौ फरमाबरदारी मे हाजीर है। हजुर का हुकुम सीवाऐ दुसरा नही जानते है। आप हमारे मालीक खावीद है। जीस मे हम लोग हजुर के दाबन का पनाह मो रहै सो कीआ जाए। मीती दुसरा चइत वदी २ रोज संवत १८६१ साल—

अरजी रानी रतन कुअरी मालीक राजै जैतसीघगढ संभलपुर अठारह गढ रुजुआत राजै जुझार सीघ राऐगढ राजै वीसुनाथ शाही सारंगगढ बहुरीआ लर्खापीरीआ महापतर पीरथी सीघ जीमीदार सोनपुर वीरवडजना जीमीदार रेडाघोल राजै इदर सीघरदेव जीमीदार गागपुर राजै तीर भुअन देव जीमीदार बावडा राजै इदर देव जीमीदार बनइ ठाकुर अजीत सीघ जीमीदार बरगढ दीवान सीव सीघ जीमीदार सकती*

४५

श्रीराम १

नकल खत खंडेराऐ नीलकंठ के बनाम राजै परताप रुदर जीमीदार खरीआड को लीखा था सरह इअह है। राजै श्री परताप रुदर राजै खरीआड वाले वासी अखंडीत लछुमी अंलकारु सदा राजे मान श्री खडे राऐ नीलकंठ राम राम। तुम्हारे समाचार भले चाही। इहा के समाचार आप के मेहरवानगी से आनंद हन। कहना अैसा जो फीरंगी से भोसीले से सलुक भआ गाऐल के कीला भोसीले के तरफ है। आगे रघुनाथ सीघ के हमयाती लीखे सो मजकुर मालुम भआ होगा। हाल वरतमान पुना से फीरंगी नै बरखासत सभंलपुर के फीरंगी के भेजे सो रतनपुर को दाखील भआ। सीवरातरी के रोज पहुचे सो रतनपुर से संभलपुर के सताजी नाऐक गऐ सो आठ पदरह रोज मो फीरंगी कीला छोड़ी कै जावेगे। अब तंक इअह बात को तुम्ह मोकरा समुझ रहने होली कर कै तुम्हारे पास लोग जमात् ले कै खाहमोखाह आवते है। कारन जो करीवंड वाले इन्ह नै सरकार के वाकी वौ हम से करज पै की रुपैआ ७०० सात सब् बुधे। इस के बदल इमान परमान करे के गोवींद राऐ को ले गऐ। सो गोवींद राऐ खाली आऐ। सो इस बात के अदेसा न करना जो खंडेराऐ के जुवानी मो है। उस के कइ हीकमत होने के नही आउर पटने वाले इन्ह नै फीरंगी से मीले आउर

*Foreign Dept., 29 March, 1804, No. 188

सरकार के भले आदमी को लुट लीऐ। सो इन्ह के अहवाल आगे आप देखहीगे। इन्ह के ससीव धम्मपुर के कीला वचे इ वात को मोकरर जानी के रहने। परन्तु तुम्ह मीतर हम ते जवान परमाने। तुम्ह श्री मंतर भोसीले के इन्ह को जपते रहना। इसी मो तुम्हारा भला हैगा। ऐ जान के फीरंगी से अंग न देना। थोड़े दीन खातीर कलक नाल गावने। मीती फागुन सुदी ८ संवत १८६०*

४६ (क)

श्री

श्री कवतान श्री जान बहादुर वेली साहेव जू ऐते पं श्री चौवे गजाधरजू के वांचनै। आपर आप के स्माचार भले चाही जै। इहा के समाचार भले है। आपर पं श्री हजूरी अपने पास टिके है सो इहा की हकीकत उन के कहे तै जानवी। प्र: चैत्र सुदी १४ सं: १८६१ मु० कालीजर

श्री

श्री कपतान श्री जान बहादुर वेली साहिवजू येते पंश्री चौवे गजाधरजू के वाचनै। आपर उहां के स्माचार भले चाहि ने। इहां के स्माचार भले है। आपर पाती पारसी की आइी। हकीकति जांनी। वौर हकीकति पं श्री हजुरी परम सुष नै लिखी सौ जांनी। फुरमाइस आइी कै जौन जितनी जागा जिमी श्री नवाव अली बहादुर वैकुंठ-वासी के आगै रही आइी है सो अगरेज बहादुर के घर सौ वहाल है सो हम सौ तौ यौ किलौ जव तै बुदेलन कौ राज है तव तै रहौ आयौ है अउ श्री नवाव साहिव मजकुर महिरवानगी सौ राखे रहे है। अउ श्री अगरेज वहादुर की सरकार कौ येह चाल है कै जो कोउ उजुर है तीकौ वे उतर नाही करत है। सो पाती हमारी उतर ही आइ। सो जो हमरी माफिक रहो ते तौ हमारी सात पुस्तै ही किले मै कैसे कै निवहते। वौर हकीकति पं श्री हजूरी परम सुष कौ लिषी है सो वे विदीवार जाहिर करि है। पाती स्माचार हमेस महिरवानगी करिवौ फुरमाउत रहिवी
वीः चैत्र वदि ७ सं: १८६१ मु० कालीजर†

---

*Foreign Dopt., March 1804, No. 190
†Foreign Dept., 27th April, 1804, No. 221

(ख)

श्री

श्री स्वामी नीलकंठजू

श्री कवतान श्री जान वहादुर वेली साहेव जी ऐते पं श्री चौवे गजाधरजू के वान्दनें। आपर आप के स्माचार सदा भले चाही ज। इहा के स्माचार भले है। आप की मेहरवानगी तें आपर पाती पारसी आइ। हकीकत जानी। दरोवस्त षत भरे मै किले पाइ किसा लिषी रहै कै जी म अगरेज को थानौ होइ ताकौ यावात मालिक श्री—है। हमारें मान्न नाही है रही। जो कछु सेवा चाकरी ठहरै हुकम करियै। ती को हम हाजिर है। पाती समाचार मिहरवानगी कर फुरमाउत रहिवी हती। चत्र वदि १२ संवत १८६१ मु० कालीजर

४७

गरीव परवर खोद्दावंद नेआमत करनैल साहेव जी सलामती। अदाऐ आदाव वंदगी वजाऐ ला के अरज हजुर मो रखता है। हजुर का परवाना ऐनात हुआ। उस के पढने सो तमाम कैफीअत दरीआफत कीआ। वहुत सरफराजी हासील हुआ। जैसा के हम लोग वहुत मुदत सो मरहठै का जुलुम वो वीदअत लुटत राज का सवव मो नेहाइत लाचार पडे कुछ कावु नही वाकी रहा तव लाचार हो कै आप का पनाह पकड़ा जो हम लोग का हुरमत आवरुह वचेगा। अगर हम लोग को फीर मरहठा का अमले मो रहना मनजुर होता तो कीस वासते आप का पनाह पकडते। सो आप मालीक खावीद है। हम लोग को अपना पनाह दामन दौलत का नीचे रखा जाऐ। कोम्पनी अंगरेज वहादुर का खैरखाही दौलतखाही मो जान माल सो हाजीर है। आप प्रास दीलाऐ सो कवुल है। लेकीन मरहठा का माल दौलत मनजुर कवुल नहीं ह। हरगीज हरगीज मरहठा का अमलदारी कवुल नहीं करहीगे। वो मालगुजारी का मोकदमा लीखा गआ जो उस का औहवाल अैशा है के जव से मरहठा मुलुक खास तहसील कीआ तव सो मालगुजारी का कीछु ठेकाना नहीं है। लुट पाट डाड वाध कर कै लेता था। लेकीन आगे जव महाराज का हाथ सो मालगुजारी मरहठा लेता था वो नवगढ महाराज के तहसील मो था तव वारह हजार वरह दोगनी आ मालगुजारी सभ मील कै महाराज मरहठा को देते थे सो इअह औहवाल सरा आलम जानता है। आप तहकीकात फरमाइए। आगे का सीरीस्ता माफी मालगुजारी लीजीऐ। साल व साल देने को हाजीर है। हाथ

वाधे वौ जीस तरह से हम लोग का हुरमत आवरुह वचे वौ कोम्पनी अंगरेज बहादुर का खैरखाही मो हाजीर रहही सो कीआ जाऐ। लेकीन मरहठे के लुटत राज सो मुलुक नेहाइत खराव हुआ। कुछ हालत वाकी नही है। जैसा के ऐक परगाना फुलझर है। उस का मालगुजारी सतरह सव् रुपैआ है। उस मो ऐक गाव् नही बसता वे वीरान है। मालगुजारी उस का कहा सो देउगे वौ खालसा जगह भी वीरान है। इअह वात सरा आलम जानता है। हजुर के तजवीज करने सो वन पडता है। हाल हामील वुझ जाऐ। अगर दो साल तक सावीक जमा सो ते सरही मा माफी कीआ जाऐगा तव हम लोग मुलुक मो रहने सकेगे वौ सरकार के हुकुम मो रुजु रहहीगे। सो आप खावीद है जीस मे हम लोग का वेहतर हो। जे आदा कहा तक लीखे अरज करही। मीती चइत दुसरा १२ रोज संवत १८६१ साल—

अरजी राजा रामचंद्रदेव् मालीक पटना वौ रुजु महापतर परतापरुदर देव जीमीदार खरीआड वौ राजा अजीत साही जीमीदार फुलझर वौ राजा अकबर साही जीमीदार वं नंदरांम वागढ वौ भग त वर हाजी (बाग्र्?) वोडा सामर*

४८

मोहवत दसतगाह मोसमात रानी रतन कुअरी राजै जैत सीघ मालीक संभलपुर अठारहगढ़ वौ अजीजुल कदरान राजे हाऐ जीमीदारान मोसमी नाम राजै जुझार सीघ जीमीदार राऐगढ वौ राजै वीसुनाथ साही जीमीदार सारंगगढ वौ महापतर पीरथी सीघ जीमीदार सोनपुर वौ राजै इदर सीघर देव जीमीदार गागपुर वौ राजै तीर भुअन सीघ जीमीदार वावडा वौ राजै इंदर देव् जीमीदार वनइ वौ दीवान सीव सीघ जीमीदार सकती वौ ठाकुर अजीत सीघ जीमीदार वरगढ़ वौ वीरवडजमा जीमीदार रेढाखोल वा आफीअत वासन्द—जेव् सावीक इस सो आरसा गुजरा जो हम तरफ सो सरकार कोम्पनी अंगरेज वहादुर के साथ तुम्ह लोगो के इस वात पर कौल करार कीआ था के अगर तुम्ह लोग सइ वौ परवी वौ जानफसानी कर कै अमल मरहठे इआनें महाराजे रघुजी भोसीले का उठाऐं कै मुलुक अपने को नीचे साऐदामन दौलत सरकार हमारे के सौपना करो वौ बीच हुकुम वौ रकम वोच दवलत खाही सरकार इस तरफ के हाजीर वौ मवजुद रहो तव हर ऐक सुरत सो हमेसह हमेस रफाहीअत वौ रेआऐत तुम्ह लोगो के कोसीस वेहतरी वौ वेहवुद का करार वाकी कीआ जाऐगा। जैसा के तुम्ह लोग भी जैसा के चाहीऐ वौ लाऐक मेहनत वौ मोसकल उपर अपनो के अखतीआर कर कै वीच जान फीसानी वौ खैरख्वाही सरकार के वसी की वौ वारीक सो छोडवाड नही कीआ। अमल मरहठे का उठाऐ दीआ। सभ वजह से खैरख्वाही सरकार

* Foreign Dept., 30th April, 1804, No. 222

इस तरफ के वीच जाहीरी के पहुंचाऐव्। लेकीन उस जगह् से के वीच वकत आखीर इअह् काम के इआ ने सरत मसरूत लीखा गआ जो हम तुम्ह् लोगो सो कीआ था। दोनो तरफ सरकार कोम्पनी अंगरेज वहादुर वौ सरकार महाराजै रघुजी भोसीले के सुलुह् वौ मसालहत दोसती हुआ। उस वकत इअह् कौल करार वीच हजुर जनरल वलजली साहेव वहादुर जो सरदार लसकर फतेहनीसान वासते मोकावीला महाराजै मवसुफ के तसरीफ रखते थे वौ भी वीच सरकार महाराजै ममदुह् के मालुम वौ खवर नही था इस वासते वीच तहनामे सरकार दोनो तरफ के जो मोनकह् वौ मोकरर हुआ साफ मो न दरज वौ लीखा नहीं गआ। वौ भी वाद आखीर पावने सलाह मसलहत लीखा के हुकुमत वौ सरदारगी वौ मरतवा दसत कुदरत महाराजै मवसुफ के वीच सरकार कोम्पनी अंगरेज वहादुर को मनजुर है। इस वासते तुम्ह् लोग को लीखा जाता है के अगर तुम्ह् लोग ओर माफीक खाहीस खुसी दील के अपने वीच हुकुम वौ रकम महाराजै मवसुफ के हाजीर होने को चाहते हव् तो इअह् वात खाली पसंददीदा सरकार कोम्पनी अंगरेज वहादुर से वौ खुसी खातीर हमारे के नही होगा। चाहीऐ के इअह् वात खुव वजह् वीच दिल अपनो के तसौअर वौ गौर कर कै हर ऐक सुरत सो वेहतरी वौ वेहवुदगी अपने समुझ कै जवाव इस वासते साथ तलव नेक के इतलाऐ हुजुर को सवारना। वौ भी इतलाऐ इस वात का दीआ जाता है के जीस सुरत में इस वासते वीच हुकुम सरकार महाराजै ममदुह् के होना जवुर वौ सखत मालुम करोगे वौ कोइ तरह् से मनजुर नही करोगे तव माफीक दसतुर के मालगुजारी वौ साल तमाम का मुलुक के अपनो जो महाराजै ममदुह् को देते थे वमाफीक उस के वीच सरकार इस तरफ के अदाऐ करना होगा। वौ जीस सुरत मो हुकुमत वौ रैआसत अमलदारी महाराजै ममदुह् का कवुल मनजुर करोगे अलवते सरकार कोम्पनी अंगरेज वहादुर इस रवीस पर जामीन वौ दरमेआन होगा के तुम लोग खैरख्वाही वौ दवलतखाही सरकार इस तरफ के वीच वकत लडाइ भीडाइ के इसवासते वीच जाहीर के पहुचाऐव्। हरगीज हरगीज महाराजै मवसुफ तुम्ह् लोग का उपर जुलुम जवरदसती रंज नही करहीगे। ता० २६ मारीच सन १८०४ अंगरेजी मोताबीक ३० चइत सन १२११ फसीली—*

४९

इन सुभ दिनन मै सव मुलक वुंदेलखंड को सामिल मुलक सरकार अगरेज बहादुर के भया। तिहि पाइ फोजै सरकार की फिसादिन के जर उखारवे कौ इस मुलुक मै आई। हम जो महराज विक्रमाजीत विजे वहादुर है तावेदारी हुकमवरदारी सरकार

*Foreign Dept., April, 1804, No. 224

दौलतमदार की जीव् सों दिल सों कवूल कर कै अपने आठ मतलवन कौ वंद श्री कपितान जान वेली साहेव वहादुर जो नवाव साहेव आलीजाह मुंल्लांजाइगाह सभ सामुंददौल असजाउलमुलकपांनदौरांजजलजरारदलीक वहादुर सिपह सलार फतेजंग दामहसमतह की तरफ ते वास्ते वंदोवंस्त कामकाज इस मुलक के आये है दिये। साहेव वहादुर ने हमारे मतलव मजकूर अदालत की रीत में वास्ते तसली षांतरी हमारी करि दसषत करि दियै अरु अहिदनामा इकरारनामा हम से मागा। इसी वास्ते इकरारनामा साथ कलमन को मुहर दसषत अपने सो लिषि दयो। साचौ इकरार करत है कै हरगज या में आन भात न करैं---

दफे पहिली १

वुदेलषंड वाहिर के वा वुदेलषड मे जे फिसादी है तिन सो साथ न करै अरु हमेसा तावेदारी वा हूकमवरदारी सिरकार दौलतमदार की भात भात वजा ल्यावैं

दफे दुसरी २

हमारे कूवर मैयान तैत अगरेज वहादुर की जागा मै फिसाद करै तौ मने करें। कदाच न मानै तौ अगरेज वहादुर की फौज मै भेले हो कै नसीहत करैं

दफे तीसरी ३

अगरेज वहादुर की रैयत आपुकी जागा ते भग कै हमारी जागा मै आवै तौ ऊको पकर के अगरेज वहादुर के मानसन को सौप देई। अगरेज वहादुर के मानस हमारी जागा म उन के पकरवे कौ आवै तो हम मुजाहिम न होई। अगरेज वहादुर के मानस के साथ हो कै उन कौ कैद करे

दफे चौथी ४

चोरन मौ वा डकैतन मौ हम अपने मुलक मैं न राषैगा। काहू सौदागिर राहगीर कौ माल जिस गाव के पास चोरी वा लुटो जाई सो गाव के जिमीदारन सौ उन कौ माल देवाई देई अरु कै चोर वा डकैत कौ अगरेज वहादुर के इहा पहुचाइ देई। अरु जो कोउ अगरेज वहादुर के षास अमल मै षून करि और किसी तरा कौ सरकार कौ गुनागार होई कर हमरे मुलक मै आई रहै तौ उस कौ सरकार के लोगन कौ सौप देई

दफे पाचई ५

वुदेलषंड (खंडित) आसपास के सिरदार जे है अगरेज वहादुर की तावेदारी न करै व जेन त तउं होई तौ ऊन सौ भेट न करै न पाती लिषै। उन के साथी होई ते अपनी जागा म न राषै

दफे छठई ६

वो अगरेज वहादुर मौ अंगी होई ता सौ षलस न करै। अरु जो वै हम सो षलस करैं तौ अगरेज वहादुर के इहा सुनावै। जिहि सवव सौ षलस होई सो समझ कै आप सफाई करि दीजै

दफे सातई ७

फौज असवार प्यादे की जलुस सवारी के माफिक वा मुलक के अमल के बदोबस्त माफिक राखै। ज्यादा कौन हू काम पाईसि (?) बंदी....राख गो आवै सो सुनाइ लेइ

दफे आठई ८

हम जो देवान इसुरी सिंघ जू जेठे कुवर महराज विक्रमाजीत विजे बहादुर कौ वा देवान मानसिंघजू वा देवान अरजून सिंघ जू वा गुरु मकुंदलाल व इतवारी वकील महराजा साहेब मजकूर के हैं या इकरारनामा पर दसखत (खंडित) करि दियें। अरु या भात करार करत है (खंडित)। कराखनामा या ईकरारनामा माफिक मुहर दसखत (खंडित) मगाइ कै दाखिल दफदर सरकार के कर देई या करारनामा (खंडित) से फेर लेई। ता: १७ अगस्त स: १८०४ इसवी ता: १० ज्मालिवल स: १२१९ हिजरी सावन सुदि १२ सः १८६१ मु० वादा*

५०

इन सुभ दिनन मैं मुलक बुदेलखंड का सामिल मुलक सरकार दौलतमदार अगरेज बहादुर के भया औ फौजैं सरकार की वास्ते नसीहत करने फसादियौ के इस मुलक में आई। अरु महराजा बिक्रमाजीत बहादुर इस मुलक के कदीम सरदारन ते है हकदार है। सो उन महराज ने तावेदारी हुकमबरदारी सरकार दौलत मदार की दिल व जान मे कबूल कर कै करारनामा सात कलमनका तपसीलवार जो सामिल है सरकार की निहाइत बंदगी वा तावेदारी पर अपनी मुहर दसखत से सरकार के कामकाजिन के हजूर मैं पठवायो हैं। वाही पाई अरु वास्ते रेछ्या वा पालना सिरदार वा हेकदार जो कदीम है काहे ते की चलन औ राह अदालत सरकार दौलतमदार अगरेज बहादुर का है अरु हर वषत सरकार के काम काजी वाही भात करत है। महलात तपसीलवार किले गठीमुया की ज्मा कमाल उन महालन की चार लाख चार सौ अठासी रुपैया है। कदीम ते सन १२११ मुअल्लों लौउन के हाथ मैं रही आयौ है। सरकार दौलत-मदार कंपनी अगरेज बहादुर की तरफ ते महराजै विक्रमाजीत बहादुर कौ माफ भया। महलात औ किले मजकूर जब लग महराज मजकूर तावेदारी करे रहै औ अपने करार-नामा की कलमन पर काइम रहै कौनौ तरा सरकार मजाहिम न होई औ हमेसा बसरये मजकूर नसपूत लग उन महराज पर वहाल बरकरार रही आई है—

* Foreign Dept., 31st August, 1804, No. 395

प्रगने राठ तालुके खूटवई तालुके चौरासी मौः ३५
९२२००)

महराजनगर मिले सुधा चरपारी १०,०००) | गुठाव कोरी मुः ७२००) | जरौली खेरिखः ३०००)

बपरेथौ	रेवई	वदनपुरा	लुधौराबुजरक
३०००)	१४०००)	१७००)	१०००)
लुधौराषुरद	सुनौरा	टोला	मुहारेपाव
८००)	१२००)	१०००)	३६००)

जुतौरा	माकुन	नटिरा	मओल	मुहजना	पम्हनेथौ
१५००)	१५००)	६५००)	३०००)	१६००)	१०००)
घुटवई	मुमरमा	दमदमा	विजलपुरा	छानी	कनैरा
१७००)	१५००)	१२००)	१२००)	८००)	९००)
ककरा	वेवीखेरौ	नितवारौ	गपनमउ	मवूवा	कौहारी
१०००)	८००)	१०००)	५००)	१५००)	१०००)

रगौल	अकौनाफादी पुः	औडेरत	विहगावकुडार
१०००)	८९००)	३४००)	४२००)

परगने सेहूडा तपे सतवारी मौजे ६३
१५५,९५२)

बछेराखेरौ	अमलोरी	वारवंद	पहिलादपुर	रेवना	सिगारपुर
८००)	१३००)	२०००)	५००)	१४००)	१०००)
फतेपुर	पवईथर	कौथेहौ	पांमिनषेरौ	पड़े हामिष पुरः	गोनीगोइरा
३००)	६००)	१३००)	१४००)	७५००)	५३००)
मालपूरा	अलीपूरा	नदौटा	चूरियारी	मरीई षूरद	उमरी
१०००)	१७००)	२३००)	६०००)	५०००)	३०००)
बदौरा व्यासन	वानिया	धावा	महोव	गौहानी	भानपूरा
२०००)	४६००)	१४००)	८०००)	५३००)	१३००)
नेहरा	हंदई	सरवई	घटरा	पूर	जरहेटाबूजरः
१४००)	६००)	११०००)	४०००)	२०००)	७००)
जरहेटापूरद	नाहरपूर	महोईबूजरक	रजौरा	सिवराजपुर	धौरआ
२०००)	३४००)	३३००)	१०००)	१०००)	५५०)
कसारषेरौ	चिनहरी	षमरिया	लौलास	नवौरा	घघौरा
४६००)	४६००)	११००)	१३००)	१६००)	१३००)
वम्होरी चोरनः	षगराही	वरहौ	केवलाहौ	केवटी	नादपडरिव
३३००)	१५०)	२६००)	७००)	१३००)	४०००)
पडरिपुर	विजासन	गहवरा	हुव्वा	मनवारिया	मचदरी
२२५०)	९००)	१२०००)	९०००)	४५००)	३७५०)

मवई गौरन की	पडेही	नीवीपेरो	मुरवना	परतापपुर	रामपुर
१५००)	६००)	[illegible]००)	४७५)	२२५)	२६)
हरवंसपुर	चूमहटा				
२६)	३००)				

तंपे वावत तालुके षरेला मौजे १६
५६५००)

छानी	पाठा	अँचानौपुरवनसु :	पडोरा	ववुरारौरोसन पु :	कनैरी
८०००)	४०००)	४२००)	२७००)	३२००)	१५००)
वराऔ	पहरेथौ	रहनिया	स्यौहार	वम्हौरी	सलुवा
३०००)	७६००)	१८००)	८००)	८०००)	१२००)
परसाके	खरातपहारी	पिडारी	अमिलिया		
४०००)	१८००)	१५००)	३२००)		

तंपे वावन हीसा खरेला तालुके परथनिया मौ : ४
१२९११)

परांथवा कुमरिया हिडुवा नरष
परगने पटोला के मौ : ८४॥
८२९२५)

षेरौ	गौर	घूघरा	रामपाटन	अदियार	वरदवाहौ
१४००)	५००)	१२००)	२५०)	(पढ़ने में नहीं आता)	७००)
निवरिया	पठादा	विहटा	चौंका	वरिखूजरक	दलपतपुर
२५०)	६००)	६००)	९००)	११००)	११००)
पनारी	जमुनिया	अभाकेर	करमौड़	गोगुइपूरा	घुनगत्रा
१२००)	८००)	६००)	५००)	४००)	५००)
चंदनषेरौ	ठुला	मनकपुरा	दहाके	गरवा	पथरिया
३५०)	२००)	४५०)	२००)	१५०)	२५०)
अचलपूरा	दमौतीपुर	सुरजपूरा	भरडडा	रजकपूरा	चौपरा
४५०)	२७५)	३००)	२५०)	१६००)	३००)
कुवरपुर	नराइनपुर	निवौली	कारीवराह	मडवादेव	पौडी
२५०)	१३००)	३००)	५००)	२००)	६००)
वरदा मो : ९	रमगढ़ा	खोप मो : ३	सलैया	इसानगर मो : २	
५४००)	१२००)	१६००)	१९००)	८५००)	
परौठा मौ : ६	पिपौरा	खरका	पाठापूर हदकर :	वर्धा	मडियादह मो : ८
३७००)	५००)	९५०)	२०००)	१८००)	१०५००)
मलेकुवा	अमर्लापान	पाली	मौरेई	निहुंनी	कुस्वामहेवा
७००)	३००)	१०००)	१०००)	६००)	१०५०)

तोरन	बहौरा	डुडहरी	अमखेरौ	मल्पूरा	सूरजपूर
१३००)	५००)	९००)	१०००)	७००)	७००)
सुकौहा	टुरिहा	ठुरहर*			
४५००)	६००)	२००)			

५१

नकल करारनामा व मोहर राजा केसरी सिंघ जैतपुर के ता: ४ जौलाई सन १८०५ इसवी असाढ़ सु० ८ सं: १८६२—

इन सुभ दिनन मैं मुलक वुदेलषंड कौ साभिल मुलक सरकार अगरेज वहादुर के भया। फौजैं सरकार की फसादिन के जर उपांरवे कौ इस मुलक मैं आई। माहेब आलीसान हसमतुतदौलाये हतसामिल मुलक मिस्तर वलियम अगस्तस वूरूक साहेब वहादुर फेरोजजंग ने सनध यावन की ५२ हम कौ लिष कैं दसपत मोहर कर दियें औ हम सो इकरारनामा मागा इसी वास्ते इकरारनामा आठ कलमन कौ मुहर दसषत अपने सो लिष दयौ। साचौ इकरार करत है की हरगम या मैं आंन भात न करें

दफे १

किसी वाहिरे औ भितरे वुदेलषंड के फसादी के साथी न होंई अरु हमेसा तावेदार हुकमवरदार सिरकार दौलदमदार अगरेज वहादुर के रहै। कोई तरा की तावेदारी हुकमवरदारी न छोड़ै

दफे २

जो हमारे कुवर भैयान तैत अगरेज वहादुर की जागा मैं फिसाद करैं तौ मनें करैं। कदाच न मानै तौ अगरेज वहादुर की फौज मैं मेले हो कै सजा देई

दफे ३

जो सरकार दौलतमदार की रैयत भाग कै हमारी जागा मैं आवैं उस को पकर कै सरकार के आदमिन के हेवाले करैं। अगर सरकार के मानस उस को पकरवे कौ हमारी जागा मैं आवैं हम रोक टोक न करैं बलकिन उन के साथी हो कै भगैया को पकर देई

दफे ४

चोर औ ठग कौ अपनी जागा मै न रहनें देई। अगर माल कोइ सौदागर वा राहगीर कौ हमारी जागा मै चोरी या लुट होई गाव के जिमीदारन कौ तागीद कर कै या माल चोरी गया देलाई देई यु चोर वा लुटने वाले कौ पकर कै सरकार दौलतमदार मैं

*Foreign Dept., 14th September, 1804, No. 428

पहुचाइ देई। अरु जो कोई सरकार के मुलक म षून कर कै या और तरह ते गुनागार हो के हमारी जागा मे आवै तो उस को पकर कै सरकार मे पहुंचाइ देई

दफे ५

जो कोई आसपास बुंदेलषंड के सरदारन से अगरेज बहादुर की तावेदारी न करै हर चंद हमारे न तैतउ होई उन से मुलाकाद वा लिपांपढ़ी न करै अउ कोई उन को अंगी अपने पास न रंषै

दफे ६

अगरेज बहादुर के किसी अंगी से झगरा न करै अरु जो कोई अंगी हम सो झगरा करै सरकार के सिरदारन कौ सुनावै तौ सरकार के सिरदार झगरै की वांत की मालूम कर के फसाद रफा कर देई

दफे ७

फौज सवार प्यादे की जो तामील गाव सरकार क दये भये के औ जलुस सवारी के लिये जरुर होई उन से ज्यादा सरकार के सरदारन की परवानगी बिगर नोकर न रंष-

दफे ८

इकरार करता हौ मै औ रजावंदी षुसी सौ लिषे देता हौ की कबहू जैतपूर के किले से किसी तरा इलाका न रंषौ। मै औ अपने आदमिन कौ आसपास किले के फटकने न देव। मै औ मरमत टुटे फुटे की कवहू न करौ। मैं हासिल या है की किसी तरा का इलाका अपना किले के साथ न रंषौ। मै अगर वरषलाफ इस इकरार के कोई वांत जाहिर होई तौ लिषे देता हौ मै की सब गाव की हजूर की सनध मौ लिषे हौ फिर सरकार दौलतमदार मै जपती होई*

५२

नकल सनध माफी राजा केसरी सिघ ता: ४ जौलाई असाढ सु: ८

इन सुभ दिनन मै मुलक बुंदेलषंड का सामिल मुलक सरकार दौलतमदार अगरेज बहादुर के भया औ फौजै सरकार की वास्ते तंबीह करने फसादियौ के इस मुलक मै आई। अरु राजा केसरी सिघ इस मुलक के कदीम सरदारन ते है औ हंकदार है सो उन राजा ने तावेदारी हुकमबरदारी सरकार दौलतमदार की दिल वा जान से कबूल कर कै करारनामा सरकार की निहाइत वंदगी वा तावेदारी पर अपनी मुहर वा दसषत से लिष कै दाषल करी। औ वास्ते रेछ्या वा पालना सिरदार वा हंकदार जो कदीम ते है काहे ते की चलन औ राह अदालत सरकार दौलतमदार अगरेज

* Foreign Dept., July, 1805, No. 400

बहादुर का है अरु हर वगत सरकार के काम आगी या ही भाल करत हुंगा। व तपसीलवार सरकार दौलतमदार कंपनी अगरेज बहादुर की तरफ से राजा केसरी सिंघ की माफ भया गाव मजकूर से जव लग राजा मजकूर तावेदारी करे रहे औ अपने करारनामा पर काइम रहै कोनौ तरा सरकार मुजाहिम न होई औ हमेसा वमरबे मजकूर नत पूत लग उत्त राजा पर वहाल बरकरार रहो आइ है

मौजे ५२

जैतपुर अजनर आरी बचेड़रा भगनौरा पोही
१ १ १ १ १ १

कर्री सगरिहा बड़परा पुरना नगारा बरहा
१ १ १ १ १ १

बुदवारौ सगुनिया इदरटा बिजौरी अमरपुरा टिकरियाबुज
१ १ १ १ १ १

रजौरी, हसुला, पुरद, लमौरा, बृदौरा गजारा कैथौरा
१ १ १ १ १ १ १

मगरौल वुजरः गुठा मुडारी सारनपुरा पगौरगा लहेडी
१ १ १ १ १ १

गेरिया वुजर रामपुरा दादरी मवया महुवाबाग पिपरा अकौरा
१ १ १ १ १ १ १

पेरियापुरद वछेछर वुजरक अरगटगढ़ भगारी रजौलिया वुजरक
१ १ १ १ १

वगौरा अतरिया तैलवारी पराग गहन, छितरवारी बौरा पुरद
१ १ १ १ १ १ १

भगौरा भूजपूरा*
१ १

५३

राम राम १

मोहर अदालत
फौजदारी जिले
गोरखपुर सन
१२०९

सोसती श्री : पुरन के ली : कैला सीष कुसल तुहार चाही। खुसी एत्री म्ह है जे लीखलह से सभ सभुझल सावस है। हम हु तौ सवुजते तंमु म्ह वाटी देखल चाही।

* Foreign Dept., July, 1805, No. 401

तुर मन ब्रीती कप पुजैला। गाफील तौ मोकरर नाही। जानै के आगे ही गाखा आवै के रहलैम अं लै का ब्राइम है। कही हौ सरफराज आवैत बाटै हम अगोरत बाटी से कही तौ पान्च सात दस आदमी लै के जलद पहुच ही सरह सरखत दर माहा ले ही साथ रहै। आन साका है। जीअदै तुह खातीर जमा राखेह। एक रुपैआ कै सीसा एक जोड़ा जुना हमरे बासते जेह चमार से वोह दफे बनवाइ दीहलै तौने से बनवाए भेजब। माकुल एक दीसता बंस कागद रोसनाइ भेजी है जु ए के हाथ इन्हइ के साथ सीफराज कै बीदा करेह। एक रुपैआ दुइ रुपैआ हमरे उर मा इस म्ह उटी से भेट भैले तुरंत हम देब। आगे उहां जलद पाच सात दस मनह मीलै। तं के लैके पहुच ही खातीर होइ। अंदेसा का है। हम के अंदेसा है की बाइस का जेन आइल हतु कस य एके मेज तकी लेत आइह हरा खंड से हम के खत व लावा जोरवरजौर आइल है से जानेह। मुरही गोह जी; सुभ नैंचा गली गैल से दुइ गैया चारी आना कै भेज (खंडित) सेरत माफ। बस—आबन्न कै सलाम हीगारवा के साहेब सलाम। हम आज तक अगोरले है इ रौरे आवतैं बाटी मे नैत कीछु करना होइ तो जल्द करब सरफराज के आसीख सरल है। तुम्हारे राह ता . . . साझ होला अब*

५४

श्री गोपाल

श्री राजा

स्वस्ति श्री बाबु कवला कान्तजीव के लि: फौजदार भगत विर कै प्रनाम। आराम पुसी गउर सदा चाहिजे से पुसी रहै। आगे इन्ह रोज कै अहवाल न मीलल से लिखब वौ मुदा ने तबर भादिन पार महलो न वछवावोगे रह कै मासुल हमेसा तहसील चौतरा वुटवल के अमला मह लागल के है षानगी पाल्या के—क हाकीम वोजिर वौ अगरेज कै दिहल रहल तीन अब परू साल आमील जेतराइ रहल साएर मे। से नावाकीफि से अमलन कइल। अब पुस से तहाइ कै शाएर हमरे जिमा भैल है से दुनो तपा मह हमार पीआदा साएर पर जइ है। आपु मालिक अगरेज के तरफ से जगह पर हन्ह साएर कदि

*Foreign Dept., December, 1805, No. 786

(जीर्ण) भे तवर पुट दुलहापुट जीमीदार कै हे तौन उन के चाहि देइ चाहि आपुरापि से जानव पियादा से केहु रोक टोक न करै पार्वे (जीर्ण)

५ रोज ४ रात १२१३ शाल मो. से मराशु.*

५५

इजहार रामरुप चौवे वाके ता: १३ माह नवंबर शन १८०५ अंगरेजी मो० कटरा वमौजिव कशम—

नाम हमारा राम रुप। हमारे बाप का नाम दआ। कौम वरामन। सा. मौजे कभरोज प्रगनें वारा काम खेती का करते है। उमुर हमारा बीश बरश का होगा—

शवाल। तुम को मालुम है की वोजीर अली कौन शकश है वो सवार पेआदा रखने काम कदर कहां शो पाआ वो लोग कहा जमा कीआ वो कीन के मदद वो शलाह कंपनी के मुलुक मो हंगामा कीआ वो कीश राह शो कौन जगह शो कटरा मो आ कै तहशील करने लगा था। जवाव। शुरत अैशा की पहीले वोजीर अली रीवा मो था। भवानी दीन ललु कलम खाश नौकर राजा रीवा लश के नाती शो दम दीआ की हम लखनौ के वोजीर है। अपना भला होने शो तुम को वडा आदमी करहींगे। शो कुछ रुपैआ का मदद करो। तीस पर नौ शौ रुपआ भवानी दीन ललु के चोरी शो वोजीर अली को दीआ। वोही मकदुर पाऐ कै शाठ ६० सवार वो तीन शौ ३०० पेआदा नौकर रखा। शाठो सवार का गुलाम मखदुम को रीशालदार कीआ वो शीवा सीध दीक्षी। तव छैल को जमादार कीआ वो ऐक शकश राजकुमार पछीम मै हर बुंदेलखंड का रहने वाला तीश को जमादार कीआ वो जीवन शीध को वरकाज का जमादार कीआ वो चार नीशान खडी कीआ। ऐतना जमा करने पर ललु नैं शुना। तव अपने नाती को मना कीआ की इअह झुठा वोजीर अली है इस को कुछ देना मत। तीश पर भवानी दीन अपना रुपैआ फेर मांगा। तव वोजीर अली उहां शो तीन शौ वरकंदाज वो शाठ सवार कुच कर कै लान्दे गाव रीवा के अमल मो आआ। आठ रोज उहां रह कै जगत राज वघेला शायीक वारे का मालीक तीश को मौजे वरदी इलाके रीवा शो वोलाआ वो उस को खेलत अछी तरह शो दीआ वो कहा की तुम हमारे शाथ चलो। हम को शौ रुपैआ का रोज देहु तो हमारा नवावी हुऐ शो तोहारा जगह तुमको जीमे करै। जगत राज जवाव दीआ की हमारा जगह तीन वरश छुटे हुआ। हमारे पाश रुपैआ नही है वो हम अंगरेज वहादुर के वाकी दार वोटा है। तुम्हारे शाथ न्ही जाऐंगे वो हमारे शाथ शीपाही पेआदा भी न्ही है। तव वोजीर अली उहा शे कुच कर कै तेवथर रीवा के अमल मो आआ। इअह खवर शुन कै जैशीध देव राजा रीवा का वेटा लीला सीध अपना फौजदार तेवथर वाला को लीखा

*Foreign Dept., December, 1805, No. 787

की वोजीर अली हमारे मुलुक हो कै कंपनी के मुलुक मो नै जाने पावै। तव लीला शीघ वोजीर अली को कहा की हमारे जगह मो नही रहने पावोगे वो कंपनी के मुलुक मो हमारे जगह हो कै नहीं जाने पावोगे। तीश पर वोजीर अली कहा की आज के दीन हम को इहां रहने देव काल्ह जहा जीव चाहैगा तहा चले जाऐगे। तीश पर वडे भोर तइआर हुआ। तव लीला सीघ नै रोका की कंपनी के मुलुक मो नही जाने दहीगे। तव कहा की हम को रोको मत। हम शोहागी घाट चढ़ जाहीगे। तव पंछा वशती के तरफ तक कै रवाना हुआ। इश पर लीला सीघ मालुम कीआ की उपर घाट जाता है। कुछ कहा न्ही। तव पंछा हो के शोहागी घाट के तरफ भटीआरी घाट चला। तव लीला शीघ सुन कै अपना लोग शमेत उश का पीछा कीआ। लेकीन तव तक वोजीर अली घाट उतर कै पट पर नदी पार हो कै कंपनी के अमल मो आ वैटी का। तव दुंद-वहादुर मौजे लोहरा वाला जो कंपनी का है उश शो मिला वौ कहा की कटरा मो चलो। मुलुक तहशील वा देहीगे। तीश पर वोजीर अली दुंद वहादुर को ऐक घोड़ा खेलत दीआ। तीस पर दुंदवहादुर दो सौ वरकंदाज परतापगढ़ी नवाव के अमल का जो खवर शुनी कै नौकरी को आऐ थे नौकर रखा दीआ। तव पांच शौ वरकंदाज वौ शाठ शवार शमेत कटरा मो आ कै डेरा कीआ। तव कटरा मो ऐक शकश मोतीराम मोशीर टोकी वशती रीवावाले का वोजीर अली शो मीला। तव कटरा मो गुलाम मखदुम वौ दुंदवहादुर का पेआदा तैनात भऐ तहशील करने लगा। कटरा गांव के आश पाश जाव मो पहीले लोहरा गाव मा: भवनु महतो के पचाश ५० रुपैआ वौ आठ रुपैआ कंठु महतो चौकठा वाले शो वौ शीव लाल चंद पुत्र अ्र शोशुर व लगाव का वौ पांच रुपैआ हनुमान तेवारी झंभरा वाला वौ शात रुपैआ शालीक देव झंभरा वाले शो वौ पांच रुपैआ गुरदत वैद खोभवा वाला शो वौ चार रुपैआ छीकद महतो देउरी गाव वावत वौ छव रुपैआ कीरपाल शुरवल दुशरा वाले शो वौ पंदरह रुपैआ जैन शेगर। मवइआ वाला शो शभ शमेत ऐक शौ छव रुपैआ तहशील करने पाआ था की सरकार का फौज पहुंचा ता: ११ नवंवर रोज शोमवार को दोपहर के अमल से। मगर जीश वखत फौज सरकार का तेलघना पहुचा था उश व दुंदवहादुर का हर-कारा जो तैनात था। फौज देख कै तुरंत दौर आ कै वोजीर अली को खवर दीआ। लशकर वोजीर अली का तइआरी भआ वौ फौज शरकार का भी पहुचा। तुरंत वोजीर अली नगारा दे कै शामना कीआ। हरकारा नै खवर दीआ था ऐक शुवेदार ऐक जमा-दार वौ ऐक शौ शीपाही है। तीश पर वोजीर अली कहा कुछ मुजाका न्हीं। मार लेहीगे। अपने शाथी शमेत मोकावीला कीआ। मोकावीला मो पहीले वोजीर अली का शवार शरकार के कंपनी पर हमला कीआ। तव वरकंदाज गोली चलावने लगे। तव शुवेदार शीपाही वो शो कीला वांध कै गोली चलावने लगे। तव शीवा शीघ वौ गुलाम मखदुम वौ दोनो आदमी के दो भाइ अपने फौज शे जुदा हो कै कंपनी पर हमला कीआ की दौनो आदमी शुवेदार जमादार को मार लेहीगे। तव शीपाही शो केआ होगा। शो शीवाशीघ घोडा शमेत उशी जगह खेत आआ वौ गुलाम मखदुम वौ दोनों के भाइ

घाऐल हो कै भाग गै। शभ समेत अशवार वरकंदाज बीश आदमी बोजीर अली के मारे गए वौ भागे। पर गुलाम मखदुम दुशरे रोज बरगठ मो मर गआ। दोपहर शे शाह तक गोली चलता रहा। शाम कै बोजीर अली भाग कै पनाभी के तरफ गआ। उहा रीवा वाले नै जाने न्ही दीआ। तब बरगठ को चला गआ। नौडीहा कंपनी के मुलुक वौ गठी रीवा वाले का लश के बीच हो कै बरगठ गआ। शीतलहा हो कै। आगे का ऐहवाल मालूम नही। वौ गुलाम मखदुम पेशतर कहता था की नवाब बोजीर अली हु आगे भी चाकर थे वो वो ही वल बांधे था की शहर इलाहाबाद मो कुछ फौज न्ही है। हम वारे डेरा करा कै अमल करा देहोगे। जो कुछ शुना वौ देखा था शो जाहीर कीआ—*

५६

नकल अरजी माहारानी रतन कुअर देइ जीमीदार सभलपुर अठारह गढ़ का मरह इअह है—

गरीव परवर दसतगीर वेकसान श्री श्री कपीतान रगल साहेब वहादुर दाम अकवालहु अरज हजुर मो अैसा है—जो ता: ८ माह असाढ का जो परवाना इनाइत हुआ था सो सीरो पर लीआ। वहुत खुसी हासील हुआ। जमीनदारी देने तो जमीन पावने का वौ जगह फेर के सरकार होइ तो हम के मीलने काऐ दोनो बात साहेब वनावेगे हम को अकीन मालुम होता है वौ सरकार के पनाह मे रहे से हरगीज हरगीज हमारे नकुसान न होगा। दीन पर दीन हमारा वेहतरी होगा। ऐ उमेद हमारा है। लेकीन गरीव परवर श्री माहाराज वाप वेटा मरहठा घर मे कैद मो है। खलास कर लावने को सरकार का हुकम हुआ था वीच मे। उहा सो नरहरी वराहमन आआ। उन्ह लोग की तसदी वौ वीदत जो गुजरता है इस के जवानी सुनी के जैसा आफत गुजरा है दील का गीरानी इआ तो परमेसवर को मालुम होता होगा। आप तो हमारा मालीक परमेसवर है। केवं कर आप को मालुम नही होता होगा। इस से हमारा खातीर जमा नही होता है। साहेव दील परली ऐसे कुछ वडा वात नही है। खलास कर लावने को तीन साल हुआ। आप हम को मुलक पर वैठाल दीए। हर साल हुकुम होता है की श्री माहाराज को खलास कर सभाह देने को सो मदी मो। वैठे थे तो हमारा उमेद भी था। आज न आवेंगे तो कल आवेंगे। अव वो तन छोड के हुकुम वमौजीव हमारे तरफ सो जाने मो कुछ कसुर नही है। लेकीन सीर मरहठा घर मो रहावे सीर मो जाने का खलक मुलुक हम को वहुत वदनाम करते है। इस खातर हजुर मो अरज कीआ जाता है वे सीर कर कै वौ वोत न छोड़ाइ के ले जाते सो ऐ वदनाम सभ दीन

*Foreign Dept., December, 1805, No. 792

को रही जाता है। कबुल नही होता है। जे आई अरज। मीती आसाठ वदी १२ के समंत १८६३---*

५७

नकल खत राजा इदर सीघर देव जमीदार गांगपुर का जो वीगडा मो रानी रतन कुवर सभल पुर को लीखा था ता: २८ माह मारीच सन १८०६ अंग्रेज को हुजुर में गुजरा उसका सरइ इअह है---सोसती श्री महराज धीराज महारानी श्री रतन कुंवरि महोदइ हजुर को सोसती श्री राजा इदर सीघ जिमीदार गांगपुर कै सलाम। चीठी ता: १४ चइत तीज मंगर सम्वत् १८६३ साल कै। इहा खैर सलाह है। आप का खैर सलाह चाहते है। सुनत ऐसा है के श्री श्री साहवान लोग हुकुम करअै हमारा वाव् वौ दीवान को सो आप सो जाहीर करइन यौ आपने जवाव दीआ के कीस तरह हम जमीन छोड़ने को कहे वौ उअह अपने जगह के मालीक है। जो ख्याल में आवे सो करे। सो आप हमारे मालीक हैं। जद आप सव सभलपुर छोड़ के जाइगे तव हम गांगपुर मो रहने सकेगे। आप हमारे धनी हैं। जैसा आप का गत वैसा हमारा गत। यौ आप सभलपुर से उठि जाइगें तव हमको गांगपुर में रहने का क्या काम है। वौ इअह जगह दौलत आप ही से हैं। जिस दिन आप सभलपुर छोड़ के चलेगे उस दीन हम गांगपूर छोड़ के चलेगे वौ हमार धन दौलत पालकी घोड़ा डोली घरीआ जीस सुरत का हम को है सो आपको मालुम है। अगर इअह समय जो रहता तो आप के संगे चलते। लाचारी मे आपके साथ चलने न्ही सकते। जीस जगह आप का ठीकाना ठहेरगा तही हमे इस्त तरफ व मइवामडा होके आवेगे वौ आप जेई खन सभलपुर छोड़ देवोगे उसी खन गांगपुर हम छोड़ के आप के सामील होइगे। इअह वात मोकरर वौ जैआदा का लिखै। अपने मालीक है मो मालुम करोगे।†

५८

श्री ठाकुर भजसाघ कौ दीवन सहेव कुजवाहरी लाल सहेजीउ को राम राम वचने। अग छेम हैं। अगे जो खत हमने तुम कौ लीख्ह है तीसके जुमव इत जरा है। आगे भत पठक का गइ हैं। महम दाभे इलके का शा सोरग उभा है सो इनको दालइ देने इस वत मैं हेरान कराने गइ दालइ देने। सुभ‡

---

* Foreign Dept., 30th June, 1806, No. 461

† Foreign Dept., July, 1806, No. 561

‡ Foreign Dept., July, 1806, No. 566,

५९

नकल परवाने का जो ता: १८ माह जुन सन १८०६ अंगरेजी को लीखा गआ था सरह इअह है—
रफअतअवाली पनाह राजे रामचदरदेव वआफीअतवासन्द। आगे इस के दो चार मरातवे तुम्ह को हजुर सो लीखा गआ है के तुम्ह जलदी सो आपना लोग लडके वालो समेत उहा सो कुंच कर कै सोनपुर मो जाना। लेकीन उन्हो का जवाब तुम्ह ने ऐही लीखा है के हम तैआर हैं। जीस वकत राजा परतापरुदर देव माहापातर खरीआर सो आवहीगे उसी वकत तुरंत हम कुंच कर कै सोनपुर मो जाहीगे। इस वासते अव फेर तुम्ह को लिखा जाता है के तुम्ह चौहान घर में सभी से बडे हो वौ इहा रानी रतन कुअरजी तुम्ह को बजुरग जान कै तुम्हारे पहीले रवाने होने का इनतजारी भी है। लाजीम है के तुम्ह इस परवाने को देखते तुरत तुम्ह अपना डेरा वाहर कर कै सोनपुर को रवाने होना वौ इसका खवर हजुर मौ वौ रानी मसतुर को तुरंत इतलाएँ करना के इअह भाइआ सो कुंच कर कै सोनपुर मो रवाने होहीगे। इस वात मो अव हरगीज देर मत करना। जरूर जान कै डेरा वाहर करना। वौ रानी मजकुर को खबर करना वौ ऐकान है के इस परवाने के पहुंचने पर तुम्ह तुरंत कुंच कर दोगे। देर नही करोगे। वौ चाहीओ के महापातर मसतुर भी खराआर सो आवते होहीगे। तव वो भी पीछे सो मोकरर तुम्हारे पास गसले मो इआ सोनपुर पहुचहीगे। सो ताकीद तमाम जानना—*

६०

नकल परवाना का जो ता २९ माह जून सन १८०६ अगरेजी को लीखा गआ था सरह इअह है—मोहवत दसतगाह माहारानी रतन कुवर वआफीअत वासन्द। आगे अरसा वारह रोज का हुआ होगा जो तुम्हारे दरखासत वमौजिव हजुर के मुनसी लोग तुम्हारे पास गआ था। तव तुम्हने मारफत उन्होके मेवाऐ दुसरा मरातवात के जो उअह वात खतम पाआ अपने कुंन करने काअ वासते अरज करआ था। जो वासते रवाने होने राजा राम चदर देव को परवाना लीखा जाऐ उअइ अपने जगह सो चलहीगे तव हम भी रवाने होहीगे। लेकिन उस रोज फेर तुम्हारे अमला दीवान सदासीव राऐ वौ खनसामा वनमाली राऐ के मारफत तुम को हुकुम दीआ गआ के वेहतर है माफीक

* Foreign Dept., July, 1806, No. 574

अरज करने रानी साहेब के। परवाना इस वासते राजा ममतुर को लीखा जाता है। दरसुरते के उअह फेर रानी साहेब के आगे रवाने होने केअ वासते अरज करहीगे तो अलबते पेसतर रानी साहेब को मोकरर चलना होगा। तब तुमनै उअह बात कबुल कीआ। अब उस परवाने का जवाब राजा मसतुर तुम्हारे ही आगे रवाने होने काअ वासते मोकदम करके अरज कीआ है। बलके वासते दरीआफत तुम्हारे उसका नकल मसकुक जाता है उस सो मालुम करना। जैसा के उअह सभवात तुम्हारे अमला मजकुरान का मारफत तुम्ह को इसारा कीआ गआ था उसका जवाब उअह लोग आज बेडौल बेसुतुर बेमहाल तुम्हारे तरफ सो हजुर मो जाहीर कीआ है के इस वासते तमाम बेकरारी वौ बेइअतबारी जो आज छौव महीने सो तुम्हने हजुर मो अरज करते आऐ है साफ हवा के माफीक बरबाद था जाहीर हुआ। तब इस वासते तुमको फेर हुकुम करना इआ समुझावना जवानी सो कुछ खुब न्ही दरीआफत कीआ। इस वासते परवाना इअह तुम्हारे पास लीखा जाता है के तुम अपना बेहतरी पर सभ सुरत सो नीगाह करकै चाहीऐ के अब सावन बदी तीन रोज सं १८६३ साल को अपना डेरा असबाब सफर का सभ कीले सो बाहर करना वौ चलने को तैआर होना। इस मो एक साइत देरी दीरंग मत करना। जीस सुरत मो ऐसा तुम्ह के मनजुर न्हीं होऐ तब दुसरा बात। जो तुम्हारे जीव मो होऐ वै आलकर के साफ अरज करना के दरीआफत कीआ जाऐ। सो ताकीत तमाम जानना। वौ चाहीऐके इस परवाने का जवाब वा सवाब (?ल) साफ करकै कल्ह दोपहेर रोज को हजुर मो अपना अरजी लीख भेजना के उसको कलकत्ते मो रवाने कीआ जाऐगा सो जानना—*

६१

नकल अरजी महारानी रतन कुंअर बेइ जीमीदार सभलपुर अठारहगढ लीखा मीती सावन बदी १ रोज समत १८६३ साल को जो परवाने का दर जवाब था सरह इअह है—गरीब परवर दसतगीर बेकसान श्री श्री कपीतान रसल साहेब बहादुर दामअकबालहु। अरजे हजुर मो असा है की जो हजुर सो परवाना इनाइत हुआ सो सीरो पर लीआ सरफराजी हासील हुआ। गरीब परवर खोदावंद हुकुम जो हुआ था तीसरे तारीख सावन के कीला से डेरा बाहर करने को सो आगे इस बात दोनो मुनसी के पास हजुर मे अरज कहलाऐ भजे थे। पटना राजा वो खडीआर महापातर आऐ। पर जाने मो हमारा देरी नही होगा। सोइ बात अब भी हजुर मो अरज कीआ जाता है। आप के पनाह वौ कदम सीवाऐ दुसरा बात हमारा न्ही है। उअह लोग उधर से नही आवने तकी डेरा बाहर करना हमारा मोनासीब नही है। दुसरा

*Foreign Dept., July, 1806, No. 576

बात श्री माहाराज बाप बेटा दोनो वौ महापातर पीरथी सीघ खलास होने के जो लीखा नागपुर श्री अलफसटीन साहेब के इहा से आआ। हजुर का हुकुम से मुनसी साहेब हमारे पास लीखे थे। आप दील पर लाऐ से बहुत बड़ा बात नही है। खलास होऐ पर पंदर वीस रोज मे आइ दाखील होइगे। साहेब का जस वौ तौबसाफ मुलुक मुलुक पर रहेगा। आप के कदम हम जो पकरे है सो भी सवारथ होगा। वादनाम का दहसत जो हमारे दील पर है सो भी मीट जाइगा। जेआदा कीआ लीखे। मीती—*

६२

नकल अरजी महाराजा रामचंदरदेव मालीक पटना नवगढ वौ राजा पम्नापरुदर देव महापातर जीमीदार खरीआर वौ राजा पीरथी साही जीमीदार फुलदर वौ राजा वीस्वनाथ साही परगनें सारंगढ वौ अजीतसीघ ठाकुर परगने वरगढ का सरह इअह है---गरीब परवर श्री श्री कपीतान साहेब कपीतान रफमज साहेब बहादुर दाम अकबाल्हु खोदावंद हजुर सो जो हुकुम सरकार सदर का आप ने फरमाआ गआ सो सभ सुरत से हम लोग तमाम कमाल दरीआफत कीआ। हम लोग को ऐही मनजुर है की सरकार कांपनी हमे मैऐ फरजंदान अपने हमसे हमेस हाजीर वौ रुजु रहै। लेकीन अरज ऐही है के हम लोग अपने बावन पुसत का जगह आप के सरकार का पनाह के उमैद से छोड़ते है वौ हमारा आवरु होइग्गा औ मान वौ सरदारगी जैसा इस मुलुक मे है सो हजुर मो खुब रोसन है। इस सुरत मो ऐसा तब कोआ जनाव आली से रखते है के सरकार से हमारे नाम वौ नीसान के माफीक मैऐ फरजंदान परवरसी कीआ जाऐ। सभ सुरत से हम लोग को सरकार ही का पनाह कबुल वौ मनजुर है। दुसरा कोइ बात हम लोग को मनजुर नहीं है। जेआदा अरज। मीती चत बदी ९ रोज समंत १८६३ साल—†

६३

हुकुम इसतहार बनाम रानी रतनकुंअर मालीक सम्हलपुर वौ राजे वीस्वनाथ साही जीमीदार परगने सारंगढ वौ ठाकुर अजीत सीघ जीमीदार वरगढ वौ बाबु रघुनाथ सीघ जीमीदार सोनपुर वौ राज तीरभुअन देव जीमीदार बामडा वौ राजे इंदरसीघर देव

*Foreign Dept., July, 1806, No. 577
†Foreign Dept., July, 1806, No. 578.

जीमीदार गांगपुर वो राजे रामचंदर देव मालीक पटने वो राजे परतापरुदर देव माहापातर जीमीदार खराआर वो राजे पीरथी सींघ जीमीदार फुलझर का सरह इअह है— के करीव सात महीना क गुजरा होगा के हम ने माफीक हुकुम गौरनर जनरल साहेव वहादुर के इरादा वापस करने मुलुक सम्हलपुर वो पटना वीच कवुजे माहाराजे रघुजी भोसले के तुम्ह लोग से इजहार कीआ था वो उस वखत मो हम ने दो तरह तरफ से सरकार अंगरेजी के वासते तजवीज तुम्ह लोग के वेआन कीआ था। अउअल तरह इअह के दरसुरत राजी होने तुम्ह लोग के वीच तावेदारी वो हुकुमत माहाराजे मवसुफ के इआ लाचारी लालच मुलुक अपना छोड़ने का सेवाऐ जामीन होने उस वात के हमारे तरफ से हरऐक तरकीव से कहना वोलना वो सीफारीस करना राजे मवसुफ सो तुम्ह लोग का कीआ हो। तो दुसरा तरह इअह के जीस सुरत मो हमेसगी पनाह वो परवरसी सरकार अंगरेजी का कर वाने वीच तावेदारी सरकार मरहठे के वो इसत कामत रखने जमीन अपनो सो मोकदम जानो। तव हमारे अखतीआर मो था तुम्ह लोग को जमीन अंगरेजी मुलुक मे देने को वो वैठालने को के वासते तसरुफ तुम्हारे मऐ फरजंदान तुम्हारे के मोदाम मोकरर होता इस गुंजाइस का के वदला नोकसानी जमीदारी अपने के वो कावील पुरावने हरऐक ऐह ते आज वाजीव नाम्र नीसान तुम्ह लोगो के हो। तो वाद इजहार करने कमाल तफसील साथ इअह दोनो वात के वो वाद जवाव देने खोलासा तरह से जो वात इआतराज वो सुवह तुम्ह लोग दरपेस लाआ था हम अपने तरफ सो मइआद गौर करने व मसलहत वुझने को छोड़ दीआ। तुरंत जवाव नही चाहा था। वो सेवाइ राजा जुझार सींघ के तुम्ह लोग का मसलहत का अंजाम के फल इअह था के तुम्ह ने अपना खुस रजा ऐसे दुसरे तरह को कवुल कर कै लीखा हुआ दसतावेज हमारे पास दाखील कीआ सीरीफ वसरत परवरसी अपना के के सुरु सो अव तक करने को तैआर है। उस के वाद वाजे आदमी तुम्ह लोगो से केता रुपौआ माफीक ऐह ते आज वो मरातीव अपने वासते अंजाम करने तैआरी कुच अपनो का हम मो लीआ था। वलके सवव लेने का तुम्ह लोग के उस दसतावेज मो जीकीर दराज है। वो हमने इअह सव मोकदमे को अंजाम पावने का नजर पर तुम्ह लोग को अपना अपना जगह पर रोकसद कीआ। वो तो राजे हुकुम पावने सरकार सो अपने वासते ले जाने तुम्ह लोग को अपने जगह मो रहने को मइआद दीआ था। वो आदमीआन अपना वासते अंजाम करने वंदोवसत तैआरी तुम्ह लोग के वो दुसरा वाजे काम ऐहते आज का तुम्ह लोगो के साथ कर दीआ था। वो इअह सभ माजरा हम ने तफसील साथ गौरनर जनरल साहेव वहादुर का हजुर मो लीख भेजा था। वो साहेव मोफखरुनल्हकमाल इआतवारी उपर रासत इरादा तुम्ह लोगो का कर के जलदी तमाम सो वासते जुदा जुदा तैआर करने जमीन तुम्ह लोगो के तुरंत हुकुम इस दज कीआ था। वो नागपुर का साहेव वोकील को वासते इजहार वो आपस होने इअह मुलुक माहाराजे मसतुर से हुकुम दीआ था वो फकत मोत वजह होने अरज से तुम्ह लोग के हुकुम दरखासत खलासा राजे जैत सीघ वो माहाराज साही

वौ पीरथी सीघ माहापातर के उअह साहेव की फरमाइन था। वौ सेवाऐ इस के अगरचे वे हरकत का वात न्ही था तुम्ह लोग का अरज मनजुर कर कै माहानद मो पानी बढने तकी अपने अपने जगह रहने को हुकुम दीआ था वौ सीरीफ वास्ते वात के फसाद के खवर पर जो तुम्ह लोग वेवा (की) फ (जीर्ण) न्ही हैं। थोडा रोज आग जलदी तुम्ह लोग को अपने अपने जगह से कुंच करने को हुकुम दीआ गआ। लेकीन वावजुद हजार तकरार होने वौ समुझावने नतीजा अदल करने उस के (जीर्ण) तक कुछ जरा अपने खातीर मो न्ही लाऐ हौ वौ जवाव नासवाव के साफ मसलहत से आपुस सभ आदमी (स्पष्ट नहीं है) वर्के व इरादा वरवाद करन करार अपने के मालुम होता है लीखते रहे हौ। इस सवव पर हाल हुकुम से गौरनर साहेव वहादुर के साफ तुम्ह लोगो को खवर कीआ जाता है के तुम्ह लोग को करार दीऐ हुऐ अपने से फीरना कुछ जाएज न्ही होगा। वलके जोमीदारी तुम्हारा सरकार से अंगरेजी के मोकरर माहाराजै मवसुफ के तावेदारी मो सौपा गआ। वलीक नतीजा खीलाफ करार तुम्ह लोग का अैसा होगा के वकत दखल होने इअह मुलुक सरकार मरहठे के अव कुछ वाकी न्ही है। तुम्ह लोग उस के अमला के हवाले वौ कावु मो पडोगे वौ कुछ ऐक वात वासते सलामती वो वेहतरी तुम्हारे हरगीज कहने मो न्ही आवैगा। तव तुम्ह लोग को चाहीअै के नोकमानी वौ तवाही जो तुम्हारे उपर वौ लड़का वाला वौ अजीज तुम्ह लोग के उपर व सवव वेकरारी के पडेगा नीगाह कर कै फेर जव तक वकत होने का है राहरास्ती पर आऐ कै हमारा सावीक हुकुम वौ अपना करार अमल मो लाऐ कै अपने अपने जगह सो तुरंत कुंच करना। फकत इसी वात मे वेहतरी वौ सलामती तुम्ह लोग का होने सकता है। लेकीन जीस सुरत मो इरादा तुम्ह लोग का इन्ह दीनो मे अैस ही वदला है के तावेदारी सरकार मरहठे का वौ तेआ गुना पनाह सरकार अंगरेज का फेर जीकीर उस का लीखने मो न्ही आवैगा। मुलुक अपने छोड़ने सो वेहतर मालुम करते हौ तो मोनासीव है के तुम्ह लोग जो रुपीआ पाऐ हौ फेर देवगे वौ वसरत दरकार अपने के वासते सीफारीस अपना अरजी लीख के हमारे पास भेजोगे के उस को हम गौरनर साहव वहादुर का मोलाहजे मो पहुचावैगे। वौ भी तुम्ह लोग को खवर कीआ जाता है के तरफ से सरकार मरहठे के जानु पंथ नाम ऐक सखस नागपुर मो साहेव वोकील सो मुलाकात कर कै ता: २४ माह असाढ़ समत १८६३ साल को वास्ते वंदोवसत करने वौ दखल पावने मुलुक सम्हलपुर वौ पटना रवाना हुआ उस के पहुंचने पर कोइ वात तुम्ह लोग का सुना न्ही जाऐगा। सो ताकीत तमाम जानना। ता: १० माह जुलाइ सन १८०६ अंगरेजी मोतावीक ९ माह सावन समत १८६३ साल—*

* Foreign Dept., July, 1806, No. 583

६४

नकल अरजी राजा रामचंदर देव मालीक पटने का जो ता: १७ माह जुलाई सं १८०६ को पहुंचा था। सरह इअह हैं। श्री कपीतान साहव गरीव परवर सलाम। आगे आप का परवाना आआ। हैवाल मालूम हुआ वौ सुवेदार की जवानी मालुम हुआ। आगें हम हुजुर सो रोकसद हो कै आएं। अव सुनने में आवता है जो कोई जीमीदार अव तक हजुर मो न्हीं आऐं हैं। हम जीमीदार है इस मुलुक का। वौ हजुर सो हुकुम आआ था के तुम आगें नीकलो। जेता जीमीदार हजुर मो कवुल कीऐ थे सो अपने डेरे में है। ऐ हम जो आगें नीकलेगें हमारा का तकसीर हैं। वौ आगे नीकलने का कवुल नहीं कीआ था। आप खावीद है। इस वात को दरीआफत करेगें। मीती सावन वदी ६ रोज—*

६५

नकल अरजी माहारानी रतन कुंअर देइ मालीक सम्हलपुर अठारहगढ लीखा हुआ ता०१८ माह सावन समत १८६३ साल का ता २० माह जुलइ सन १८०६ अंगरेजी का मोलाहजे मो गुजरा। सरह इअह है। गरीव परवर दसतगीर वेकसान श्री श्री कपीतान रसल साहेव वहादुर दाम अकवालहु अरज हजुर मो अैसा है जो ता० ९ माह सावन के जो हुकुमनामा इसतहार परवाना हजुर का आआ सो सीरो पर लीआ। वहुत वहुत सरफराजी हासील हुआ। जो जो वात हुकुम हुआ था हमको भी अपन दील मे ऐकीन इस वात क मालुम होता है सीवाऐ कदम अंगरेज वहादुर के दुसरा वात हमारा नही हैं। पनाह छोडने मो हरगीज हरगीज अगले को हमारे हक मे वेहतरी वौ सलामती दुसरा की अमल मे नही हैं। लेकीन वेवाली वेवारस जंगल जंगल मे फीरते थे। आपके हुकुम से आपके कदम पकडने से जो हमारे उमैद हुआ था सो इसतहार के पठने मे अैसे मालुम होता है वोतन वारस दोनो वात से हाथ हाथ उठावना हुआ वौ हुकुम जो हुआ था अपने इरादे के वात अरजी लीखने को वौ कलकता भेजन को सो गरीव परवर दुसरा इरादा हमारे नही है। जो इरादे मे है सो पेसतर अरज कीऐ हैं। अव भी अरज करते है। पनाह मे रहेगें। श्री माहाराज वाप वेटा के आऐ पर जाहा हुकुम होगा ताहा चले जाऐगें। वारस छोडके जाने को कवुल न्हीं होता है। जो रुपौआ इनाइत हुआ था हुकुम से सीपाही लोग को दीआ गआ था सो रुपैआ जो

* Foreign Dept., July, 1806, No. 586

अब फेर देने को हुकुम हुआ सो फेर देने को हमारे इरादा नही है। आगे को आप मालीक है। जैसा फरमावैगा उस बात मो हाजीर है। जेआदा अरज—*

६६

नकल अरजी राजा रामचंदरदेव मालीक पटना का जो ता: (अस्पष्ट) सावन समत १८६३ साल का लीखा हुआ ता: २३ जुलाइ सन १८०६ अंगरेजी को मोलाहृज मो गुजरा। सरह इअह है—

श्री श्री कपीतान साहेब गरीब परवर सलामत। हुजुर का परवाना आआ। हेवाल मालुम हुआ। हमारी खातीर बहुत हुआ। आप हमारे खावींद है। ऐ परवस्ती आप ही सो है। ऐ सभ जमीदार सभलपुर मे कबुल कीऐं। फेर सुनने मो आता है ऐ की अब कोइ जीमीदार कबुल न्ही करते है। जाने को वौ दो रोज के बाद हमारी तरफ सो एक मोखतार हुजुर मो जागा तीस का हेवाल हुजुर मो जाहीर होगा—†

६७

नकल करारनामा पं श्री चौबे किलेदार दरियाउ सिंघजू की—

जो हम ने बडी चाह सैं तावेदारी वा हुकुम उठाउना सरकार दौलतमदार कंपिनी अगरेज बहादुर का कबूल किया सरकार दौलतमदार के नौकर वा वास्तेदारो की पंगत मैं दाषिल हूऐ। नवाब मुस्तताब मुअल्ला इलकाब गवरनर जनरल बहादुर दामइकबालहुंम के हजूर तैं साहिबवाला मुनाकिब आलीसान जान वेली साहिब वहादुर जादइममतहुंम वास्ते वदोवस्त मुलक बुंदेलषंड के मुकरर है। तिन के हजूर कलमैं मतलब अपनैं की गुजराही साहिब मौसूफ नैं सब कलमैं लिषी हइी। मतलब हमारे की दसषत करी। अरु इकरारनामा बमूजम तपसील जैल के हम सैं मागा। इिस वास्तै इकरारमामा बमूजम तपसील जैल के मुहर वा दसषत अपनैं सैं लिष भेजा और इकरार करत है कै हरगिज ऊसैं तफाउत ना करैं। जो कलमैं लिषी गइी है तिस मैं कौनहू वात का वरषलाफ अमल मै न आवै—

१ कलम पहिली

कोइी फैली वा फिसादी वुंदेलषंड के वा और देस के तिन सैं मेल न रषैं। अरु किसी फैली वा फिसादी कौ किले भीतर वा नीची किले के वा अपनैं इिलाके

* Foreign Dept., 15th August, 1806, No. 618

† Foreign Dept., August, 1806, No. 668

के गाउन मैं ठहरन न दैहि। उन के कवीला वा लरके वाले जगा मजकूरन मै हरगिज रहनै न दैहि। अउ उन सौ लिषा पढी सब भाति की मौकूफ करैं। अरु वास्तेदार वा नौकर सरकार दौलतमदार के जे है तिन सै दुसमनी न करैं। हमेसा तावेदार वा हुकुंम वंदे सरकार के हो कै कौनहु भाति सै तावेदारी वा फुरमांवरदारी मैं तफाउत न करैं—

१ कलम दूसरी

वदोवस्त कालीजर के इलाके की घाटीयौ वगैरे का अैसा करैं कैं कोइ फैली फिसादी वा लुटेरे उस राह सै ऊपर घाटी के ना जावै वा नीचै न आवैं। हरगिज किसी फैली फिसादी कौ इस राह सै आनै न दैहि कै सरकार के मुल्क मै आहि कर फिसाद फैल करैं—

१ कलम तीसरी

जव फौज सरकार दौलतमदार की कालीजर के इलाके की घाटी वगैरे सै ऊपर घाटी के आवै हरगिज मुजाहिम न हौहि वलकि अपनै मानस मातवर वाकिफकार साथ कर दैहि जिस राह सै फौज सरकार की चाहै पार उतरैं—

कलम चौथी

जो गाउ घाटी ऊपर परगनैं वरहो मै सरकार दौलतमदार सै हमारी नानकार मैं इनाइत हुए है वाजे उन गाउन मैं पान हीरा की है सौ इकरार करैं है कै सिवाहि उन षानन के क जो सरकार नैं हमैं वगसी है और षानन सैं कछू इलाका न रषैं। जव मानस सरकार के उन षानन के अमल करनै कौ आवैं तव सरकार मैं सौंप देइ वलकि सरकार के लोगन की मदत रष पतौ करैं

कलम पाचइी

जो कोइ रैयत सरकार दौलतमदार की भाग के हमारे इलाके मै आवै तौ पकरि कैं सरकार के नौकरन के हवालैं करैं अरु जो सरकार के मानस उन के पकरनैं कौ आवैं तौ हम रोक नही वलकि सरकार के मानसन के सरीक हो कै पकराहि दैइ

कलम छटइी

चोर वटपार अपनै इलाका मै रहन ना दैहि अरु जो किसी वेपारी वा राहगीर कौ माल हमारे इलाका के गाउन मै चोरी जाहि वा लुटै तौ गाउन के जिमीदारन कौ तागीद करि कै लूट होहि सो फिरवाहि दैहि वा चोर वा लुटेरा पकरि कै सरकार दौलतमदार मै पहुचाइ दैहि। सरकार के मुलक सै षून या कतल और किसी भात का गुनहगार सरकार का हो कै हमारे इलाका के गाउन मै आवै उसैं पकरि कै सरकार मैं पहुचाहि देइ

कलम सातड़ी

अरु एक मानस अपनै भाई बंदन सैं सरकार दौलतमदार के अहिलकारन के हजूर वास्तै हुकुम बजा लानै के मुकरर करै कैं हर हमेस हाजिर बनै रहै—

तारीख २६ ज्मादुसानी सन १२२१ हिजरी मुताबिक १० सितंबर सन १८०६ मवाफिक भादौ बदि १३ संवत १८६३ मुकामु—*

९८

यादि कलंमबंदी पं० श्री चौबे किलेदार दरियाउसिंघजू की या सरकार सैं कर पावै—

जागा चार लाष की पदानै चौदा किली कालीजर कैं कछू घाटी ऊपर परगनै पवई मैं कछू अतरपठा मैं नवाब अली बहादुर की सरकार मैं ठहरी हुती। जब नवाब समसेर बहांदुर दषिन सैं आए तब उनहुन नै सनधि कर दइी सो सनधि व जनिस धरी है अरु जौन जागा हमारी जपती मैं रही है ता की बिदी—

किलौ कालीजर वा परगनौ
१

घाटी ऊपर मौजे बरहौ पुरवन सुधा
१

पदानै आठ ८
१

सैंहौ	सालिगपुर	चौगरा
१	१	१
राइपानी	झंडालालपुर	गाजीपुर
१	१	१
सिध्धपुर	गैहरा	
१	१	

परगनौ जैपुर कौ
१

घाटी ऊपर मौजे दिया
१

जो तुम सचे होकै निस्चै करकै जीउ जान सैं तावेदारी वा हुकुम उठाइबौ सरकार दौलतमदार कंपिनी अगरेज बहादुर कौ कबूल करी किलेदारी कालीजर के किले की वा सारी बातै रष पते किले मजकूर की नवाब मुस्ततावमुअल्लाअलकाब असरफअलउमरा गवरनर जनरल बहादुर दाम इकबालहुम कै हजूर तै तुम्है सौपी गई और वास्ते षर्चु किले के वा तुम्हारे परगनौ कालीजर वा परगनौ जैपुर वा घाटीपर परगनौ बरहौ वा मौजे दिया और पदानै आठ बमूजम तपसील जुदी के बमरत उन सरतन के जो कलमै करारनामै मुफसिल लिषी गइी है इनाइत हुइी और सनधि किलेदारी वा परगनै मजकूरन की तुम्हारे करारनामै के आए। पीछै हाल अपनी मुहर वा दसषतन तै दइी जाइगी

* Foreign Dept., 22nd September, 1806, No. 709

सो वितवार है सरकार मै ही को सधि कर पावै दौलतमदार अरु जब हम हजूर मै हाजिर हौहि जो कोऊ फैली फिसादी ही मुलक कौ होहि वा और कोऊ सो हमारी मारफत सरकार की रुजवाहित करै फैल फिसाद छाडि कै ज्वाब स्वाल उन कौ हमारी मारफत होइ—

—१

अरु जब तै हम सरकार मै हाजिर हौहि तब तै पीछली झगरी बादा वा लूट पाहि हम सौ वाइ हमारे चाकरन सौ कोऊ कौनहू बात सौ मुजाहिम न होहि —१

मान मुलाहिजौ जौ हमारौ जैसौ राजनि के घर तै बनौ रह्यौ आयौ है सो तेहू तरह बनौ रहै—१

भैया भतीजौ वा राज कौ आसामी चाकर वा घर चाकर जो कोऊ हमारौ डंड करै तौ कंपिनी कै घर मै ना मुनवेतर आवै

—१

जितनी जुबान हम सौ बोलवे मै आवै सो फेर आन तरह न होइ हमेस बनी रहै ताकी लिषौट कौल करार पका इतहिहातै वा कलकंता तै कराइ पावै

—१

श्री मिरजा साहिब कौ वहिया विद मान कर पावै अरु जिन कौ मिरजा साहिब कहैते दो जने और

—१

अरु जब सनधि हजूर पुरनूर की दही जाइगी जो सनधि हमारे मुहर वा दसपतन की है सो फेरि लैइगे—

—१

जो तुम नौकर वा वास्तेदार सरकार दौलतमदार के हुए वास्ते इज्जत वा आवरइ तुम्हारी के जो कोई पाठे पर सै वा नीचे घाटी सै जुवाव स्वाल तावेदारी वा हुकुम उठाइबौ वा हाजिर हौवै का सरकार दौलतमदार मै अपनी षुसी सै मारफत तुम्हारी करैगा सो कबूल होइगा

—१

जब तुम सरकार दौलतमदार मै हाजिर होहुगे कजिये अगिले पछिले तुम्हारे वा तुम्हारे नौकरन के किसी भाति सै सुनै न जाइगे। आइंदा तुम को यह चाहिए के अपनै नौकरन कौ तागीद से मनै करौ कोई फैल फिसाद लूट न करै अरु कोऊ झूंठा डंड करैगा ती की तहकीक छान कर लैवे मै आइगी

—१

ईजत आवरोइ तुम्हारी इस मुलक के कदीम राजन के सरकार मै जैसी रही आई है उसी तरह सरकार दौलतमदार के अहिलकारन के हजूर बनी रहैगी

—१

फिरियादी वा गिल्ला भाईयौ का वा भतीजिन का वा नौकरन का वा किसी का तुम्हारे हक मै सुना न जाइगा

—१

जब लौ तुम तन मन सै तावेदार वा हुकमी सरकार दौलतमदार के अहिल-कारन के बनै रहौगे तब लौ जो कछु पहिले दिन से तुम्हारे वास्ते ठहराउ होइगा तिस मै कौनहू भाति कौ तफाउत न होइगा

—१

वास्ते वहियागीरी के मिरजा जाफर साहिब कौ हुकुम दिया सोए लिष भेजैगे। चाहिए बहुत षातरजमा सै मिरजा मजकूर की वेडियागीरी सरकार की वहियागीरी जान कै तुम आप आवो

	व्वा अपनें बैटे को अपनी मुहूर वा दसपत के करारनामैं वा किले की कुंजी सुधा पठैं देज। इहा सैं मनव किलेदारी की वा परगने मजकूर कौ वा पदानें वगैरा की उनक दिड़ी जाइगी ———१
महाराज के सुधार कौ पुलाउ अबै हो जइ ताकी पकाइित कर देवे मैं आवे। जब हम मेवा मैं आवै तब कर पावैं ———१	महाराजा किसोर सिंघ की कल-मन के वास्तै तुम नें लिपा था। जब महाराज मजकूर हमारी मुलाकात कौ आवैंगे महर परना का उनके रहने के वास्तें और जागीर उनके लाइक की पाडे के महालन सैं सरकार दौलत-मदार के अहलकारन के हुजूर सैं इनाहत होइगी अर महाराज मजकूर के मुकदमन का ज्वाब वा स्वाल मारफत तुम्हारे फैसल होइगा ———१

तारीक २२ जमादुसानी सन १२२१ मुताबिक माहे सितंबर सन १८०६ इिसवी मिती भादौ वदि ९ संवत १८६३ मुकामु वादा

याद कलमबंदी पं श्री चौवे किलेदार दरियाउसींघजू की या सरकार मैं कर पावैं—

जागा चार लाष की षदानैं चौदा किलौ कालींजर कौ कछू घाटी ऊपर परगनै पवइी मैं कछू अतरपठा मैं नवाब अली वहादुर की सरकार तैं ठहरी हती। जब नवाब समसेर वहादुर दषिन तैं आये तब उनहूं नैं सनधि कर दइी। सो सनधि बजनिस धरी है अरु जौन जागा हमारी जपती मैं रही है ताकी विदी—

किलौ कालिंजर वा परगनौ	१
परगनौ जैंपुर कौ	१
घाटी ऊपर मौजे बरहौ पुरवनसुधा	१
घाटी ऊपर मौज दीया	१
षदानैं	८

सेहौ	सालिगपुर	चौपरा	राइपांनी	इंडालालपुर
१	१	१	१	१

गाजीपुर	सिंघपुर	गहरा
१	१	१

सो बितवार है सरकार मैं इी की सं (जीर्ण स्थान) करवाव दौलत मदार

अरु जब हम हजूर मै हाजिर हौंड़ी जो कोऊ फैली फिसादी ड़ी मुलक कौ होड़ि बा १ और कोऊ सो हमारी मारफत सरकार की रुजवाइत करे। फैल फिसाद छांड के ज्वाब स्वाल उन को हमारी मारफत होड़ि

अरु जब तैं हम सरकार मैं हाजिर होड़ि तब तैं पीछिलौ झगरौ वा दावा वा लूटपाड़ १ हम सौ वा हमारे चाकरन सौं कोऊ कौनहूं बात सौ मुजाहिम नां होड़ि

मान मुलाहिजौ जौ हमारौ जैसो राजन के घर सैं बनौ रहौ आयौ है सो १ तिहि तरां बनौं रहै

भैया भतीजौ वा राज को आसामी चाकर वा घरू चाकर जो कोऊ हमारौ डंड करै तौ कंपिनी के घर मैं ना सुनवै तर आवै १

जितनी जुबांन हम सौं बोलवे मैं आवै सो फेर आंन तरां न होड़ि हमेस बनी रहै ता कि लिषौट कौल करार पकाड़ित डिहां तैं वा कलकता तै कर पावैं १

श्री मिरजा साहिब कौं वहियां बिद वान कर पावै अरु जिन कौं मिरजा साहिब कहै ते दो जन और महाराज के सुधार कौ षुलाउअवै होड़ि जाड़ि ता की पकाड़ित कर देवे मैं आवै। जब हम सेवा मैं आवै तब कर पावैं

मिती—*

६९ (क)

नं० १

नकल अरजी राजा रामचंदर देव मालीक पटने का जो ता: १३ सावन वदी दुसरा का लीखा हुआ ता: १५ माह अगसत को मोलाहजे मो गुजरा। सरह इअह है—श्री श्री कपीतान साहेब गरीव परवर सलामत। आगे हजुर का परवाना आआ। हकीकत मालुम हुआ। आगे हम आप का हजुर मो पहला शाल मुलाकात कीआ। आप ने हम को मेहरवानगी कर के पटना का तमाम सरहद हमारे जीमे कीऐ वौ हजुर सो हम को खीलत मीला। हम वहुत खुसी हुऐ। उस ही दीन से भोसला की जीमीदारी छोर दीआ। हजुर का पनाह पकरा। फेर हुकुम हजुर से होता है ऐ की भोसीला का होगे तो साफ अरजी लीखोगे। हम साहेव के कदम सेवाऐ दुसरे को जानते नही। आप जव हम को हुकुम करेगे तव हम लाचार है। हमारा इरादा ऐही है। जो हजुर का पनाह सेवाऐ दुसरे को जानते न्ही। जीमीदार हम है ऐ जीमी के वासते अरज करते है—

*Foreign Dept., September, 1806, No. 724

(ख)

नं० २

नकल अरजी राजे परतापरुदरदेव़ महापातर मालीक खरीआर जो ता: १४ सावन वद दुसरा समत १८६३ साल का लीखा हुआ ता: २० माह अगसत सन १८०६ अगरेजी को मोलाहजे मो गुजरा। सरह इअह है—

श्री श्री श्री कपीतान साहेब गरीब परव़र सलामती। आगे हजुर का परव़ाना व़ौ श्री श्री श्री श्री श्री गौरनर साहेब बहादुर के हजुर का इसतहारनामा मुनसी मोहन लाल के मारफत पहुचा। सरकार का परव़ाना इसतहार हम सुन के सीर पर चढाआ। जे कुछ के हजुर का हुकुम हुआ उस मो कुछ तफाउत नही है। साहेब के हजुर मो सभ जमीदार कबुल कीआ था। हम ने भी कबुल कीआ व़ौ आप के हजुर सो रोकसत हो के अपने जगह को आऐ। इहा सादी बीआह कीआ। इस मो बरसात आआ। व़ौ जेते जमीदार करार कीहीन था सो आजु तक कोइ न्हीं गैंआ। सो इअह जगह हमारा जनमभुम है। इस जगह मो हमारा पुसतदरपुसत गुजरा। इस व़ासते हम इअह जगह छोड न्ही सकते है। व़ौ हम साहेब का है। इअह जगह साहेब का है। जीस रोज साहेब का कदम सभलपुर पहुचा हम लडके वाले सुधा जाऐ को साहेब का कदम मो हाजीर हुऐ। अब भी उस ही तौर सो लडके वाले सुधा हजुर के कदम मो हाजीर है। मगर अपना मीटी छोडी न्ही सके। इस व़ासते अरज करते है जो हजुर सो इअह जगह भोसीला को दीआ गैंआ तो बेहतर है। मगर जीस मो हमारा भला होऐ हमारा हुरमत बचे। उन्ह का मामीला चोरी रुपैंआ पहुचाऐ दीही इस तौर सो बंदोबसत कर दीआ जाऐ जो हजुर का जस हमेस को रहै व़ौ हम आप का नाम हमेस लेही। न्ही तो इअह जगह हजुर के तरफ रखा जाऐ तो हम अपना मामीलत चार रुपैंआ सरकार मो दाआ कहीगे। अपनो जगह मो रहहीगे। आगे रुपैंआ के व़ासते हजुर का परव़ाना आआ था सो हुकुम सुनी के हजुर का रुपैंआ तैंआर कीआ है। इस मो हजुर का जैसा हुकुम होऐ उस माफीक कही। आगे केआ अरज लीखही—

(ग)

नं० ३

नकल अरजी राजै पारथी साही जीमीदार फुलझर जो दुतीआ साव़न सुदी १ समत १८६३ साल का लीखा हुआ ता: २० माह अगसत सन १८०६ अगरेजी को मोलाहजे मो गुजरा। सरह इअह है—

गरीब परव़र खोदाव़ंन्द नेआमत कोम्पनी अंगरेज बहादुर कपीतान श्री श्री श्री रसल साहेब क अरजी अैसा जो गोरनर साहेब पास से परव़ाने व़ौ हुकुम आआ

सोइ परवाने मो समसत का सा मालुम हुआ। उस का जवाव वैसा है। जोमाहाराज रघुजी को जागा सौपी दीहीन सो आप तो जागा सौपी दीहीन हमार अरजा करे से अव कुछ होने का नहीहै। लेकीन वे सव जीमीदारो के नसीवा वोछ है। जो नसीवा कुछ वने का रहता तो साहेव जागा नही सौपता। लेकीन जो जीमीदारो का अपनो वहतरी चाहैगा तद आप का पनाह मो रुजु होवैगा। साहेव तो सव वात को तकाइ के हुकुम दीऐ हौ। व हमारा वीदी वेही है जो दीनो मे साहेव का हजुर मो हमस मूझा। वेस कर कै वस ही हुकुम दीहीन था की जो सव जीमीदार आवैगा वौ राजा रामचदर देव आवैगा तद तुम्ही आवोगे वैसे साहेव हुकुम दीहीन था सोइ कवुल मो आज तलग तीआरी हन। राजा रामचंदर जद आवै तो हम साहेव के हजुर मो हाथ वाध के रुजु होवैगे। जे हजुर मो न जावैगे तो फेर जैसा साहेव के दील मो होवैं तैसा करोगे वौ हमारा नीचे मन ऐही है। साहेव के कदमों को जवते हन। दुसरे वात को नही समुझते हन। लेकीन जो कोइ जीमीदार जो न जावै तो उस पर हमारा अटकाव नही है। राजा रामचंदर देव जावै तो हम आप के हजुर मो तैआरी है। सो साहेव वे वात को मोकरर जानोगे। हमारो हाल मो कुछ वात का अंदेसा नही है। नीदान कदमो मे दील है। लेकीन हमारा हवाल तो साहेव को खुव तरह से मालुम होवैगा। हम कोइ फंदफतुर मो नही है। हम फंदफतुर की जीमीदार नो इन सो साहेव वेवात को अलवद जानते हैगे। जेआदा अरजी जो लीखने नही साहेव तो मालीक हन—

(घ)

श्रीराम १

नं० ४

नकल अरजी राजा वीश्वनाथ साही जीमीदार परगने सारंगगढ़ जो सावन दुतीआ सुदी ५ संवत १८६३ साल के लीखा मोलाहीजे मो ताः २५ माह अगसत सन १८०६ अगरेजी को गुजरा—

सरह इअहहै—गरीवनवाज गरीवपरवर श्री श्री कपीतान रफसेज साहेव वहादुर खोदावंद अरजधारक राजा श्री वीस्वनाथ साही जीमीदार परगने सारंगगढ अदाव वजा व सलाम। श्री साहेवान लोग के छेम ता सदा भला चाही। श्री साहेवान लोग के कदम परताप से हमारे वेहतर है। अरजी अैसा जो श्री साहेवान लोग हजुर से परवाना हुकुमनामा आऐ। अदाव वजाऐ। सीर पर लीऐ। ताहा श्री साहेवान लोग ऐही हुकुम फरमाआ गआ है की खुव दरीआफत करके वौ समुझ के जीस सुरत मे तुम को वेहतरी नजर आवै सो करोगे। खुसी तुमारा है। इस तरह से कै ऐक मोकदमे श्री साहेवान लोग हुकुम फरमाइन था सो हम अपने दील से खुव

दरीआफत कर के समुझते हैं तो हम लोग वेहतरी वो खुसी श्री साहेवान लोग के दस्त पर है। हम लोग बड़े तकसीरवल हुऐ है सो माफ कीआ जाव। श्री साहेवान लोग खामीद है। अपने दसत से हम सभ लोग को परवरीस कीऐ है वो जीमीन पर रखे है। वोह सभ आ मे जो श्री साहेवान लोग खास जवा से हुकुम फरमाआ गआ है सो हुकुम को इआद कीआ जाऐ। जीस वकत सभलपुर मो पहीला श्री साहेवान लोग वीजै कीऐ है वो रानी साहेव को झाडी से खातरदारी से सभलपुर मो लाऐ वो हम सवो जमीदार अठारहगठ तेरह डंड पाट ऐसवरजावदी से वोलाऐ कै रानी साहेब मजुकर के तावे कर दीहीन था। वो रानी साहेव को अपने दसत से सभलपुर गंदी मो वैठारी हीन। अठारहगठ तेरा डंड पाट के मालीक वनाऐ के उस वखत मे श्री साहेवान लोग अपने दसत से खीलत वो वीडा रानी मजकुर सुधा हम सव जीमीदार लोग को वकसीस भआ वो सरकार से हुकुम फरमाआ गआ की आजु से रानी मजकुर सुधा अठारहगढ तेरा डंड पाट सव श्री अँगरेज वहादुर के भऐ। सरकार से पनाह दीआ जाता है। अपने-अपने जगह पर पुसत पुसतान से खुसी मे वैठा रहो कुछ चीता नहीं है। इस तरह से श्री साहेवान लोग हुकुम दीहीन था। उस हुकुम को सुनी कै रानी मजकुर तरफ से सदासीव दीवान वो वनमाली खनसमा वो हम सभ जीमीदार लोग वडे खुसी भऐ। अदाव वजाऐ कै खीलत वो वीडा को सीर ले कै अरजी कीऐ की खोदावंद हम सभ लोग श्री अंगरेज वहादुर के घर के चाल वो हवाल से नासमझ है। सब सुरत से गुनाह वो तकसीर हम लोग के माफ कीआ चाहीऐ। हम लोग सब अरजी इतला करते है। हमारे श्री श्री गवरनर जरनल साहेव वाहादुर श्री साहेवान लोग हैं। इस तरह का अगले का सवाल जवाव है जेआदा अरजी—

(ङ)

नं० ५

श्रीराम १

नकल अरजी ठाकुर अजीतसीघ जीमीदार वरगढ जो सावन दुतीआ सुदी ११ संवत १८६३ साल के लीखा मोलाहीजा मो ता: २५ अगसत सन १८०६ अंगरेजी को गुजरा— सरह इअह है—

गरीव परवर खोदावंद कपीतान साहेव श्री श्री रफसेज वहादुर के हजुर मो अरजी। अरज ऐसा जो सरकार से परवाना ले कर सीपाही आवा। हवाल मालुम भआ। इस पर हम तो आगे पर साहेव के हजुर मो अरजी लीखे थे और कोइ जीमीदार आवै के न आवै हम छडे से आवते है। सो अव हम ने तीआरी कर कै आवते है साहेव के हजुर मो। सो मालुम चाहीऐ। जादा अरज लीखने लगता नही—

(च)

नं० ९*

नकल अरजी महारानी रतहकुअर देइ मालीक संभलपुर अठारहगढ जो भादो वदी १० समत १८६३ साल को लीखा हुआ ता: ६ माह सीतमर सन १८०६ अंगरेजी को मोलाहीजे मो गुजरा—सरह इअह है—गरीव परवर दसतगीवेकसान श्री श्री श्री कपीतान रसल साहेव वहादुर दामअकवालहु। अरज हजुर मो अैसा है जो कलकता श्री गौरनर साहेव हजुर का इसतीहार वौ सरकार का परवाना आआ सीरो पर लीआ। वहुत खुसी हासिल हुआ। गरीवपरवर हम तो हुकुम मे हाजर है। पहीले जीस रोज सरकार का वीजे हुआ हुकुम हुआ की हम मुलुक मरहठा को दीऐ तुम हमारे पनाह मो रहोगे की मरहठा के तावे रहोगे। तो हम उस वखत हजुर मो अरज कीऐ की सरकार का कदम सीवाऐ हमारा दुसरा भरोसा नही है। लेकीन हमारा माहाराज वाप वेटा मरहठा घर मे कैदखाने मे है ऐ जीस तौर से आवै सो हजुर से पैरवी कीआ जाऐ। वौ हजुर से हुकुम हुआ की राजा को हम मुकरखलास करावैगे। खोदावंदा हम उसी वात पर है। अव जो सरकार का हुकुम हुआ की जवाव देने को सो हम तो हाजर है। परतु अव जीमी वौ राजा ऐ दो वात छोडने को होता है। हमारे उमेद था की सरकार के कदम परताप से जीमी मिला है वौ राजा भी मीलेगें। ऐ सवव हजुर मे फेर-फेर अरज कीआ जाता है की हम वाली वारस दोनो से जाते है। आप तो हमारे हाकीम मालीक है। जीस मे हमारा ऐक नही ऐक वंदोवसत होइ सो हजुर से कीआ जाइऐ। दोनो वात का ऐक वंदोवसत नही होऐ से सरकार को भी लाजीम है वौ हम को भी वदनाम है। सो खोदावंदा जीस तौर से हजुर का नाम रहै हमारा वेहतरी परवरसी होइ सो सरकार सो कीआ जाइ। गरीवपरवर जीस दीन मे हम गागपुर के झाडी मे थे सरकार का परवाना ले कै भेगी ठाकुर हमारे पास आऐ उस दीन से हम को गदी मे वैठारने तेक जेता हुकुम परवाना हजुर से इनाइत हुआ है सो तो हजुर को मालुमं है। उसी दीन से हमारा उमेद हुआ की हमारा पुसतदरपुसत तक इस तरह से अंगरेज वाहादुर के पनाह मे नीमहेगे। अव जो परवाना हुकुम हुआ डेरा हजुर के कुच होने का सो जीस तौर से हम रही आवैं सो वंदोवसत कीआ जाइ वौ रुपैआ इनाइत होने का वात जो हुकुम हुआ सो तो हम हजुर ही से परवरीस होते है। आगे साहेव हम को दीऐ। फेर भी देइगे हमारा उमेद है। आप तो खामीद मालीक है। जेआदा अरज का लीखही—

---

* (नं० ६, ७ और ८ हिन्दी में नहीं हैं)

(छ)

नं० १०

श्रीराम १

नकल अरजी महारानी रतनकुअर मालीक मम्हलपुर जो ता: २ माह भादो सुदी सभत १८६३ साल का लीखा हुआ ता: १५ माह सीतमर सन १८०६ अंगरेजी को मोलाहजो मो गुजरा। सरह इअह है—

गरीवपरवर दसतगीवेकसान श्री श्री कपीतान रनल साहेव वहादुर दामअकवालहु ता: १५ माह भादों के परवाना हुकुम हुआ सो सीगे पर लीआ। वहुत खुसी हासिल हुआ। अरज हजुर मो अैसा है जो गरीव परवर जो हुकुम फरमाआ गैआ था का ता: ५ सीतमर सो आज तलक जेता अरज हजुर मो इतलाऐ कीऐ सो हम ने कलकता मो दाखील न्ही कीऐ है। अब तीन रोज के भीतर महआद मे चलना होऐ तो हमारे पनाह मो चलो। हम सभ सुरत से परवरसी कर सकता है। सो खोदावंद कमाल मेहरवानगी हमारे पर है। अवल से आज तक है। हम को अकीन मालुम होता है। लेकीन हमारा नसीव का गरगस्ती से कुछ न्ही बन परता है। खुरदा जाने का वात जो हुकुम हुआ था श्री महाराज वाप वेटा कैद मे रहैंगे। हमारे मटी छोडी के जाना मनजुर न्ही होता है सावीक जो करार का है उस वात पर हम काऐम है। परंत उन्ह लोगो के आऐ पर आप को भी वदनाम न होगा वौ हमारे दील के भी दहसत जाता रहेगा। सेवाऐ पनाह आप का हमारा दुसरा-दुसरा वात न्ही है। परवरसी का मेहरवानगी होगा तो हर सुरत से कीआ जाऐगा। साहेव तो दीन दुनीआ के वादसाह है। साहेव के कदम पकडी के जील मे हमारा मटी न जाऐ वौ साहेव का पनाह रहे इ मुलुक पर नाम रहे सो हजुर सो कीआ जाऐ। आप हाकीम है। मालीक है। जो जेआदा अरज का लीखन—

(ज)

नं० ११

नकल अरजी राजा जुझार सींह जीमीदार राऐगढ का जो मीती सावन दुतीआ सुदी ८ संमत १८६३ साल का लीखा हुआ ता: ३० अगसत सन १८०६ अंगरेजी को मोलाहजे मो गुजरा। सरह इअह है—

खोदावन्द गरीवपरवर कपीतान रफसेज साहेव सलामती। गरीवपरवर आपका हजुर का परवाना आआ। जो कुछ हुकुम हुआ था सो सव हम को मालुम हुआ। वहुत उतम लीखा हुआ था। आप लीखे थे कि इहा का हवाल तुम को खुव

मालुम हुआ होगा सो खोदावंद इन के हवाल हम को आगे-आगे से मालुम है। इसी वासते परीआरी के साल आपको हजुर मो अरज कीऐ थे की खोदावंद इस गंड-गोल से हम को नेआरा करा कै रखो सो वात तो आप को मालुम है। वौ हुकुम हुआ की इहा का वंदोवसत कीआ जाता है। उस से तुम्हारा राह जुदागी का कीआ जाता है। सो हमारे वंदोवसत वौ परवस्ती वौ नीरवाह होना सव जुनावआली के कदम मो लगा है। इस मे साहेव के मरजी। हम तो आपके लडके हंन। वौ हुकुम हुआ की कीसी को कहने सुनने को चीत मो न धरोगे सो हम कोई का कहने सुनने को चीत मो नही धरते है। हम एक वात को समुझते है। परंतु सम्हंलपुर का वात अव साहेव को भी खुव मालुम हुआ वौ वेहवार को हुकुम हुआ था हजुर से की भेजी देवेगे सो हलकारा के साथ भेजी दीआ है। वौ नवागढ को हम भले आदमी भेजे थे वरवीहाव का जवाव सवाल वासते। सो जवाव सवाल पट गऐ। परंतु लाल का सादी आप का काऐ से होगा केव करकै हम करजदार ठहरे वौ आप धनी हौ। आप से वीनती न करे वौ कीस से करेगे

(झ)

श्रीराम १

नं० १२

नकल परवाने कपीतान रफसेज साहेव वनाम राजा जुझार सीघ जीमीदार राऐगढ के जो ताः २ माह सीतमर सन १८०६ अंगरेजी को लीखा गआ था। सरह इअ है—

—रफअतअवाली मोरतवत राजै जुझारसीघ मालुम नुमाऐन्द। आगे दरीआफत करने से तुम्हारा खैरख्वाही वौ नेक खीदमत पसंदीदे सरकार कोम्पनी को जो औअल मो जाहीर तुम्ह पहुचाऐ थे वा जै दफआत करनैल वराटेन साहेव ने वौ हमने उअह सीफारस तुम्हारा गवरनर साहेव वहादुर का हजुर मो इतलाऐ कीआ था उअह वात साहेव मोफखरुनल्ह का इआद था। अव सम्हलपुर वौ पटना इअह दोनो मुलुक सरकार मरहठा को हमारे सरकार सो फेरा गआ। इस सुरत मो उस वात को साहेव ममदुह नै इआद कर कै वौ तुम्हारे उपर नजर तफजुलात का फरमाऐ के हमको हुकुम सादीर कीआ के राऐगढ सरकार मरहठा को न्ही फेरा जाऐगा। कोम्पनी का तावे मो रहेगा। जसा के हमने अलफसटीन साहेव साहेव वोकील नागपुर का मारफत इस वात को दुरुसत कीआ के महाराजै रघुजी भोसीले से इस तरह का दस्तावैज वोसुल मो आआ। उन्हो ने लीख दीआ के हम राजा जुझारसीघ वौ राऐगढ को कोम्पनी का जीमीदार वौ मुलुक समुझेगे वौ कोइ अमला हमारा राऐगढ सरहद मो नही जाऐगा वौ नही कीसु वात पर उस सो तअलुक रखैगा। अगर कोइ आदमी हमारा राऐगढ मजकुर सो मोजाहीम होगा तो हमारे सरकार के तरफ का कसुर

होगा। लेकीन इस वासते तुम्हारे रासती के वात पर जो तुम्हने अपना मुलुक न्ही छोडने को सफाइ साथ अरज कीआ था हजुर मो खुसी जेआदा हुआ। इस वासते तुम्ह को लीखा जाता है के तुम्ह आगे रानी रतन कुंअर का तावे मो सम्हलपुर का जीमीदार कहलावते थे व अव तुम्ह आज का तारीख सो कोम्पनी का राजा जीमीदार जुदा हुए व कुछ तअलुक इलाऐका सम्हलपुर मो तुम्ह को नही है। चाहीऔ के दुइ वात को अछी तरह अपने जीव पर अखतीआर करना। ऐक कोम्पनी का मालगुजारी के मोकरर कीआ जाता है मइआद माफीक माल व माल अदाऐ कर्ना वौ दुसरा कोइ जीमीदार सभलपुर को हरगीज हरगीज कोइ वात मो मदत मत करना वौ अपने सरहद सीवाने सो दुसरे सरहद सम्हलपुर मुलुक मरहठे के सरहद सीवाने मो कदम मत रखना। मत कोइ वात का उस मो तकरार कर्ना वौ उअह तुम्हारे सीवाने सरहद मो हथीआरवंद लाऐ के तकरार करेगा तो तुम्ह उसको दफा करना वौ हजुर मो तुरंत खवर देना। भारी काम होगा तो उस वासते तुम्ह मो मदत सरकार सो होगा। वौ पदमपुर हमेसह का जगह सम्हलपुर का है। इस वासते उअह सम्हल-पुर का नीचे मरहठा को दीआ गआ। मगर मेहरवानगी की राह मो पदमपुर का नऐवज नोकसान तुम्हारे के चार सै व रुपैआ माफ कीआ गआ। अव सोरह सौव रुपैआ मालगुजारी राऐगढ का तुम्हारा मोकरर कीआ जाता है। लाजीम है के उसको दुइ कीसत कर के आठ सौव रुपैआ सावन मो वौ आठ सौव रुपैआ पुस मो सरकार के मोखतार का मारफत जो तैनात हो कै जाऐगा साल व साल अदाऐ करना। वौ अव दस रोज मो सरकार का डेरा भी इहा मो कुंच होगा तव उस वकत मो तुम्हारे नीर जन वेहदार का साथ ऐक आदमी मोखतार सरकार के तरफ मो तुम्हारे पास रहेगा। उसी के मारफत अपने इहा का मालगुजारी लीखने माफीक दीआ करना वौ वाद कुंच करने हमारे दस रोज मो सरकार मरहठै का फौज इहा आवैगा वौ सम्हलपुर मो अपना अमलदखल पावैगा सो भी पीछे से तुम्हारे देखने मे आवैगा। अगर उस सरकार का कोइ सरदार कुछ खत पतर तुम्ह को लीखै तो तुम्ह उस खत को मोखतार मजकुर का हवाले करना। उस का जवाव सवाल वो ही करेगा। तुम्ह उस सो कीसु वात पर लीखना पढना मत करना। वौ राऐगढ का सीवाना सरहद वहीदार मजकुर का मारफत दुरुसत करकै अलफसटीन साहेव के पास भेजा जाऐगा के साहेव मवसुफ उअह सीवाने का कागज लाऐ कै राऐगढ के सरहद सो मोजाहीम नही होगा। वौ तुम्ह को चाहीऔ के उपर जो दो वात लीखा है मालगुजारी वौ सीवाने का मोकदमे मो उसी दोनो वात को मनजुर करकै जलदी तमाम सो जवाव इस परवाने का हजुर मो लीखना वौ मालुम करना। इअह वात तुम्हारेअ वासते वहुत उमदा वौ वहुत वेहतरी हुआ है। छोटा वात नही हुआ है। कीस वासते के कीसु जीमीदार इस मुलुक को कुछ खवर न्ही लीआ गआ। सीरीफ तुम्हारा तुम्हारे खैरख्वाही पर मेहरवानगी की राह सो नजर करकै सभ सुरत सो तुम्हारा वेहतर वौ भला कीआ गआ वौ तुम्ह आगे के दुसरे के

मारफत मो राजा थे वे अव आप राजा कोम्पनी का हुऐ व इस वात को अपने जीव मो खुव दरीआफत करके सुकुरगुजार होना। वाकी हकीकत वेहदार मजकुर का मारफत मोफमील फरमाआ गआ है। उस के लीखने वौ कहलाऐ भेजने सो तुम्हको मालुम होगा वौ तुम्ह सरकार के तरफ सो अपना हर सुरत सो खातीर जमा रखना वौ अपने मुलुक मो वेअंदेसे रहना। सो ताकीत तमाम जानना

(ञ)

नं० १३

नकल अर्जी राजा जुझार सीघ जीमीदार राएगढ ताः १३ माह भादों समत १८६३ साल का लीखा हुआ ताः १२ माह सीतमर सन १८०६ अंगरेजी को मोलाहजे मो गुजरा। सरह इअह है—

खोदावंद गरीवपरवर कपीतान रफसेज साहेव सलामती गरीवपरवर आपके हजुर के परवाना आआ। सभ हकीगत मालुम हुआ। वहुत अछा हुकुम दीऐ थे वौ वे वहार को हुकुम दीऐ वौ भी हमारे पास लीख भेजे थे सो गरीवपरवर वहुत वहुत तरह से हमारे नेकी के वासते वौ परवरस्त के वासते हुकुम दीऐ थे सो हमारा वडा भागी के वात है। वौ आप हुकुम कीऐ थे के सम्हलपुर से न्येआरा करीके तुम्ह को हाम सरकार का पनाह में राखते है सो खोदावंद सव तरह से हम को वडा करोगे। इ वात हमको मालुम है। लेकीन हम सम्हलपुर के जमीदार सदा के हम है वौ अव हमारे न्यारे हुऐ से जहान मो हम को कोइ भला न कहेगा। इस वासते हमको नामुसी आवेगा। जो कोइ सम्हलपुर का मालीक होता है तीस के तावेदार हमस दा के है वौ आज हम कीस तरह से न्योरा होइगे। इस वात सो हमको वटा आवेगा वौ हुकुम हुआ की पटना सम्हलपुर हम मरहठा को दीआ सो अछा हुआ। वौ पदुमपुर का वात जौन हुकुम दीऐ सोओ करनैल साहेव वौ आप थे ओरामी साहेव थे वौ वकसा गैआ जगह सारंगगढ सरे वा पाऐ तरउर सीध रावरगढी वा पाऐ आधा मोथा आसकतीहा पाऐ से सभ का छुटेगा। हमारा भी छुटेगा। ऐ केती वडी वात है। हम केवल वात को नीगाह रखते है। सभ वात समुझते न्हीं है। आप तो मुलुक के वाछाह हौ। आप को तो सव वात नीगाह है। हम तो आप के लडके है—*

*Foreign Dept., September, 1806, No. 725

७०

नकल पाती परसराम दुवे की—

श्री साहेवबाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान मुखत्यार काम बुंदेलषंड श्री जान वेली साहेव बहादुर जू ये ते पं० श्री हिंमतवहादुर परसरामजू के वांचने। आपर आप के स्माचार भले चाहिजै। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। आपरू षत साहिव नै पठवायौ सो हमारे पास पहुचौ। ता कौ हमारी षातिरी तौ तव ही भई हती जब हमारे भले मानुष आप ल्षा गये हते आप वुलवाये हते सो हमारी षातिर तव ही भई हती। तव हम अपनो लरका अपने पास पठवाओ है। ता कौ जो हमारे निवत आप करहौ सो अंछौ करिहौ। हमै या वात की अपनी वहुत षातिर है। अउ आप लिषी कै सेवा करनै है ता कौ जौ हमै सेवा ना करने होती तौ हम आपनो लरका अपने पास सेवा मै ना पठवावते। सो हम अपनो लरका सेवा मै पठवायो है। सो हमै कंपिनी के घर की षैरष्वाही करनै कौ हाजिर है। अरु जो हम आप को लिषी सो हमारौ करारनामा समझियौ। अरु जो अपनी मरजी भई सो हम सव कवूल करी। हाल मरजी भई सो कवूल करी। अरु जो मरजी हू है सो कवूल करि है। अरु जो हमारी इहा की कछु सुभा करौ तौ हमारे भलेमानुष आप ल्षा है तिन सौ पंकी कर लेवी कुवार सुदि १२ संवत १८६३ मु: वरसडा—*

७१

श्री

परगनै वरौंच कै चौधरी कानूगोहि कौं मालूम होहि। आगे हाल साल को अमला फेरंगी कौं देहौगो मुजरा न पाइहौ। परवानौ वाचत सरकार मैं रुजू होनैं अस्विन वदि ३ संवत् १८६३.†

(हस्ताक्षर—जो अस्पष्ट है)

*Foreign Dept., 3rd November, 1806, No. 810

†Foreign Dept., November 13, 1806, No. 837

७२

नकल अरजी रानी रतनकुंअर जीमींदार शमंलपुर लीखा पुस सुदी ११ रोज शंवत १८६३ साल वौ तारीख : ६ माह फीवरवरी सन १८०७ को मोलाहीजे मो गुजरा—सरह इअह है—गरीवपरवर दसतगीर वेकसान श्री श्री कपीतान रसल साहेव वहादुर दामअकवालहु। अरज हुजुर मो अैसा है के हुजूर सो परवाना इनाऐत हुआ था जासुद वरोवर सो पहुचा। सीरो पर लीआ। खुसी हासील हुआ की गरीवपरवर जो हुकुम हुआ था के जानो रघुनाथ पंडीत के लीखने से मालूम हुआ। तुम्ह ने अपने जमैअत भेज के रासता वौ घाट वंद कीऐ हव वौ सरकार मरहठे के पास खीलाफ करने चाहने हव सो गरीव परवर खीलाफ करने का इरादा हमारा नही है। वौ आप श्री अलफसटीन साहेव के पास वौ केसो गोवींद इहा खत लीखे थे वौ हम को भो हुकुम दीऐ थे सो गरीवपरवर जीस माफीक हुकुम हुआ था हम उसी हुकुम तंकाऐके रतनपुर केसो गोवींद के पास वौ नागपुर श्री अलफसटीन साहेव के पास वौ श्रीमत महाराज रघुजी के पास खत लीख के भला आदमी भेजे थे। उस के दर जवाव हमारा पास कुछ पहुचा नही था। वीच मे जानु रघुनाथ के साथ रतनपुर से हजार फौज ले के वावु देवराइ पंडीत सारंगगढ पर आऐ दाखील हुअे। इस मे हम को मालुम हुआ के ऐ मोकर हमारे पर दहसत करने चाहते है तो हम आगे के दहसत को तंकाइ के अपने हुरमत केअ वासते घाट पर कुछ जमइअत वइठाले है। ऐ वात कीसी सुरत से महीना भर का था भहो। इसो हम अहवाल श्री साहेव हजुर मो इतलाऐ करते। सो आगे ऐही हवाल इतलाऐ केअ वासते अरजी लीख कै मोतीगीर गोसाइ को हजुर मो भेजे है सो तो हजुर मो रोसन हुआ होगा। वौ गोसाइ वरोवर ऐतवर हम दुइ वडे आदमी जानु रघुनाथ पंडीत कै पास मामलत करने को वौ हाजिर होने को भेजे है सो खोदावंद उ लोग जवाव सवाल करहै। इस के वीच मो मरहठा का कुछ फौज हमारा अंडभार का थाना पर जाइ वैठी। उहा का जेता रइअत लोग को अपने कवजे पर करते है अजीतसींघ ठाकुर को मीलाऐ कै सकती वला सीव सीव दीवान पर दवाव करते है वौ हम से सीरीफ मटी लेने का जवाव करते है। सो गरीव परवर हम इ मटी काअ वासते हजुर मो अरज करी कै रहे है। सरकार मे हमारा सभ तरह सो परवरसी करते थे तद भी हम ऐ मटी नही छोड़ने सके। आज जद मरहठा मटी लेने चाहते हैं तो हम कीस तरह सो मटी छोडते है। ऐ तो हमारा पुसतानपुसत के मटी है। मरजी होऐ तो हम हाजर है। लेकीन जान मारी कै मटी सौपा जाऐ। जद हम को राजा वाप वेटा सो मीलाऐ कैं मटी पर रखना है तो हुजुर से हमारा मुलुक जो मालगुजारी के वंदोवसत करी दीआ जाऐगा

उस पर हम हाजीर रहेगे। हम तो हजुर ही के तवक्केआ रखते है। इहा सो मुकुद बाबु को हजुर मो भेजे है। ए जो कुछ अरज करेगे सो हमारा अरज जान के हजुर मो गौर कीआ जाएगा। जेआदा अरज—*

७३

१ नकल इकरारनामा राजा केसरीसिघ कौ। कौलनामा लिष दयौ श्री महराजधिराज श्री महराजा श्री राजा विक्रमाजीतजू देव कौ ये ते श्री महराजकोमार श्री सवाई देवान बहादुर केसरीसिघजूदेव नैं। आपर हम हमेस आपकी सेवा मैं रहै। भीर जापता सुंधा जहा काम वा ज पाई तहा डौलन भीर सौ जैसे काम होई तैसे करै और दुसरे ठाकुर सो इरादा न रापैं। जो कोउ लोभ बताई कै महराज की सेवा ते जुदो करो चाहै कै डंड प्रपच कराई महराज कौ काम विगरावौ चाहै तौ हम कवूल न करैं। महराज की सेवा विचारैं अरु जाहिर कर देई। मनसांवाचा करतंब्यता सौ सो उपाई करैं जिह मैं महराज जगत राजी के राजा होंई। कवहू कौन हू तरह दगा छल विस्वासघात की न करैं। कवहू वपत वेवषत उदासी नक रैं। एसी से सेवा करे। या मैं आन भात न करैं। ता के दरम्यान श्री इस्टदेवजु भीर जापता की तकरार कवहू हुये मै न आवैं। पौष सुदि ११ संवत १८५३ मुकाम छत्रपुर—

२ नकल श्रीमंत राजे श्री अली बहादुरजी के सरकार ते प्रगने षटोला के जिमीदार चौधरी कानुगौ को मालुम होई। आगे तुम्हारी जागा मंघेदेह ९०॥ साड़े नवे श्रीराजा विक्रमाजीतजूदेव के तरफ हुते सो साल गुदस्ता सरकार मे जपत करे हते सो हाल वहाल कर दये है। सो तुम इन को रुजु हुजौ। अमल दीजौ। और कौ देहौ तौ मुजरा न पाइ हौ। मिती क्वार सुदी २ सरकार ते अमल तेज गाउ चलते आये है सो चलावना संवत १८५५ मुकाम वांदा

३ नकल इकरारनामा की। कौलनामा लिष दयौ श्रीमहराजकोमार श्रीसवाई दिवान वहादुर कका केसरीसिंघजूदेव कौ ये ते श्री महराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा विक्रमाजीतजूदेव नैं। आपर हमारौ अपनौ येकपाठ भयौ। सब को छाड कै सो अपनी सब तरा से वरदाइस करैं अरु ईमान धरम डियादह अपुन सौं है सो अपुन ही मों वनी रहै और जिमी हिरदे साही जगतराजी की जो अपने अमल मै है सो वनी रहे। जो कोउ तुम से ज्वाव स्वाल करै ती से हम ज्वाव स्वाल कर लेई। वातन कौ ज्वाव स्वाल होई तौ वातेकर लेई। लरवे को ज्वाव स्वाल होई तौ तुम मैं सामिल होई कै लरे। जी मै तुम्हारी जिमी तुम से वनी रहै सो करैं। अरु जो रीत श्री सवाई राजा गुमानसिंघ कका जू देव अपनी करे रहे है सो चली आई। अ३ ठकुंरा करहरा षंडी ये तीनहू गाव अपने आई ते पाइवी ये कान संत्रयें कान मित्रता के वीच श्री इस्ट-

* Foreign Dept., 15th February, 1807, No. 104

देवजू इ मे आन भात न होई। ताकी वाह श्री महराजकोमार श्री दिवान पूरन-मंल्लजूदेव पौष वदि ३ सं: १८५३ मु: महराजनगर

४ नकल व दसषत दिवान मानसिंघ वा अर्जुन सिंघ के लिष दई श्री कवतान जान वेली साहेव वहादुरजू कौ ये ते श्री महराजकोमार श्री देवान मानसिंघजूदेव श्री महराज-कोमार श्री दिवान अर्जुनसिंघजूदेव नैं। आपर श्री महराजाधिराज श्री महराजा श्री राजा विक्रमाजीतजूदेव सौ जो जागा रही आई है ता कौ तजगरा हम लिषा है। कुडार विहगाउ हमेस ते अमल मे रहे है। जो या मैं तफाउद होई तो हम जुवाव करैं। भादौ वदि ८ संवत १८६१ षटोला की टुडेहर

५ याद श्री महराज विक्रमाजीतजूदेव कौ हाल तगै मिजुमिलै हीसा षुद के वहाल करे श्रीमंत श्री अलीवहादुरजू की सिरकार तैं ताकी तपसील प्राँत प्राँत के देहात कौ येकंत्र मौजे २०८॥ दो सैं साढे आठ ज्मा कमाल वमुजव तकसीम कदीम वटारे के चार लाए चार स अठासी रुपैया—

४,००४८८)

परगने राठ तालुके षुडवई तपे चौरासी मौजे ३५

महराज नगर	गुठावम्हौरी प्रा	जटो लीषे रिव	वपरेथौ
मिले वरषारी सु:	सुधा	सुधा	
१००००)	७२००)	३०००)	३०००)
मौ. रिवई	वदनपुरा	लुवौरावुजरक	सुवौराषुरद
१४०००)	१७००)	१०००)	८००)
मौ: सुनौरा	मौ: टोला	सुहरिपाव	मौ: जुतौरा
१२००)	१०००)	३६००)	१५००)
मौ: काकुन	मौ: नटिरा	मौ: मपोल	मौ: सुहजना
१५००)	६५००)	३०००)	१६००)
वपरेथौ	मौ. षुटवई	मौ: कुमरमा	मौ: दमदमा
१०००)	१७००)	१५००)	१२००)
मौ: विजलपुर	मौ: छानी	मौ: कनैरा	मौ: ककरा
१२००)	८००)	९००)	१०००)
मौ: वेहीपेरो	मौ: नितवारौ	मौ: गुपतमउ	मौ: सुवुवा
८००)	१०००)	५००)	१५००)
मौ: कोहारी	मौ: रगौल	मौ: अकोनी कादीपुर २	मौ: अडिरा
१०००)	१०००)	८९००)	३४००)
विहगाव वा कुडार २			
४२००)			

परगने से हुडातपे सतवारौ मौः ६३
१,५५,९५०)

वछेरापेरौ
८००)
रेवना
१४००)
कौथेहो
१३००)
मालपुरा
१०००)
महोईपुरद
२०००)
मडियावा
१४००)
मांः नेहरा
१४००)
घूर
२०००)
महोईवुजरप
३३००)
कसारपेरौ
४६००)
चदौरा
१६००)
वरहो
२६००)
पडरिया
२२५०)
मनवरिया
४५००)
नीवीषेरौ
९००)
हरवंसपुर
२६)

अमलोरी
१३००)
सिगारपुर
१०००)
वाम्हिनषेरौ
१४००)
अलीपुरा
१०००)
उमरी
३०००)
मो महोवा
८०००)
हरदी
६००)
जरहेटावुजरप
७००)
रजौरा
१०००)
चितहरी
४६००)
मथौरा
१३००)
किउलाहो
७००)
विजासिम
९००)
मचहरीगठामुधा
३७५०)
कूरघना
४७५)
चुकहटा
३००)

वारवंद
५०००)
फतेपुर
३००)
पडे हासिथपुरा
७५००)
नदौटा
२३००)
वदौगाथ्यामन
२०००)
गौहानी
५३००)
मोः मरवधी
११०००)
जरहेटापुरद
२०००)
सिउराजपुर
१०००)
पम्हरिया
११००)
कोरहाडी वभौरी
३३००)
कैंवदी
१३००)
गहवरा
१२०००)
मवईगौर
१५००)
परतापपुर
२२५)

पहिलादपुर
५००)
पंवरीथर
६००)
नोनीगोरा
५३००)
चुरियांनी
६०००)
वमिया
४६००)
भानपुरा
१३००)
घटरा
४०००)
नाहरपुरा
३४००)
चौरहरा
५५०)
लौलास
१३००)
मगराहो
१५०)
नादे
४०००)
हरवा
९०००)
गडेही
६००)
रामपुर
२६)

तपे बावन तालुके षटला मौ १६

५६५००)

छानी	पाढा	अैचानौपुर व वनसुवा	पडोरा
८०००)	४०००)	४२००)	२७००)
ववुरारौ रोसनपुर	कनैरी	बराहौ	मौ. बपरेथौ
३२००)	१५००)	३०००)	७६००)
रहनिया	सिउहार	बम्हौरी	सलुवा
१८००)	८००)	८०००)	१२००)
परसागढी सुघर	बरातपहारी	पिडारी	इमिलिया
४०००)	१८००)	१५००)	३२००)

तंपे परवनही सापरेला तालुके परथनिया ४

१२९११)

परथनिया	मौः कमरिव	मौः हिडुवा	मौः नरषा

परगने षटोला तालुके इसानगर किले सुधा मौः ९०॥

८२९२५)

पेरौ	गौर	घोघारा		रामपाटन
१४००)	५००)	१२००)		२५०)
अरियार	बरदवाहौ	निवरिया		पठादा
२५०)	७००)	२५०)		६००)
विहटा	चौका	वारीगुजरक		दलपतपुर
६००)	९००)	११००)		११००)
पनारी	जमुनिया	अमरिअर		करकोई
१२००)	८००)	६००)		५००)
डोगरपुर	धनगवा	चंदनपेरौ		ठुला
४००)	५००)	३५०)		२००)
अचलपुरा सतरसा २	दमौतीपुर	सुरजपुर		भरसुडा
२५०)	२७५)	३००)		२५०)
रजकपुरा ६	चौपरा	कुवरपुर		नरायनपुर
१६००)	३००)	२५०)		१३००)
मनकपुर	दहाके	गरवाके	पथरिया	निवौली
२५०)	२००)	१५०)	२५०)	३००)
कारीबराह	पडवादेव	पौंडी	बरदा मौः ९	रसगठा
५००)	२००)	६००)	५४००)	१२००)
घंघा मौः ३	सलैया	इसानगर गढी सुधा मौः २		बडौठा मौः ६
१६००)	१९००)	८५००)		३७००)

पिपौरा	बरका	पठापुर हरकरनपुर	बाघी	
५००)	९५०)	२०००)	८००)	
मडियादह किले सुधा मौः ८		कलकुवा	कस्वा महेवा	
१०५००)		७००)	१०५००)	
तोरना	पदौरा	डुडहरी	अमलीपान	पाली
१३००)	५००)	९००)	३००)	१०००)
मौरई	निहनी	आमपेरौ	मल्पुरा	
१०००)	६००)	१०००)	७००)	
सुरजपुरा	सुकोहा	टुरिहा	ठुरहर	
७००)	४५००)	६००)	२००)	

दो सै साढे आठ मौजे तिन की जमा कमाल चार लाष चार सै अठासी मिती सावन वदि ५ संवत १८४९.*

७४

श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा हिंदुपतिजु देव की सरकार तै सनथ कर दइी ये ते श्री महराज कोमार श्री कुवर गिरधरसिघजु देव कौ। आपर मौजे परसैटा पास नानकार कर दयौ लरकन के बैठवे कौ सो हमेस पावै जाय। हिंदु मुसलमान कोउ मुजाहिम न होई। कातिक सुदी १३ सं. १८३२ मुः पन्ना

श्री महराजाधिराज श्री महराजा श्री राजा सिरनेतसिघजू देव की सरकार तै सनधकर दई ये ते श्री महराज कोमार श्री कुवर गिरधरसिघजूदेव कौ। आपर मौजे परसेटा लरकन के बैठवे को दयो सो हमेस बनो रहे। आगे पाछे हिंदु मुसल्मान कोउ मुजाहिम न होई। मारग वदि १० संवत १८४१। परवानगी पं० श्री चौबे षेमराई—

आमिलान हाल इसितिकवाल परगने परसेटा के को मालुम होई आपर गिरधर सिघ चदेल कौ माफक सनध राजा हिंदुपत वा राजा अनुरधसिंह मौजे परसेटा षांस नानकर मै कदीम ते माफ है सो माफक मामूल कदीम केयौ कलमी वेटा मुसान ले के माफ कर दयौ। माः मदामत के छोड दीजौ। मामुल सो मुजाहिम न हुजौ। दौलतपुवाई सिरकार की मैं हाजिर रहै हर साल सनध तलब नइन करने। तारीष १५ ज्मादुसानी सन १२०५ हिजरी—†

* Foreign Dept., August, 1807, No. 461

†Foreign Dept., August, 1807, No. 473

७५ (क)

नकल सनध श्री महराजधिराज श्री महाराजा श्री राजा हिंदुपति जू देव की सिरकार तैं सनध कर दई ये ते श्री महाराज कोमार श्री दिवान धुमान सिघ जू कौ। नानकार गाव दये परगने पडवारी के मौः

मौः बियट मौः टिकरिया मौः अलीपु मौः कुटरौ
१ १ १ १

मौः नैंपुरा मौः कोनिया मौः नेकपुरा
१ १ १

मौजे ७ सो गाव बरकरार बेदखल पुस्तदरपुस्त पाये जाई। कोउ कौन हू बात सो मुजाहिम ना हूहै। माह सुदि ११ संवतु १८२५ मु: मउ प्रवानगी श्री हजूरी वेनीदास

(ख)

सही

मोहर

श्री महराजाधिराज श्री महराजा श्री राजा सिरनेत सिघ जू देव की सरकार तैं सनध कर दई ये ते श्री महराजकोमार श्री कुवर अपरबल सिघ जू देव कौ। नानकार गाव दयौ परगने पडवारी कै—

मौः बियट मौः कोटरौ
१ १

मौजे कोनिया
१

मौः ठिकरिया
१

मौः नेकपुरा
१

मौ. अलीपुरा
१

मौः नैंपुरा
१

मौजे ७ सो गावु पुस्तदरपुस्त पायै जाई। कोउ कौन हू बात सै मुजाहिम ना हूहै। भादौं सुदि ९ संवत १८४१ मुकाम अकठौंहा परवानगी रोवरी—

हजुर   कु: बरजोर
रुजू दफदर दाषल   रुजू दफदर दा॰

(ग)

सही

श्री महाराजधिराज श्री महाराजा श्री राजा सिम्नंत मिघजू देव की सिरकार तैं सनघ कर दई ये ते श्री महाराज कोमार श्री दिवाल छतारेजू देव कौ। नानकार गाउ दयौ परगने पडवारी के मौजे लूहर गाउ मौजे १ सो गाउ बरकरार बेदपल पाअै षाअै जाहि। कोउ कौन हू बात सौ मुजाहिम ना हूहै। कातिक वदि ७ संवतु १८४१ मुकाम अगठौंहा। परवानगी रोवरी

(घ)

सही

श्रीमहराजाधिराज श्री महराजा श्री राजा अनुरुध सिंघजू देव की सरकार तैं सनध कर दई ये तै श्री महराजकोमार श्री देवान छतारेजूदेव कौ नानकार गाउ दयौ परगने पडवारी के मौजै लूहर गवा मौ: १ सा गाउ बरकरार बेदषल पाअै जाई।

कोउ कोन हू बात सौ मुजाहिम न हू है असाढ वदि ५ सवतु १८३४ मु परवा प्र हजूरी वेनीदास

लाला हीरालाल	कुः धौवा जोरावर
रुजू दफदर दाः	रुजू दफदर दाः

(ङ)

श्री महराजाधिराज श्री महराजा श्री राजा अनुरुध सिंघजू देव की सरकार तै सनध कर दइी ये तै श्री महराजकोमार श्री कुंवर अपग्वलसिंघजू देव को नानकार गाव दयै परगने पडवारी कै मौजै

मौः विश्ट	मौः कुटरौ	मौः कोनिया	मौः टिकरिया
१	१	१	१
मौः नैंपुरा	मौः नेकपुरा	मौः अलीपुरा	
१	१	१	

मौजे सात ७ सो गाव बरकरार वेदषल पुस्ट दरपुस्ट पावैं जाई। कोउ कौनौ वात सौ मुजाहिम ना होई। फागुन सुदि ७ संवत १८३३ मुः सेहुडा प्रः श्री हजूरी वेनीदास

लाः हीरालाल	कुः धौवाजोरा*
रुजू दफदर	रुजू दफदर

७६

मुर्सदियान मुंहमात सरकार जागीरदारान वा करौरियान वा चौधरियान वा कानुगोयान हाल वा इस्तकबाल परगनै मटौंध मुतलके मुलक वुंदेलषंड के जानैं जो सुनन सै षवर अदालत वा रैयत का पालना सरदारन सरकार कंपिनी अगरेज बहादुर के परसराम अपनी रजावंदी सै वा ष्वाइस सै तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलतमदार की अपनै दिल जान सैं कंबूल कर कै राजा वषतसिंघ के साथ हाजिर हुयै औ छोड देना गुनाह साविक अपना दरषांस्त कर कै इकरारनामा तावेदारी अपने का छै कलमन का अपने मुहर वा दसषत सैं दाषिल दफदर सरकार कै किया। जैसा की माफ करना गुनाह वा परवरिस वा पालना मुतवंसिलौं का चलन सरहना सिरदारन सरकार दौलतमदार का है इस वास्तै नंजर परवरिस वा मुतवंसिल नेवाजो के मौजे पैंडी वा जैंवरम मय असली वा दाषली परगना मटौंध के वज्मा कमाल १५०००) पंदा हजार रुपैया वमौजिब तपसील जैल कै मुसारन अले

*Foreign Dept., 24th October, 1807, No. 548

जागीर मुकरर कर दिया गया। जिस वषत तक मुसारल अलै तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलतमदार कै छै कलमन का इकरारनामा अपने कै सावित कदम रहैगै तौ मौजे मजकूरन हमेसै वहालवरकरार रहैगा। परसराम मजकूर कौ चाहियै की रैयत देहात जागीर की कौहू सन मलूक अपने से राजी रष कै तसंली वा दिलासा सब वासिदों की वहुत स्ही कर कै चोर वा वटपार कौवीच गावन के रहने ना देई वा रैयत को लाजिम है की परसराम मजकूर कौ जागीरदार गावन का मजबूत जान कै तुम लोग रुजु हो कै लाजिमाओ सब कामकाज गावन मजकूर का इन से जानते रहौ औ कोईी तरा वरपलाफ औ कजरवी न करै औ हर साल सनध नया ना मागैं। इस मुकदमे मै तागीद जान के माफक लिपने कै अमल करै औ या सनध बाद मंजुरी नवावमुअल्लाअल काव गवरनर जनरल वहादुर कै मुकंमिल होगा

ऐकुश मौजे २
१५०००)

मौजै षंडी १	मौजे जैवरम १
१२०००)	३०००)
षंडी वा कटरा आवाद २	वरम्हानी वा पेगवैरान २

ता: ७ माह अपतुवर सन १८०७ इसवी मुतविक कुवार सुदि ६ संवत १८६४ सन १२१५ फसली

हम परसराम करार करते है औ लिपे देते है की वीच सरकार दौलतमदार कंपिनी अगरेज वहादुर के हाजिर हो कै दफात तपसील जैल कै वास्तै मजवूत तावेदारी अपने का दाषिल करते है

दफे १

हम एसी तमाम अपने सै तावेदारी फुरमावरदारी सरकार दौलतमदार कंपिनी अगरेज वहादुर के कवूल कर कै वीच नोकरी वा चाकरी सरकार दौलतमदार कै दाषिल हुयै माहिव वाला मुनाकिव आलीसान ऐकन दौलतीन मुनजैमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालतजंग इस इकवालहू कै आगै की नवाव मुअल्लाअलकाव गवरनर जनरल वहादुर दामहसमतहूंम से वाल्तै वंदोवस्त मालौ औ मुलकी मुलक वुदेलषंड कौ मुकरर है। इकरारनामा दफात तपसील जैल कै हम से मागा सो कमाल परवरिस की नजर मै की इन दिनन मै आगे सै सरदाग्न सरकार दौलतमदार के हमारे साथ जाहिर मिला। सोइया इकरारनामा अपनी मोहर वा दसषत सौ लिपे देते है औ इकरार करते है की कभी इस इकरार तै तफाउत ना करै औ जो कुछ तपसील जैल के लिख दिया है इस के सेवाइ ना करै

दफे २

बीच ग्रेक गाव देहात जागीर अपने के लरके वाले समेत रहै औ वेहूकम सरदारन सरकार के दूसरी जगा न जाई

दफे ३

कोई हरामजादे वा लूटेरे डकेत वगैरा वाहिरे वा भितरे मुलक वुदेलषंड के षसूसन राजा राम से मिलाप आमदरफत न करैं औ बीच देहात जागीर अपने के पनाह वा रहने ना देई। वलकि जिस वषत षवर हरामजादौ की मिलै उसी वषत षवर बीच हजूर सरदारन सरकार के पहूचावैं हम औ लिषापढ़ी सब मामलात का उन सबौ से छोड़ देई औ साथ नोकरौ वा चाकरौ सिरकार दौलतमदार के से दुसमनागी न करे। अगर दरम्यान मुतवसिलान सरकार के झगरा होई तौ मदत किसी की वेहूकम सरदारन सरकार के न करैं। अपने घर बैठे रहैं। हमेसैं तावेदारी वा फुरमावरदारी मैं रहि कै तावेदारी वा षुरमावरदारी से वाहेर ना होई—

दफे ४

अगर कोइी रैयत सरकार दौलतमदार की भाग कै बीच देहात जागीर कै हमारै आवैं तौ उस के ताई पकर कै हवाले चाकरौ सिरकार के कर देई। अगर आदमी सिरकार का वास्ते पकरने उस के आवैं तौ मुजाहिम ना होई। वलकि उन के सरीक हो कै कैद करैं औ हर काम मैं तावेदार हूकम अदालत देवानी वा फौजदारी वावत उस मुकदमे के की वाद इस इकरारनामे के जाहिर होई तावेदार ई हौमैं औ कोई तरा तै हंगामा फिसाद न करैं

दफे ५

चोरौ वा ठगौ के ताई बीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल कोई रैयत मुसाफर का हमारे गावव से चोरी जाई या लूट जाई तौ जिमीदारौ उस गाव के सैं तागीद कर कै माल चोरी का दिलाई देई या चोर डकैत कौ पकर कै वीच सरकार दौलत मदार कै पहुचाइ देई। औ कोइी बीच मुलक सरकार कै षुनी वा गुनागार हो कै हमारे देहात जागीर के आवैं उसके ताई भी पकर कै सरकार मैं पहुचाई देई

दफे ६

जिमीदारे देहात जागीर कै बीच सरकार साहेव केलेटर वहादुर कै कवूलियत मालगुजारी की लिष दई है म्वाद लिषापढी सरकार के माफक पंटा औ कवूलियत कै उन से मालगुजारी लेई। हम ज्यादा तलव न करै। तारीष ७ अषतुवर सन १८०७ इसवी मुताविक कुवार सुदि ७ संवत १८६४*

---

*Foreign Dept., 26th October, 1807, No. 552

७७

हम कुवर लछमन सिंघ करार करते है औ लिषे देते है कि बीच सरकार दौलतमदार कंपिनी अंगरेज बहादुर के हाजिर हो कै दफात तपसील जैल कै वास्तै मजबूत तावेदारी वा फुरमाबरदारी अपने का दाषिल करते हैं

दफे १

हम षुसी तमाम अपने सै तावेदारी वा फुरमाबरदारी सरकार दौलतमदार कंपिनी अगरेज बहादुर कै कबूल कर कै बीच नोकरी वा चाकरी सिरकार दौलतमदार के दाषिल हूयै साहेबवाला मुनाकिब आलीसान ग्रेकतदारुदौलेमुतजैमुल मुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेब बहादुर बसालतजंग दाम इकबालहू के आगे की नवाब मुस्तताब—मुअेला अलकाब गवरनर जनरल बहादुर दामहसमतहुम सै वास्तै बंदोबस्त माली औ मुलकी मुलक बुंदेलषंड के मुकेरर हैं। इकरारनामा दफात तपसील कैं हम से मागा सो कमाल परवरिस की नजर सै की इन दिनन मैं आगे मै सरदारन सरकार दौलतमदार के हमारे साथ जाहिर मिला। सोइ यह इकरारनामा अपनी मोहर वा दसषत से लिषे देते है औ इकरार करते है की कभी इस इकरार से तफाउत न करैं औ जो कुछ तफसील जैल के लिख दिया है इस के षेवाइ न करै

दफे २

बीच ग्रेक गाव देहात जागीर अपने के लरके वाले समेत रहै औ बे हुकम सरदारन सरकार के दुसरी जगा ना जाई

दफे ३

कोइ हरामजादे वा लुटेरे वा डकैत वगैरा बाहिर वा भितरे मुलक बुंदेलषंड के पसूसन राजाराम से मिलाप आमदरफत न करैं औ बीच देहात जागीर अपने कैं पनाह वा रहने ना देई। बलकि जिस वषत पवर हरामजादौ की मिलै उसी वषत षवर बीच हजूर सरदारन सरकार कैं पहुचावै हम औ लिषा पढी सब मामलात का उन सबौ से छोड़ देई औ साथ नौकरी वा चाकरी सिरकार दौलतमदार के से दुसमनागी नही करैं। अगर दरम्यान मुतवेसिलै सरकार के झगरा होई तौ मदत किसी की बे हुकम सिरदारन सरकार के न करैं। अपने घर बैठे रहे। हमे सें तावेदारी वा फुरमाबरदारी में रहि कै तावेदारी वा फुरमावरदारी से वाहर ना होई—

दफे ४

अगर कोही रैयतैं सिरकार दौलतमदार की भाग कै बीच देहात जागीर हमारे के आवे तो उस की ताई पकर कै हवाले चाकरौ सिरकार के कर देई अगर आदमी सिरकार का वास्ते पकरने उस के आवै तौ मुजाहिम ना होई। बलकि उनके सरीक हो

कैं कैद करैं और हर काम मे तावेदार हूकम अदालत देवानी वा फौजदारी बावत उस मुकदमे के की वाद इस इकरारनामे के जाहिर होई तावेदारहौ मैं औ कोइ तरा से हंगामा फिसाद न करैं---

दफे ५

चोरौं वा ठगौं के ताई वीच देहात जागीर अपने कौं रहने न देई। अगर माल कोई रैयत औ मुसाफर का हमारे गाववृ से चोरी जाइ या लूट जाई तौ जिमिदारौं उस गाव के सैं तागीदकर कै माल चोरी का देलाई देई या चोर डकैत कौं पकर कैं वीच सरकार दौलतमदार के पहुचाइ देई। औ कोइी वीच मुलक सरकार के षुनी या गुनागार हो कै हमारे देहात जागीर के आवैं उस के ताई भी पकर कै सरकार मैं पहुचाइ देई---

दफे ६

जिमीदारे देहात जागीर हमारे के वीच सरकार साहेव कलेटर वहादुर के कबूलियत मालगुजारी की लिष दई है म्याद लिषा पढ़ी सरकार के माफक पंटा औ कबूलियत के उन से मालगुजारी लेई। हम ज्यादा तलव न करै। तारीख १९ माह सितंबर सन १८०७ इसवी मुताविक कुवार वदि ३ भौ संवत १८६४ सन् १२१५ फसल। मु० वादा नकल दसषत दसषत कुवर लछमन सिघ कै करारनामा लिषो सो सही ≡ वा कलम सीही दरिआव सिघ*

७८

मुसंदियान मुहंमात सरकार जागीर दारान वा करोरिआन वा चौधरियान वा कानुमोयान हाल वा इस्तकवाल परगनैं पनवारी मुतलकैं मुलक वुदेलषंड के जानैं जो सुनने से षवर अदालत वा रैयत का पालना सरदारन सरकार कंपिनी अगरेज वहादुर के कुवर लछमन सिघ अपनैं रजावंदी से वा ष्वाहिस सैं तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार की अपने दिल जान से कबूल करकै राजा वखत सिघ के साथ हाजिर हुयैं औ छोड देना गुनाह साविक अपना दरषास्त करकै इकरार नामा तावेदारी अपने का छा कलमन का अपने मोहर वा दसषत से दाषल दफदर सरकार के किया। जैसा की माफ करना गुनाह वा परवरिस वा पालना मुलवे सिलौ का चलन सरहना सिरदारन सरकार दौलतमदार का है इस वास्तै नजर परवरिस वा मुतवसिलवेवाजी के मौजे मौगवा वगैरा चार मौजै ४ परगने पनवरी व ज्मा कमाल पंद्रा हजार तीनसैं रुपैया १५३००) व मौजिव तफसील जैल कै मुसारन अलैको जागीर मुकेरर कर दिया गया। जिस वषत तक मुसारन अलै तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार

*Foreign Dept., October, 1807, No. 563

के छै कलमन का इकरारनामा अपने के साबित कदम रहैगै तौ मौजे मजकूरैन हमैसै वेहाल बरकरार रहैगा। कुवर मजकूर कौ चाहिये की रैयत देहात जागीर की कौ हसन सलूक अपने सै राजी राकै तसंली वा दिलासा सब बासिंदौ की बहुत सही करकै चोर वा वटपार कौ वीच गावन के रहने ना देई। वा रैयत कौ लाजिम है की कुवर मजकूर कौ जागीरदार गावन का मजबूत जानकै तुम लोग रुजू होकै ताजिमा औ सब काम काज गावन मजकूर का कुवर मजकूर सै जानते रहौ औ कोई तरा वरषलाफ औ कजरवी न करै औ हर साल सनद नया न मागैः इस मुकदमे मे तागीद जानकै माफक लिषने के अमल करै औ या सनद वाद मंजुरी नवाब मुल्ला अलकाव गवरनर जनरल वहादुर के मुकंमिल होगी

यकत्र गाव ४ व जमाकमाल

(१५३००)

मौनौगवा	मौः चुरवारी	मौः रेवई	मौः रगौली
३०००)	५०००)	७०००)	३००)

ताः १९ माह सितंबर सन १८०७ इसवी मुताबिक कुवार वदि ३ सौ संवत १८५४ सन १२१५ फसली मुः वादा

ज्वाव

सिवाइ मुषालफवन तावेदारैन सरकार कै नोकरी दूसरे की मना नही। लेकिन चाहिये के पहिले वीच हजुर सरदारान सरकार के जाहिर करकै हुकुम लेव। वषत लराई झगरे दरम्यान मुतवसिलैन सरकार के अगर कोई मुतवसिल तुम्हारे ताई नौकर रषा चाहै या वास्तै मदत अपनै के वुलावै उस वषत भी हुकुम सिरदारान सरकार का जरूर है

आइीन सरकार दौलत मदार के नही है कि कहना किसी गरज वाले का वीच हक किसी के कवूल होइ। लेकिन तुम्हारे ताई जरुर है के अपनै ताई उस हरकती सैं को मौजिव सुभा के रहा होइ उससैं अलहिंदरहौ वावत मुकदमै की पहिले तारीष इकरारनामै तावेदारी सरकार के सै मुदा उसका होगा। वीच अदालत फौजदारी या दिवानी के तरफ सरकार सैं षोज पूछना होगी औभी नालिस किसी की सुनी ना जाइगी वावत मुकदमै की मुदा उसका पहिले तारीष इकरारनामैं तुम्हारे सैं होगा। फिरियाद किसी की सुनी ना जाइगी। औ वावत मुकदमै की मुदा उसका वाद इकरार नामैं के होगा। तुम तावेदार अदालत सरकार के रहोगे

ज्यौ दावा किसी का उपर तुम्हारै वावत मुकदमै पहिले इकरारनामै कै सुना ना जाइगा इीस सुरत मै दावा तुम्हारा भी वावत मुकदमै साविक के सुनना मुनासिव नही है ताः १९ माह सितंवर सन १८०७ इीसवी मुताविक कुवार वदि ३ सन संवत १८६४ मुः वादा*

*Foreign Dept., October, 1807, No. 564

७९

॥ श्री ॥

लिषौट लिष दई श्री कंपिनी अगरेज वहादुर जू की सिरकार मैं श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री यकतांरुदौलै मुंतजेमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालतजंग जु कौ ये ते श्री महाराज कोमार श्री सवाई राव वर जोरसिंघ जू देव नै। आपरहम साहेव मौसूफके पास सवव सुभा सामिल होने वहादुर सिंघ पडिहार के पकरे गये तै औ छानसे साहेव मौसूफके वां कसूर हम पर सावित नही हुवा। इस वास्तै हमकौ छोड दिया। ता पर हम इकरार करते है कि कभी वहादुर सिंघ पडिहार वा गुपाल सिंघ वुदेला पडेरी वारे औ और फसादी हरामखोर वगैरा के साथी ना होई औ कुछ लिषा पढी उनसे ना करै औ कुछ हंगामा फसाद औ हरामखोरी हम ना करै। अगर इस इकरारनामा से तफाउत करै तौ गुनाह गार सरकार के होई औ जो सजा सरकार कै होई सो वाजवी होई। इस वास्तै या इकरार-नामा लिख दिया। तारीख ५ जानवरी सन १८०८ ईसवी पौष सुदि ९ संवत १८६४—*

८०

मसौदा षत लटवीटर साहेव वहादुर कौ
देवान गोपाल सिंह के नाव अगर लिषना
जरूर होई इस मजवून से लिषै—

श्री महराज कोमार श्री देवान गोपाल सिंह जू देव येते श्री साहेव आलीसान श्री लटवीटर साहेव वहादुर जू के वांचनै। आपर षत तुम्हारा पहुचा। हकीकत मालूम हुवा या फलाना वकील तुम्हारी तरफ से हाजिर हो कै हवाल जाहिर किया। आगे तुम वीच हजुर साहेव आलीसान येकतदारुदौलै मुंतजैमुल मुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालत जंग के की तरफ से नवाव मुअंलाअलकाव गवरनर जनरल वहादुर दाम इकवालहू के मुषत्यार वदोवंस्त माली औ मुलकी इलाके वुदेलषंड के है सो तुम हाजिर हो कै लिषा पढी कियो था और जव तक स्याही कागद सै सूखा नही था की तुम करार अपने से वदल के भाग गयै औ सेवाई इसके सरकार के हरकालौ कौ पकर कै लै गयै औ सरकार की फौज सौ लराई भी किया। इस सवव से तुम्हारे कौल करार पर इतवार वांकी नही रहा। तौ भी तुम्हारी हैरानी औ दिकदारी पर नजर करकै परवानगी देते है औ करार करते है की अगर तुम वीस

*Foreign Dept., 21st January, 1808, No. 37

पंचीस आदमी साथी अपने से इहा आइकै हमारे आदमी के साथ रवाने वादा को बीच हजुर साहेब मौसूफकै होव् औ मारफत साहेव मौसूफ के दरख्वास्त गुनाह वकसने का की वुजरकी औ वकसिस व्रा उजर कवूल करने का सरदारन सरकार को कवूल करना उसका उमेद से वाहेर नही है करे। सो ईह सरकार से गुनाह नही वकसा जाई औ कोई आदमी जब तक फैसला हो नै इस वात के सरकार सै तुमसै मुजाहिम ना होईगा औ तुम्हारी भल मंसी व्रा जान मै कोई तरा ख्लल नहीं आवैगा हम तुमको सरकार के मुलक सै वाहेर पहुचाई दे है। इस कौल पर हमारी वाह है । इस व्रास्तै लिखा जाता है की अगर चहले होव् तौ व्रास्तै दरखास्त वकसावनै गुनाह के सरकार सौ हाजिर होव औ अपना हव्राल दरपेस करौ। जब तक सरकार से इस मुकदमे मै हुकम पहुचैगा तबतक कोई तुम्हारी जान हूरमत से मुजाहिम ना होईगा औ अगर वीच सरकार के ना मंजुरी हीगा तौ तुम्हारे ताई हम हूरमत वा जान सै सरकार के मुलक सै वाहेर पहुचाई देईगै—*

८१

श्री श्री वासुदेवराऐ सहाऐ

श्री श्री जज बडा साहव

गरीव प्रव्रर सलामत

सरकार का षैर सलाह मोदाम का बेहतर चहीऐ जीस्तें हमारा भला होऐ। सरकार के अकवाल तें इहा षैर सलाह है। आगे ता: माह मारीच सन १८०८ इसवी का लीषा प्रव्राना माह चैत सुदी १२ रोज को पहुचा। ऐहवाल मालुम कीआ। मीस्तर कपीतान रफसेज साहव के तसरीफ मै पलाटन समेत मकुंददोत औ दवीन साही के उपर पातको मजारगो कोचा के तरफ गआ है। पलाटन के तसरुफ व्रास्ते रसद भेजावने औ हरीफ के नही भाग जाने के तदवीर अपने अमलदारी के राह घाट वंद करने औ साहव मौसुफ के पास अपना जमैअत मदद भेजने पेस्तर हजुर से भी हुकुम आआ था ओ सदर हजुर से भी कपीतान साहव के मारफत प्रव्राना हुकुम आआ था। उसी वषत हमोने माफीक हुकुम सब वात्तो के वंदोवस्त कीआ। अपने जानीव से कोइ वात का गाफीली ओ कसुर न कीआ। तद सोनपुर प्रगना हमारे चचा कुंअर हरनाथ साह के कवजे का है। उसी प्रगना के मौजे सुंदारी व्राले नाम चैन सीघ वडाइक के कसुर से दवीन साही भागा था। हमारे वेजानीव वारेक हमको खवर मालुम हुआ। तब कै क सुरत से घाट घाट आदमी वैठाला औ केतना तरूदत ताकीती

*Foreign Dept., 16th March, 1808, No. 119

से दखीन साही ताइ गीरफतार करवाऐ के सुंदारी मौजे के मोकाम में मीस्तर सीनीक साहव के पास दाखील करवाऐ दीआ। साहव मौसुफ हमारे ताइ प्रवाना भेज के आय दखीन साही ताइ लीऐं कपीतान साहव के पास गऐ ओ मकुंद दीन भी पकड़ा गआ। इस वात नाइ केतने रोज गुजर गआ। सीनीक साहव जो प्रवाना लीखा था तीसका नकल हजुर भेजा है ओ उससे जाहीरा होगा ओ रसद भी भेजा है ओ मदत मोखतार भी कपीतान साहव के हजुर अव तक हाजीर है। हम कंपनी अंगरेज वहादुर के खैरख्वाही औ फरमावरदारी वजावने मे कावु भर के वात से हाजीर है। हमेस ही से हुकुम वजावने मे कसुर नही कीआ है। न अब कसुर करेंगे। कंपनी के घर से ओ साहवान लोग के नेक नजर से हमारा वेहतरी होता आआ है। अव भी उमैदवार नेक नजर के रखते है। ज्यादा हद अदव। माह चैत्र सुदी १३ रोज १८६५ साल

अरजी माहाराजा

श्री श्री गोवीन्दनाथ साह देव—*

८२

श्री दिवान श्री सैयद नासर अलीजू ये तौ श्री महराज कोमार श्री लालसिउराज सिघजू देव के—आपर आपके स्माचार भले चाही। इहा के स्माचार भले है। आगे श्री दिवान दरियाउ सिघ कै विदा कीन तैसो रहिगा ये ते येउ वहूरि आये। हम पतौरा ते आयन। नगउध का कटरा लुटो। सो भोरहरी मै जहा आपके तावेदार हन तहा आय तै जवर हमै दुसर ना दिषाइ और नाउ दौवा का है। सामिल राजभूमि या कईउ जने है सो छान कीन्है जानि लैव औ जाने है औ आपके आगे कहत रहे है। दरवार मा की साहेव कह्र मै फूटि कै कस मिल्या सो अपनी जुवानवीरा कै षवर करव। जेह मा हमारि मदत होइ वात रहै सो करव। औ विदी वार श्री लाला दरियाउसिघ का लिषा है जो जाहिर करिहै। पाती स्माचार लिषत रहव। मिती वैसाष वदि १३ का मुकाम नगउध†

८३ (क)

नकल श्री साहेववाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री येकतदारूंदौलै मुंतजेमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालत जंग जू येते श्री फौजदार हिंमित वहादुर

* Foreign Dept., 28th April, 1808, No. 165

† Foreign Dept., 7th May, 1808, No. 192

लछमन सिंघ जु के वांचनै। आपर उहा के स्माचार भले चाही जै। इहा के स्माचार भले है। आपर पाती आई। हकीकत जानी। किले पाइ लिपी ताकौ आगे ज्वाव जब यौ भयौ है तब श्री वेली साहेव ने या कही हती कै कछु दोई वरस उपरान्त किलौ हम तुम सेना मागन लगैगे या दरज तुम डारई देव। किलौ फेर तुमहू की वेहाल कराई देई गै या हमारी जुबांन उ रापो। तब दरज हम लिष दई है। सो या अपुन श्री वेली साहव से सषराई मगाइवी और किले मैं जो हम वैठे है सां अपनउ थानौ तौ आई अपनी वद वैठे है। आगे श्री लाला राखन गये है तिन हकीकत जाहिरउ करीहू है। अब पं० श्री परासर लेला महराई श्री कुवर जगत सिंह जू कौ पठवाले है सो हकीकत इनके कहनै जानवी। पाती स्माचार लिपन रहिवी। माह वदि १२ सं: १८६५ मु: अजेगढ*

(ख)

श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीशान श्री येकतदारूदौलै मुतजेमुलमुलक मिस्तर जान रचारड सेन साहेव वहादुर वसालत जंग जू गै ते पं० श्री चौवे हरियाव सिंघजू के वांचनै। आपर सहिव के स्मावार सदा सर्वदा भले चाहीजै। ता पीछे आपकी मेहरवानगी से इहाके स्माचार भले है। आपर आपके दो षत आये। लिषापतु जानौ। लछमन दौवा वावत लिषवे मैं आई कै अैसे वद कौल से मिलाय औ दोस्ती करे का भलो होने है। सरकार की मरजी तावेदारी मै हजार तरा की भलाई होने है ता कौ दौवा मजकूर की नेकनामी वा वदनामी सरकार मै सव जाहिरउ है। तिहि दौवा सो मिलाप हम कौन तरा करि है। आपकी तावेदारी मैं तौ हमारी हर सुरत सो परवस्ती होने है। रही जौलौ सरकार की साची सी इतराजी ना भइ हती दौवा मजकुर पै तौलौ केचलाव की वातै आई जे हमारी उनकी होती रही है। अब सरकार कौ आइवौ दौवा मजकूर पै भयो है। सो अब दौवा की हमारी वातै कैसे हू है। हम तौ सरकार के तावेदार है। सो हमेस तावेदारी मैं हाजिर रहने है। अरु सरकार ते लिषवे मैं आई कै तुम्हारे इलाके के गाव दौवा ने लुटे। वारे अमल करौ। तिहू कौ वदलौ लेनें की फिकर करौ। सोया फिकर हमारे इलाके की सरकार के करे होने है। हमतौ हमेसै तैं वितंवारई वने रहे है। अरु मरदानगी वा अकलवंदी की आपने लिषी सो मरदानगी अकिलवंदी केवल सरकार के तावेदारी सो लगी है। अरु इपवार की पवर की फरद सरकार ने दै पठवाई सो हमारी हमारी दौवा की सलाह दोस्ती सरकार ये ही वात मै हो कै समझलेइ कै हमारे इलाके के गावन मैं दौवा के थाने वैठे है सो सरकार मैं जाहिरउ हो जै है। षवर चाहै सो तैसी सरकार मै जाहिर करे। रही हमारी दौवा कौ सलूक कछु नाही है। हम साफ सरकार के तावेदार है। सो आपही कौ जानत है। अरु दौवा

* Foreign Dept., 2nd February, 1809, No. 92—5

के चाकरन बाबत सिरकार ने लिषी सो हमारे इलाके कौ चाकर दौवा के कोउ नाही है। अरु मौजे लहुरेटा गाव कौ हम मानस पठवायौ सो जो उहा के दो येक जनै कोउ दौवा के चाकरहू है ते उहा ना रहन पा है बुलाई लै है। हमारी जान भरे मैं येक प्याबौ हमारे इलाका कौ दौवा के नाही है। हम तौ हूकमी है। सो जो मरजी करवी सोउ होनें है। पाती लिषा पतु मेहरवानगी कर लिषवे मै आ है। माह सुदि १ सोमे संवत् १८६५ मुः कालीजर*

८४

श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री येकतदासंदौलै मुंतजेमुलमुलक मिस्तर जान रचारड सेन साहेव वहादुर वसालत जंग जू येते श्री फौजदार हिंमित वहादुर लछमन सिंह जु के वाचनै। आपर उहाके स्माचार भले चाहीजे। इहाके स्माचार भले है। आपर पाती आई। हकीकत जानी। जुवांनी हकीकत श्री लाला राखन ने कही। किले पाइ लिषी अरु या लिषी कै श्री वेली साहेव ने ग़ानाकहीह है। फेर चाकरन के लरका मानसन के पकराधरी की लिषी ताकौ किले वावत तौ आगै लिषी है। जैसी येक वेर लिषी तैसी हजार वेर लिषी। येह की तौ षांतिर उ राष वी। किले सेवाई अंत हमकौ जागई नाही है। वैठे है सो आपहु की वद वैठे है। अरु आपहू वडो सिरदार है सो किले की मरजी आपहू हमको वैठे रहवे की कीजै। काहे ते कै जी दिन तै पाठ हमारौ आपको भयौ है ती दिन तै वे पाठवारी हम नाही करी है अरु वेली साहव की लिषी सो जव पहिल श्रा जुवान उन वोली हती तवहू पै हम लिषी है। उसे किले के दसखत हम कवहू ना लिखतै। सो श्री वेली साहेव सौ आप पुछ पठवाईवी देखवी तौ साप पैवे। ज्यौ की त्यौ वोल है सो समझ देखवी और लिषी तौ पंकी होत उहै। परंत हमारे इहा जुवांन उ लिषेते पंकी होत है अरु यहैई लाला राषन पं० श्री किलेदार हमारी तरफ कौ ज्वाव पांच साल महीना तै आपहू सौ करत रहे है तिह पै आपहू कहत रहे है की (स्पष्ट नहीं है) देव किले की रीत उही जै है सो अव आप कौ रीत उ करो चाहिये। तावेदारी हम करतउ आये है अरु और कहवीतिह कौ सव करवे कौ सावित है। किले कौ ज्वाव न कीजै। किलौ तौ हमारौ जीव है। आप जैहतै वडे है रही हमारौ ज्वाव नाराईन ई साध्य है और का लिषियै। अरु सिपाह की है सो चार देस के चाकर हौत है फेर वे (जीर्ण स्थान) जेह कौ नोन पांत है सो तौहू कौ होत है। चार देस मै वसही आप कहा पकरवी अरु और जेहू है तिनकी वस ही इत हू वैठो हू है यह की कौन आसंका है। जो आपकौ सुदेस देष परहै सो तौ करवी। परंत

*Foreign Dept., 2nd February, 1809, No. 92—5

हम तौ और सब तावेदारी करवे कौ अपनी तरफ ते रुजु है। पाछ जो विचारवी अरु काहू पाव कौ वुलाईवी तौ फेर लाला रामन हाजिर उहू है। पाती समाचार लिषत रहिवी। माह सुदि संवतु १(८)६५ मु अजैगढ़*

८५
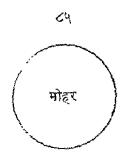
मुहर मुख्तारकार दौलतमदार कंपनी अंगरेज बहादुर मुताल्लिका मुलक वुदेलषड सन ईसवी

वाजिबउल अर्ज लछमसिंघ

१

जवाव अजतरफ़ सरकार—

सरकार मे उनका दावा न सुना जाया जब लग सरकार के लसर मो हौगे तव लग ना सुना जाइगा।	जौन सीपाह कीले पर है, ताके तलव कौ वषेडा हमारे पर न होइ
२	
वावत करजा के वा लुट के आज न कलौ पहीले का होइगा सो ना सुना जाइगा।	काहु के तगारे की लटलये की फीराद-नाउ न वेतर आवे
३	
सो वाइउ गोला वारुद पोत के जो आसवाव तुम्हारा होगा सो सुना जाइगा	कीले पर जो असवाव है सो सव आपनो पावै
४	
वषत मुलाकात के दुसरे रइस के माफीक रीत होगी	जब हजुर मैं आवै तब रीत मुलाहीजे सौ हरयेक तरह भेट होइ अरु हमारी रीत वनी रहै

तारीख ८ फरवरी सन १८०९ इसवी फागुन वदी ८ सम्वत १८६५

*Foreign Dept., 11th February, 1809, No. 118

श्री

श्री फौजदार हिमत वहादुर लछमन सीघ ये तै श्री साहेव वाला मुलाकिव श्री साहेव आलीसान येकतदाउदोले मुंतजैमुलक मितस्र जान रचारडसेन साहेव वाहादुर वसारतजंगजु के वाचनं। आवर षत से लाला रषन वकिल तुम्हारा जो दीवान नासर अली को लीषा था मालुम हुवा की तुम ने फेर अपने जीव मै आज दोपहर तलक कीले से उतना औ सरकार का थाना वैठारन विचार है औ वहिया गरी जी। आगे हमारी तरफ सैं व दिवा नासरअली की तरफ से कही ती उस की पंचाइत मागी है इस वास्ते फेर मेहरवानगी कर के लीषा जाता है की अगर दोपहर दो घरी अगरेजी की दोपहर वार घरी हीदुसतानी होती है उस वषत तलक अपनी फौउज समेत कीले से उतरी आवौ औ थाना सरकार का वैठान देव औ आप वीस तीस आदमी समेत हमारे पास रहना अषत्या करो जव तलक सरकार से तुम्हारे वास्ते कुछ ठहरी जावे तौ कीसी तरी मे जान व माल वा हुरमती लरके वाले तुम्हारे वा तुम्हारे भाइ वंदन पर कुछ षलल षरावा नहीं आवेगा। इस लिषे को वात जानना औ या वस्त दोपहर दो घटा तलक वहाल है और वाद पहुचने तुम्हारे हर कालो कै किले पर उस वषत तलक तोप छुटना तुम्हारे आवते वास्ते माकुफ हैगा। ता० १३ फरवरी सन १८०४ इसवी फागुन वदी १४ सोमो १८६५*

८६ (क)

श्री देवान साहेव जु श्री मीर नासरअली जु येते लाला राषन कौ परनामु वांचनै। आपके स्माचार सदां भले चाही जैं। इहा के स्माचार भले है। आपर विती तौ आपसौ हम करही आये हते रही तापर इतराजी ठहरी ताकौ विहाने सुमार कौ

*Foreign Dept., 14th February, 1809, No. 125—6

सु दिनउ हतौ सो। अव हमारे मरजी माफक की सव तयारी है। अव जौ न चाहै आपने कराई दई हती अरु आपने कर दई हती ताकी फेर पेकाइत कराई दैवी अरु श्री लाला महराजा कौ पठवाई दैवी अरु जो उनके पठैवे की मरजी मैं ना ठहरै तौ ग्रेक दो जने चपरासी पठवाईवी। सो दरवाजै आइ है। सो हमको लिवाई जैहै। सो आप सो अर्ज करिआहै अरु फेर लौटि आई है। सो विहान ई किले तै उतरवे की तार करहै अरु सव कामन कौ रफा हो जैहै। फागुन वदि १४ रवौ सं: १८६५ मु: किले

२

रही जो या वांत आपकौ करने होई तौ मुमार कौ इनकौ पं कौ सुदिन है। दुपहर उपरात सो हमकौ आप वुलाईवी सो जोउ हम अर्ज करकै आपसौ लौट है सोउ ये इहातै उतर है*

(ख)

श्री लाला राघन येते श्री देवान साहेव श्री मीर नासर अली जु के वाचनै। अपर उहा के स्माचार भले चाही जै। इहा के स्माचार भले है। आपर पाती आई। हकीकत जानी। जो अपने आवनें को वा लाला महाराजा के भेजने कौ लिषा सो अव तुल ताल की वात नही होगी। अव भी अगर साचे दिल से श्री लछमन सिंघ कौ आवनें होई तौ फौज समेत किले से आज दोपहर चार घरी उपरात लौ उतरि आवै औ थाना सरकार का वैठार देई औ आप वीस तीस आदमी लैके जवतक उनके वास्ते सरकार से कुछ तजवीज होई वडे साहेव के साथ रहै। उनके वा उनके भाई वंदौ के जान वा माल वा हुरमत लरकै वालो पर कुछ षलल षरावा नही आवैगा। ये ही लिषेकौ हमारी तरफ से पंकाइत वाह जाननां। आज दोपहर चार घरी तक या वात पंकी है। फागुन वदि १४ सोमे संवतु १८६५†

८७

स्ही दसषत श्री लाल सिवराज सिंघ के करारनामा लिषा सो स्ही—

जव से मुलक वुंदेलषंड का सामिल मुलक सरकार दौलतमदार कंपिनी अगरेज वहादुर के हुवा तव से मैं लालसिवराज सिंघ तावेदारी सरकार दौलतमदार की दिल वा जान सैं कवूल करकै फरमावरदारी सिरदारन सरकार के की वास्ते वदोवस्त

*Foreign Dept., 25th February, 1809, No. 151—4

† Foreign Dept., 25th February, 1809, No. 151—4

मुलक मजकूर के मुर्कर्र होकै आयै हम हाजिर रहैं। इन दिनन मैं वास्तै मजबूती वा तावैदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलतमादर कै इकरार नामा दर्फ नौ का मोहर वा दसषत अपने सै लिष कै सहिव वाला मुनाकिव मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर के पास दाषिल करके दरषास्त सनध देहात कवजा कदीम अपने का किया। इस वास्ते हम इकरार करते है की इकरारनामे की दर्फन पर काइम रहैगै। कभी उसे तफाउत ना करैगै

दफे पहिली १

सव फिसादी वाहिरे वा भितरै मुलक वुदेलषंड के से मिलाप ना करै। इन सबौ कौ कोइ तरा सैं जागा औ पनाह न देई औ लरके वाले उनके कौ न छोडै जो हमारे इलाके मैं रहै औ पाती चिठी सव मामलात के ताई उसै छोड देई औ साथ मुत-वंसिलान वा नोकरान सरकार दौलतमदार के सैं दुसमनागत न करै औ अगर कोई मुतवंसिलौ से सरकार के सिरदारौ वा राजौ इस मुलक कै वावत महाल वा गाव या कोइ तरा मामला हमारे साथ तकरार करै तौ हम उस तकरार के ताई वीच हजुर सरदारन सरकार कै जाहिर करै कै दरषास्त फैसले का करै। जो कुछ सरकार से फैसला होई सो कवूल मजुर करै। उसे तफाउत न करै औ वदले तकरार कै अपनी तरफ से लराइ न करै। विगर हूकम सरकार कै इनसाफ अपने हाथ से ना करै और हमेसै फुरमावरदार सरकार दौलतमदार कै हरकाम मैं रहै

दफे दोयम २

वदोवस्त घाटी इलाके अपने का इस तरा करै की फिसादी वा लुटेरे वा दुसर सरारती करन वाले नीचे उपर आने जाने न सकै औ कभी कोडी फिसादी वा आदमी वदचाली के ताही न छोडै की उस राह से सरकार के मुलक मैं दषल ही कै फिसाद सुरु करै। औ अगर कोई सरदार साहिवान फौज मुलक मे सरकार के हमारे मुलक होकै आवै जव तक हमारे मुलक के नजीक पहूचै षवर उसका पहिल पहुचने से सरहद इलाके अपने के सरकार के सिरदारन कौ पहूचावै औ माफिक मकदूर अपने वीच वंद करनै उसके मेहनत करै

दफे तीसरी ३

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार का घाटी से इलाके हमारे के उपर घाट या कोई दूसरी तरफ जाई कभी मने मुजाहिमत न करै वलक आदमी मातवर वाकिवकार साथ करै। तौ जिधर चाहै तिधर जाई। औ जिस वषत लसगर फौज सरकार का इलाके हमारे या हमारे सरहंद पर दूसरे के मुलक मे रहै असवाव जरूरी लसगर मै पहूचाते रहै

दफे ४

अगर कोइ रैयतो मुलक सरकार दौलतमदार के भाग कै वीच देहात इलाके हमारे के आवै सितावी दरषास्त सै अहिलकारान सरकार के हवाले करै औ अगर कोडी

रैयतै जिमिदारे सैं इलाके हमारे के भाग कै वीच मुलक सरकार के रहै तफसील वार दरषास्त अपने मुकदमा की वीच हजुर सरदारन सरकार के गुजरानै माफक आइन इसाफ के जो कुछ हुकम फुरमावै वीच अमल के ल्यावै। आप कस्त रकरने उसके का न करै

दफे ५

चोर वा ठग वीच देहात इलाके अपने के रहने न देई। अगर माल कोई सौदागर का वीच कोई गाव मै कवजा हमारे से चोरी जाइ या लूट जाई गाव के जिमीदारे पर तागीद करकै माल लूट वा चोरी गये के ताई उसे देलावै या चोटे लुटेरे को पकरकै सरकार दौलतमदार मे पहुचावै औ जो कोई वीच मुलक सरकार के फूनी या कोई तरा सै दुसरा गुनागार हो कै वीच कोइ गाव इलाके हमारे के आवै उसके ताई भी पकर कै सरकार मै पहुचावे औ ना छोडै की राह इलाके हमारे दुसरी तरफ वा वाहर जाई

दफे ६

जो तजगरा गावन जफ्ती अपने का हजुर मै गुजरान कै माफक उसके सनध सरकार से पाया है इस वास्ते इकरार करते है की अगर गावन मजकूर सै कोडी गाव मिलकियत दूसरे किसी की सावित होई या जाहिर होई की वीच वषत नवाव अली वहादुर के हमारे कवजे मै था वीच मुकदमै उसके जो कुछ की सरकार सै वाल तजवीज है व हूकम होई सो अमल मै ल्यावै। कुछ उजर ना करै

दफे ७

गोपाल सिंघ कौम वुदेला व वहादुर सिंघ पडिहार सिरकार की हरामषोरी अपत्यार करकै वगी है औ वीच गावन राजा वषत सिंघ वा राजा किसोर सिंघ के जो सिरकार से पावन है लूट पाट करता है। इस वास्तै इकरार करते है की गुपाल सिंघ वहादुर सिंघ मजकूर कौ वीच इलाके अपने कै जगा रहने को वा पनाह न देई औ अपनी इलाके की राह सै वीच गावै राजा मजकूरैन कै वा पास मुलक सरकार के आवने जाने न देई। अगर हमारे इलाके मै छिपे या जाहिर रहै माफिक मकदूर अपने के मेहनत वीच पकरने उन सवौ के करै औ अगर इस काम मैं कुछ दर गुजर करै य तफावत करै तरह देई। जवाव देही उनके हरकतो की वमुजव तजवीज सरकार के जिमे हमारे है

दफे ८

जो गावै मजकूर लिये हुयै सनध मिलकियत पुरषौ हमारे की है औ उस पर कवजा हमारा है इस वास्ते करार करते है वाद मिलनै सनध सरकार से दरषास्त दषल दिलावने कोई गाव इलाके पर ना करै औ वास्ते वदोवस्त उसके सरकार से तलव न करै

दफ ९

एक आदमी मातवर अपना मुकर्रर करैं की हमेसैं वतौर उकालत के वास्तै वजा ल्यावने हुकम व़ा षिजमत सिरदारन सरकार दौलतमदार के हजिर रहै औ उसे कोइ तरा से सरदारैं सरकार के व़ा सवव कोई कसुर के नापुस होई तुरत उसको हम अपने पास वुलाइ लेइ। ग्रेवज उसकी और को मुर्करर करैं। यह यकरार नामा दफे नौका अपनी मोहर व़ा दसषत से दाषिल दफदर सरकार के किया। इकरार करते है की उपर दफात मजकूरैंन कैं हमैंसैं अमल करकैं कुछ उसे तफाउत ना करैं। ता: ११ मारिच सन १८०९ ईसवी चैत्र वदि १० स: १८६६ सन १२१५ फसली*

८८

चौधरिग्रान व़ा कानुगोयान व़ा जिमीदारान व़ा मुकद्दमान तालुके उचहरा व़ा नागौध परगनें वरसैं इलाके मुलक वुदेलषंड के जानैं जव से मुलक वुदेलषंड का सामिल मुलक सरकार दौलत मदार कंपिनी अगरेज वहादुर के हुव़ा लाल सिव़राज सिंघ सिरदार हँकदार इस मुलक के से है किसी तरा से साथ सिरदारन सरकार दौलत मदार के अदूल हूकमी नही करी व़ा कुछ हंगामा फिसाद नही किया। तावेदारी व़ा फुरमावरदारी करते रहे। सो इन दिनन मैं वीच हजुर सरदारन सरकार के हाजिर होकैं तावेदारी सरकार की अषत्यार करकैं दरषास्त सनध वहाली माफी गाव़न अपने कवजे के करकैं इकरारनामा दफे नौका ९ निहाइत वंदगी व़ा तावेदारी सिरकार दौलतमदार की लिष कैं देवान दरिग्राव़ सिंघ मातवर इतवारी अपने के हाथ हजुर सरदारन सरकार के भेजा। सो इस व़ास्ते वमौजिव नजर परव़रिस मुतव़ंसिकेल व़ा हँक पहुचाव़ना हँकदारका गावैं मुफसले जैल कैं की कदीम से तौ अव तक वतौर मिलकियत व़ा माफीके वीच कवजे व़ा तर्सरुफ मुसारनअले के हुता व़ा है सो लाल सिव़राज सिंघ को सरकार सैं माफ किया गया। जव तक मुसारनअले व़ा औलाद उनकी इकरारनामे की दफन पर काइम रहैंगे औ तावेदारी व़ा फुरमावरदारी सरकार की ना छोडैंगै तौ गावैं मुफसले जैल के हमेसैं पुस्तदरपुस्त साषदरसाष उन्हौ कौ माफ रहैंगें। चाहियैं की चौधरी कानुगौ व़गैरा लाल सिव़राज सिंघ मजकूर के पास रुजू होकैं सव काम गाव़न मजकूर का साविक दसतूर साथ उनके करते रहै। औ लाल सिव़राज सिंघ कौ लाजिम है की रैयत व़ा जिमीदारौं कौ अपने अछे सलूक से राजी वा सुकरगुजार रषकैं ज्यादा आवादी वा षेती के जैसा चाहियैं मेहनत व़ा तरदुत करैं औ इकरार नामे की दफेन पर काइम रहिकैं अमल गाव़न का वीच तावेदारी फुरमा-वरदारी सरकार के रहिकैं अपने तर्सरूफ षर्च मे करे औ वाद मंजुर होने नवाव मुअला

* Foreign Dept., 11th March, 1809, No. Nil

अलकाब गवरनर जनरल वहादुर दाम हसमतहूम के सनद दूसरी मोहर वा दसषत नवाव साहेव मौसूफ के से पावोगे

सेकन मौजे चार सै चार ४०४

नंधे उचहरा वा नागौध के मौजे—

३१५

उचहरामयगठी कठार पोषरा अमगारी भुगहनी घमनहाई पालनपुर घर्घरा
१ १ १ १ १ २

सोहरिया करहिली इटहा वोदा मौता गहिरी वरौली
१ १ १ १ १ १ १

दुवाडा टिटिहीडाडी मझिकया पिपरहाई नकटका विलहटी चौथार उरदनी
१ १ १ १ १ १ १ १

मठउ नरहठी लगरगवाखु: ददरी इटवा रजरवारय मौहार वाथी भरहूति रेउसा
१ २ १ १ १ १ १ १ १ १

वसुधा वौसिया षमृरिया नगौधगठीसु इटवा पतौडा मोतिगवा जाषी डीही
१ १ १ १ १ १ १ १ १

ललचहा तालरि ववुरहा वरकोनिया गोहिनिया मडवार कथलोहा विकरा
१ १ १ १ १ १ १ १

हरदुवापुर्द इटौरा अतरौरा हेनौता तिगोरा पिपरी मझवापुर्द इटवा और
२ २ २ १ १ १ १ १

गैरा षेरा षपराया चंदकूइया उटूगुरु गिजार मेहकोना
१ १ १ १ १ १ १

वितरमपुर रेउवावुज: रेउवाखुर्द वरेठियाषु: वरेठिया वडी भाद इटवा
१ १ १ १ १ १ १

वम्हौरि महोषरि कचहटि रहीयवारगठी हथिसार कलपुरी कलपुरी
१ १ १ १ १ १ १

जैतपुर मार मौहाडी मुगहरि पिथौराबाद नीमगठीसु षजुरी
१ १ १ १ १ १

अतरवेरिया कोलदहा मजिगवा षूमा इचौलिपुर्द गोवराउषु: सतरी
१ १ १ १ १ १ १

मतरी अमदरीमोट: वधाउपुर्द अटरा नेदहा सिपुरा कोनी हदुवा वजर
१ २ १ १ १ १ १ १

भिटारी डाम्हा वावूपुर वडषुर्रा वग पिपरी अकहा
१ १ १ १ १ १ १

देवार वडा नौगवा मरवा पतवार विहटा कोलगढ़ी आमकुई थटैया
१ १ १ १ १ १ १ १

तुरकहा (जीर्ण स्थान) नकटलवा वैरागल मानिकपुर वसौरा वोह
१ १ १ १ १ १ १

सेमरखार हुड्हा पैरूवा पैरी सेमरीवंजारी हुलौधा
१ १ १ १ १ १ २ १

गोवराउवु: वदरहा करहीवडी मझोषरि वाह पटिया करहा पुर्द
१ १ १ १ १ १ १

कोरवार गडोली (जीर्ण स्थान) गोल्हुवा गवरिया चिषली (जीर्ण स्थान) उदान
१ १ १ १ २ १ १

पोडीकौहाई (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) लषमद लालपुर वचवई
२ १ १ १ १ १ १

पडरिया पतौरागठी: धौरा वीरपुर अतरावी गुठुवा उजनेही उमरी
१ १ १ १ १ १ १ १

पडेउरा कोलगवा (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान)
१ १ १ १ १ १ १

सलैया सपनी कुसुली डुडहा कैथा छीदाभ: (जीर्ण स्थान)
१ १ १ १ १ १ १

पडाइनटोला वूधेड नटना (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) देवारपुर्द ललपुरवडा
१ १ १ १ १ १ १

पिपरोषरगढी भरी तुरी अमिरती वासीवरी वरकछीपुर्द चदकुवागठी: दवहिया
१ १ १ १ १ १ १ १

सकरटि षरहुडा अपरी करहिया (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान)
१ १ १ १ १ १ १

(जीर्ण स्थान) कचनार वमूरेही वुठीमठा वस्तरावडोहरा (जीर्ण स्थान) वरहटा
१ १ १ २ २ १ १

उरदना लगरगवावु: (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान)
१ १ २ १ १

(जीर्ण स्थान) नौवस्ता जुरावरपुर सुरहागठी: ववुरहाचुरहा फुरहरी कावरिमहवा
१ १ १ १ २ १ २

परसवार झिगोदरि वावुपुर (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) हुलौय खेरवा
१ १ २ १ १ ९

वडषैरवा कोढा इटवा वडा विरहुली पवैया कोडरि (जीर्ण स्थान) सेसरी वडो
१ १ १ १ १ १ १ १

(जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) सहिपरमहदे: सलैया मडियारी
२ १ १ २ १ १

पनगरा सहिजनी उमरी महेवा अमिलिया धौरहदा (जीर्ण स्थान) अलरहारि
१ १ १ १ १ १ १ १

(जीर्ण स्थान) जगनाथपु: पोडा (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान) भरहट
१ १ १ १ १ १

वुरलतात गोरियागोडि: इचौलिरामपु: वुडषेर (जीर्ण स्थान) (जीर्ण स्थान)
२ २ २ २ १ २ १

गडामुडकटी नरहरपुर अकही (जीर्ण स्थान) वटैया पुर्द सीनवरसा विजतरा
२ १ १ १ १ १ १

सोनकाचर रहनिआपुर्द गुनहरपुर्द घनिया मझगवा रगौली अंतरवेदिया खु:
१ १ १ १ १ १

अंतवेदिया वरकोनिया मझासलैया षोपरीकठ लौनिय कुलपुरी कटिया
१ १ २ १ १ १ १

निबरा इटवा छेटहा भुलनी वुडषेर लुहरौरा गठी डीहीमहदेई हरदुवा
१ १ १ १ १ १ २ १

दिलपुरउमठी वरा मठी वराज तिलेगवा
२ १ १ १ १

पठार के गाव—

८८

रामपुर विचवा अमदरी विरमै रार गठउलि मगरदहा भभुग पिप्ररावराडाडी
२ १ १ १ १ १ १ ३

मुहवा षमरिया सरसवाही अमगारि रजैनौ आमाडाडी (जीर्ण स्थान) परसवनिया
१ १ १ १ १ १ १ १

कोटदरी वीजावहारि डवरा धौसड कारीमाटी पेम्हा डीभा पटिहटि
१ १ १ १ १ १ १ १

वेरै वदवाही टुसगवा करौदी लतगी करी मारलनि टीकरि डोगरिया रैचुवा
१ १ १ १ १ १ १ १ १ १

वधाउ महाराजपुर झिरिया दुटियाझिर भमुहरा गुमुरि वसहा रीछी डाडी
१ १ १ १ १ १ १ १ १

पनिहाई झपौर कुम्ही हरौली विपरागर पिपरिया कोनिया पना पनी
१ १ १ १ १ १ १ १ १

झाझी गडरी मडफई हडहा मझगवा विचवा अकिलिया कोटराही मुदरी
१ १ १ १ १ १ १ २ १

सपौहा इटवा वुडषेर लौझिर गिदरहाई जमुनिया गठीनी कुरेही कठौना
१ १ १ १ १ १ १ १ १

मुषसेना मुहैना कनपुरी कोटदरा कारीझिर लदवद गटा गठवा
१ २ १ १ १ १ १ १

मडई तिछरीलिषरा कुटमीस सरसहाई—
१ २ १ १

ता: २० माह मारिच सन १८०९ ईसवी मुताबिक चैत्र सुदि (जीर्ण स्थान) सवत् १८६६ सन १२१६ फसली—*

* Foreign Dept., 20th March, 1809, No. Nil

८९

श्री साहेब वाला मुनाकिब आलीसान श्री ग्रेकतदारुदौलै मुतजैमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेब बहादुर वसालत जंग जू ग्रेते पं श्री चौवे दरिग्राव सिंघ जू के वांचन। आपर सरकार के स्माचार सदा भलै चाहिजै। ता पीछे इहाके स्माचार सरकार की मेहरवानगीते भले है। आपर जैपुर वरहे की जागा वा वरसपुर सरकार ते हमारी सनध मै है सोइ जागा मै श्री महाराज किसोर सिंघके थाने बैठार दीवी अरु महराज की सनध मै लिष दैवी। रसीद महराज की मोहर सो लैवी। वो जागा हम पाइ चुके। महराज मालकइी आई। उनसौ हम अपनौं विती वदौवस्त की कर लैहै। अरु हम हर सुरत सौं सरकार के तावेदार है सोउ करनौ है। अव सनद माफक हमारी जागा वाकी को दुरस्ता कराइ दीवे मै आवै। सिषापनु हमेसा मेहरवानगी कर लिषाइवे मै आवै। माह सुदि ९ सवंतु १८६५ मु: किले = नकल मुताविक अ:*

९०

नकल जुवांन वंदी सवाल। तुम्हारा क्या नाम। जवाव। हमारा नाम गनेस। सवाल। तुम्हारे वाप का नाम क्या है। जवाव। हमारे वाप का नाम तिलोक सिंघ। सवाल। कौम कौन हौ। जवाव। काइथ है। सवाल। उमर तुम्हारी क्या होगी। जवाव। उमर हमारी ग्रेकतीस वरस की होगी। सवाल। क्या काम करतै हो। जवाव। जलालपुर मे कानुगो के चाकर मोहरिल है। सवाल। दिवान जुगल परसाद सौ मौजे उमरी वा मौजे चिली अमले परगने जलालपुर वा ददरी प्र: परकाइन सौ नानकार मै वमौजिव सनध नवाव अली वहादुर के है तुम जानते हो। जवाव। मौ: उमरी वा चिली नानकार मैं रहे आये है मौ: ददरी परगने षरका की है सो उहा के कानुगौ जानैं। सवाल। अव ग्रे दो गाव इन के तहत में जुगल परसाद के है। जवाव। मौ: उमरी इन के तहत मै है मौ: चिली सरकार मै जपत है। सवाल। ग्रा गाव क्यौ छुटा। जवाव। जव से सरकार कौ अमल भयौ जान वेली साहेव कौ तव सौ वंद है। इन के ताहत मे नही है। सवाल। अव केह के ताहत मे है। जवाव। सरकार मे जपत है। सवाल। कितने दिन सौ सरकार मे जपत है। जवाव। ग्रेक वरस आठ महीना भये सरकार मै जपत है। सवाल। मौ: चिली की क्या ज्मा है। जवाव। वारा सै रुपैया। सवत १८६० के साल मे संवत १८६१ के साल मै भी वारा सै रुपैया उपजत है। दसषत चौधरी कानूगो के गुमास्ता गनेस के हवाल लिषा सो स्ही

* Foreign Dept., 26th March, 1809, No. 215

× × ×

नकल जवानवंदी। सवाल। तुम्हारा क्या नाम। जवाव। हमारा नाम अनंत राम है। सवाल। तुम्हारे वाप का क्या नाम है। जवाव। परसाद राई हमारे वाप का नाम है। सवाल। कौन कोम हो। जवाव। काइथ है। सवाल। उमर तुम्हारी क्या है। जवाव। उमर हमारी चालीस है। सवाल। क्या काम करते हौ। जवाव। वोह्देदारी कानुगोई करते है। सवाल। कहा के कानुगो हौ। जवाव। परका के कानुगो है। सवाल। देवान जुगल परसाद सौ मौः उमरी वा मौजे चिली अमले परगने जलालपुर वा मोः ददरी अमले परगने परका के इन मो नानकार मे वमुजव सनद नवाव अली वहादुर के है तुम जानते हो। जवाव। हम प्र. परका के कानुगो है सो मौ. ददरी हमारे परगने की है तिस की वात जानत हे की नवाव साहेब कौ अमल जव सौ है तव मे पहिले देवान पुमान सिंघ सो रहो आयौ है। वाद उसके देवान जुगल परसाद सौ वहाल रहो आयौ है। सवाल। अव या गाव इन के ताहुत मे है। जवाव। अव नाही है। सवाल। अव किस के ताहुत मै या गाव है। जवाव। सरकार मैं जपत है। मीर अकवर अली उहा के आमिल हौ तिन के ताहुत मे है। सवाल। या गाव दिवान जुगल परसाद सौ क्यौं छुटा। जवाव। जव सौ साहेव कौ अमल आयौ तव सौ छुटौ। सवाल। किस के हुकम से छुटा। जवाव। वेली साहेव के अमल सौ छुटौ। या हम नही जानते है की किस कारन से छुटौ। सवाल। कितने दिन से सरकार मैं जपत है। जवाव। सवत १८६० के साल मैं माह के महीना सो जपत है। सवाल। मौः ददरी की ज्मा क्या है। जवाव। सं: १८६० के साल मैं वतीस सै चार रुपैया गेरा आना भये है। संवत १८६१ के साल मैं तेतालीस सै इक्यावन रुपैया भये है—द: अनंतराम कानुगो:

× × ×

नकल अंग्या पंत्र श्रीमंत महराजे श्री अली वहादुर जु की सरकार तैं। प्र: जलालपुर के मौ: उमरी वा मौजे चिली वा परगने परका के मौ: ददरी के जिमीदारन को मालुम आगे तुम्हारे गाउ श्री नोने जुगल परसाद जु देव सो वहाल है। सो इन को रुजु रहिजौ। अमल दीहिजौ। मिती कातिक सुदि ५ संवत १८५६ मुकाम कथौली नगीज गुठागहवरा

× × ×

नकल मौजे उमरी वा मौजे चिली वा मौजे ददरी के जिमीदारो कौ मालुम होई। आपर श्री महराजकोमार श्री देवान जुगलपरसादजु ने जाहिर किया के ये गाव श्री नवाव अली वहादुर जी के इहा तै हमारे पर्च को रहे आये है ताकौ माफक मामुल नवाव मजकुर

के इहां ते जिस तरे रहे आये है तिसी माफक इहा मे वहाल करे है सो इन पास रुजु रहना। अमल देना। कातिक सुदि सं: १८६० मु: पुरवा प्र: रुवरुआ: ला: छोटे: नकल मुताविक असल*

९१ (क)

श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री ऐकतदारुदौलै मुतजेमुल्मुलक मिस्तर जान रचारडमेन साहेव वहादुर वसालतजंगजु ये ते श्री महराज कोमार श्री कुवर सोने साहिजुदेव के प्रनाम वाचनै। आपर आप के स्माचार सदा स्र्वदा भले चाहीजै। ता पीछे इहा के स्माचार भलै है। हजुर की मेहरवानगी तै आपर पत आयौ। सिपापनु जानौ। फुरमाइस आइ कै विजावर वारन के षत मौ मालुम हुआ कै तुम्हौ ने मौ: षरोइ वा षुरा कवजा राजा मौ (तावे) सुफके ताईवाइ जाने उनके वनारस के मुमतैद लराइ के हो कै कवजा अपना कर लिया। तुम कौ याद होगा कै नवाव मुअल्लाअलकाव गवरनर जनरल वहादुर ने वीच फैसले तकरार देहात वषौता वगैरा का हुकम दिया है कै सटई वा षरोई सरकार के फैसले तक राजा मौसुफ के कवजे मै है। अगर तुम कौ कुछ दाइया होई सो हजूर मै पेस करौ। ता मौ हजूर हमारी काहे न षवर करै। सो सटरी की विती तौ या भांत है कै कुवर अचल सिंघ इहा के चाकर आई सो पंद्रा मौजे सौ सटई उन कौ दई हती सो कछु दिनन तै अचलसिंघ हम सौ वदल गयै। विजावर-वारन मै जाइ मिलै। सो विती इहा के भले आदमी हजुर जाहिरदी करवौ करे है। अउ श्री वेली साहेव वहादुरजु नै अरजी पै दसषत कर दये हते अरु हम हजुर मै विल-वारदी रहे आये है। अरु षरोही की विती या भात है कै ढाषन खवास हमारौ चाकर आई। सो हम चाकरी मै मौजे षरोही मौ: षूरा मौ: उमरोनिया ये तीनो गाव चाकरी मै दये हते सो ढाषन कछु दिनन ते हम सौ वदल गयौ। सो हमारी जागा सीलौनवारन कौ सौप दई। सो या हकीकत श्री वेली साहेव वहादुरजु के हजुर मै गुजरी हती। अरु हमारे मारजे के गाउ सालटवालाडपुर सरकार कै जपत हो गये सो ता के वितवार साहिव वेली साहेव वहादुरजु के हजुर मै इहा के भले आदमी भये सो उन मरजी करी कै सालटलाडपुर के वदले तुमह अपने मारजे की जागा जपत कर लेव। सो ता मै षरोरी अरु घरातौ हम पायै। अरु और वितवार हम हजुर सौ रहेइी आये है कै यक वषत हजुर मै जाहिरी करी है। अरु श्री लला परतापसिंघजु ने छत्रपुर मै विती जाहिरी करी हती अउ अव वितवार है सो और मौजे जे हमारे वितावर वारिन तरै दवे है ते वगसवे मै आवै अउ और विती इहा के भले मानस हजुर मै जाहिर करहै। सिपापनु

* Foreign Dept., 30th March, 1809, No. 227

होई सो फुरमाइवे मैं आवै। इहा तैं मरजी माफक सब होवे। चैत्र वदि ११ संवत १८६५ मुकामु राजनगर—

(ख)

श्री साहेववाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री ग्रेकतदारुदौलैमुतजेमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालतजंगजु ग्रे ते श्री महराजकोमार श्री कुवर सोने साहजुदेव के प्रनाम वाचनै। आपर हजुर के स्माचार सदा स्वंदा भले चाहीजैं। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। हजुर की मेहरवानगी तैं आपर पत आयौ। सिषापनु जानौ। फुरमाइस आई कै इहा विजावरवारिन के षत सौ मालुम हुवा कै तुम नैं अव तक रुपैया वासिलात वघौता वगैरा का अदा नही किया है सो अव वडी तागीद सौ लिषा जाता है कै पाच हजार दो सै वोनतीस रुपैया पौने तेरा आना हजुर मैं भेजौ कै राजा मौसुफ कौ दिया जाई। ताकौ इहा की विती तौ हजुर मौ आगे लिषिउ हती। अरु इहा के भले आदमिन नै जाहिर करी है अरु हमारे जे मतलव विजावरवारिन के तरे रुपैयन के दवे है सो ताकी अरजी आगै हजुर कौ जाहिर करी है अरु अव के अरजी लिषाई पठवाई है सौ सरकार मैं इहा के भले आदमी जाहिर करहै। सो ता माफक हजुर हमारी अरु विजावरवारिन की सुरझावाइ देई रही। इहा तैं हजुर की मरजी माफक सब होने हौ। सिषापन होई सौ फुरमाइवे मैं आवैं—चैत्र वदि ११ संवत १८६५ मुकामु राजनगर

(ग)

श्री साहेववाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री ग्रेकतदारुदौलै मुंतजेमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालतजंगजु ग्रेते श्री महराजकोमार श्री कुवर श्री कुवर सोनेसाहिजुदेव के प्रनाम वाचनै। आपर हजुर के स्माचार सदा स्वंदा भले चाहीजैं। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। हजुर की मेहरवानगी तैं आपर षत आयौ। सिषापनु जानौ। धरमपुरा वावत फुरमाइस आई ता कौ धरमपुरा हम अली वहादुर नवाव के अमल ते लयें रहे है अरु अव हजुर के वकसे ने लयें है रही। धरमपुरा मौ विजावरवारिन कौ का इरादा है रही। इहा तैं हजुर की मरजी माफक सव होने है अरु और इहा की हकीकत श्री देमान साहेव श्री मीर नासर अलीजु हजुर मैं जाहिर करहौ। सिषापनु होई सो हमेस फुरमाइवे मैं आवै। चैत्र वदि ११ संवत १८६५ मुकाम राजनगर

(घ)

श्री साहेब वाला मुनाकिब श्री साहेब आलीसान श्री ऐकतदारुंदौले मुंलजैमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेब वहादुर वसालतजंगजु ये ते श्री महराजकोमार श्री कुवर सोनें साहिजूदेव के प्रनाम वांचनै। आफर हजुर कै स्माचार सदा भलै चाहीजैं। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। हजुर की मेहरवानगी वैं आपर षत आयौ। सिषापनु जानौ। फुरमाइस आइ कै विजावरवारिन के षत से मालुम हुवा की राजा मौसुफ मौजें वाजनौ गंध्रपसिह लोधी के ताई वीच वजानो करी के दिया था सो तुम ने गंध्रपसिघ कोमार कै गढ़ी वा वाजनौ अपने दषल मै ल्यायैं ता को यह विती इत रहहै को वाजनौ हमारे इहा की जागा आई। विजावरवारे षिलाफ कहत है रही। इ वांत को सरकार छान कर लैहै कै वाजनौ जागा के हको आई रही। गंध्रपसिघ ने हमारे इहा की भीर मिला मासुरी कर वुलवाई सो भीर कौ दगा करन विचारी विजावरवारिन सौ भेद लगाई कै सो इहा के मानसन ने दगा की षवर पाई सो गंध्रप सिघ सौ कजिया भयौ। तामै गंध्रपसिघ मारे गयैं। सो विजावरवारिन को दाइयावा जैसौ कछु नही है। अरु इहा के भले आदमी सनघ वावत हजुर कै वितवार ही रहै आये है रही। इहा तै मरजी माफक सव होनें हौ। सिषापनु होइ सो फुरमाइवे मैं आवैं। चैत्र वदि ११ संवत १८६५ मु: राजनगर

(ङ)

लिष दही श्री महराज कोमार श्री सवाई देवान विरसिघदेवजूदेव कौ ये ते श्री महराज कोमार श्री कुवर अचलसिघ जू देव। आपर अपुन हमै पुनगवा वैठारे जागा जागीर दई। हम हमेस मरजी की चाकरी करै। कदाच कौनउ पैसा को सवव वीज षाई तौ जिहि रौस श्री महराज कोमार श्री देवान हटेसिघजूदेव श्री महराजकोमार श्री देवान मावथसिघजुदेव श्री महराजकोमार श्री निरंद सिघजु देव देही तेही रौस हम देई। अरु जिमी मरजी आवै तवा रुका सौ सौप देई। आन भात न करै। ता के हजुर श्री वहदुर वेनीदास। वैसाष वदि ५ संवत १८४६ मुकाम रगौली

(च)

लिष दही श्री महराजाधिराज श्री महराजा श्री सवाई राजा वहादुर केसरीसिघजूदेव की सरकार मे यै ते श्री महराज कोमार श्री कुवर निरंदसिघजूदेव श्री महराज-

कोमार श्री राव निरपतसिंघजूदेव श्री महराज कोमार श्री कुवर अनुरधसिंघजूदेव पं० श्री पाठक भोले पुरानी श्री तिलवार महराजा पं श्री वेतुहरि या वषत श्री अते श्री पवास मन एषंन ते। आपर जौन रौस हमेस ते सेवा करवौ करे है सो करि है। मरजी की और फिरंगी के घर कौ इरादा छुडाइ दैवौ तव पैसा जिमी पैं सब भैयन रौस दै-है और सरकार मौ जीसो वै चाल ह हैती सौ नवते है। मरजी की हमेस करि है चाकरी। कातिक सुदी ४ संवतु १८६(?)५ मु० विजावर इहा ते छल दगावाजी न करै। वा के हम सव ठाकुर वीच मे है

(छ)

कौलनामा लिष दयौ श्री महराजकोमार श्री सवाइी देवान वहादुर केसरीसिंघजू-देव की सरकार मैं ये ते श्री महाराजाधिराज श्रीमहराजा श्रीराजा गंधर्पसिंघजू-देव। आपर आप ने मौजे वाजने वगैरहा आप ने हमैं मेहरवानगी कर कै दयौ सो हम हमेस चाकरी मै हाजिर रहै है अरु जो कौनहू सवव पैसा दैवे कौ वाज षांई तौ सव चाकरन की वा भैयन की रौस पैसा देई अरु जो कौनहू समै या जिमी चाहिये तौ वेउजर सरकार के रुका सौ सौप देई। ई मै आन भात न करै। ता के वीच श्री इस्टदेवजू अस्वन वदि १३ संवतु १८५४ मुकाम विजावर

(ज)

लिख दइी श्री महराजकोमार श्री सवाइी देवान वांवाजू साहिव देव को ये ते महराज कौमार श्री देवान सावथसिंघजूदेव। आपर अपुन नहीं जपती मैं जागा दई षरोई वगैरा गाव सो जी तरह हम हमेस मरजी की करत आवे है तेही माफक करे जाई अरु पैसा का काम लगै तौ दो वरस लौ हम न देई। हमरो पैसा जिमी पैं षर्च भयो है दो वरस उपरात लगै तो जिमी रौस देई। ताके हजुर श्री वहादुर वेनीदास सावन सुदि ९ संवतु १८४६ मुकाम विजावर*

९२

चौधरियान वा वा कानुगोयान वा जिमीदारान वा मुकदमान तंपे सुहावल वा तंपे रैगाव वा तालुके दुरजनपुर वा विरसिंघपुर इलाके मुलक वुदेलषंड के जानै। जव से

* Foreign Dept., 29th July, 1809, No. 401

मुलक बुंदेलषंड का सामिल मुलक सरदार दौलत मदार कंपिनी अगरेज वहादुर के हुवा लाल अमान सिघ सिरदार हंकदार इस मुलक केसे है। किसी तरा से साथ सिरदारन सरकार दौलत मदार के अदूल हूकमी नही करी वा कुछ हंगामा फिसाद नही किया। तावेदारी वा फुरमावरदारी करते रहै। सो ईन दिनन मैं वीच हजुर सरदारन सरकार के हाजिर होकै तावेदारी सरकार की अखत्यार कर कै दरषास्त सनध वहाली माफी गावन अपने कवजे के करकै इकरार नामा दफे नौ का ९ निहाइत वदंगी वा तावेदारी सिरकार दौलतमदारकी लिषकै हजुर मै सिरदारन सरकार के गुजराना। सो इस वास्ते वमौजिव नजर परवरिस मुतवंसिल के वा हक पहुचाना हकदार का गावै मुफसले-जैल के की कदीम से तौ अव तक वतौर मिलकियत वा माफी के वीच कवजे व तसरुफ मुसारन अलेके हता वहि सौ लाल अमानसिघ कौ सरकार से माफ किया गया। जव तक मुसारन अले वा औलाद उनकी इकरार नामे की दफेन पर काइम रहैगै औ तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार की न छोडैंगै तौ गावै मुफसले जैल कै हमेसै पुस्तदरपुस्त साष दर साष उन्हौ कौ माफ रहैगै। चाहियै की चौधरी कानुगो वगैरा लाल अमान सिघ मजकूर के पास रुजू होकै सव काम गावन मजकूर का साविक दस्तूर साथ उनके करते रहे। औ लाल अमान सिघ को लाजिम है की रैयत वा जिमीदारौ कौ अपने अछे सलुक से राजी वा सुकर गुजार रषकै ज्यादा आवादी वा षेती के जैसा चाहिय मेहनत वा तरजुत करै औ इकरारनामे की दफेन पर काइम रहिकै अमलगावन का वीच तावेदारी फुरमावरदारी सरकार के रहिकै अपने तसरुफ षर्च मे करै औ वाद मंजुर होने नवाव मुअल्ला अलकाव गवरनर जनरल वहादुर दाम हुसमतहूंम के सनध दूसरी मोहर वा दसषत नवाव साहेव मौसुफ के पावोगै गाव जुकि :

२१७॥

तपे सुहावल

५०

सुहावल १	चोरवरीपुर व: १	भवरि १	डेलौरामुर व: १
भटिगवा १	करिगवा १	धनपेरषु वु: २	लालपुर १
कूबी १	गरलगागरल २		रोवरा देविरा २
इटौरा १	गोरा १	रहठी १	मइदेवारुगवा २
डेलौरामला १	षवारी १		सनवरिसा १
वेलटा १	डेलौरी १	षडैउर्रा १	पडरौत १

चमरहा	अमौधा	वचवई	घौरहरापु:
१	१	१	१
उमरहरी	उठकीषु: वु:	हिनौता	सारिसलाल
१	२	१	१
करही	गिदरी चकबेही		बघेडीलमत
१	२		२
सुहौला	मुडहा	रेहटा	कारीबराह
१	१	१	२
हमीरपुर	मझगोगवा	इटौरा	झगराझगरी
१	१	१	१
पाटा			
१			

तंपे रैंगाव के मौजें २६

रैंगाव	कल्हारी	घौरहरावडा	गडरा
१	१	१	१
जिरवारख: वु:	केल्लहाई		सहिपुरा वु:
२	१		१
निपनिया	नराइनपुर	मझगवा	टीकरि
२	१	१	१
हडखोर	सेकरिया	करसडा	जमुनिहाई
१	१	१	१
कचुरा	महटा	भितेहरा वाघी	इटवा
१	१	१ १	१
पलिगढ		सहिपुरा भडरि:	नौघरि
१		२	१

तालुके दुरजनपुर— ४२

गडा	वम्हरिया दुरजन	मतहा	गनेसा
१	१	१	१
उढिया	डेलौरा	चकदही	लषहा
१	१	१	१
टिकुरिया	विहरा	अतरहरा	रिछहरी
१	१	१	१
गौहारी	सराई	मरौहा	सिघौली
१	१	१	१

सेमरा
१
घनौची
१
कुडिया
१
लेदरा
१

मझियार
२
वारी
१
निमुवा
१
कोलनसौ
१३

कुल्टा
१
वरवसा
१

वडैया
१
गुडहक
१
अमिलिय
१

भगदेवरा पुरवा
१ २
लिलटा
१
गरलोखर
१
मड़वाझर
१
सलैसर
१
इटौरा
१

वीरेनई
१
गौरी
१
मझगव
१
पगौरा
१
मेहुवा
१

तपै विरसिंघपुर ७७॥

पालसह ७७॥

पुट्टा मौ:
५
पगार षु:
१
वारी अमराई
१
भटिगवा
१
सुजावल
१
मालमड
१

षट्टा मझिया:
१ १
कोटा
१
तेलनी
१
लषहरा
१
सेमरा
१
लिघरा
१
षोटरी
१
कररियादस:
१
देउरावर
१
पडरिहान
१

पटना
१
करौंही खु:
१
लेहरी
१

करियानिरगु:
२
झोटा
१
वरा
१

वमौरी १　　वरापर सौजा सभापर १　　परसौजा खु १　　गरलगा १

जमुनिहासि तल्हावगवा १　　मसवासीखेर १　　मडहा १

रिवारी १　　मौदहा १　　सेलहा १　　घोरकटि १　　लषनवार १

ववुरहा १　　उमरी १　　अमिरती १　　छनिहर १　　वरहा १

विटमा १　　करौंदी २　　वछौरा १　　वुडा १　　नगौरा १

पचली वडी १　　मझियार १　　सिंघा १　　दुनाव १　　हिनौता १

सोनवरसादः १　　करकोटी १　　देउहट १　　पडेउरा १

नगवर १　　अरहा १　　कुत्रमैला १　　तिहाई १　　परेवा २।।

परेवा १　　जमुनिः १

कानूपुर ।।

जैतवारचिला मिटंढर ३　　वाघीपताई समराउ ३

गलवल १　　अमिलपुर १　　गोरसडी १　　सलेया १

वेलहा १　　पिपरहा १　　वभनेट १　　वुडषेर १　　वहेरा १

विहरिया १

देहात पदारथी—　　२२

वेरहना १　　हलिया १　　मिश्रंगया १　　मौहार १　　हरदुवा १

माजनि १　　सुजावल १　　वरेडा १　　सिरसहा १

अंझी १　　परसडिया १　　षांच १　　देवरी १　　सिकरौरा १

पटना	हरदी	रजोषारि	पथरौरा	सुनवरिसा
१	१	१	१	१
पडैनिया	उदमा	पचली		
१	१	१	०	०

तारीष १८ माह जुलाई सन १८०९ ईसवी मुताविक दुती आसाठ सुदि ५ संवतु १८६६ सन १२१५ फसली*

९३
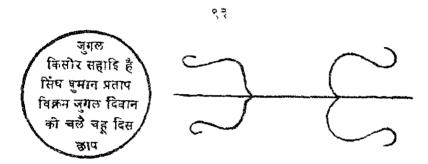
नं० १

हम देवान जुगल परसाद करार करते है ओ लिषे देते है की वीच सरकार कंपिनी अगरेज वहादुर के हाजिर होकै दफात मुफसले जैल के वास्ते मजवूती तावेदारी वा फुरमावरदारी अपने के दाषिल करते है

दफे १

जव सै फौज फते नसीव सरकार दौलत मदार कंपिनी अगरेज वहादुर की वास्ते तंवीह वा जर उखारने फसादियौ के वीच मुलक वुंदेलषड के आई तव से हम षुसी तमासै तावैदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार कंपिनी अगेरज वहादुर की कवूल करकै वीच मुतवंसिलान सरकार दौलतमदार के दाषिल थे। हम साहेववाला मुनाकिव आलीसांन नवाव इकतदारुदौलै मुतजेमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालतजंग जु इन दिनन मै आगे से नवाव मुस्तत्ताव मुअल्लाअलकाव असरफुल असराफ गवनर जनरल वहादुर दामहसमतहूं के वास्ते वदोवस्त माली औ मुलकी मुलक वुंदेलषंड के मुकर्रर है इकरारनामा वास्ते दफात मुफसले जैल कै हमसे मागा। इस वास्ते नजर कमाल परवरिस का की आगे से सरदारन सरकार का हमारे पर हूवा आया है। यह इकरार नामा अपनी मोहर वा दसषत से लिषे देते है औ करार करते है की हरगिस इसे तफावत न करै औ जो कुछ दफात मुफसले जैल के लिखे देते है उसे वरषलाफ न करै

* Foreign Dept., 4th September, 1809, No. Nil

दफे २

कोडी फसादी वा हरामजादे वाहिरे वा भितरे मुलक वुदेलषंड के से साथ न करै औ [illegible] मामलात लिपा पढी माफक करै औ वीच गावन जागीर अपने के रहने वा पनाह न देई। वलक जव षवर फसादिन की पावै माफक मकदूर के मदत करकै पकरकै वीच हजुर सरदारन सरकार दौलत मदार के पहूचावै औ साथ नौकरी वा मुतवंसिलौ सरकार के दुसमनागी न करै। अगर दरम्यान राजौ वा सिरदारौ मुलक वुदेलषंड कै कोई तरा हंगामा होई तौ मदत किसी की विदुन हूकम सरदारन सरकार के न करै औ अपने घर रहै औ हमेसै तावेदारी फुरमावरदारी से वाहेर न होई

दफे ३

अगर कोडी रैयत सरकार दौलत मदार की भाग कै वीच गावन जागीर हमारे के आवै तौ उसके ताडी पकरकै हवाले चाकरौ सरकार के कर देई। अगर आदमी सरकार के वास्ते पकरनै उसके आवै तौ मुजाहिम न होई वलक उनके साथ होकै कैद करै औ वीच हरयेक काम मै तावेदार हूकम अदालत देवानी वा अदालत फौजदारी के रहै—

दफे ४

चोरौ वा ठगौ के ताडी वीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल कोडी रैयत वा मुसाफर का हमारे गावन से चोरी जाई या लूट जाई तौ जिमीदारौ उस गाव के से तागीद करकै माल चोरी का देलाइ देई या चोर डकैत कौ माल सुधा पकर कै वीच सरकार दौलत मदार के पहुचाई देई औ कोडी वीच मुलक सरकार के षुनसी वा गुनागार हो कै हमारे देहात जागीर मे आवै उसके ताडी भी पकर कै सरकार मै पहूचाई देई। तारीष २३ अगस्त सन १८०९ ईसवी मुता: २८ सावन सन १२१६ फसली*

९४

चौधरियान वा कानूगोयान परगने जलापुर मुलक वुदेलषंड के जानै ज्यौ देवान जुगल परसाद की रडीस इस मुलक केसे है जव से मुलक वुदेलषंड का सामिल मुलक सरकार दौलत मदार कंपिनी अगरेज वहादुर के हूवा किसी तरा से तावेदारी वा षैरष.ही सरकार के कसूर नही किया। मौजे उमरी परगने मजकूर वतौर माफी वीच कवजे अपने रषते थे। इन दिनन मै अरजी दरषास्त पावने मौजे चिली परगने जलालपुर वा मौजे ददरी परगने षरका इस दाइयै पर की हमेसै ते गावै मजकूर माफी उनका था सरकार की अमलदारी के वषत से जपत है हजुर मै गुजराना वा कैफियत तहकीकाद दावा देवान मजकूर का तीनौ मौजे पर सावित हुवा। लेकिन मौजे ददरी मजकूर पहिले इस तहकीकाद से सामिल दूसरे देहात के नान्हा गोविदराव कौ दडी गडी थी सो उनसे

* Foreign Dept., 14th September, 1809, No. Nil

फेूर नामुनासिब न जाना। इस वाईस से हुकम हूवा की देवान मजकूर वदला मौजै ददरी का पावैगे। सो माफक तजवीज साहिवांन वोरड कमसनर वा साहेव कलेटर जिले वुदेलषंड मौजे वाधुर वुजरक मय गठा वा मौजे वरेठी परगने जलालपुर वीच वदले ददरी के वास्ते देने देवान मजकूर के ता. २ जूलाई के हुजुर मै मंजुर हुवा। इस वास्ते मौजे उमरी वा मौजे चिली माफी कदीम वा मौजे वाधुर वुजरक मय गठा वा मोजे वरेठी वदली मौजे ददरी के मय सव हक हकूक देवान मजकूर कौ पुस्तदर पुस्त माषदर साष माफ किया गया। जव तक देवान मजकूर वा औलाद उनकी इकरार नामे की दफेन पर सावित रहैगें किसी सूरत से सरकार से मुजाहिमत जपती नही होईगी। चाहियै की तुम लोग देवान मजकूर कौ मालिक मुषत्यार गावन मजकूर का जानौ। औ देवान मजकूर कौ लाजिम है की गावन मजकूर कौ तरदुत आवाद करके रैयत को राजी रंषै औ अमल गावन का वीच तावेदारी षैरषाही सरकार की रहिकै अपने तर्सरुफ पर्च मे करैं औ जव सनध दूसरी मोहर दसषत से नवाव गवरनर जनरल वहादुर दाम हसमतहू के पावैंगे औ या सनध फेर लिया जाइगा

तपसील ४

मौ : उमरी मय असली वा दाषली	मौ : चिली	मौ : वाधुर वुजरक असली दाखली मय गठा	मौ : वरेठी
१	१	१	१

तरीख २५ अगस्त सन १८०९ ईसवी मु: ता: ३० सावन सन १२१६ फसली*

९५

जव से मुलक वुदेलषंड का सामिल मुलक सरकार दौलत मदार कंपिनी अंगेरज वहादुर के हुवा तव से मै लाल अमानसिंघ तावेदार सरकार दौलत मदार की दिल वा जान से कवूल करकै फरमावरदारी सिरदारन सरकार के की वास्ते वदोवस्त मुलक मजकूर के मुकेरर होकै आयें हम हाजिर रहै। इन दिनन मै वास्ते मजवूती वा तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार के इकरार नामा दफे नौ का मोहर वा दसषत अपने से लिष कै साहेव वाला मुनाकिव मिस्तर जान रचारड सेन साहेव वहादुर के पास दाषिल करकै दरषास्त सनध देहात कवजा कदीम अपने का किया। इस वास्ते हम इकरारनामे की दफेन पर सावित रहैगें। कभी उसे तफावत ना करेगे

* Foreign Dept., 14th September, 1809, No. Nil

दफे अव्वल १

साथ कोई फिसादी बाहेर वा भितरे मुलक बुदेलषंड के से मिलाप न करै। इन सबौ कौ कोई तरा मे जागा औ पनाह न देई औ लरकेवाले उनके को न छोडै जो हमारे इलाके मै रहै। औ पाती चिठी सब मामलात के ताई उनसे छोड देई। औ साथ मुतवैसिलान वा लावेदारान सरकार दौलत मदार के से दुसमनागत ना करै औ अगर कोइ मुतवैसिलौ से सरकार के सिरदारौ या राजौ मै इस मुलक कै वावत महाल वा गाव या कोई तरा मामला हमारे साथ तकरार करै तौ हम उस तकरार के ताई वीच हजुर सरदारन सरकार के हाजिर करकै दरषास्त फैसले का करै। जो कुछ सरकार से फैसला होई सो कवूल मंजुर करै। उसे तफावत ना करै। औ वदले तकरार के अपनी अपनी तरफ से लराई न करै औ विगर हुकम सरकार के इनसाफ अपने हाथ मै न करै औ हमेसै फरमावरदार सरकार दौलत मदार के हर काम मै रहै—

दफे २

वदोवस्त घाटी इलाके का इस तरा करै की फिसादी वा लुटेरे वा दुसरे सरारती करन वाले नीचे उपर आने जाने न सकै औ कभी कोई फिसादी वा आदमी वदचाली के ताई न छोडै की उस राह से सरकार के मुलक मै दषल हौकै फिसाद सुरू करै। औ अगर कोई सिरदार साहिवान फौज मुलक मे सरकार के हमारे मुलक ही कै आव जव तक हमारे मुलक के नजीक पहुचै षवर उसका पहिल पहुचाने से सरहेद इलाके अपने के सरकार के सिरदारन कौ पहुचावै औ माफक मकदूर अपने वीच वंद करने उसके मेहनत करै

दफे तीसरी ३

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार का घीटी से इलाके हमारे के उपर घाट या कोई दूसरी तरफ जाई कभी मने मुजाहिमत न करै। वलिक आदमी मातवर वाकिव-कार साथ करै। तौ जिधर चाहै तिधर जाई। औ जिस वषत लसगर फौज सरकार का इलाके हमारे या हमारे सरहेद पर दूसरे के मुलकु मे रहै असवाव जरूरी लसगर मै पहुचाते रहै

दफे ४

अगर कोई रैयतौ मुलक सरकार दौलत मदार कै भाग कै वीच देहात इलाके हमारे के आवै सितावी दरषास्त से अहिलकारान सरकार के हवाले करै। औ अगर कोई रैयतो जिमिदारे से इलाके हमारे के भाग कै वीच मुलक सरकार के रहै तपसीलवार दरषास्त अपने मुकदमा की वीच हजुर सिरदारन सरकार के गुजरानै माफक आइन इंसाफ के जो कुछ हुकम फुरमावै वीच अमल के ल्यावै। आप कस्त पकरने उसके का ना करै

दफे ५

चोर वा ठग वीच देहात इलाके अपने के रहने न देई। अगर माल कोई सौदागर का वीच कोई गाव मै कवजा हमारे से चोरी जाई या लुटजाई गाव के जिमीदार पे तागीद करकै माल लुट औ चोरी गये के ताई उसे दिलावै या चोटे वा लुटेरे को पकरकै सरकार

दौलत मदार मे पहुचावै। औ जो कोइी वीच मुलक सरकार के सुनी या कोइी तरा से दुसरा गुनागार होकै वीच कोइी गाव वा इलाके हमारे के आवै उसके ताइी भी पकर कं सरकार मै पहुचावै औ न छोडै की राह इलाके हमारे दुसरी तरफ वा वाहेर जाई

दफे ६

जो तजगरा गावन जपती अपने का हजुर मै गुजरानि कै माफक उसके सनध सरकार से पाया है। इस वास्तै इकरार करते है की अगर गावन भजकुर से कोई गाव मिलकियत दुसरे किसी की मावित होई औ या जाहिर होई की वीच वषत नवाव अली वहादुर के हमारे कवजे मै ना था वीच मुकदमे उसके जो कुछ की सरकार मै वात तजवीज हवै हुकम होई सो अमल मै ल्यावै। कुछ उजर ना करै—

दफे ७

गोपाल सिघ कोम वुदेला वा वहादुर सिघ पडिहार सिरकार की हरामषोरी अषत्यार करकै वगी है औ वीच गावन राजा वषत सिंघ वा राजा किसोर सिघ जो सरकार से पायन है लूट पाट करता है। इस वास्ते इकरार करते है की गोपाल सिघ वहादुर सिघ मजकूर कौ वीच इलाके अपने के जागा रहने कौ वा पनाह न देई औ अपने इलाके की राह से वीच गावन राजा मजकूरैन के वा षास मुलक सरकार के आवने जाने न देई। अगर हमारे इलाके मौ छिपे या जाहिर रहै माफक मकदूर अपने के मेहनत वीच पकरने उन सवौ के करै। अगर कुछ इस काम मै दरगुजर करै या तफावत करै तरह देई जवाव देही उनके हरेकतौ की वमौजिव तजवीज सरकार के हमारे जिमै है

दफे ८

जो गावै मजकूर लिषै हुयै सनध मिलकियत पुरषौ हमारे की है औ उस पर कवाजा हमारा है इस वास्तै इकरार करते है वाद मिलने सनध सरकार से दरषास्त दषल देलावने कोई गाव इलाके पर ना करै औ वास्ते वदौवस्त उसके सरकार से तलव ना करै—

दफे ९

एक आदमी मातवर अपना मुकेरर करै की हमेसै वतौर उकालत के वास्तै वजा ल्यावने हुकम वा षिजमत सरदारन सरकार दौलत मदार के हाजिर रहै औ उसे कोई तरा सै सिरदारै सरकार के वा सवव कोई कसूर के नाषुस होई तुरत उसको हम अपने पास वुलाई लेई। येवज उसके और को मुकेरर करै। यह इकरार नामा दफे नौ का अपनी मोहर दसषत से दाषिल दफदर सरकार के किया। इकरार करते है की उपर दफात मजकूरैन के हमेसै अमल करकै कुछ उमे तफावत न करै। तारीष १६ जुलाई सन १८०९ ईसवी मुताविक दुती असाढ सुः ४ सं : १८६६ सही श्री लाला अमान सिंघ क करार नामा लिषा सौ स्ही दसषत सुभ हस्त—*

---

* Foreign Dept., September 1809, No. 508

९६

जब से मुलक बुंदेलषंड का सामिल मुलक सरकार दौलतमदार कंपनी अगरेज बहादुर के हुवा तब सें मै लाल अमान सिंघ तावेदारी सरकार दौलतमदार की दिल जान से कबुल करके फरमांबरदारी सरदारन सरकार के की वास्ते बंदोबस्त मुलक मजकूर के मुकरर होकै आये हम हाजिर है। इन दिनन मे वास्ते मजबूती वा ताबेदारी वा फुरमांबर-दारी सरकार दौलतमदार के इकरारनामा दफे नौ वा मोंहर वा दसषत अपने सो लिषके साहेब वाला मुनाकिब मिस्तर जान रचारडसेन साहेब बहादुर के पास दाषिल करकै दरषास्त सनध देहात कबजा कदीम अपने का किया। इस वास्ते हम इकरार करते है कि इकरारनामे की दफेन पर सावित रहेगें। कभी उसे तफावत ना करेगें

दफे अवल

सब कोई फिसादी बाहेर वा भीतर मुलक बुंदेलषंड केसे मिलाप न करै। इन सबो को कोई तरासें जागा औ पनाह न देइ औ लरके बाले उनके को न छोडै जो हमारे इलाके मे रहै औ पाती चीठी सब मामिलात के तइ छोड देइ। औ साथ मुतवसलान वा तावेदारान सरकार दौल्त मदार के से दुसमनागत ना करै। औ अगर कोई मुतवसिलो से सरकार के सरदारौ या राजौ मैं इस मुलक मैं बाबत महाल वा गाव वा कोई तरा मामला हमारे साथ तकरार करे तो हम उस तकरार के तांई बीच हजूर सरदारन सरकार के हाजिर करकै दरषास्त फैसले का करैं औ वदले तकरार के अपनी अपनी तरफ से लराई न करै औ विगर हुकुम सरकार के इनसाफ अपने हाथ से ना करै औ हमेसे फरमाबरदार सरकार दौलत मदार के हर काम में रहै

दफे २

बंदोबस्त घाटी इलाके अपने का इस तरा करै की फीसादी वा लुटरै वा दुसरे सरारती करनेवाले नीचे ऊपर आने जाने न सकैं औ कभी कोई फिसादी वा आदमी बदचाली के ताई न छोड़े कि उस राह से सरकार के मुलक मे दषल होके फिसाद सुरू करै। औ अगर कोई सरदार साहेबान फौज मुलक में सरकार के हमारे मुलक होके आवै जब तक हमारे मुलक नजीक पहुचै षबर उसका पहिल पुहचावने से सरहद इलाके अपने के सरदार के सरदारन को पुहचावैं औ माफिक मकदूर अपने बीच बंद करने उसके मेहनत करै

दफे ३

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार का घाटी से इलाके हमारे के उपर घाट वा कोई दूसरी तरफ जाइ कभी मने मुजाहिमत न करै। बलिक आदमी मातबर वाकिबकार

स थ करै तो जिधर चाहे तिधर जाइ। औ जिस वषत लसगर फौज सरकार का इलाके हमारे वा हमारे सरहद पर दूसरे के मुलक में रहै असबाब जरूरी लसगर में पहूचाते रहै

दफे ४

अगर कोई रैयतो मुलक सरकार दौलत मदार के भाग के बीच देहात इलाके हमारे के आवै सिताबी दरषास्त से अहलकांरा सरकारके हवाले करै औ अगर कोई रैयतो जमीदारोसे इलाके हमारे के भाग के बीच मुलक सरकारके रहै तफसील वार दरषास्त अपने मुकदमा की बीच हजूर सरदारन सरकार के गुजाराने माफिक आईन इंसाफ के जो कुछ हुकुम फरमावें बीच अमल के ल्यावें। आप कस्त पकरने उसके का न्ना करै

दफे ५

चोर वा ठग बीच देहात इलाके अपन के रहने न देइ। अगर माल कोई सौदागर का बीच कोई गांव मै कबजा हमारे से चोरी जाइ या लूट जाइ गाव के जमीदारे पर तागीद करके माल लूट औ चोरी गये के ताई उसे दिलावे या चोटे वा लुटेरे को पकर कै सरकार दौलतमदार में पहुचावैं। औ जो कोई बीच मुलक सरकार के पूनी या कोई तरा से दुसरा गुनागार हौ कै बीच कोर्ट गांव वा इलाके हमारे के आवे उसके ताई भी पकर के सरकारमें पहूचावै औ न छोडे की राह इलाके हमारे के दूसरी तरफ वा वाहेर जाय

दफे ६

जो तजगरा गावन जबती अपने का हजूर में गुजरानिके माफिक उसके सनद सरकार से पाया है इस वास्ते इकरार करते है कि अगर गावन मजकूर से कोइ गाव मिलकीयत दूसरे किसी की साबित होइ औ या जाहिर हो बीच वकत नवाब अली बहादुर के हमारे कवजे में न था बीच मुकदमे उस जो कुछ की सरकार में तजवीज होवे हुकुम होइ सो अमल मे ल्यावै कुछ उजुर ना करै

दफे ७

गोपाल सिंघ कोम बुदेला वा बहादुर सिंघ पडीहार सरकार की हरामषोरी अषत्यार करके बगी है औ बीच गावन राजा वषतसिंघ वा राजा किसोर सिंघ जो सरकार से पायन है लूट पाट करता है। इस वास्ते इकरार करते है कि गोपाल सिंघ बहादुर सिंघ मजकूर को बीच इलाके अपने के जागा रहने को वा पनाह न देइ औ अपने इलाके की राह से बीच गावन राजा मजकूरैन के वा षास मुलक सरकार के आवने जाने न दइ। अगर हमारे इलाके मो छिपे या हाजिर रहै माफी मकदूर अपने के महनत बीच पकरने उन सबों के करै। अगर कुछ काम में दरगुजर करै या तफावत करै तरह देइ जवाब देही उनके हरकतो की बमोजिब तजवीज सरकार की हमारे जिमें है

दफे ८

जो गावे मजकूर लिषे हुवे सनद मिलकीयत पुरषां हमारे की है उस पर कबजा हमारा है इस वास्ते इकरार करते है बाद मिलने सनध सरकारसे दरषास्त दषल देलावने कोई गाव इलाके पर ना करैं। वास्ते बंदोवस्त उसके सरकार सें तलब ना करैं

दफे ९

एक आदमी मातबर अपना मुकरर करैं की हमेसे बतौर उकालत के वास्ते बजा ल्यावनें हुकुम वा खिजमत सरदारन सरकार दौलत मदार के हाजिर रहे औ उसे कोइ तरा से सरदारैं सरकार के बासबब कोई कसूर के नाषुस होइ तुरत उसको हम अपने पास बुलाइ लेइ। एवज उसके ओर को मुकरर करैं। यह इकरारनामा दर्फे नौ का अपनी मोहर दसषत सें दाषिल दफतर सरकार कीया। इकरार करते है की उपर दफात मजकूरेन के हमेसे अमल करके कुछ उसे तफावत न करैं। तारीख १६ जुलाई सन १८०९ इसवी मु: दूती असाड सुदी ४ संवत १८६६*

९७

श्री साहिब वाला मूनाकिब श्री साहेब अलीसान श्री ऐकंतदारद्दौलै मुंतजैमुलमुलक मिस्तर जान रत्रारड सैन साहेब बहादुर बसालत जंग जू ऐते श्री महाराज कोमार श्री कुवर सोने साहिजू देव के प्रनाम वांचने। आपर हजूर के स्माचार सदा सर्वदा भले चाहिजैं। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। हजूर की मेहरवानगी तैं आपर षत अयौ। सिषापन जानो। फूरमाइस आई कै इकटंग रजीडंट दरवार महाराजै आलीजाह दौलतराव सेंधिया बहादुर के मालुम हूवा की कोटा सैं साहिब मौसूफ कौ षवर पौहची कै तुमनैं अमीर षां कौ पत लिषा है ताकी विनती इस तरा है कै हम तौ चाकर कंपिनी अगरेज बहादुर के है। जवतैं हम साहेब के चाकर ठहरे अरु साहेब नैं हमको सनध वगसी तवतैं हम विगर साहिब की मरजी ना तौ काहू कौ पाती लिषैं अरु ना काहू सो अरथ राषैं। जितनी मरजी हजूर के हुकूम की होत है सो उ हम करत है। अरु या वात साहिब तहतीक करावैं। जो हमनैं या पाती लिषी होइ अरु हमारे जान गुमान मैं या वात होइ तौ हम कपिनी के तावेदार चाकर कैसे। जो अैसी अनरीत की लिषै रही विनती हम साहिब सौ आगे तैं जाहिर करवो करे है कै देस के ठाकुर हम पर कुचाल माने है। सो हम हजूर ही कौ जानत है। कजाति देस वारिन नैं हमारे नाउ की पाती उहाको लिषी होइ सो साहेब तेहतीक कराइ मगावैं रही। साहिब हमारी तरफ की सब तरा षातिर राषि हौ। इहातैं अैसी वातैं कवहू नाही होने है। हम साहिब के हूकमी है। कुवार बदि ३ सवंतु १८६६ मुकाम राजनगर†

---

* Foreign Dept., September, 1809, No. 509

† Foreign Dept., 15th October, 1809, No. 565

९८

श्री श्री वासुदेवराऐ सहाऐ

वजुनाव पुरमैंद रेकाव नवाव मोस्ततात मालाऐलकाव असरफुल असराफ जुनाव गवरनर जनरल साहेव वहादुर दाममुलकहु के अरज पहुचावता है—

चुं परवाने सरकार दौलतमदार के अजराहुतमाम सरफराजी औ वंदेनवाजी के जो कपीतान साहेव षोदावन्द कपीतान रफसज साहेव वहादुर मारफत फीदवी का नाम सादीर हुआ था वजुरग उतर ना पाआ—वहुत-वहुत मोमताजी औ जेआदे जेआदे सेआदतमंदी अपना हासील कीआ वौ षीलत मोफाषरे जो मुलाजमानो से सरकार सुरेआरकाव के वषसीस हुआ था—उससे साहेव मोफरुनल्ह इस फीदवी कों सरफराज फरमाइन—वहुत-वहुत सीरवुलंन्दी वौ जेआदे जेआदे मोमताजी हासीलपाआ—इस कदर नवाजीसात वौ तफजुलात षावीन्दाने का जो फीदवी के हालत पर इअह सभ वषसीस हुआ—सुकुर वौ सीफत उसका कवन जवान से वेआन करै—हमेसहँ हमेसहँ साऐ खुरसदै वौ माऐ हुदाऐत का उपरसीर आलम के दराज रहै—षोदावन्दा फीदवी ऐक फरमावरदारी से सरकार कोम्पनी अंगरेज वहादुर दामअकवालहू के हमेसहँ षीदमत गुजारी—वौ अताऐत मे सरकार के हाथ वाँधे रहता है—कदही मोतावीअत से सरकार के रु गरदा नही वौ नही होगा—आऐन्दे पर उसी तरह नेक नजर तफजुलात वौ फैजवकसी सरकार का हर हाल उमैदवार रहता है—ज्यादा केआ अरज पहुँचावें—हद अदव—माह चैत वदी ७ रोज सम्वत १८६७ साल—सन १२१७ फसली—

अरजी माहाराजा श्री श्री गोवींन्दनाथ साह देव जीमीदार प्रगनात नागपूर*

९९

श्री राव अजुध्या परसाद जु ये ते श्री महाराज कोमार श्री देवान वहादुर गोपालसिंघजु देव के वांचनैं। आपर अपने स्माचार भले चाही जै। इहा के समाचार भले है। आपर इन दिनन की षवर नहीं पाई आई सो अपने नीकें आनंद की षवर लिषवी। अरु हम इहा की हकीकत श्री कुवर पिरथीसिंघ कौ लिपी है सो अपुन कौ सुनाई है। अरु इन दिनन मैं अगरेज के घर मैं अपनौ अैसो चाल है के चाहियँ सो करियँ। परंत हम कौ जिमी छुटे तीन वरसै भई। अरु अपन षवर न करी। सो हमन जानी कै हम तौ अपनी उहदारी कवै नहीं वनी आई। अरु कै हमारे मार जे अगरेज के घर मै अपनो करो नाही होत आई ता से अव हमरे ज्वाव स्वाल कौ झेल झपेटा

* Foreign Dept., 26th April, 1810, No. 280

न करवी जी मैं हम जिमी सिर होई। अरु अगरेज कौ राफदा ठहरै सो करवी रही। सिवाई सिस्टाचारी लिषै सो का लिषै। अपुन आगे महाराज के घर मे हमारे ज्वाव स्वाल के मालिक हते। अपुनहूं सव वातैं करीती। अरु अव अपुनहूं इहा हमारी तरफ के मालिक है सो अपनी वात के हम भी तरहै। अरु या जानियैं कै यौ प्रसंग निपटत है। कौन हूं वात अटकत है ताकी अपुन सव थंकाइिन करवी। हम अपनी जुवांन के वाहेर नहू है सो जानवी। पाती समाचार लिषत रहिवी। आसाढ सुदि १० संवतु १८६७ मु. वम्हौरी—अरु केली साहव कौ हम पाती लिषी हती सो उन वडे साहव कौ हमारे लाने लिषी है सो समझ देखवी का कैसी लिषी है तैसी हम कौ लिषवी। नकल मुताविक, असल*

१००

श्री साहेव वाला मुनाकिव आलीसान फैजरसान कदरदान श्री वडे साहेव मुपत्याग्काम वुदेलषंड श्री वगसी जू साहेव अगरेज वहादुर रजसेन जु येते श्री महाराज कोमार श्री देवान वहादुर गोपालसिंघ जु देव के वीचनैं। आपर अपने स्माचार भले चाहीजै। तापीछैं इहा के स्माचार भले है आपकी मेहरवानगी तैं। आपर आपकी जपती हमारे जागा मै आयैं तीन वरसैं भई। तीन वरस मैं हम जाहिरी साहिव कौ सव दिनन करी। परंत हमारे दिनन के फिरवेल सौ सुनवे तर न आई। ही सिवाई अरजी कई वषत लिषी। आपके हजुर न पहुची रही। अव अरजी लिषी है। सो जो हमकौ जिमी सिर राषने आवैं तौ जिमी दीजैं अरु जिमी सिर न राषने आवै तौ येक चिठी अपनी देस निकारेकी आवैं। देस छोड देई। परंत देस छौडे दिसा वतावने आहे। काहे से जंवूदीप मैं अगरेज की जपती सिवाई और जिमी नही आई तासे हमकौ राषने आवैं तौ जिमी सिर कर दीजैं। न राषनैं आवैं तौ साफ मरजी होई तहा जाई। परंत अपनौ इतनौ सुजस है कै वडे वडे राज लये है। परंत वेउतन काहू कौ नाही करो आई। तासेही वुदेलषंड मैं हमकौ अरु करहिया वारे ठाकुरन कौ वेउतन करे सो अव अरज लिषी है जी मैं हम जिमी सिर होई सो करवी अरु हमकौ अरु करहिया वारे ठाकुरन कौ साथ ही दुरस्ता होनें आवैं सो जानवी। सिर्व।पत लिषाई पठैवी। भादौ वदि ३ संवतु १८६७ मु—†

१०१

नकल श्री साहिव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री ग़ेकतदारुंदौलै मुंतजेमुल-मुल्क मिस्तर जान रचारड सेन साहेव वहादुर वसालत जंग जु ग़ेते श्री महाराज कोमार

* Foreign Dept., 18th August, 1810, No. 626

† Foreign Dept., 11th September, 1810, No. 678

श्री दिवान वहादुर गोपालसिंघजु देव्र के वाचनैं। आपर सरकार के समाचार सदा भले चाहीजैं। ता पीछे सरकार की सुनजर मिहरवानगी से इहा के स्माचार भले है। आपर पाती आई। सिषापनु जानौ। मरजी आई कै जो कोउ हमसे टेटा बषेडा करत है ताकौ हम पल नहीं लिषत है। ताकौ हम सरकार के टेटा बषेडा माफिक नही है। हम तौ अपनी विंती करत है। अरु सरकार ने या लिषी कै सरकार मै तुम रुजु होव। तुम्हारी पांच चारसैं कौ महीना होजैहै। ताकौ रुजु माफक हमारी तवईयत नहीं रही है। रही जब सरकार हमारी तवईयत करदैं है तब तौ हमैं निसदिन सेवही सरकार की करनै है। पांच चारसै कैं दर माहे की गुजर लिषी ताकौ परमेसुर अरु ठाकुर सौ कोउ थोरो नहीं मागत है। रही जीमैं सेर भर चून अरु कपरा होय सो हमैं अरु हमारे भाई बंदन तैं तनकौ पावने आवै सो सरकार करहै। अरु या लिपी कै जो य न कर हौ तौ वरसात वाद तुमकौ देष लैं है। ताकौ सरकार के देषवे माफक हम नहीं है। रही सरदार बुंदेलषंड के मानस कौ वेउतन काहू कों नहीं करो है। वाहिरे हमही है सो विंती करत है। अरु सरकार दीप भरे के मालिक है सो जानियैंकैसेइ सवकौ मिलत है तौ हमही कौ मिलै अरु जानियैंकै तुमकौ नहीं देने है तौ इतराजी माफिक हम नहीं है। येक येक पाती लिषवी कै फलानी जागा जाउ तहा कौ हम जाई। अरु विंती हम सरकार मै लिष वउ करे है। पर हमारौ वितवार उहा कोउ नहीं रहौ है तासे अब सरकार ही साब हमारी विंती है जीमैं हमारी गुजर होई अरु उतनसिर होई सो सरकार करहै और हमारी तरफ की अरज श्री राव अजुध्या परसाद जु करहै। आगे हम उनकौ लिषीहै सो जानवी। मरजी सिषापनु होई सो फुरमाइबे मैं आहै। भादौ सुदि ६ संवतु १८६७ मुकाम निवार—*

१०१ (अ)

जवसे मुलक बुंदेलषंड का सामिल मुलक सरकार दौलतमदार कंपिनी अगरेज बहादुर के हूवा तवसे मैलालदुनियापत तावेदारी सरकार दौलत मदार की दिल व जान से कवूल करकैं फरमावरदारी सिरदारन सरकार के की वास्ते वदोवस्त मुलक मजकूर के मुकरर होकैं आये हम हाजिर रहे। इन दिनन मैं वास्ते मजवूती व तावेदारी व फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार की इकरारनामा दफे नौका मोहर व दसषत अपने से लिषकैं साहेब वाला मुनाकिव मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर के पास दाषिल करकैं दरषास्त सनद्र देहात कवजा कदीम अपने का किया। इस वास्ते हम इकरार करते है की इकरारनामे की दफेन पर सावित रहैंगे। कभी उसे तफावत न करैंगे—

* Foreign Dept., 2nd October, 1810, No. 714—16

दफे पहिली १

सब कोई फिसादी वाहेर व् भितरे मुलक बुंदेलखंड के से मिलाप न करै। इन सवौ कौ कोइी तरा से जेगा औ पनाह न देई औ लरके वाले उनके को न छोडै जो हमारे इलाके मे रहै औ पाती चिठी सब मामला के ताई उनसे छोड देई औ साथ मुत-वं सिलान व नोकरान सरकार दौलत मदार के से दुसमनागत न करै। औ अगर कोइी मुतवंसिलौ से सरकार के सिरदारौ व् राजौ मै इस मुलक के बाबत महाल औ गाव या कोई तरा मामला हमारे साथ तकरार करै तौ हम उस तकरार के ताई बीच हजुर सरदारन सरकार के दरपेस करकै दरखास्त फैसले का करै। जो कुछ सरकार से फैसला होई सो कबूल मंजूर करै। उसे तफावत न करै। औ वदले तकरार के अपनी तरफ से लराई न करै। औ बिगर हुकम सरकार के इनसाफ अपने हाथ से न करै। औ हमेसै फरमावरदार सरकार दौलत मदार के हर काम मै रहै—

दफे २

वदोवस्त घाटी इलाके अपने का इस तरा करै कि फिसादी व लुटेरे व् दुसरे सरारती करन वाले नीचे उपर आने जाने न सकै औ कभी कोई फसादी व् आदमी वदचाली के ताई न छोडै की उस राह से सरकार के मुलक मै दखल होकै फिसाद सुरु करै। औ अगर कोइी सिरदार साहिवीन फौज मुलक मे सरकार के हमारे मुलक होके आवै जव तक हमारे मुलक के नजीक पहुचै षवर उसका पहिल पहुचने से सरहद इलाके अपने के सिरदारन को पहुचावै औ माफक मकदूर अपने बीच वद करने उसके मेहनत करै—

दफे तीसरी ३

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार का घाटी से इलाके हमारे के उपर घाट या कोई दुसरी तरफ जाई कभी मने मुजाहिमत न करै। वलिक आदमी मालवर वाकिव-कार साथ करै तौ जिधर चाहौ तिधर जाई। औ जिस वषत लसगर फौज सरकार का इलाके हमारे या हमारे सरहद पर दुसरे के सरहद मुलक मै रहै असवाव जरूरी लसगर मे पहुचाते रहै—

दफे चौथी ४

अगर कोई रैयतै मुलक सरकार दौलत मदार के भाग कै बीच देहात ईलाके हमारे के आवै सितावी दरखास्त से अहिलकारन सरकार के हवाले करै। औ अगर कोइी रैयतौ जिमीदारे से इलाके हमारे के भागि कै बीच मुलक सरकार के रहै तपसीलवार दरषास्त अपने मुकदमा की बीच हजुर सरदारन सरकार के गुजरानै माफक आईन इनसाफ की जो कुछ हुकम फुरमावै बीच अमल के ल्याव। आप कस्त पकरने उसके का न करै—

दफे पाचई ५

चोर व् ठग बीच देहात इलाके अपने के रहने न देई। अगर माल कोई सौदागर का बीच कोइी गाव मै कवजा हमारे से चोरी जाई या लुट जाई गाव के जिमीदारौ

पर तागीद करकै माल लुट औ चोरी गये के ताही उसे दिलावै या चोटे व लुटेरे कौ पकर कै सरकार दौलत मदार मे पहुचावै। औ जो कोई की वीच मुल्क सरकार के षुनी या कोही तरासे दुसरा गुनागार होकै वीच कोही गाव इलाके हमारे के आवै उसके ताही भी पकर कै सरकार मै पहुचावै औ न छोडै की राह हमारे इलाके से दूसरी तरफ व बाहेर जाई——

दफे छठही

जो तजगरा गावन जपती अपने का हजुर मै गुजरान कै माफक उसके सनध सरकार से पाया है इस वास्तै इकरार करते है की अगर गावन मजकूर से कोही गाव मिल-कियत दुसरे किसी की सावित होई या यह जाहिर होई की बीच वषत नवाव अली वहादुर के हमारे कवजे मे न रख वीच मुर्कदमे उसके जो कुछ की सरकार मे वात तजवीज कै हूकम होई सो अमल मै ल्यावै। कुछ उजर न करै——

दफे ७

गोपाल सिंघ कोम वुदेला सिरकार की हरामषोरी अषत्यार करकै वगी है औ वीच गावन राजा वषत सिघ व राजा किसोरसिघ के जो सिरकार से पायन है लुट पाट करता है। इस वास्तै इकरार करते है की हरामषोर मजकूर को वीच इलाके अपने के जगा रहने की व पनाह न देई औ अपने इलाके की राह से वीच गावन राजा मजकुरैन के व पास मुलक सरकार के आवने जाने न देई। अगर हमारे इलाके मौ छिपे या जाहिर रहै माफिक मकदूर अपने के मेहनत वीच पकरे उसके करै औ अगर इस काम मै कुछ दरगुजर करै या तफावत करै तरह देई। जवाव देही उसके हरेकतौ की वमुजव तजवीज सरकार के हमारे जिमे है——

दफे आठई ८

जो गावै मजकूर लिषे हुये सनध मिलकियत पुरषौ हमारे की है औ उस पर कपजा हमारा है इस वास्ते करार करते है वाद मिलने सनध सरकार से दरषास्त दषल दिलावने कोही गाव वदला के पर न करै औ वास्ते वदोवस्त उसके सरकार से तलव न करै——

दफे नवई ९

येक आदमी मालवर अपना मुर्करर करै की हमैसै वतौर वकालत के वास्ते वजा ल्यावने हूकम व षिजमत सिरदारन सरकार दौलत मदार के हाजिर रहै औ उसे कोई तरा से सरदारै सरकार कै व सवव कोही कसुर के नषुस होई तुरत उसको हम अपने पास वुलाई लेई। येवज उसकी और को मुर्करर करै। यह इकरारनामा दफे नौका अपनी मोहर व दसषत से दाषिल दफतर सरकार के किया। इकरार करते है की उपर दफान मजकूरैन के हमेसै अमल करकै कुछ उसे तफावत न करै। ता: १६ अगस्त स: १८१० ईसवी मुताविक भादौ वदि ३ सवंतु १८६७ सन १२१७ फसली*

*Foreign Dept., 2nd December, 1810, No. 820

१०२

......(खंडित अंश).......हिलै अब सैं सन १८१४ ईसवी मैं दरषास वरमूजिव ठाकुर दुरजन सिंघ परलोक भए की जो लगते ही अमलदारी सरकार कंपनी अंगरेज बहादुर के मुलुक बुंदेलषंड मैं तावेदारी मैं हाजिर हुवे सनध माफी की गावौं इलाके मैंहर की श्री हूजूर गवर्नर जनरल वहादुर सैं मिली। ठाकुर मजकूर के पीछैं सरकारनैं उन चाहे वरमूजिब जीते हीं वहाल रहना जागीर का दौनौ वेटौं की सौंझ मैं तजवीज किया और पीछैं बाप के दौंनौ बेटौ मैं आपुस मैं झगरा परा। ऐही बात वाजवी जांनी कै षास मैंहर औ वहां का किला ठाकुर विसुन सिंघ कौं जो वडा बेटा ठाकुर दुरजन सिंघ का है उसकौ सौंपा चाहिये और इस सिवाइ सब गांव इलाके जागीर ठाकुर के हीसा वरावर आधौं आध जमा पर दौनौ बेटौ सैं ठाकुर विसुनसिंघ वडे औ ठाकुर प्रयाग दास छोटे है कर दिया चाहिये। सो ठाकुर प्रयाग दास नैं करारनामा पाच कलम का पँक्का करनैं तावेदारी कलानैं सरकार मै गुजारा। इस वास्तैं यह सनध मुहुर और दसकत...(मूल में रिक्त स्थान)......माफी गावौं तपसीलवार साथ सब अमल वाव समेत और सायर जो ठहरी ठाकुर मजकूर कौं पुस्तदरपुस्त सरकार तैं दई गई। जब तक ठाकुर मजकूर औ उनको आलअवलाद इकरारनामा की कलमो पर कै जौ सरकार मै लिष दिया है उसी वरमूजिब सदामद कायम रहैंगे। इसी तरह सरकार तैं जपती नहीं हौनैं की है। चाहिये कै तुम लोग सब ठाकुर मजकूर कौं मालिक मुषत्यार उन गावौं का जांनौ। औ ठाकुर कौं चाहिये कै गांवौं कौं तरज्जुत सैं आवाद करैं और रैयत कौं राजी औ षुसी राषैं और उसकी आंमदांनी सरकारकी तावेदारी और षैरख्वाही मैं षर्च करता रहै.........

ऐकत्र मौजे
४०२

असली	दापली
१४३	२५९

तँपे इटौर के—

३६

असली	दाषली
१३	२३

मौजे कुड़वा		आमातारा	
४		३	
असली	दाषली	असली	दाषली
१	३	१	२

कुडवा	महतैनिया	आमातारा	पगरा
१	१	१	१
पिपरिया	उढकी	कौहरा	———
१	१	१	
	पास इटौगै	षिरवा मझगवा	
	१८	२	
असः	दाषः	असः	दापली
६	१२	१	१
इंटौरौ	धरी छिदहाई		
१	२		
षुटेसर	लुहरवाग		
१	१		
धरमपुरचरगोडी	चौराकनैरा		
२	२		
देवरा	वनजिरिया		
१	१		
माद	जरगोडी		
१	१		
घुरहर	इटवां		
१	१		
फलेरौ	चाकाझवार		
१	२		
धनवाही	हरदुवा।		
४	२		
असः	दाषली	असः	दाष.
१	३	१	१
धनवाही	जौहरा		
१	१		
वहिरगवां	पौंडी		
१	१		
इमलिया	लषनपुरा		
२	१		
असः	दापली	असः	
१	१		

तपेझिरिया——————————

असली	दाषली
१८	३४

वरही——		मौजे सिकनौडी	
२८		१२	
असः	दाषली	असः	दाषः
१०	१८	४	८
वरही	उवरा	सिकनौडी	देवरी
१	१	१	१
पवैया	वरतिया	लुरमी	षमतरा
१	१	१	१
लूली	डकरिया	षम्हरिया	निगहरा
१	१	१	१
जुगरेही	देवरी	धौर	सिजहरी
१	१	१	१
षिरवा	दीघी	महतैनिया	मुरगवां
१	१	१	१
सिजहरा	वनगवां	अमवारी	ईदहा
१	१	१	१
देवरा	झिरिया		
१	२		
वुजवुजा	गढहुवा		
१	१		
षरना	करौषुर्द		
१	१		
करौंदीवुजरक	विजपुरा		
१	१		
जाजागढ	मनौर		
१	१		
हरतला	घनौची		
१	१		
कुदरौ	मनघटा		
१	१		
षरवानी	मझमझा		
१	१		

षिरवा	कुदेरही वम्हनगवा
१०	२

असः ३ | दाषली ७ | असः १ | दाषः १

षिरवा १ | धुगैड १

हथैंडा १ | लसहर १

षरहनी १ | सेमरिया १

वकेली १ | वरहुटा १

लरिपडा १ | छाता १

तंगोरडेहा—
१२

असः ४ | दाषली ८

गुडेहा १ | वसौधा १

पतरिया १ | चोरी १

पिपरा १ | षजुरा १

लुकामपुर १ | सघनपुरा १

चिटहाई १ | हरदुवा १

सररी १ | कहीं १

तंपेडोलीके
१२

असः २ | दाषली १०

डोली १ | पौंडी १

कुइलिया १ | वरा १

तंपेगैतराई—
६

असः १ | दाषली ५

गैतराई १ | मडवां १

जारा १ | कुनिया १

घलौध	कारी	रौडा	तिमुवां
१	१	१	१

इटहरा	गुवरौल	लुहरवारौ दाष:	पहिरछटापुरैनी
१	१	१	२

अमाकोल	पाली	असली	दाषली
१	१	१	१

नौवस्ता	सिवाई
१	१

षरहटा—अस:	इमिलिया—दाष:
१	१

सलैया—दाष:	देवरी—अस:
१	१

वरसवारौ—अस:
१

तँपैसकरी—
१६

असली	दाषली
६	१०

सकरी—	गनेसपुर
५	३

अस:	दाष:	अस:	दाष:
१	४	१	२

सकरी	गाडा	गनेसपुर	लहदर
१	१	१	१

षरैंहा	कडवा	कुम्हरवारौ—
१	१	१

अंतरवेद —
१

तपैभैसवाही—
२२

अस:	दाष:
६	१६

भैसवाही	मझियारी
१	१

टिकरिया	धुनसर
१	१

सहतरा	पौंडीपडरिया
१	२

सिधवा रौटोटी	देउसिर
२	१

तँपदैवरा—
१३७

अस:	दाष:
५६	८१

षासदेवरा—अस:	रूहनिया
१	१८

अ:	दा:
६	१२

रहुनिया	वेदरी
१	१

पसाडी	मानपुर
१	१

उंदौर १	वदेरा १
धनगवा १	पिपरिया १
सगवार १	पौनिया १
वनगवा १	महुवा डांडी १
पौपषरा १	सौहंगवा १
बूढा १	जुगिया १

× × काटी—— १६

असः ५	दाषली ११
काटी १	दरौडी १
नन्हवार १	हडषोहरी १
कुटररिया १	षिरया १
अमहटा १	मुनहरा १
परमरी १	नपहनी १
पतवार १	मुडहरा १
नडरे जियार २	सुरमागुजहटी २

नन्हवारौपदेरिया २

असः १	दाषली १

रजवारौलुहत्तरा २

विहडी १	सलहना १
सुढी १	तमुरिया १
वनहरा १	वनहरी १
असाडी १	धुवरी १
विजौरी १	मझगवा १
नन्हवार १	पठरा १

षरषरीकिरकिचहाई २

असः १	दाषली १

गौरहा—असः १

गडौहा—अः १

असः १ — दाषली १

गुड——दाषः १

परसवारौ——दाषः १

टिकरवारौवम्हनी २

असः १ — दाषः १

मुहगवां——दाष : १

कुदरेई——दापः १

कन्हवारौ १२

असः ४ — दाषः ८

कन्हवारौ १ — वनपुकार १

मदवार १ — पिलौंजी १

पिपरहट १ — पडरिया १

विजरई इमलिया २ — वडषेरा १

हरदुवा १ — मिडरा १

मौहानी १

षन्हरिया ६

असः ३ — दाषली ३

षम्हरिया १ — पटवारौ १

जटवारौ १ — मदनपुरी १

मदनपुरा १ — वाडनमार १

सिमरिया——दाषः

राषीपुरैनी—दाषः २

बंजारी—— ४

असः ३ — दाषः १

बंजारी १ — टीकर १

चपना १ — दरौडी १

अमरैया——असः

मवई गिढवारौ २

असः
१
दाषः
१

देवरीमझगवा
२

पडरिया——दाषः
१

असः
१
दाषली
१

मुहास——
४

गगौंटी
७

असः
१
मुहास
१
जगिया
१

दाषली
३
पहरिया
१
वडषेरा
१

असः
२
गगौंटी
१
षपरी
१
तिदुरी
१
कैलवार
१

दाषः
५
वरैंडा
१
पडरिया
१
भैसवाही
१
——
०

वडछैका——असः
१

षुसीटोला——दाषः
१

मझगवा——
५

हरदुवा—वुजरक
१

असः
१
मझगवा
१
वराडी
१
पटवारौ
१

दाषली
१
पुरैंनी
१
भानुपुर
१
——
०

षलवारौ——असः
१

जोवी——
४

कलहरा——दाषः
१

असः
२
दाषः
२

गछगवाजोवा
२

असः
१
दाषः
१

जोवी — १ पुछी — १

सुतपतरी — १ सुनवार — १

करहिया————असः १

देवजोवी————असः १

पथरा————असः १

पडषुरीकासीकापमूहनिया ३

असः १ दाषः २

रजरवारौ————असः १

झिरिया———— १ असः

सल्या————अः १

करसडा———— १ अः

देवसर————दाः १

षरौदिया———— ९ असः

अमवारी———— १ असः

सल्या————असः १

तँपेनदावन———— ७४

असली २८ दाषली ४६

मझगवा————दाषः १

सरसपुरा————दाषः १

विस्तरा————असः १

गौदरा————असः १

तजनौडी———— १ दाषः

सलैया १ असः

वम्हनगवां———— १ दाषः

जटवारौ———— १ दाः

वषटा————दाः १

वरवारहूनिया २

असः १ दाषः १

कुडलिया २ दाषः

सकरी———— १ दाषः

नदावनषास——— किवलारी————अस:
६ १

अस: दाषली
१ १

नदावन महुनिया
१ १

गोधन सिजपुरा
१ १

चंदना वरारी
१ १

तालीरुहनियांषम्हरिया
३

अस: दाष:
१ २

पडरिया————दाष:
१

षितरैली————दाष:
४

अस: दाष:
२ २

षितौलीषर्द षितौलीवुजरक
१ १

मिटकी कुदरी
१ १

करेलामरकेसाअमाढ
३

अस: दाष:
१ २

वम्हौरीवगदरा
२

अस: दाप:
१ १

गवदीनिपनियाविरहूली
३

अस: दाष:
१ २

हरैयाकोल——दाष:
२

जगुवागरौघासिमरा
३

अस: दाषली
१ २

हदरहटा
४

अस: दाषली
१ ३

हदरहटा हदरहटी
१ १

ऊटी वरवाही
१ १

मिडरा————दाष:
१

वडोगाव्र————असः
१

पिपरिया————
४

असः	दाषः
१	३
पिपरिया	तिकछी
१	१
अमहा	मरगोठी
१	१

धनवाहीआधागांत
दापः ।।

मुहगवां————
४

असः	दाषः
१	३
मुहगवां———	लौंगा
१	१
गुडू	कुठिया
१	१

गुहावल————असः
१

वम्हौरी————दाः
१

कुन्वाहरवाह
२

असः	दाषः
१	१

सलया
५

असः	दाषः
१	४
सलया	वकेला
१	१
भदोरा	सुरौहा
१	१
रहिवार	
१	

सुतरी————
३

असः	दाषली
१	२
सुतरी	मझगवा
१	१
हटादादर	
१	०

वरनमुहगवां
४।।

असः	दाषः
१	३।।
वरन	मुहगवां
१	१
देवगवां	जमुराई
१	१
धनवाही	
।।	

पथरहटापिपरिया———दाषः
१

छिदहाई पिरिया———असः
१

वगैहा
२
असली: १ — दाषली १

सिरीजागडरिया
२
अस: १ — दाष: १

कछराडी — अ:
१

हनौता — अ:
१

सलैया
१ — अस :

देहाततंपे अजवाइन
३५
असली — दाषली
९ — २६

कारीतलाई
६
अस: १ — दाष: ५
कारीतलाई १ — कुसमा १
वम्हौरा १ — जसो १
पषटा १ — सुरजपुरा १

जमुवानी (ठाकुर दुरजनसिंघ ही ठकुरानियौं कै षर्च कौं)
६
अस: १ — दाप: ५
जमुवानीषर्द १ — जमुवानी वुजरक १

भीउरपारपडरिया
२
अस: १ — दाषली १

हडतला — श :
१

षलैया — अ:
१

उरदानी — अ:
१

परसवारौ (ठाकुर दुरजन सिंघ की ठकुरानियौ के षर्च कौं)
३
अस: १ — दाष: २
परसवारौ १ — मुहरया १
पैपपरा १ — ०

गुरैया
१२
अस: ४ — दाष: ८
गुरैया १ — हनौत १

घेडवा	पडहेरी	घिरहटी	गौंदिन
१	१	१	१
हरदुवा	बडसांकर	पटिहरा	वरी
१	१	१	१
		झाझ	पचौहा
		१	१
		चाकी	कैमोरी
		१	१
		जुनवानी	माद
		१	१

सलयाकौहारी

२

असः	दाषः
१	१

चरीपरफरा (ठाकुर की ठकुरानियौं के पर्चं कौं

२ दाषः

हरैया

४

असः	दाषः
१	३
हरया	धौरच
१	१
मुहगवां	आगासी
१	१

प्रागदास का सनध *

१०३

चौधरियान वा कानुगोयान वा जिमीदारान वा मुकदमान परगने मैहर मुतालके मुलक बुदेलषंड के मालुम (खण्डित) होई पर ठाकुर दुरजिन सिंघ छोटे वेटा वेनी

*Foreign Dept.,—April, 1811, No. Nil

हजूरी के घा (खण्डित) पर मैहर के परगने मै हाकिम विल ईस्तकलाल तावेदारी वा फुरमावरदारी अहाली सरकार दौलत मदार की जाहिर करते थे औ जवसे मुलक बुंदेलषंड को सरकार दौलत मदार कंपिनी अगरेज वहादुर के दषल मे आया सरकार के तावेदारी मे काईम वा सावित रहे। किसी तरा से सरकार के पैरषाही वा तावेदारी से ना फिरे। औ इतमादुदौला अफ़जलुल मुलक जान वेली साहेव वहादुर के वषत अपने मातवर वकील भेज कै सरकार दौलत मदार से दरषास्त अपने ईलाके की सनद कौ किया औ ईकरारनामा पाच दफ़े का तावेदारी वा फुरमावरदारी का लिष कै गुजराना वा माहेव मौसूफ़ के दसषत मोहर से सनद हासिल किया। सो सनद मजकूर कै गावन की तफसील लिषी नहीं गई थी औ दुसरे बुंदेलषंड के जागीरदारौ कौ नई सनद नवाव मुस्तताव मुअल्लाअलकाव गवरनर जनरल वहादुर के दसषत मोहर से हासिल भई है। सौ इन दिनन मैं ठाकुर मजकूर ने दरषास्त नई सनद की तफसील अपने कवजे के गावन की नवाव मुस्तताव मुअल्लाअलकाव गवरनर जनरल वहादुर के दसषत मोहर से किया औ दूसरा इकरारनामा भी तौदफेका सरकार के तावेदारी के पकाईत कै वास्तै गुजराना ईस वास्ते या सनद माफीकी नवाव मुस्तताव मुअलाअलकाव गवरनर जनरल वहादुर के दसषत मोहर सै तफसील जैल के सव वा हकूक माल वा साईर सुधा ठाकुर मजकुर कौ पुस्तदरपुस्त वा साष दर साष कौ सरकार से दई गई। जव तक ठाकुर मजकूर वा औलाद उनकी इकरारनामे के दफौ पर जो सरकार मे दाषिल किया है सावित वा काईम रहैगे किसी तरासे सरकार सै मुजाहिमत वा जपत नाहोईगा। चाहियै की चौधरी कानुगो वगैरा ठाकुर मजकूर कौ मालिक औ मुषत्यार मजवूत गावन मजकूर का जानै। औ ठाकुर मजकूर कौ चाहियै की गावन मजकुर कौ तरदुद आवाद करकै रैयत को राजी रषकै उसके महासिल सौ सरकार के पैरषाहीं वा तावेदारी मै अपने तसरुफ़ षर्च मे करे—

ऐकत्र मौजे
७००

असली २६५ — दाषली ४३५

तपैमैहर—
६१

असली १७ — दाषली ४४

पालसे ४२ — पादारष १९

असली १४ — दाषली २८ — अस: ३ — दाषली १६

मैहरषास——
६

असली	दाषली
१	५
कुलहाईउरफ मैहर	उदैपुर
१	१
सहिलरा	सुनहाई
१	१
अरकटी	अमर
१	१

जीतनगर
७

असली	दाषली
१	६
जीतनगर	वघाउ
१	१
ईटहरा	विसहरा
१	१
कालियानपुर	पथरौधां
१	१
गहवरा	
१	

चदौल——————दाषली
३

चदौल	ईटहरा
१	१
समोधा	
१	

लषवारषुर्द————असली
१

उमरी——————असली
१

तिघरा———————दाषली
१

हरदुवापदारघवषेमराईदीछत
१ असली

मौहारी——————दाषली
१

गुडा———————दाषली
१

डुलनी——————दाषली
१

डाडी———————दाषली
१

अकौना——————दाषली
१

पैला——————दाषली
१

परसोका————असली
१

नषतरा——————असली
१

गरैया——————दाषली
१

कुटाई——————असली
१

अमडा——————दाषली
१

बरही——————असली
१

धतुराउडहर
२

असः	दाषली
१	१

परेडी——————

४

अस:	दाषली
१	३
पोडी	मलुही
१	१
डडहर	घवाडा
१	१

वेला——————असली

१

गिरगिटा————असली

————१

सुनवारी वं ईछाराज दुवे
पदारथ——————

१२

अस:	दाषली
१	११
सुनवारी	हथसार
१	१
गुरया	वडहा
१	१
वैरागर	जुडर
१	१
कवरिहा	करहिया
१	१
महवा	मैर
१	१
पडाडावर	धुरहा
१	१

वीरा वं वस्ती पाडे पदारथ

१ दा:

करहिया विजुरिया पं भीषा
राई जी:——————

२

अस:	दाषली
१	१

लषवार वुजरक अस:

१

कटिया——————दाषली

१

पिपरावं अजुध्याप्रसाद चौ:
पदारथ——————

१

इमिलिया वं जगंनाथ पांडे
पदा:——————दाषली

१

कुसयारी वं स्यामलालपाडे

१ दा:

धुरपुरामचलपुरीसो पथ:
——————दाषली

१

तंपे विलदरा——
९१

असली ३६ | दाषली ५५

षालसे ६१॥ | पदारथ २९॥

असः २३ | दाषली ३८॥ | असली १३ | दाषली १६॥

जुरा——
६

असली १ | दाषली ५

जुरा १ | पथरेही १

चकैसी १ | विरदहा १

झाल १ | सिलमिली १

मुड़िया——असः
१

देउरी——दा :
१

कटिया——दा :
॥

सरनई——असः
१

धनवाही षुर्द——असः
१

मउ——दाषः
१

अमाडाडी——दाषली
१

कवुवा——असः
१

कटिया मुसकरा दा :

जमताल——दा :
॥

जुरवार रेउसा
२

असः १ | दाषली १

डिलहा पटाढी
२

असः १ | दाषली १

भेडाचटकोला
२

असली १ | दाषली १

सिलौटी——————अस:
१

गोवरिया तमुरिया
२ दाष:

बह्‌मनी—————— अस:
१

षरौधा——————दा:
१

अत्तरहरा——————दा:
१

नरौरा——————दा:

षैरा——————अ:
१

तिदुहटा——————अस:
१

चपुरा——————दाष:
१

तथाकरिया——————दा:
॥

करियामझियार ——दा:
२

घुघरा——————दा:
१

बयला——————दा:

जरियारी——————
४

अस:	दाष:
१	३

जरियारी	सिमरवानी
१	१

टिटवा	बंधवा
१	१

करहिया——————अ:
१

बनगवा——————
१

पैपषरा——————
१

बुढा——————
१

देवरी——————दा:
१

महुवाडाडी——————
१

मौहगवा——————
१

जुगिया——————
१

तपै देवरा——————————
१३७

असली	दाषली
५६	८१

षासदेउरा——————अस:
१

रूहनिया
१८

अस:	दाष:
६	१२

रहुनिया
१

वेदरी
१

पसाडी
१

मानपुर
१

विहुडी
१

सल्हना
१

मुढी
१

तमुरिया
१

वनहरा
१

वनहरी
१

असाडी
१

घुवरी
१

विजौरी
१

मझगवा
१

नन्हवार
१

पठरा
१

षरषरी किरकिचहाई
२

अस:
१

दाषली
१

मौः काटी—
१६

अस:
५

दाषली
११

काढी
१

दरौंडी
१

नन्हवार
१

हडषोहरी
१

कुटररिया
१

षिरया
१

अमहटा
१

सुनहरा
१

पडमरी
१

चपहनी
१

सतवार
१

सुडहरा
१

नडेरीजियार
२

सुरभा गुजहटी
२

नन्हवावौवदेरिया
२

गौरहा—अस:
१

अस:	दाष:
१	१

रजवारौ तुहतरा
२

अस:	दाष:

गुड्डु——————दाष:
१

परसवारौ————दाष:
१

टिकरवारौ वम्हनी
२

अस:	दाष:
१	१

गडौहा————
१

मुहगवा ————दाष:
१

कुदरेई——————दाष:
१

कन्हवारौ————
१२

अस:	दाषली
४	८
कन्हवारौ	वनपुकार
१	१
मटवार	पिलौनी
१	१
पिपरहट	पडरिया
१	१
विजरई ईमलिया	वडषेरा
२	१
हरदुवा	मिउरा *
१	१

१०४

चौधरियांन व़ा कानूगोयांन व़ा जिमीदारांन वा मुकदम परगनैं तपे पास इलाके मैंहर वगैरे मुतैलके मुलुक वुदेलषंड के मालूम होइ आंगैं जो पहिलैं अवसैं सन १८१४ ईसवी मैं दरषास वरमूजिव ठाकुर दुरजनसिंघ परलोक भऐ की जो लगतें ही अमलदारी सरकार कंपनी अगरेज वहादुर के मुलक वुदेलषंड मैं तावेदारी मैं हाजिर हुवे सनत्र माफी की गांवौं इलाके मैंहर कीं श्री हजूर गवर्नर जनरल वहादुर सैं मिली। ठाकुर मजकूर के पीछैं सरकार नैं उनके चाहे वरमूजिव जीते ही वहाल रहना जागीर का दौनौं वेटौं की सौझ मैं तजवीज किया और पीछैं वापके दौनौं वेटौं मैं आपुस मैं झगरा परा।

*Foreign Dept., April, 1811, No. Nil.

ग्रेही बात वाजवी जांनी कै षास मैहर और उहां का किला ठाकुर विसुन सिंघ कौं जो वड़ा वेटा ठाकुर दुरजन सिंघ का है उसकौं सौपां चाहिये। और इस सिवाइ सव गांव इलाके जागीर ठाकुर के हीसा वरावर आधौंआध जमापर दौनौं वेटौं मै ठाकुर विसुन सिंघ वडे औ ठाकुर प्रयाग दास छोटे हैं कर दिया चाहिये। सो ठाकुर विसुन सिंघ नै करारनामा पास कलम का पंक्का करनै तावेदारी के लानै सरकार मैं गुजारा इस वास्तै ईह सनध मुहुर औ दसकत......... (मूल में इतना स्थान रिक्त है)............माफीगांवौ तपसीलवार माथ मव अमलवाव समेत्त और साय़र जो ठहरी ठाकुर मजकूर कौ पुस्तदर पुस्त सरकार तैं दई गई। जव तक ठाकुर मजकूर औ उनकी आल-अवलाद करारनामा की कलमौ पर कै जो सरकार मै लिष दिया है उसी वरमूजव सदांमद कायम रहैगे। इसी तरह सरकार तै जपती नही हौनै की है। चाहिये कै तुम लोग सव ठाकुर मजकूर कौ मालिक मुषत्यार उन गावौ का जानौ। और ठाकुर कौ चाहिये कै गावौ कौ तरँज्जुत मै आवाद करैं और रैयत कौ राजी औ षुसी राषै और उसकी आमदानी सरकार की तावेदारी और पैरष्वाही मै षर्च करता रहै.......

ऐकत्र मौजे—
२९८

असली १२१ — दाषली दा: १७७

तॅपे मैहर—
६१

असली १७ — दाषली ४४

मैहरषास—
६

असली १ — दाषली ५

कुलहाईउरफ मैहर १ — उदैपुर १
सहिलरा १ — सुनराई १
अरकेटी १ — अमर १

जीतनगर—
७

असली १ — दाषली ६

जीतनगर १ — वघाउ १
इटहरा १ — विसहरा १
कलियानपुर १ — पथरौधा १

चदौल—दाषली
३

गहवरा
लषवारपुर्द — असली
१

चदौल १ | इटहरा १
समोधा १
सरर्रा १ | कई १
तंपे डोली के १२
असली २ | दाषली १०
डोली १ | पोडी १
कुईलिया १ | वरा १
पलौध १ | कारी १
ईटहरा १ | गवरौल १
अमाकोल १ | पाली १
नौवस्ता १ | सिवाई १
तंपेगैतराई ६
असली १ | दाषली ५
गैतराई १ | मडवा १
जारा १ | कुनिया १
रौडा १ | तिमुवा १
तपे भैसवाही २२

तंपे सकरी १६
असली ६ | दापली १०
सकरी ५ | गनेसपुर ३
अस: १ | दाषली ४ | अस: १ | दाषली २
सकरी १ | गाडा १ | गनेसपुर १ | लहदर १
पैंवहा १ | कउवा १ | कुम्हरवारौ १
अंतरवेद १
लुहरवारौ—दाष: १ | पहिरघटापुरैनी २
अस: १ | दाष: १
षरहटा—अस: १ | ईमिलिया—दाष: १
सलैया—दाष: १ | दवेरी अस: १
वरस वारौ—अस: १

असली	दापली		
६	१६		
भैंसवाही	मझियारी	जाजागढ	मनौर
१	१	१	१
टिकरिया	घुनसर	हरतला	घनौची
१	१	१	१
सहतरा	पोडीपडरिया	कुदरी	मनघटा
१	२	१	१
सिघवारौटोढी	देउसिर	परवानी	मझमझा
२	१	१	१
ईदार	वदेरा		
१	१		
धनगवा	पिपरिया		
१	१		
सगवार	पौनिवा		
१	१		
घिरवा	दीथी	महतैनिया	मुरगवा
१	१	१	१
सिजहरा	वनिगवा	अमवारी	ईदहा
१	१	१	१
देउरा	झिरिया		
१	१		
बुजबुजा	गढहुवा		
१	१		
षरना	कारौषर्द		
१	१		
करौदीवुजरक	विजपुरा		
१	१		

घिरवा—————— १०

असः	दाषली
३	७
घिरवा	घुरौंड
१	१
हथैडा	लसहर
१	१

कुदरेही वम्हनगवा पं ईछाराम बंछराज दुबै २

असः	दापली
१	१

तंपजुकेही —————— १६

असली	दाषली
७	९

षेरहनी / १ — सेमरिया / १
वकेली / १ — वरहटा / १
लरिपडा / १ — छाता / १

तपे गुडेहा—
१२
अमली / ४ — दाषली / ८
गुडेहा— / १ — वसौधा / १
पतरिया / १ — चोरी / १
पिपरा / १ — षजुरा / १

लुकामपुर / १ — सघनपुरा / १
चिठहाई / १ — हरदुवा / १
गुगडी—अस: / १
सिमरा— / १
गुगड—अस: / १

तपे ईटौरे क—
३६
असली / १३ — दाषली / २३
मौजे कुडवा / ४ — आमातारा / ३
अस: / १ — दाष: / ३ — अस: / १ — दाषली / २
कुडवा / १ — महतैनिया / १ — आमातारा / १ — पगरा / १

जुकेही / १ — पचपेडी / १
षम्हरिया / १ — कुसमी / १

षर्रा / १ — कैमतराई / १
धुवहा / १ — ददौरा / १
विलेदरी / १ — अमवा / १
उरदानी / १ — धनेडी / १
सुहनिया / १ — करौदिया / ३
करौदिया / १ — नैनिया / १
जमुनिया / १

पलौहा—अस: / १
नवोगाव सहौला / २

धनवाही— / ४ — हरदुवा / २
अस: / १ — दाषली / ३ — अस: / १ — दाषली / १
धनवाही / १ — जौहरा / १
वहिरगवा पोडी / १ — १
ईमलिया— / २ — लषनपुरा परादथ दान साह सौ—अस: / १

पिपरिया उढकी कौहरा —
१ १ १

षास ईटौरौ——षिरवामझगवा
१८ २

असः दाषः असः दाषली
६ १२ १ १

इटौरौ धरीछिदहाई
१ २

षटेसर लुहरवार
१ १

धरमपुरा चोराक
जरगोडी नेरा
२ २

देवरा वनजरिया
१ १

माद जरगोडी
१ १

धरहर ईटोवा
१ १

मलेरौ चाका सवार
१ २

तपे पलौहा के पास से————————
१२

असली दाषली
१० २

पथरहटा—असः सभागंज——असः
१ १

पालापकरियाडरिया हरदुवा————
३ १ असली

असः दाषली
२ १

कुम्हरा—दाषः मौधा
१ ३

असः दाषली
१ २

असली दाषली
१ १

तपे झिरिया————————
५२

असली दाषली
१८ ३४

वरही———— मौजेसिकनौडी
२८ १२

असः दाषः असः दाषली
४ ८

बरही उवरा
१ १

सिकनौडा देवरी
१ १

पवैया वरतिया लुरमी षमतरा
१ १ १ १

लुली डुकरिया षम्हरिया निगहरा
१ १ १ १

जुगरेही देवरी धौर सिजहरी
१ १ १ १

विरवै———— गुरैया कुडहा
४ २

असली दाषली असली दाषली
१ ३ १ १

विरवै नौमी
१ १

लोही षोहीकुदरा
९ ९

गुमेही————असः मनौरा ——असः
१ १

मौरहा———दाषः कुसेडी———असः
१ १

मतवारा—असः विलहा——असः
१ १

मढेदर मुतिहारी मुतिहारी दुसरी अः
२ १

असली दाषली
१ १

मौधा १ — सूकवानी १ — वहिली १ –

षिरवा कुठिलगवा २ — असली १ दाषली १

अमाडा डीपनसोवर २ — असली १ दाषली १

डुडीवुढगार—— २ — असली १ दाषली १

नौगवा——दाष: १

देउरी असली १

चदमड—असली १

वरा—— ४ — असली १ दापली ३

जोवा ३ — असली १ दापली २

टिघरा——असली १

टिकमुलीपर्द दाष: १

टिकसिली वुजर: अ: १

अमदरा—अम: १

वरा १ — कुवरी १ — जोवा १ — वंदरिया १

परसवारौ १ — चटकोला १ — वह्मिरा १ –

मकरी——दाप. १

डुगरगवा—दा: १

सुनवरमा——अस. १

रूहिनिया अ. १

सारन नौगवा २ — अस: १ दाषली १

धरखई—दाष: १

षिरवा——अस: १

भैसासूर दाष: २

लुढौतीगुडहारी २ — अस: १ दाषली १

गढवाविर्तैका अस: २

हनौता——दा: १

सलैया ६ — सलैया १ — भरेवा १ — वैहरा १ — वरोह १ — उदसी १ — कीरतपुर १

धनवाही——अस: १

वेहार——दाप: १

मुहनिया——अस: १

वोरीपादारथ वं राम चंद दुवे १ अस:

धुनवारौसियरा वं ईछाराम पाडे २ — असली १ दाषली १

भरौली वं वहोरी चौबे अ: १

चरीषरफरा दाषली २

धनवाही नौगवा २ — असली दापली

ईटहरा पं पंचम मछहासौ १ अ:

पटसार वं केसरी तिवारी १ अस:

१ १
षिरवा—दाषली हरैया——
१ ४
असः दाषली
१ ३
हरया धौरच
१ १
मोहगवा अगासी
१ १

कन्हवारौ गुसाई
रतीपुरी
१ असः

तपे नदावन——

७४

भदनपुर वं वंछराज ककरावंदुद-
दुवे पदारथ—असः दादु——
१ ४
असः दाषली
१ ३
ककरा जनवानी
१ १
वरदिया वरदिया
षुर्द वुजरक
१ १

असली दाषली
२८ ४६
नदावनषास— किचलारी—असः
६ १
असः दाषली
१ ५
नदावन महुनिया
१ १
शोधन सिजपुरा
१ १
चंदना वरारी
१ १

उमरौडवंषुरषुर धनेडी पंहडी पाडे सो
१ अः १ असः

पिपरहट वं विसाहु मुहरवा वं ठाकुर
—— राम पाडे
१ दाषः १ दाषः

तालीरुहुनियाषम्ह गवदीनिषनिया
रिया—— विरहुली——
३ ३
असः दाषली असः दाषली
१ २ १ २

तपे रैगवा——

——पडरिया——दाषः हरैयाकौल—दाषः
१ २

५१
असली दाषली
३१ २०
षालसे पदारथ
४४ ७

षितरैली——दाषः जगुदा गरौधा सिमरा
४ ३
असः दाषली अः दाः
२ २ १ २
षितौलीषुर्द षितौली वुजरक
१ १
मिढकी कुदरी
१ १

असः दाषली असः दाषली
२५ १९ ६ १

रैगवा—— २
असली १ दाषली १

ईटवामानी—— २
अस: १ दाषली १
मौहानी १

बंजारी—— ४
अस: ३ दाषली १
वनजारी १ टीकर १
चपना १ दरौडी १

षम्हरिया—— ६
अस: ३ दाष: ३
षम्हरिया १ पटवारौ १
जटवारौ १ मदनपुरी १
मदनपुरा १ वाउनमार १

अमरैया——अस: १
सिमरिया——दाष: १
मवई गिढवारौ २
रासीपुरैनी——दाष: २
अस: १ दाष: १

मुहास—— ४
अस: १ दाषली ३
मुहास १ पहरिया १
जुगिया १ वडषेरा १

गगौटी—— ७
अस: २ दाष: ५
गगौटी १ वरैडा १
षषरी १ पडरिया १
तिदुरी १ भैंसवाही १
कैलवार १

करेला मरकेसाअमाढ ३
असली १ दाषली २

हदरहटा—— ४
असली १ दाषली ३
हदरहटा १ हदरहाटी १
उटी १ वरवाही १

वम्हौरीवगदरा २
अस: १ दाषली १

मिडरा——दाषली १

वडोगाव——अस: १

कुवाहर वाह २
अस: १ दाषली १

पिपरिया—— ४
अस. १ दाषली ३
पिपरिया १ निकछी १

सलया—— ५
असली १ दाषली ४
सलया १ वकेला १

अजवाईनपास ६
अस: १ दाषली ५
अजवाईन १ चौषंडी १
वंधी १ मद्य १
भदई १ कमता १

सूपाताल ६
अस: १ दाषली ५
सुपाताल १ लौवा १
अमगार १ ईटवा १
रहनिया १ सलया १

रसौडी——दाषली १

रीवारौ——दाषली ३

वडछैका——अस: १ षुसीकोला: दाषली १

रिवारौ १ कुठिया १
कँदा १

मझगवा—— ५ हरदूवाबेजरक १
अस: १ दाषली ४
मझगवा १ पुरैनी १
बराडी १ मानपूर १

कारीतलाई—— ६ परसवारौ ३
असली १ दापली ५ अस: १ दाषली २
कारीतलाई १ कुसमा १ परसवारौ १ मईरय १

पटवारौ १

बम्हौरा १ जसो १ पैंयषरा १

वरा——अस १ हरदुवाषुर्द दाष: १

षषटा १ सूरजपुरा १

पलवारौ——अस: १ कल्हरा——दाषली १
जोवी—— ४ गछवाजोवा २
अस: २ दापली २ अस: १ दाष: १

सरैठाकरौदिया २ जमुवानी—— ६
असली १ दाषली १ असली १ दाषली ५
जमुवानीषुर्द जमुवानी बुजरक

जोवी १ पूछी १

षेडवा १ पडहेरी १
हरदुवा १ वडसाकर १

सुतपतरी १ सुनवार १

करहिया——अस: १ मझगवा——दाष: १

गुरैया १२ वदेरागुगुवार २
असली ४ दाषली ८ असली १ दाषली १

पथरा—— १——असली विस्तरा—— १ असली

गरैया १ हनौता १

पडषुरीकासी काय गौदरा——असः पिरहटी गौंदिन
मुहनिया ३ १ १ १

असः दाषली पटिहरा वरी
१ २ १ १

रजरवारौ——असः गजनौडीपंगनेससौ झाझ पचौहा
१ पदारथ——दाषः १ १
१

छिरिया पं मोती अग्न सलैया पं निहाल चाकी कैमोरी
होत्री——असः सुकल——असः १ १
१ १

मलया वंजुडी कवि वम्हनगवा वं अहलाद जुनवानी माद
१ अः सौ १ दाषः १ १

करसडा वं अधारसौ जटवारौ वं दरयाव सौ भटोराटीकर पिपरा——असः
१ अः १ दाः २ १

देवसर वं संकरसौ वषटा पं विसम्हर सौ असः दाषली
१ दाषः १ दाः १ १

घुटारी——दाः वराडी——दाः
करौदिया वं विसराम वरवारहुनिया वं गढ वराटीकर—— वोदा—— दाषली
सौ १ अः पतिसौ २ २ १

असः दाषली असली दाषली
१ १ १ १

अमवारी वं महावाम्हन कोईलिया वं गंग सलया कौहारी भुसंडी——
सौ १ असली भाट सौ २ दाषली २ ४

सलया वं मंकर वडगैया सकरी पदारथ असः दाषली असः दाषली
१ असः १ दाषः १ १ १ ३

भुसंडी भौरहा
१ १

तपे अजवाईन——
१०२

पिरवापार ईटहुरा
१ १

षालसा ९३ पदारथी ९
असः दाषली असली दाषली हनौतागजगोन दाः विलदराहथौरा
२६ ६७ ४ ५ २ २

असः दाषः
अमहा मरगोठी भदोरा सुरौहा १ १
१ १ १ १ वसाडीवरौडा जहरमोहरा——दाः
रहिवार २ १

फा० २५

धनवाही प्राधागाव् सुतरी—— अस: दाप:
दा:—— —— १ १
॥ ३
अस: दाषली दुवेही——दाप: नरवारौपुर्द——अ:
१ २ १ १
सुतरी मझगवा
१ १
हटादादर —— नरवारौ वुजरक दा: धनवाही वुजरक
१ . १ १ अ:
मुहगवा—— वरनमुहगवा——
४ ४॥ उमरी फिफरी हनौता——दा:
अस: दाष: अस: दाषली २ १
१ ३ १ ३॥
मुहगवा लौगा वरन मुहगवा असली दाषली
१ १ १ १ १ १
कोठी——दाष: वरेठी——अस:
गुडु कुठियापदारथी देवगवा जमुराई
१ ललू १ १ १ ईठवा——अस: भटगवा——अस:
धनवाही .
॥ —
गुहावल——अस: पथरहटा पिपरिया मंडई——अस: नादन वं मुरलीधर
१ २ दाष: १ ठाकुर रामदुवे पदा:
५
वम्हौरी——दा: छिदहाई पिपरिया असली दाषली
१ १ अस: २ ३
वगैहा—— भीडपार पडरिया पं नादन राईचौर
२ हेमपरीहा पदा: १ १
२ २ करौदी पोडी
असली दाषली अस: दाषली १ १
१ १ १ १ ववुरहा ——
सिरौंजा गडरिया पं हडतला पं कामदेव १ .
सुचेरे दुवे—— ——दाषली कंचनपुर वं गोविंद जमताल वं निरंदड
२ १ दुवे—— भरया पदारथ—दा:
असली दाषली ३ १॥
१ १ अस: दाष:
कछराडी पं उर्द षलैधा पल पिरथी १ १
गल सौ अस: कंचनपुर रिगरा जमताल कनियारी
१ १ १ १ ॥ १

हनौता पं जुडी
अस:
१

उरदानी पं
सेदु अस:
१

सलैया पं राम
दउ
१ अस:

तारीष १ माह मई सन १८१४ ईसवी मताविक ता: ११ ज्मादुलवल सन १२२९ हिजरी माफक वैसाष सुदि १२ संवतु १८७१

बुढेलुवा
१

पिपरवाह वं वहोरी पदा:——अ:
१

छदानवरिठिया वं जगनाथ पाडे पदा:
१ दा:

करसडा वंसंभूपाडे पदा:——दाष:
१

तिलगवा वं स्याम लाल पांडे पदा:
१ अस:

ममरौरा——दाष:
१

आमाटोला वं वैजु तेवारीयदा:
१ अस:

कटनहा वं गोपाल पांडे——अस:
१

कासाचमरवाह वं गुमानविलौहा——
२
अस: दाष:
१ १

गोवरी वं वसंत दुवे ——अस:
१

बरहिया पं स्यामपंगै वीसौ——अ:
१

पहारी धरमपुरहा ——अ:
१

ठवरई पं० उजियार अ:——
१

मुडीपंरतन नमौहा दा: ——
१

मझगवाषुर्द वुजरक पं स्यामलाल।—दा:
२

करौंदी पं जै सिंघ कविदा: ——
१

सगौनिया वंधु जोतषी——अस:
१

ईमिलिया पं रघुनाथ तेवारी ——असली
१

——*

*Foreign Dept., April, 1811, No. Nil.

१०५

राम १

पढा सही

कोल करार पढा परीगने कोल असीला सरकार जवनपुर शुवै इलाहाबाद परीगना कोल असीला माल साएरदरोवसत परीगना वरीआर सीघ के सेवा मोः। नेवादा के मोवलीग पैसठ हजार एक रुपैआ अंके पेहुं ६५००१) पढ़ा लीखी दीआ। खातीर जमां से रुपैआ कीसत वा कीसत साल व साल दीहा करै। अमल मां मुल अमल करही जगह आवाद राखही। सन ११४५ संमत १७९४ साल मी० कातीक शुदी ७*

१०६ (क)

पाती चौवे दरियावसिंघ वनाम साहेव अजंट । आपर सिवदास महाजन रीवा वाले की वावत षत आयौ आप कौ कै महाजन मजकुर के लरका कौ सेष वादल. . .ठोरन की अवेज मै रीवा ते पकर ल्याये है। सो महाजन मजकुर के लरका कौ वास्ते मजकुर कौ इहा भेज दीजौ। ता कौ सेष मजकुर रीमा मैं वहुत रोज चाकर रहे अरु चाकरी न पाई। जव ये चाकरी मागै तव राजा कहै दैवाये देत है सो झुठी वातै इन सो कहत रहे। जव लौं षर्च ईन के पास रहो तवलौं ये उहा रहे आये। मागत रहे। जव इन के पास षर्चु न रहो औ नौकरी और ढप सो मिलत न देषानी तव नौकरी की उमा पावनै हतो। ताकी अवेज मैं महाजन मजकुर के लरका कौ ये पकर ल्याये कै जो कोउ घर वैठे चाकरी हमारी दै जैहै सो लरका कौ लै जैहै। ता पाइ अव रीवा वारे राजा की पाती हम कौ आई है कै सेष मजकुर अपनी नौकरी लै जाई। लरका कौ

*Foreign Dept., 1811, No. Nil.

छोड देई। सो अब सेष मजकुर को अरु उनको फैसला भयो जात है। अरु हम तौ हरयेक सूरत से सरकार के तावेदार है। सिषापनु होई सो मेहरवानगी कर हमेस लिषबे मा आवै। जेठ वदी ३ संवत १८६८ मुकाम कालिंजर—*

(ख)

पाती चौवे दरियावसिंघ वनाम साहव अजंट। आप रीवा वारे सिवदास महाजन के लरका बावत आयौ। सिषापनु जानौ। ता कौ हम तौ हरयेक सुरत मै तावेदार है। सरकार के अरु इहाते श्री मुनसी गोपालसिंघ की विदा करी है सो पीछे ते हाजिर होत है सो विती सरकार मै ये जाहिर करिहै। सिषापनु होई सो मेहरवानगी कर हमेस लिषवे मै आवै। जेठ वदि ९ स: १८६८ मु: कालिंजर

(ग)

पाती चौवे दरियावसिंघ की वनाम साहेव अजंट। आपर रीवा वारे सिवदास महाजन के लरका के ज्वाव स्वाल वावत पं० श्री पटैरिहा भारथ साहि श्री मुनसी गोपालसिंघ कौ पठवाये है सो विती ये जाहिर करिहै। अरु मुषत्यार कै वुलाईवे पाई मरजी आई रहै सो पीछे ते हाजिर होत है। सिषापनु होई सो महिरवानगी कर हमेस लिखवे मै आवै। जेठ वदि १२ संवतु १८६८ मुकाम कालिंजर*

१०७ (क)

श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री येकतदारुंदौलै मुंतजेमुल-मुलुक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालत जंगजू येते पं० श्री चौवे दरियावसिंघजु के वंचनै। आपर सरकार के सुभ स्माचार सदा भले चाहीजै। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। आप की मेहरवानगी तें आपर षत आयो। सिषापनु जानौ। लिषवे मै आई कै महाजन के लरके के संग सेष वांदल की वोलाईवे की तागीद गई हती सो उनकौ भेज दीजौ। तहकीकाद व तजवीज वह के हरकतौ की हो जाईगी। ता कौ इन के सिर इलजाम वारी वात कछु होती तौ हम तैसी विंती सरकार

*Foreign Dept., 10th June 1811, No. 230
*Foreign Dept., 10th June, 1811, No. 230

को लिषते रही। इन दलगंजनसिंघ की चाकरी करी है सो तलाव मैं ठोर पाये हुते। ते सरकार की आगा के ठहरे सौ वै ठोर फिरडी गये। इनकी तलव वुडी सो वडी हरंकत तौ इन कौ ग्रा भई रही। रीवा वारेन के इन कौ चाकरी पावने है ता के लाने वे महाजन के लडका कौ घर ल्याये हते सो सरकार की मरजी भई कैल (र?) का कौ इहा पठवाई दीजौ। तलव का फैसला हम कराई देहै। सो लरका कौ हम हाजिर उकर पठवायौ। अब रीवा वारेन सैं ये तलब पावे। सो मरजी हुवे मैं आवैं। पटौ सरकार की नजर के लानै इन दई पठवायौ हतौ। भारथ साह पटैरिहा गुपालसिंघ मुंसी के हाथ सो आपने नजर कराई लयौ हु है। वे ही पटे के लिषे वरहुकुम इन्है तलव पावने है। सो तलव दिवाईवौ न दिवाईवो सरकार के आधीन है। जैसी मरजी मैं आवैं तैसी करवी। अरु बादल कौ वादै बुलाइवे की माकुपी तौ सरकार कराई दई हती। जब करारनामा चार रोज की मुहलत कौ हमारे इहा के भलेमानस सो लिषावौ रहे तब लरकई मरे को लिपायौ हतौ बादल के बुलाइवे की जिकर उमैं कछु ना लिषाई हती उ करारनामा की नकल सरकार नैं इहा लिख पठवाई हती ता ते हमैं मालुम भई अरु तावेदारी कौ धरम आई सो हम वजाई दयौ। लरका के लाने मरजी भई सो लरकैं हाजिर करदयौ। अब ई वात के सरकार सौ उमेदगार हुँ कै जी मै ये रीवावारिन सो अपनी तलव पावै सो उनकौ तागीद लिषवे मे आवैं। अरु जे जहा काम मतलब हमारे अटके है तिनके दुरस्ती कराई देवैं पाई। आप की मरजी होई गई है सो सवाल दये पै उनको फैसला हम कराई पाई है। सिपापनु होई सो मेहरवानगी कर हमेस लिषवे मैं आवै। जेठ सुदि १० स: १८६८ मुकाम कालिंजर—*

(ख)

श्री साहेववाला मुनाकिव श्री साहेब आलीसान श्री येकतदारुँदौलै मुंतजेमुल-मुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेब बहादुर वसालतजंगजू ये ते श्री चौवे दरियाव-सिंघजू के बांचनै। आपर सरकार के स्माचार सदा भले चाहीजै। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। आप की मेहरवानगी ते आपर षत आयौ। सिषापनु जानौ। लिषवै मैं आई कै बादल के बुलाने की माकुपी हम नहीं करी है ताकौ जो माकूपी आप ने न कर दई होती तौ जैसे करारनामा कैं महाजन के लरका की लिषाई लई हती तैसे बादल उ कौन लिखाई लेई है। महाजन के लरका आये वाद पीछे बादल आयौ चाहै सो बादल के आइबे की माकूपी की विंती तौ पहिल हमारे इहा के भलेमानसन ने कर लई हती। पीछे करारनामा लिषौ रहौ अरु ना बादल कौ कछु लानछन लगत है। ठोर चाकरी मैं पाये रहै ते ईन फेर ई दये है रही। रीवा वारिन की चाकरी इन करी है सो उन से तलव

*Foreign Dept., June, 1811, No. 256

इन्है पावने है। सरकार नै षत मै लिष पठई रहे कै महाजन के लरका कौ वादै पठवाई दीजौ उन की तलव कौ फैसला रीवावारिन कौ लिष कै हम कराई दै है। सो हम सरकार की मरजी की करी। अव आप तलव ना दिवाईवै कैसी किसा लिपियत है सोइ वात मै रीवावारिन से तलव पाइवे कौ इरादा इन कौ वनो रहो रहो। मुकंरर तौ आपउ कौ चाहियै कै इन की तलव कौ सुरझाव उन से कराई दीजै। काहे तै कै या वात लिष कै सरकार नै महाजन के लरका कौ बुलायौ है। सिषांपन होई सो मेहरवानगी कर हमेस लिषवे मै आवै। असाढ वदि ४ संवत् १८६८ मुकाम कालिंजर

१०८ क

श्री मेजर साहेव समसेरजंग केलो साहेव वहादुरजी ये ते श्री महाराजकोयार श्री वहादुर दिवान गुपाल सिघजूदेव के वांचनै। आगे आप के स्माचार भले चाहीजै। इहा के स्माचार भले है आप की मेहरवानगी तै। आगे हम रस्ता पकरे चले जात हुते तौ के आप के हरकारा सौ भेट हो गई। सो जौन आपकौ हरकारा कहै जुवानी सो हमारी कही जानवी। अरु परके चौमासे मे हम आप को चिती लिषी हती सो मालूम (खंडित) ताकौ जो आप की करी पंकाइत होई तौ पंक्तिन मै पंकी कर दीजै तौ हम आप की वात के भीतर है। वहुत चिती क: लिषै। सिषांपनु होई सो लिषत रहिवी। असाढ सुदि ११ संवत १८६८—जी मैं हम जिमी सिर होई सो कर दीजै—*

(ख)

श्री महाराज कौमार श्री देवान वहादुर गोपालसिंघजूदेव ये तै श्री नादुंल-जहान इप्तषारदौलैमम्ताजुलमुलक मेजर केली साहेव वहादुर समसेरजंग जु के वांचनै। आपर उहा के स्माचार भले चाहीजै। इहा के स्माचार भले है। आपर चिठी आई। हवाल मालुम हुवा। और तुम ने जुवानी संदेसा मचल जवाहिर हरकारा हाथ कहा था सो हम ने वडे साहेव कौ लिष भेजा हता सो उहाते जुवाव आया कै तुम देवान गोपालसिंघ कौ लिष भेजो कै पारसाल के चौमासे मौ लिप भेजा ता कै जिमीन मिलैगी चारि सै रुपैया का दर माहा महीने का मिलैगा सोउ

*Foreign Dept., July 1811, No. 294

अब लिलवो है सो आप जानत हौ। और देसवारिन की लिषियै सो का लिषियै। देसवारी तौ या चाहत है कै ये वडे साहेब की सेवा चाकरी मैं मैं आवै। सो या आप कौ सब मालूम है। और जौन हमारी जिमी जागा है सो वडे साहेब के हरकारन के गुजारे माफक नही आये पैं हमारो सब परवार पलत है। ता कौ हमारी जिमी छुटे चार पान्च बरसै भई। अरु साल मै दो येक वेर वांदा से लिषी आई कैं मिलौ। ता कौ हम आजु लौं कबूल नाहीं करी है। ताकौ अब आपकी लिषी आई है सो जौन मरजी वडे साहेब करहै सो हम करहै। ता कौ और किसा हम सरकार कौ लिषै तो का लिषै। वडे साहेब तौ जंबूदीप का राजा है और फौज और सब है। सो उन के सब बातैं माफक है कै इतने मै गुजारा होत है कै नाही होत आई। अरु हमारी विती तौ वडे साहेब को आप की मारफत है। सो वडे साहेब चाहैं वादा होति नवार देई चाहै या होनि निवार दयै। जामै हमारी रोटिन का गुजारा चलो जाई सो कर देवै। और वडे साहेब तौ राजा है ता कौ हमारो सिरस्ता अबै तैं अरु जेठन के आगे सैं रहो आवो है। जिमी जागा तै सो चरषारीवारिन सौ वा कुवर सोने जु सौ व कालीजरवारिन सौ वा उचहरा-वारिन सौ पूछ देषवी या बाल सब और जब ते हम करहा वाये है तब ते हमारौ सिरस्ता सब सौ पुछ लैवी। अरु आगे २ पटना मैं दो लाष की जिमी पाउत रहे है सो सब सौ तलास कर लैवै। अउ अब आप हमारे भलेमानस बुलाईवी सो इन सौ जुवाब सुवाल वड़े साहेब को सुना कै सो हम कौ बुला पठैवी सो हम वडे साहेब की चाकरी मैं हाजिर हू है। अरु और आगे हम कौ वड़े साहेब ने बुलावो तब हमारे सब सवार प्यादौ पांच छै हजार रहतौ तब या ठहरी कैं सौ मानस सौ भेट करौ सो हम ने करी ताकौ जौन भलेमानस हमारे बीच मैं हतैं अरु उहाह तैं तिनने हम सो यां कही कै तुम कौ कैद करत है सो तुम भगौ। सो हम भगे। सो येक तौ या ठहरी अरु दुसरी वेर लटवीटर साहव वुलावो परनामैं। सो ये ही तरा इन विचारी सो या समझनैवी और आप कहत है कैं दो वेर आये अरु भग जात है। सो हम आप को लिषी है। सो समझ देषनी। अरु रीत गैररीत हमारी तमाम बुंदेलषंड के भलेमानसन सो पुछ लैवी राजा राम सौ और राजा बषत वली तौ हम पै इतराजी करे है। सो वडे साहेब की समझी है। और जासौं चहवी तासौं हमारौ चाल गैरचाल पुछ लैवी। और राजा हिंमत वहादुर के हम चाकर हतैं सो तमाम रिसालौ ककरहटी पै धर गये तैसो जब कौ हम वांदा रसालौ पहुचावन गयै ते तब कौ उहा वेली साहेब हते। सो तमाम किसा हमारी वै जानत है। अरु जा की हम चाकरी करत है सो नोन की जानत है। दुसरौ काम नाही जानत है। और ना फिर और ठाकुर कौ जानत है। वो ही गंदी कौ जानत है। और आप को लिषै तौ का लिषै। कै वडे साहेब ने सेवा चाकरी कराई ना हमारी विती सुनी। सो हम सब किसा तरे सिरेलौ लिषी है सो जानवी। और हमारे भलेमानस बुला पठैवी सो जुवाब स्वाल करै सो सुनवी। सो इन की जुवाब सुवाल भये हम

की थांतरनामा लिषवी। सो हम वडे साहेब की सेवा चाकरी मैं हाजिरहु है। सावन वदि ९ संवत १८६८—

१०९ (क)

नकल श्री साहेबवाला मुनाकिव श्री साहेब आलीसान श्री ग्रेकतदारुदौलेमुंतजेमुल-मुल्क मिस्तर जान रचारडसेन साहेब वहादुर वमाल्तजंगजु ग्रे ते पं० श्री चौवे दरियाव सिंघजू के वांचनै। आपर सरकार के स्माचार सदा भले चाहोजै। ता पीछै इहा के स्माचार भले हैं। आप की मेहरवानगी तैं आपर पत आयौ। सिषापनु जानौ। सेष दोस्तअली इषवारनवीस इहा' आयै। ता कौ आगे श्री वेली साहेव सौ जव हमारौ ज्वाव स्वाल ठहरो है तव ग्रे वातै ठहर गई है कै इषवार हमारे ईहा न रहनै। अदालत कौ दषलरहै। अरु हमारौ कोउ भैया भतीजौ चाकर फूटकै वताई सो न सुनवे मैं आवै। अरु अव लौ अंगरेज वहादुर की सरकार मैं या वात नही भई है कै जीसौ जौन वात कौ करार हो जाई सो फिर वदले रही। इहा तो इषवार लाइक कछु कामही नही आई। इषवार इहा कौ है। सो उहा सव जाहिरउ रहत है। हमारे इहा के भलेमानस, सरकार मैं वनही रहत है। अरु हम हरयेक सूरत से सरकार उके है सो या मरजी ना हूवे मै आवै। सिषापतु होई सो मेहरवानगी कर हमेस लिषवे मैं आवै। असाढ सुदि ६ सं० १८६८ मु: कालीजर*

(ख)

नकल श्री साहेबवाला मुनाकिव श्री साहेब आलीसान ग्रेकतदारुंदौलै मुंतजेमुल-मुल्क मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसाल्तजंगजु ये ते पं० श्री चौवे दरियाव सिंघजू के वांचनै। आपर सरकार के सुभ स्माचार सदा भले चाहिजै। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। आप की मेहरवानगी तै आपर षत आयौ। सिषापनु जानौ। अकवाल वावत मरजी आई कै उहा रहा आवैगा तौ संची षवरै लिषेगा। अवै इहा सुनने मैं आवती है कै गोपालसिंघ किहा तुम्हारे हरकारा पाती आवती जाती है ताकी गोपालसिंघ की लिषा पढी करने कौ हमारौ कौन इरादा है। अरु कवै हमारी पाली गई है को मानस गयौ है सो जी ने सरकार मै जाहिर करी होई। ती सौ साष पारष हो जाई। ये ही वात कौ छान कर डारियै तव कोउ झुठी वात न जाई कै है। अरु दिन वीसक की वात भई तव उचहरावारिन की जागा हो गोपालसिंघ कढे हते। सो सिवपुर कौ परगनौ हमारो है। ता कौ ग्रेक गाउ मौजे जमुनिहाई वै

*Foreign Dept., 10th August, 1811, No. 312

लुटत लये गये सो तलास कराई मगाईबी पीछै लगी सरकार की फौज चली गई। सो वै भगे चले गये। सो हम तौ सरकार के तावेदार है। फिमादिन कै लिषा पढी करवे कौ कौन चाल है। अरु आप लिषी कै जो तुम्हारे इहा अषवार न रहने का ठहराव कवितान जान वेली साहेव वहादुर सौ हो गयौ होइगा तौ उहा पुछ मगावैगे। ताकौ जौ वौ ठहरावन होतौ तौ पांच वरसै अगरेज वहादुर सौ हमारौ सलुक भयै हो चुको अपवार काहे न आयौ। अव आप या नये चाल पाट की फुरमाईस काहे करियत है। अंगरेज वहादुर के घर की रीत या न होई अरु हमसौ वेरीतवारी कवहु न हुहै। ई वात की सरकार अंछो तरा षांतर राप है। सिषापनु होई सो मेहरवानगी कर हमैस लिषवे मै आवै। असाढ सुदि ११ भोमे संवत १८६८ मुकाम कालींजर

११०

श्री करनैल साहेव वोरन साहेव वहादुर जी– येते श्री महाराज कोमार श्री देवान वहादुर गोपालसिघजु देव के वांचने। अपर उहा के स्माचार भले चाहीजै। इहा के स्माचार भले है। आपर अपनी पाती आई। मिहरवानगी जानी। अपुन ने केली साहेव कौ पाती की लिषी सो हमारे पास आई। अरु हम ने वडे साहेव के पास वांदा कौ भैजी ता कौ या जुवाव आइ कै चार सै रुपैया कौ दर माहौ लेव अरु हमारे पास आवो ताकौ चार सै रुपैया अरु पांच सै रुपैया पर हमारा इरादा नही है। हमारौ तौ जिमी पर इरादौ है। ताकौ पाच वरसै हम जि के लानै दंगा करो सो जिमी केलाने करौ। सो अपुन तौ जंवुदीप के राजा हौ। सो अपुन कौ सव वातै महरम है। अरु चार सै रुपैया मै हमारौ गुजाडा होता तौ हम आप कौ तेहू तरा विंती लिषते। अरु हम तौ या चाहिते है कै जे हमारे भाईवंद है अरु भलेमानस संग है तिन कौ षैवौ अरु जुठना जुरे जाई सो आपुकौ करो चाहियत है। ता कौ हम तौ आप कौ विंती लिषलुई ही रहत है कै जाने हमारे पेट पलै। सो आप कौ करो चाहित है। अरु लिषी के हम कौ पाती चिठी ना लिषना। ताकौ आप तौ राजा हौ। सो विंती लिषनई आवत है। अरु अपुन लिषी कै हुसियारी से रहना। ताकौ हम आप के लड़ने माफक नही है। पर पेट के वास्तै आप कौ जाहिर करते रहते है

सावन सुदि १३ सं: १८६८—*

---

*Foreign Dept., August, 1811, No. 333

१११

श्री साहेब वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री येकतदारुंदौले मुंतजें-मुलमुल्क मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालतजंगजु ये ते पं० श्री चौवे छत्रसालजू कौ आसीरवांत वांचनै। आगे सरकार के स्माचार सदा भले चाही जै। ता पीछे सरकार की मेहरवानगी सौं इहा के स्माचार भले हैं। आगे पं० श्री मिश्र दुरगा परसाद श्री पास कलम चित्रसिघ ने सरकार को सिषापनु कह्यौ सो जानौ। ताकौ सरकार मालिक आई हम तावेदार आहि। हमारी तकसीर कौ छानन होवे मैं आयो। वादल पिडारे पाई। हजुर की फुरमाइस भई। सो दलगंजन सिंघ की चाकरी वेजान मै वादल ने करी होई तौ हमारी जानी नही रही है। जव हजुर ते परवानौ आवौ कै महाजन कौ लरका पठवाई दीजौ चाकरी वादल की वाजवी हूहै सो हम देवाई दैहै। सो वादल पिडारे की तकसीर तौ हमारे जान कछू नाही ठहरत है अउ अकवालनवीस की फुरमाइस भई सो आगे माफ कराई लई हती अरु जव हम सरकार की तावेदारी उठाई हती सेवा मै हाजिर भये हुते तव वुंदेलषंड के सव सरदार, सरकार मै हाजिर न हुते। हम हाजिर भये सो सव हजुर मै रुजु भये। ती षुसी पै हजूर तै समेत कुंजी किला कालींजर कौ गिरद के गाव परगनौ जैपुर परगनो वरहौ हीरन की थानै की सनध पुस्तदरपुस्त साष दर साष आल-औलाद सौ इतनी जागा समेत किलौ मजकुर तुम सो वनो रहै। जव तलक सरकार दौलतमदार को अमल है तव तलक तुम सौ तुम्हारे किला व जागा सौ कोउ मुजाहिम न हूहै तुम कौ नानकार दई है। सो हमेसा वनी रहै। इहि तरा तो सनध वकसवे मै आई है अरु वाजवुल अरज मै जे कलमैं सरकार नै अपनी मोहर दसषत सौ हमे लिष दई है तौ मै कलम चौथी मैं या लिषी है कै मान मुलाहिजौ जैसो राजन के घर तै तुम्हारा रहो है तेहू तरा वनो रहै अरु कलम छठई मै सरकार ने दसषत लिष दये कै जो जुवान वोलै सो फेर न वदलै हमेस वनी रहै। ताकी पंकाईत इहा तै वा सदर तै कर पावै लिखौटा कर पावै इतनी बड़ी पंकाईत सरकार ते कर दैवे मै आई अव वेगुनाह वेतकसीर इतराजी भई कै आप हमकौ छेके है। रैयत वैरान होत है। हरी गावन की उजरत है। गाव पुरवा सव उ घेरकै लै गये सो या वांत सरकार के अैनवर हुकम नाही है सो हम सरकार कै अरज करत है। हमारे सव कागद सरकार दरियाफत करकै हमारौछान करवे मै आवैं हम सौ गुनाह तकसीर साबित कछू नाही है तौपैं मरजी भई है कै हम जबरदस्त है। तव हमने वकसीस करी थी अव नही करते है सो या वात सरकार इतराजी की रुहू से कहत है। अरु यातौ हमैं षांतर है कै हजूर की सरकार के दसषत नही वदलत है। हमारी इतराजी से वुंदेलषंड भरे की वेषांतर भई जांत है सो

हमारी परवस्ती पै नजर करियै सिपापनु फुरमाईवे मै आवै माघ सुदि ९ बुधे सं० १८६८ मु: किले*

११२

मुसदियान महमात सरकार जागीरदारांन व करोरियांन व चौधरियांन वा कानून-गोयांन हाल वा इस्तकबाल परगने पेनवारी मुत्तलके मुलक बुदेलषंड के जांनै जी सुनने सैं षंबर अदालत व रैयत का पालना सरदारांन सरकार कंपनी अगरेज बहादुर के दिवांन बहादुर गोपालसिंघ अपनी रजावंदी सैं ष्वाहिस सैं तावेदारी व फरमावरदारी सरकार दौलत मदार की अपनै दिल जांन सैं हाजिर हुए व छुड़ावना गुनाह साबक अपना दरषास्त करकैं इकरारनामा तावेदारी अपनै का दफे सात का अपनी मुहर व दसषत सैं दाषल दफ्तर सरकार के किया। जैसा की माफ करना गुनाह परवरस वा पालना मुत्तवसिलौका चलन रहे (खशियत) सरदारान सरकार दौलत मदारका है इस वास्ते नजर परवरस मुतवसिलन के बाजी के मौजे गडरौली वगैरे पर-गनै पनवारी माफक तपसील जैल के मसार निल्ले कौ पुस्तदरपुस्त बिलासरत नौकरी सिवाइ जिमीन पादारक वगैरा माफी की सामल वधोवस्त सरकार के नहीं हैं। नानकार मुकरर दिया गया। जिस वषत तक मसारनिल्ले वा औलाद उनकी तावेदारी वा फरमावरदारी सरकार दौलतमदार के सात कलमन का इकरारनामा अपनै के सावित कदम रहैगे। दिवांन मजकूर कौ चाहिऐ की रैयत देहात जागीर की कौ हुसन सलूष अपनै सै राजी रषकै तसली वा दिलासा सव वासंदौ की वहुत सई करकै चोर बदपार कौ बीच गावन अपनै के रहनै देइ और रैयत कौ लाजम है की दिवान मजकूर कौ माफीदार गावन का मजवूत जांन कै तुम लोग रुजू हो कै लाजमस सव काम काज गांवन मजकूर का दिवांन मजकूर सैं जांनते रहौ। कोई तरां वरषिलाप कजरवी न करै और हरसाल सनध नया न मागै। इस मुकदमै मै तागीत जांनकै माफक लिषे के अमल मैं करै

*Foreign Dept., 1st Feb., 1812, No. 101

ऐकत्र मौजे
१८

मौजेगडरौलीकला	करतौल
१	१
रानीपुरा	कनौडा
१	१
सत्तौरा	अमानपुरा
१	१
रिछारा	भडयापूरा
१	१
फुलवारी	लषनिया
१	१
सिलारपुर	पडरीया
१	१
पुतरहा	पचवारी
१	
थलचौर	सीलहट
१	१
गंजकरारी	भटेउरापुरद
१	१

ताः २४ माहे फरवरी सन १८१२ ईसवी मुताबिः फागुः सुद १२ सं: १८६९——*

११३

श्री साहेब वाला मुनाकिब श्री साहेब आलीसान श्री येकतदारुँदौलै मुँतजैमुलमुल्क मिस्तर जान रचारड सेन साहेब वहादुर वसालत जंग जु येते पै श्री चौवे दरियाव सिंघ जुके वांचनै। अपार आपके सुभ स्माचार सदा भले चाहीजै। ता पीछे इहा के स्माचार भले है। आपकी मेहरवानगी तै आपर षत आयौ सिषांपनु जानौ। सेष वादलवावत के व ईपवारनवीस मुरकि गयौ ताके कसुर सरकार ने लिषे। ताकी जवाव देही के लाने मरजी आईकै तुम आईयौ कै वकील अपने पठैयौ ताकौ आईवे कौतौ हम सरकार के तावेदार आई। जव मरजी होई तव ही हाजिर है। रही जवावदेही आपसे हम कौन करै। आपतौ हमारे षामिंद है इसुरपरमेसुर है। सो जो मेहरवानगी करकै पुछियै तौ सव ज्वाव स्वाल कर सकत है अरु जो इतराजी की नजर हेरियै तौ येक वात साम्हे होकै नही वताई सकत है। जौन मरजी होई कै या वात तुमसे नाही वनी है। सो माथे मान लेने आउत है अरु वडे होत है ते चुक माफई करदेत है अपनौ जान-कै। रही वादल की जो कहियै तौ वादल नां कछु आदमी आई रे। ज कछु फैल फिसाद करवे लाईक नां होई। इहा कौ कदीम वसैया आई सो

*Foreign Dept., February, 1812, No. Nil.

ईत हु चाकरी करत रहो है। इहा ना कही तव देस विदेस कढकै अपनौ कमाई षात रहो है। कवहू ईकाई चाकरी करी कवहू दस पांच मानस की जमात करलई जो उदिम (खंडित) लगगयौ सो अलहने कीमारीई वषत दलगंजनसिंघ को जाई परौ ता पाई सरकार की इतराजी ठहरीउपै सो आप कौ प्रताप ऐसो है कै जीपै तनक कुदिस्ट होकै हेरियै सो अनायासतेे मिट जात है षाक मै मिल्जात है। मोउकौ तलव नं कछु दलगजनसिंघ के पावने आईन। रीवावारि के पावने आई। लरका घर ल्यायौ रहै सो आपकी मरजी सै हम छुडाई कै सरकारही के पास पठैदयौ अरु उ कौ नसीहत करी सो षराव हो कै ईकाइक हू कढ गयौ। उकी लौ (खंडित) है सो मु तौ कात षात है कदीम वसकि तिहा आई ती ते अपनी वापर तके डरी है। रही जवते करारनामा सरकार कौ हमने लिषो है तवते देस परदेस कौ फिसादी कोउ होई ताको पाती चिठी लौ नाही लिपत है अरु किले व अपनी जागा मै रहन दैवे की का चली है हमसे काहूसे का अर्थ है। हमतो सरकार की मरजी जानत है जो कछु मरजी भई ती राह चले गये अरु अकवाल नवीस के ना राषे की आप लिषी ताकौ पाच छै वरसै हमै आपके तावेदार भयै भई सो नाया मरजी तव भई रहै जव ईकरारनामा होन लगो हैन और कवहु भई नयो सिरकै इकवाल नवीस पठैवे मै आयौ रहै। ताते विती लिषीनी अरु हमसें तौगतसकत भरवे मरजी की कवहू नाहू है। रही कौनु वोछी पतरी वाल आपउ कौ नजर मै न दयौ चहियै। आप वडे है और विती पं० श्री कका केसौराई पं० श्री पटैरिहा भारथ साहि जाहिर करहो। सिषापनु होई सो मेहरवानगी कर लिषवे मै आवै। माह सुदि ७ सोम संवतु १८६८ मुकाम सुगरा —*

११४

श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री ग्रेकर्लदाइदौलै मुंतजैमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालत जंग जु ग्रेते पं श्री चौवे छत्रसाल जु कौ आसीरवात वांचनै। आगे सरकार के स्माचार सदा भले चाही जै। ता पीछै सरकार की मेहरवानगी सौ इहा के स्माचार भले है। आगे हजुर कौ परवानौ आयौ। सिषापनु जानौ। किलेदार दरियाव सिंघ जु के नाउ सरकार ने सिषापनु लिषौ ताकौ किलेदार मजकूर वरातै गये हतै। सो जोउ हजुर कौ पहिल षत आयौ सो षत व जिनस सवार के हाथ उसी वरी किलेदार के पास भेजा था। फेर पीछे दो सवार और पठवायै। चार जोरी हरकारा पठवाई चुके रही। आज तलक किलेदार के इहाते कछु

*Foreign Dept., Latters Received February, 1812, No. 151

षवर चिठी सवार हरकारा कोउ नही आयौ। सोई वात की हमकौ वडी आसंका है कै किलेदार सरकार की इतराजी सुनकै कौ जानै कहा गये कैसी भई सो सरकार के मुतर सवार गये हते। जो हजुर मै तहकीक षवर आई होई तौ हमकौ लिषवे मै आई है। अरु सरकार तै लिषवे मै आई कै तुम्हारे भले मानस आये हते तिन कसुर कौ ज्वाव कछु अैछा न किया। सो कसूर हमसे कछु नाही भयौ है इतनी वडी इतराजी माफक कसुर नाही भयौ है। हमारी सनध इकरारनामा वाजवुल अरर्ज और सब कागद जे सरकार ने अपनी मोहर दसषत सौ हमकौ वगसे है ते सब कागद हजुर दरियाफत करै अरु अैन माफक छान होई तौ साबित कसुर हमारी ग्रैक ना ठहरै अरु हम कदाचयेह बिंती सरकार कै करै कै सरकार हमारे कसुर कौ वाजवी छान करलेई। तौ सरकार की या मरजी भई कै हम जवरदस्त है तब वकसीस करी थी अब नही देते है। जब या मरजी भई तब कसुर कहा रहो। साफ जबरदस्ती ठहरी। अरु ग्रेक विंती या है कै सरकार की फुरमाईस होई तौ हम सब कागद लैकै ग्रेक जनौ सदर को जाई जो सरकार इतराजी न करै। परंत हमारे मालक आया है सो हमारी ज्वाव स्वाल आपही के हजुर होती तौ उचित हती। आप मालिक हौ। हम तावेदार तावेदारी मै हाजिर है। वेगुनाह वेतकसीर हमारे उपर इतराजी सरकार करत है। श्री कंपिनी अगरेज वहादुर की सरकार मै अैसी काहू पै नाही भई आई अरु किले के आसपास झाडी मै हजुर के सवार प्यादे फिरत है अरु हमारी भीर चौकी जो किले की पछित है ते रोकत है। विंती करत है अपने किहा के लोग नाही मानत है अरु हम उजर नाही कर सकत है। सो जौ लौ हमपै इतराजी है तौ लौ ठास कर दीजै किले की पछीत ना आईवौ करै। जव आवै जाई तव येक मानस हमारौ वुलाई लेई फेर जाई। हमै अपनी तरफ तै तावेदारी मै हरगिज कसुर नाही करनै आई। आप मालिक आई जवरदस्त है। वेगुनाह मरजाद उलघंन करकै चाहियै सो कीजै। तकसीर हमारी नाही है अरु किले की फुरमाइस सिरकार ने लिषी सोई वात के मालिक मुषत्यार तौ—जू है। दूसरे अगरेज वहादुर की सरकार ते नानकार पुस्तदरपुस्त साषदरसाष आलऔलाद कर लिषाइ पाई। अब सरकार अपने मुल्क भरेकी नानकार मेट दै है तव हमारी नानकार मिट जैहै और हम हर सुरत सौ हजुर के तावेदारी है। पाती सिषापनु हमेस फुरमाईवे मै आहै माह सुदि ९ सं० १८६८ मु: किले—*

११५ (क)

—याद कलमबंदी दरषास किलेदार पं० श्री चौबे देरियावसीघ को व सरत किला सरकार मै देने कौ

*Foreign Dept., February, 1812, No. 152

—वदला जागीर का दूसरी जंगा पावे—
—षान अलमास की सब वहाल रहै—
—पीछु जो कछु (?) हम सौ होइ आयौ होइ सो माफ होइ—
—देसवारी कोउ पीछलौ झगरौ हम सै निकारै सो ना सुनौ जाइ कोउ हम सै मुजाहिम ना होने पावे सकारपुर पंछ करै—
—षिलत हाथी सरकार मै मिलै—
—सनघ सरकार को मुहर दसकत सौ पुस्तदरपुस्त की मिलै नानकार करकै—
—हुकम अदालत कौ हमारे इलाके कौ माफ रहै तिलंगा अजलत उपचीर माफ रहे चपरासी—
—भाईवंद भतीजे वगैर दिसवारी चाकर पेहुरौ हमसे फुट के कहे सुनै सो ना सुनी जाइ—
—जबलौ सदर की सनद पावै तब लौ साहव अैजंट के दसकत सौ सनदपावै—
—असवाव घर का सरकार सै माफ करवावै—
—गल्ला वा सीसा माफ होइ जो सरकार लेइ ता के दाम पावै—
—जमीन वदेले की जागीर की पाल देव सौं लगाइ के परगने भितरी कुनइस मै पावै
—याद वडे साहव करनैल साहव दीवानजी साहब की पावै नाथु राम लसगर मे हाजिर होइ—
—पं केसौराइ कौ गाव पादरष कौ षुलासा होइ—
—हमारौ रिनिया गुमास्ता चाकर को जु वदल कै सरकार के इलाके की जागा मै जाइ ता कौ रुजु कर पावै

तारीक ४ फरवरी सं० १८१२
फाल्गुन व: ७ स० १८६८*

(ख)

श्री साहिव वाला मुनाकिव श्री साहिव आलीसान श्री येकतदारुदौले मुतजेलमुलक मिस्तर जान रचारडसैन साहिव वहादुर वसालतजंगजू एने पं० श्री चौवे दरियावसीघजू के वाचनै। आपर आप के सुभ स्माचार सदा सर्वदा भले चाहिजै। ता पीछ इहा के स्माचार भले है। आपकी महिरवानगी सै आपर षत आयौ। सिषापन जानौ। लिषवे मै आई कै माह सुदि ९ कौ सरकार तै तुम कौ पत हुवा था ताकी ज्वाव तुम नै आज तक नही लिषी है। तिस पर सरकार तै महिरवानगी कर कै फेर लिषवे मै आई है कै दोपहर वेलराइी किला सरकार मै हाजिर करौ तौ तुम कौ तुम्हारे भाई वंदौ कौ गुजारउ कौ जिमीजागा दई जाइगी नही तौ नाताबेदारी

*Foreign Dept., Feb., 1812, Nos. 153-8

ठहरैगी अरु गुजरान कौ जिमीजागा न दइी जाइगी। लोग सरकार के षराब होईगे सो षुन तुम पर होइगा ई्री तरा सरकार तें लिषबे मे आइी ता कौ किलौ तौ सात पुरषा तैं हमारे कवजे मैं रहौ आयौ है अउ सरकार नैं हम कौ नानकार पुस्त दरपुस्त साष दर साष कर कैं माफ कर दयौ अरु सनध लिष दइी है। सो अवै तौ कंपिनी अगरेज वहादुर के मुलक मैं कटिन केरारगारी वनै है। अपनी अपनी नानकार पावृत षात है कोउ मुजाहिम नाही होत है। हम कौ ईतना फुरमाइस हुवे कै आवृत है। जव सरकार के मुलुक करे की नानकार छूट जै है तव हमारी नानकार छूट जै है। सिरस्ता सरकार मैं ई्री तरा है अरु सरकार नै लिषी कै जिमी जागा तुमकौ तुम्हारे भाइी वंदौ कौ परवृस्ती माफिक सव को मिलैगी सो पुस्त-दरपुस्त सापदरसाष की नानकार तौ चारइी वरस नाही पालवे मैं आवत है। परवृस्ती की षातर लौ हम कौ वा सव वुदेलषंड कौइी गइी अरु सरकार नै लिषी कै जे लोग हमारे षराव हौइगे तिन का षुन सव तुम कौ होइगा। सो आप मालिक है हम तावेदार हे। तोंप तुवकइ मैं नाही षातनै है। आप जवरजस्त है चाहिये सो करिये। रही दो हजार का ऋन मिले ककै रहै तीका पाप किहै लगि है सो पुन कौ छान तौ गुसैईया के घर हौनेई है हमारौ का जोर है। इतनी अरज हमारी हती कै मुलभरे कौ छान सरकार मैं होत है इतनो छान हमारउ कर देवे मैं आवै कै तो कौनु वडी तकसीर साविल होती कै सरकार के मुलकभरे के नानकारी वेउतर हो जाते तव हमहु सैं सरकार वदल जाते। रही जव येकहु विंती नाही सुनवे मैं आवृत है तीकौ हम लाचार है। जव सरकार तोपन मारन लगि है तव हम दारुविछाइ कै उड जैहै सिपापन होइ सो महिरवानगी कर हमेस फुरमाइवे मैं आवैं—माह सुदी १३ रवौउर सं० १८६८ मु: किलै

(ग)

श्री साहिव वाला मुनाकिव श्री साहिव आलीसान श्री येकंतदारुंदौले मुलमुलक मिस्तर जान रवारडसैन साहिव वहादुर वसालत जंग जु एते पं० श्री चौवे दरियाउ सीघ जु के वाचनै। आपर आप के स्माचार सदा भले चाहिजे। ता पीछे इहा के स्माचार भले है आपकी महिरवानगी तैं आपर षत आयौ सिषापन जानौ ताकौ सरकार की तावेदारी हम आज की घरी लौ वजाइी रही। सरकार की नजर मैं येकहु वात ना आइी सो अव अपनौ विचार वैठै सो करवी अरु आप देसवारिन की कही सुनियत है सो सुनिअै रही हम तौ कंपनी अगरेज वहादुर के घरही नानकारी सनव लिषाइ पाइी है सो वा लिखी लयै वैठे है। अव आप वदलियत है सो वदलिये वडे आव जो कीजे सो आप कौ सव फवत है। रही हमारौ जीवौ तौ किले सैं लगो है सो

अब हम कौ दोष नाही बनहै। सो हम ही करहै सिषापनु होइ सो फुरमाइबे मैं आवै हमेस मिहरबानगी कर मा: फागुन बदि २ गुरौ: सं १८६८*

११६

मुसंदियान महमात सरकार जागीरदारान व करोरियान व चौधरियान व कानूगोयान हाल इस्तकबाल परगने पनवारी मुतलके मुलक बुंदेलषंड के जानै जो सुनने से षवर अदालत व रैयत का पालना सरदारन सरकार कंपिनी अगरेज बाहादुर के देवान बहादुर गोपालसिंघ अपनी रजावंदी से ख्वाहिससे तावेदारी व फुरमावरदारी सरकार दौलतमदार कौ अपने दिल जान से कबूल करकै हाजिर हुयै औ छुडावना गुनाह साबिक अपना दरषास्त करकै इकरारनामा तावेदारी अपने का दफै सात का अपनी मोहर व दसषत से दाषिल दफदर के किया। जैसा की माफ करना गुनाह परवरिस व पालना मुतवसिलौ का चलन रवैया सरदारन सरकार दौलतमदार का है इस वास्ते नजर परवरिस व मुतवंसिल नेवाजी के मौजै गडरौली वगैरा परगने पनवारी माफक तपसील जैल के मुसारन अले कौ पुस्तदरपुस्त बिला सरत नोकरी सेवाई जमीन पदारघ वगैरा माफी की सामिल वदौवस्त सरकार के नही है। नानकार मुकर्रर करकै दिया गया। जिस वषत तक मुसारन अले व औलाद उनकी तावेदारी व फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार कै सात कलमन का इकरारनामा अपने के साबित कदम रहैगै तौ मौजे मजकूरैन हमेसा बहाल वरकरार रहैगें। देवान मजकूर कौ चाहियै की रैयत देहात जागीर की कौहूसन सलूक अपने से राजी रषकै तसली व दिलासा सब बासिंदौ की बहुत सई करकै चोर व बटपार को बीच गावन अपने के रहने न देई औ रैयत को लाजिम है की देवान मजकुर कौ माफीदार गावन का मजबूत जानकै तुम लोग रुजू होकै लाजिमा औ सब काम काज गावन मजकुर का देवान मसतूर से जानते रहौ कोई तरा वरषलाफ कजरवी न करै औ हर साल सनध नया न मागै। इस मुकदमे मैं ताकीद जानकै माफक लिषेके अमल करै औरा सनध वाद मंजुरी नवाव मुअल्लाअलकाव गवरनर जनरल बहादुर के मुकंमिल होगी

यंकत्र मौ: अठारा
१८

मौ: गडरौलीकला	करतौल	रानीपुर	कनौरा
१	१	१	१

*Foreign Dept., Feb., 1812, Nos. 153-8

सतौरा	अमानपुर	रिछारा	भडियापरा
१	१	१	१
कुल्दवारौ	लषनिया	सिलारपुर	पडरिया
१	१	१	१
पुतरिया	पचवारा	सालिहट	बलचौर
१	१	१	१
गंजकरहरा	भटौराषुर्द		
१	१		

तारीष २४ माह फवरवरी सन १८१२ ईसवी मुताविक फागुन सुदि १२ संवतु १८६८ —

सही—

हम देवान गोपालसिंघ इकरार करते है औ लिषे देते है की सरकार दौलत मदार कंपिनी अगरेज वहादुर के हाजिर होकै दफात माफक तपसील वास्ते मजवूती तावेदारी वा फुरमावरदारी अपनी दाषिल करते है—

दफे १

हम अपनी षुसी षांतर ज्मा सैं तावेदारी व फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार कंपिनी अगरेज वहादुर की कवूल करकै मुतवंसिल व तावेदारैं सरकार दौलत मदार के वीच मैं दाषिल हुयें। साहेववाला मुनाकिव मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर जो नवाव गवरनर जनरल वहादुर की तरफ सै वास्ते वदोवस्त माली व मुलकी वुंदेलषंड के मुकरर है इकरारनामा माफक दफे तपसील के हमसे मागा। इस वास्ते उमेद कमाल परवरिस के इन दिनौ अहिलकार सरकार दौलतमदार के इहा से हमारे साथ जाहिर हुवा है यह इकरारनामा अपनी मोहर व दसषत से लिष दिया। करार करते है की हरगिज उसे तफावत न करैंगै औ जो कुछ कलमैं नीचे लिषे देते है कोई काम उसे वरषलाफ न होवैं।

दफे २

आईदे पर कभी हम व और हमारे घर के भाई व भतीजैं हमारे मिले है व हमारे चाकर जे अव रहै परगने कोटरा वगैरा इलाके राजा वषत सिंघ के व दुसरे रईस व राजा वदोवस्त व मुतवसिलैं सरकार दौलत मदार के कजिया वषेडा न करैं व अगर उन लोगन मैं से जे हम लिषे देते है कोई उसे षिलाफ इकरारनामे के करैं तौ ज्वाव देही उसकी हमारे जिमे है उसके वदले छान करकै जो सजा सरकार चाहैं सो हम कवूल करैं—

दफे तीसरा
३

अपने जागीर के गावन मैं लरके वाले सुंधा रहै। अगर कोई राजा व मुतवंसिल सरकार के तिनके गाव जागामैं रहै घरवनावैं तौ पहिले सरकार से हूकम लै लेई वे हूकम सरकार के दुसरी जागा न जाई—

दफे ४

साथ कोई फिसादी व़ लुटेरा व़ वटपार दुसरे हरामषोरै वहिर व़ भितरे मुलक वुदेल-षंड के व़ दुसरे मुमालिक महरुसै सरकार दौलतमदार के साजिस न करै औ वीच गाव़ जागीर अपने के व़ अपने हिमाइत मै रहने न देई पनाह न देई। वलक जव षोज फिसादी मजकूर का पावै षवर हजूर सरकार दौलत मदार के तुरत पहुचावै व़ अगर पकरना उन्हौका हमारे मकदूर के भीतर होई उसम कसुर न करै औ लिषा पढी व़ सव मामला उन सवौ से माकूप करै औ नोकर व़ मुतवंसिलै सरकार दौलतमदार कै दुसमनागी न करै। अगर दरम्यान मुतवंसिलै सरकार दौलत मदार कै कोई तरासे कजिया होई मदत किसी की वे हूकम सरकार के न करै। अपने घर वैठे रहै औ हमेसा फरमावरदार सरकार के रहै व़ किसी तराकी तावेदारी व फुरमावरदारी से वाहेर न होई—

दफे पाचई

५

अगर कोइी रैयत सरकार दौलत मदार की हमारे जागीर के गाव़न मै भागकै आवै उसकी ताही पकरकै वर वषत तलव हवाले नोकरै या अहिलकरै सरकार के करै। अगर सरकार के आदमी उसके पकरने को आवै उसे मुजाहिम न होई वलिक सरकार के अदिमीयौ के सामिल होकै उन सवौ को पकरै औ वीच मुकदमे अदालत देवानी व़ अदालत फौजदारी वावत उन मुकदमे के वाद इस इकरारनामे के होई औ मारफत साहेव अजंट के जारी होवै तावेदार रहै। किसी तरा से हैमामा व़ फिसाद न करै—

दफे छठई

६

चोरौ व़ ठगौ के तारी वीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल कोई रैयत सरकार की कौ व मुसाफर कौ हमारे गाव़वसे चोरी जाई या लुट जाई तौ जिमीदारौ उस गाव़ के से तागीद करकै माल चोरी का देलाई देई कै जिमीदारौ कौ सरकार मै सौपदेई या चोर डकैत को पकरकै वीच सरकार दौलतमदार के पहुचाई देई औ कोई वीच मुलक सरकार के षुनी या गुनाहगार होकै हमारे देहात जागीर के आवै उसके ताही भी पकरकै सरकार मै पहुचाई देई—

दफे सातई

७

जिमीदारै हमारे जागीर के गाव़न के साहेव कलटर की सरकार मै कवूलियत मालगुजारी की सन १२१९ तक की दाषिल किया है सो सव मजकुर तक माफक पटा कवू-लियत के वाद मुजरा होने वसुल साहेव कलकटर कौ उन सवौ से माल गुजारी लेवै ज्यादा न मागे। सन १२२० फसली से हम मुषत्यार वदौवस्त के रहै। पदारथ वगैरा जमीन लाषराज की जो सरकार के वदौवस्त मै दाषिल नही है और को माफ

है उसे मुजाहिम न होई औ हमारे जागीर के गाव़ अदालत के अव तक हुकम मै थे अगर डिगरी कोई मुकदमे की रैयत व़ जिमीदार गावै जागीर हमारे के हूई होई व़ हूकम उसके जारी करने का साहव अजंट की मारफत पहुचै माफक हूकम के अमल मै ल्यावै उजर षारिज होने हूकम अदालत क न करै व़ येक आदमी को अपनी तरफ ते मुषत्यार मुकरर कर कै सरकार मै हाजिर रंषै—
तारीष २४ माह फवरव़री सन १८१२ ईसवी मुताविक फागुन सुदि १२ संवतु १८६८ सन १२१९ फसली—

छाप

श्री गोरी संकर सहाई देव़ान गोपाल सिघ को सं: १८६८

*

११७ (क)

नकल श्री मुसिफक मेहरव़ान मिस्तर रजीसेन साहेव वहादुर सलामति। सिधि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा वहादुर जैसिंह देव़ जु देव़ के सलाम। आपर उहाके स्माचार भले चाही। इहा के स्माचार भले हंहि। अपना की मेहरव़ानगी तैं आगे अपना का षत आव़ा या लिषा की आगे हम लिषा तैं की हमारि फौज तुम्हारे मुलक होई पिडारेन के तहकीक आवती है। तव तुम लिषौ तैं की हम का आगे ते जाहिर होई। हम षुसामति मा हाजिर होव सो य़ा वात साच है। हम लिषा तैं पै तव लिषो तैं य़ा षवरि आई तैं की वीस हजार असव़ार मीर षां का कारी तलाउ दाषिल है औ पाच हजार असव़ार घाट चढि आव़ा मैहर दाषिल भा सो हमार डेरा सेमरिय़ा रहे। सो षवरि याई कै कूच कै आय़न सो पिडारे रातिनिराति भागिगै। हमरे मुलक भरेमा येक घरी नही रहै। तव हम वडी फौज के मुह घरै का मकूंदपुर डेरा कीन औ फौज रामनगर अमर पाटन टिकाव़ा और षवरि का हरकारे दंषिन पठवा तव अपना का षत लिषां। तैं अव हमार हरकारे षवर लै आय़े नरमदा के तीर भरि कोउ नही आई ई चोटा आई ते भागि गै। अव हम साव़धान है औ साहेव कै हमारा दोस्ती है। कंपिनी कै फौज हमहन या दंषिन कै चौकी हमारि है। तीस चालिस हजार असव़ार भरे सो हमै लरिलेव आवैं न पाई और वडी वडी फौज आई तौ साहेव का जाहिर करव। साहेव कै फौज औ हमा मिलि कै लरव आवैं न पैहै औ जो चौकी अपनी फौज तैं अपना कै लीन तौ हमार सेव़ा षुसामत कौन ठहरी तेह तै य़ा दंषिनी के फौज का हमारि चौकी है। हम कंपिनी के पैरष्व़ाहहन अपना के फौज का काम

*Foreign Dept., March, 1812, No. Nil.

कुछ नही आई औ जव साहेव का इया राह आवै का सौष होई तव का या साहेव का घर है औ या मुलक सहिव का है औ हमका जव षत आवै तव हिदुई का षत मेहरवानगी ते आवा करैं मित्ती प्र: वैसाष वदि सुक्रे का संवतु १८६९ मु: गुठा

(ख)

नकल श्री साहेव मुसफिक मेहरवान मिस्तर रजीसेन वहादुर ये तौ सिंधि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा वहादुर जै सिंघ देव जु देव की सलाम। आपके स्माचार भले चाहिये। इहा के स्माचार आपकी मेहरवानगी से अैछे है। आपका षत फारसी का व हिंदुई का आया सो मालुम हुवा तिसका मजवून आगे लिषां है सो जाहिर हुवा होगा। अव या षत आया सो हवाल समुझि करि श्री वकसी भगवानदैत की रुकसति आपके पास किया है सो जो अर्ज करै सो मेहरवानगी करि सुनने मे आवै अरु जो आप मरजी करैंगै सोई हाजिर होगे। किस वास्तै की या मुलक आपका है औ हमारी दोस्ती कदीम है अरु हम मरजी के तावे है अरु आपको अैसी मेहरवानगी चाहियै जिसमे गौरनर जनरल वहादुर का षत मेहरवानगी का औ दोस्ती का हमको आवै अरु अपनी षुसी मिजाज का हवाल मेहरवानगी कर हिंदुई का षत आया करैं ज्यादा सुभ मि: प्र: वैसाष सुदि ४ वुधे संवत १८६९ के मु: गुठ —

(ग)

नकल श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री आलीसान श्री येकतदारुदौलै मुतजैमुलमुलक मिस्तर जान रचारडसेन साहेव वहादुर वसालतजंग यैं तौ सिंधि: श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा वहादुर जै सिंह देव के वांचनै। आपर आपके स्माचार भले चाही। इहाके स्माचार भले हहि। आपर आपका षत आया प्र: वैसाष सुदि १३ संवत १८६९ का लिषा सो सुनेते सव तराते षातिर ज्मा भई अरु हर सुरत से मेहरवानगी मालूम हुइी सो श्री वकसी भगवानदैत हजूर दाषिल भये होगे। हवाल सव अर्ज करिहै अरु या घर आपका है जिसमै मेहरवानगी आपकी षिलकति मे मालूम चाही सिषापनु समेत मेहरवानगी का षत हमेस आप करै मिती दुती वैसाष वदि ८ भोमे क संवतु १८६९ के मु: गठ—*

---

*Foreign Dept., May, 1812, Nos. 301-9

११८

करारनामा लिष दयौ चौबे सालिगराम—

आगे मुलक बुंदेलषंड सरकार कंपिनी के षालसे मै आयौ। करारनामा तावेदारी का दाषिल करने पर सरकार सैं सनध जागीर देहात परगने कालीजर वगैरा वा किला समेत पुस्तदरपुस्त कौ मिला था। हमारी सलाह से करारनामा वा सनध चौबे दरियाव सिंघ के नाम हुवा था लेकिन चौबे भजकूर वा हम सेवा और साझियौ से नावाकफी के बाईस तावेदारी जैसी चाहियतती औ सरकार की मेहरवानगी के लाइक थी सो ना हुई। तिसपर भी सरकार ने हमारे कसूर की भूल चूक बूझकै कि जिसके रहने से बेहूकमी होती रही सो किला सरकार ने लैकै वदला जागीर का हमारे दरषास्त माफक मौजै पहरा वगैरा परगने भितरी वा कोतहस वगैरा दिया। इस वास्ते या इकरारनामा दाषिल करते है की सब कलम बंदी पर काईम वा सावित रहै—

दफे १

साथ सरदारै मुलक बुंदेलषंड कै जो कोई तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार की सैं फिरै अगर नतैत हमारा भी होई तौ उसे मिलाप वा लिपा पढी चिठी पाती माकूप करै औ कोई मुतवंसिल वा लरकेवाले उसके कौ अपने जागीर के गावन मै रहने कौ जंगा पनाह न देई—

दफे २

अगर किसु मुतवंसिल सरकार दौलत मदार के से झगरा वा कजिया न करै अगर वै सव हमारे साथ षलस करै दुनौ सुरत मै इतलाह सिरदारन सरकार के करै सिरदारै सरकार दौलतमदार के आपुस के कजियां कौ दरियाफत करकै रफा करदेई—

दफे ३

वदोवस्त घाटी इलाके अपने के इस तरा का करै की कोडी फिसादी वा लुटेरा वा दुसरे सरारती उस राह से आने जाने ना सके औ किसी तरासे कोई फसादी को ना छोडै की उस राह से मुलक सरकार मै या मुलक मुतवंसिलै सिरकार के जाईकै फिसाद वरपा करै। अगर कोडी सरदारै तरफ मुलक महरु सैं सरकार या मुतवंसिलै सरकार से फौज सुधा राह इलाके हमारी से कस्त मुलक सरकार के करै षवर उसका पहिले पहुचने नजीक इलाके अपने के सिरदारै सरकार के पहुचावै औ अपने मकदूर माफक उसके वंद करने मै कोसिस करै—

दफे ४

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार कै घाटी राह ईलाके हमारी की सैं उपर घाटी के या किसी तरफ जावै हरगिज मना मुजाहिमत न करै वलक आदमी मातवर वाकिव-

कार साथ करै तौ जिस राह से चाहै जाई औ जब तक फौज सरकार दौलत मदार की हमारे ईल्राके मे या इलाके दुसरे कै नगीच हमारे रहै रसद असवाव जरुरी लसगर मैं पहुचावते रहैं—

दफे ५

अपने जागीर के गावन मैं लरके वाले सुधा रहै। अगर कोई राजा वा मुतवंसिल सरकार के तिनके गाव जागा मैं रहै घर वनावैं तौ पहिले सरकार से हुकम लैलेई। वेहुकम सरकार के दुसरी जागा न जाई—

दफे ६

साथ कोई फिसादी वा लुटेरा वा वटपार दुसरे हरामषौर वाहिर वा भितरे मुलक वुदेलषंड के वा दुसरे मुमालिक महरुसै सरकार दौलत मदार के साजस न करै औ वीच गावन जागीर अपने के वा अपने हिमाइत मे रहने न देई पनाह न देई वलक जव पोज फिसादी मजकुर का पावैं षवर हजुर सरकार दौलत मदार के तुरत पहुचावैं वा अगर पकरना उन्हौ का हमारे मकदुर के भीतर होई उसमे कसुर न करै औ लिषा पठी वा सव मामला उन सवौ से माकुप करै औ नोकरै वा मुतवंसिलै सरकार दौलत मदार के दुसमनागी न करैं। अगर दरम्यान मुतवंसिलै सरकार दौलतमदार के कोई तरा से कजिया होई मंदत किसी की वे हुकम सरकार के न करैं। अपने घर वैठे रहै औ हमेसा फरमावरदार सरकार के रहै वा किसी तराकी तावेदारी फुरमावरदारी से वाहेर न होई—

दफे ७

अगर कोई रैयत सरकार दौलत मदार की हमारे जागीर के गावन मैं भाग कै आवैं उसकी ताई पकरकै वर वषत तलव हवाले नोकरै या आहिलकारै सरकार के करै। अगर सरकार के आदमी उसके पकरने को आवैं उसे मुजाहिम न होई वलक सरकार के आदमियौ के साभिल होकै उन सवौ कौ पकरै औ वीच मुकदमे अदालत देवानी वा अदालत फौजदारी वावत उस मुकदमे के वाद इस इकरारनामे के होई औ मारफत साहेव अजंट के जारी होवैं तावेदार रहै किसी तरा से हगामा वा फिसाद न करै—

दफे ८

चौरौ वा ठगौ के ताई वीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल कोई रैयत सरकार की कौ वा मुसाफर कौ हमारे गावन से चोरी जाई या लुट जाई तौ जिमीदारौ उस गाव के से ताकीद करकै माल चोरी का देलाई देई कै जिमीदारौ कौ सरकार मैं सौप देई या चोर डकैत कौ पकर कै वीच सरकार दौलत मदार के पहुचाई देई औ कोई वीच मुलक सरकार के पुनी या गुनागार होकै हमारे देहात जागीर के आवैं उसके ताई भी पकरकै सरकार मे पहुचाई देई—

दफे ९

पहरा वगैरा की अव जागीर मैं पाया है अव तक अदालत के हुकम मैं था। अगर

डिगरी कोई मुकदमे की रैयत व जिमीदारौ मौजे मजकूरौ के नाम भई होई औ उसके जारी करने कौ हूकम मारफत साहेब अजेंट की पहुचै माफक हुकम के अमल मे ल्यावै उजर बाहेर होना हूकम अदालत का न करै वा येक आदमी कौ अपनी तरफ से मुषत्यार करकै सरकार मैं हाजिर रपै—

दफे १०

मौजे पहरा वगैरा की जागीर पाया है कुछ बाकी मालगुजारी व तकावी सरकार की जिमे जिमीदारौ के होई उसकौ वसुल करकै सरकार मे पहुचावै कुछ उजर ना करै—

ता: १९ माह जुन सन १८१२ ईसवी मुताबिक जेठ सुदि १० संवतु १८६९ सन १२१९ फसली—*

११९

करारनामा लिष दयौ चौबे पुहकर परसाद—आगे मुलक बुदेलषंड सरकार कंपिनी के षालसे मैं आयौ। करारनामा तावेदारी का दाषिल करने पर सरकार सैं सनध जागीर देहात परगने कालीजर वगैरा वा किला समेत पुस्तदरपुस्त कौ मिला था। हमारी सलाह से करारनामा वा सनध चौबे दरियाव सिंघ के नाम हूवा था लेकिन चौबे मजकूर वा हमसे वा और साझियौं से नावाकफी के बाइस तावेदारी जैसी चाहियत तैं वौ सरकार के मेहरवानगी के लाइक थी सौ ना हूई। तिसपर भी सरकार ने हमारे कसूर की भूलचूक बूझकै की जिसके रहने से वे हूकमी होती रही। सो किला सरकार ने लैकै बदला जागीर का हमारे दरषास्त माफ़क मौजै पुरवा वगैरा परगने भितरी वा कोनहस वगैरा दिया। इस वास्ते या इकरार नामा दाषिल करते है की सब कलम बंदी पर काइम वा मबित रहै—

दफे १

साथ सरदारै मुलक बुदेलषंड के जो कोई तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार की से फिरै अगर नतैत हमारा भी होई तौ उसे मिलाप लिषा पठी चिठी पाती माकूप करै औ कोई मुतवंसिल वा लरके बाले उसके कौ अपने जागीर के गावन मैं रहने कौ जंगा पनाह न देई

दफे २

अगर किसू मुतवंसिल सरकार दौलत मदार के से झगरा वा कजिया न करै अगर वे सब हमारे साथ षलस करै दुनौ सुरत मै इतलाह सिरदारन सरकार के करै। सिरदारन सरकार दौलत मदार के आपुस के कजिया कौ दरियाफ्त करकै रफा कर देई

*Foreign Dept., 8th July, 1812, No. Nil., C B. p. 379

दफे ३

वदोवस्त घाटी इलाके अपने के इस तराका करै की कोई फिसादी वा लुटेरा वा दुसरे सरारती उस राह से आने जाने न सके औ किसी तरासे कोइी फसादी को न छोडै की उस राह से मुलक सरकार मै या मुलक मुतवंसिलै सिरकार के जाइ कै फिसाद वरपा करै। अगर कोई सरदारै तरफ मुलक महरु सै सरकार या मुतवेसिलै सरकार मे फौज सुधा राह इलाके हमारी से कस्त मुलक सरकार के करै पवर उसका पहिले पहुचने नजीक इलाके अपने के सिरदारै सरकार कै पहुचावै औ अपने मकदुर माफक उसके वंद करने मै कोसिस करै---

दफे ४

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार कै घाटी राह इलाके हमारी के सै ऊपर घाटी के या किसी तरफ जावै हरगिज मना मुजाहिमत न करै वलक आदमी मातवर वाकिवकार साथ करै तौ जिस राह से चाहै जाई औ जव तक फौज सरकार दौलत मदार की हमारे इलाके मै या इलाके दुसरे के नगीच हमारे रहै रसद असवाव जरुरी लसगर मै पहुचावते रहै---

दफे ५

अपने जागीर के गावन मै लरके वाले सुंधा रहै। अगर कोई राजा वा मुतवेसिल सरकार के तिनके गाव जागा मैं रहै घर वनावै तौ पहिले सरकार से हुकम लै लई। वे हुकम सरकार के दुसरी जागा न जाई---

दफे ६

साथ कोइी फिसादी वा लुटेरा वा वटपार दुसरे हरामषोरै वाहेर वा भितरे मुलक वुदेलषंड के वा दुसरे मुमालिक महरु सै सरकार दौलत मदार के साजस न करै औ वीच गावन जागीर अपने के वा अपनी हिमाइत मैं रहने ना देई पनाह ना देई। वलक जव षोज फसादी मजकूर का पावै षवर हजुर सरकार दौलतमदार के तुरत पहुंचावै वा अगर पकरना उन्है का हमारे मकदूर के भीतर होई उसमे कसूर न करै औ लिषा पठी वा सव मामला उन सवौ से माकूप करै औ नौकरै वा मुतव-सिलै सरकार दौलत मदार के दुसमनागी न करै। अगर दरम्यान मुतवंसिलै सरकार दौलत मदार के कोई तरा से कजिया होई मंदत किसी की वे हुकम सरकार के न करै। अपने घर वैठे रहै औ हमेसा फरमावरदार सरकार के रहै वा किसी तरा की तावेदारी वा फुरमावरदारी से वाहेर न होई

दफे ७

अगर कोई रैयत सरकार दौलत मदार की हमारे जागीर के गावन मै भाग कै आवै उसकी ताई पकरकै वरवषत तलव हवाले नोकरै या अहिलकारै सरकार के करै। अगर सरकार के आदमी उसके पकरने को आवै उसे मुजाहिम न होई वलक सरकार के आदमियौं के सामिल होकै उन सवौ को पकरै औ वीच मुकदमे अदालत देवानी वा अदालत फौजदारी वावत उस मुकदमे के वाद इस इकरारनामे के होई

औ मारफत साहेव अजंट के जारी होई तावेदार रहै। किसी तरासे हंगामा वा फिसाद न करै—

दफे ८

चोरौ वा ठगौ के ताई वीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल कोई रैयत सरकार की कौ वा मुसाफर कौ हमारे गावन से चोरी जाई या लुट जाई तौ जिमीदारौ उस गाव के से ताकीद करकै माल चोरी का देलाई देई कै जिमीदारौ कौ सरकार मैं सौप देई या चोर डकैत कौ पकरकै वीच सरकार दौलत मदार के पहुचाई देई औ कोई बीच मुलक सरकार के षुनी या गुनागार होकै हमारे देहात जागीर के आवै उसके ताई भी पकरकै सरकार मै पहुचाई देई—

दफे ९

पुरवा वगैरा की अब जागीर मै पाया है अव तक अदालत के हूकम मै था। अगर डिगरी कोई मुकदमे की रैयत वा जिमीदारौ मौजे मजकूरौ के नाम भई होई औ उसके जारी करने को हूकम मारफत साहेव अर्जट के पहुचै माफक हूकम के अमल मै ल्यावै उजर वाहेर होना हूकम अदालत को न करै वा येक आदमी को अपनी तरफ से मुषत्यार करकै सरकार मै हाजिर रखै—

दफे १०

मौजे पुरवा वगैरा मे की जागीर पाया है कुछ वाकी मालगुजारी वा तकावी सरकार की जिमे जिमीदारौ के होई उसको वसुल करकै सरकार मै पहुचावै। कुछ उजर न करै—

तारीष १९ माह जुन सन १८१२ ईसवी मुताविक जेठ सुदि १० संवतु १८६९ सन १२१९ फसली*

१२०

इकरारनामा लिष दयौ चौवे छैत्रसाल वा महतारी छैत्रसाल मजकूर के—आगे मुलक वुदेलषंड सरकार कंपिनी के षालसै मैं आयौ। इकरारनामा तावेदारी का दाषिल करने पर सरकार दौलत मदार से सनध जागीर देहात परगने कालीजर वगैरा किला समेत पुस्तदरपुस्त कौ मिला था। हमारी सलाहन से करारनामा वा सनध चौवे दरियाव सिंघ के नाम हूवा था। लेकिन चौवे मजकूर वा हम सैवा और साझियौ से नावाकफी के वाईस तावेदारी जैसी चाहियततै वा सरकार के मेहरवानगी के लाईकथी सो ना हुई। तिस पर भी सरकार ने हमारे कसूर की भूल चूक वूझ कै की जिसके रहने सै वेहूकमी होती रही। सो किला सरकारने लैकै वदला जागीर

*Foreign Dept., July, 1812, No. Nil., CB. p. 265

का हमारे दरषास्त माफक मौजे भारथपुर वगैरा परगने भितरी वाकीनहस वगैरा दिया। इस वास्ते या इकरारनामा दाषिल करते है की सब कलम बंदी पर काइम वा साबित रहै—

दफ १

साथ सरदारै मुलक बुंदेलषंड के जो कोई तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार की सै फिरै अगर नतैत हमारा भी होई तौ उसे मिलाप लिषा पठी चिठी पाती माकुप करै औ कोई मुतवसिल वा लरकेवाले उसके कौ अपने जागीर के गावन मै रहने कौ जगा पनाह न देई

दफ २

अगर कोई मुतवसिल सरकार दौलत मदार के सै झगरा वा कजिया न करै अगर वै सब हमारे साथ षलस करै दुनौ सुरतमै इतलाह सरदारन सरकार के करै। सरदारै सरकार दौलत मदार के आपुस के कजिया कौ दरियाफत करकै रफा कर देई—

दफा ३

वदोवस्त घाटी इलाके अपने के इस तरा का करै की कोई फिसादी वा लुटेरा वा दुसरे सराग्ती उस राह से आने जाने ना सकै औ किसी तरामै कोई फसादी को ना छोडै की उस राह से मुलक सरकार मै या मुलक मुतवसिलै सरकार कै जाइकै फिसाद बरपा करै। अगर कोई सरदारै तरफ मुलक महरुसै सरकार वा मुतवसिलै सरकार से फौज सुंधा राह इलाके हमारे से कस्त मुलक सरकार के करै षवर उसका पहिले पहूचने नजीक इलाके अपने के सिरदारै सरकार के पहुचावै औ अपने मकदूर माफक उसके बंद करने मै कोसिस करै—

दफे ४

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार कै घाटी राह इलाके हमारीके से उपर घाटी के या किसी तरफ जावै हरगिज मना मुजाहिमत ना करै बलक आदमी मातवर वाकिवकार साथ करै तौ जिस राह से चाहै जाई औ जब तक फौज सरकार दौलतमदार की हमारे इलाके मे वा इलाके दुसरे के नगीच हमारे रहै रसद असवाव जरुरी लसगर मै पहुचावते रहै—

दफे ५

अपने जागीर कै गावन मै लरकेवाले सुधा रहै। अगर कोई राजा वा मुतवसिल सरकारकै तिनकै गाव जागा मै रहै घर बनावै तौ पहिले सरकार से हूकम लै लेई। वे हूकम सरकार के दूसरी जागा न जाई—

दफ ६

साथ कोई फिसादी वा लुटेरे वा वटमार वा दुसरे हरामषोरै वाहिर वा भितरै मुलक बुंदेलषंड के वा दुसरे मुमालिक महरुसै सरकार दौलत मदार के साजस न करै औ बीच गावन जागीर अपने के वा अपने हिमाइत मै रहने न देई पनाह न देई बलक जब षोज फसादी मजकूर का पावै षवर हजूर सरकार दौलत मदार के तुरत पहुचावै।

वा अगर पकरना उन्हों का हमारे मकदूरके भीतर होई उसमे कसूर न करै औ लिपा पठी वा सब मामला उन सबौ से माफुप करै औ नोकरै वा मुतवंसिलै सरकार दौलत मदार के दुसमनागी न करै। अगर दरम्यान मुतवंसिलै सरकार दौलत मदार के कोई तरा से कजिया होई मैंदत किसु की वेहूकम सरकारके न करै अपने घर वैठे रहै औ हमेसा फरमावरदार सरकार के रहै वा किसी तराकी तावेदारी से वाहेर न होई—

दफे ७

अगर कोई रैयत सरकार दौलत मदार की हमारे जागीर के गावन मै भाग कै आवै उसकी ताई पकरकै वरवषत तलव हवाले नोकरै या अहिलकारै सरकार के करै। अगर सरकार के आदमी उसके पकरने कौ आवै उसे मुजाहिम न होई वलक सरकार के आदमियौ के सामिल होकै उन सबौ कौ पकरै औ वीच मुकदमे अदालत देवानी वा अदालत फौजदारी वावत उस मुकदमे के वाद इस इकरारनामे के होई औ मारफत साहेव अजंट के जारी होवै तावेदार रहै। किसी तरामे हंगामा फिसाद न करै—

दफ ८

चौरी वा ठगी के ताई वीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल कोई रैयत सरकार की कौ वा मुसाफ कौ हमारे गावन से चोरी जाई या लूट जाई तौ जिमीदारौ उस गावके से तागीद करके माल चोरी का दिलाई कै जिमीदारौ कौ सरकार दौलत मदार मै सौप देई या चोर डकैत कौ पकरकै वीच सरकार दौलत मदार के पहुचाई देई औ कोई वीच मुलक सरकार के षूनी या गुनागार हो कै हमारे देहात जागीर के आवै उसके ताई भी पकरकै सरकार मे पहुचाई देई—

दफे ९

मौजे भारथपुर वगैरा की अव जागीर मै पाया है अव तक अदालत के हूकम मै था। अगर डिगरी कोई मुकदमे की रैयत वा जिमीदारौ मौजे मजकूरौ के नाम भई होई औ उसके जारी करने कौ हूकम मारफत साहेव अजंट की पहुचै माफक हूकम के अमल मै ल्यावै उजर वाहेर होना हूकम अदालत का न करै वा येक आदमी कौ अपनी तरफ से मुपत्यार करकै सरकार मै हाजिर रखै—

दफे १०

मौजे भारथपुर वगैरा मे की जागीरया था या है कुछ वांकी मालगुजारी वा तकावी सरकार की जिमे जिमीदारौ के होई उसकौ वसुल करकै सरकार मै पहुचावै। कुछ उजर न करै—*

*Foreign Dept., July, 1812, No. Nil., CB.p.276

१२१

करारनामा लिष दयौ गोपाल लाल नै। आगे बीच जागीर रसमी चौबे दरियाव सिंघ किलेदार कालींजर के जमीन हमकौ मुकर्रर था। जमीन मजकूर बीच बदले गावै जागीर के सरकार के पालसे मैं आई सो रजावंदी चौबे मजकूर वा और हिसेदारै उनके येवज जमीन मजकूर के मौजे कामता वा रजौला परगने भितरी वा कोनहसका सरकार से हमकौ इनाइत हुवा। इस वास्ते अपने पुसी से इकरारनामा दाषिल करकै इकरार करते है की दफात मुफसलेजैल के काइम वा सावित रहै—

दफे १

साथ सरदारै मुलक वुदेलषंड कै जो कोई तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार की सै फिरै अगर नतैत हमार भी होई तौ उसे मिलाप लिषा पठी चिठी पाती माफूप करै औ कोई मुतवंसिल वा लरके वाले उसके को अपने जागीर के गावन मैं रहने कौ जंगा पनाह न देई—

दफे २

अगर किसु मुतवंसिल सरकार दौलत मदार के से झगरा वा कजिया न करै। अगर वै सव हमारे साथ पलस करै दुनौ सूरत मैं इतलाह सिरदारन सरकार के करौ। सिरदारै सरकार दौलतमदार के आपुस के कजिया कौ दरियाफत करकै रफा कर देई—

दफे ३

अगर कोई रैयत सरकार दौलत मदार की हमारे जागीर के गावन मैं भाग कै आवै उसके ताई पकरकै वरवषत तलव हवाले नोकरै या अहिलकारै सरकार के करै। अगर सरकार के आदमी उसके पकरने को आवै उसे मुजाहिम न होई वलक सरकार के आदमियौ के सामिल होकै उन सवौ कौ पकरै औ वीच मुकदमे अदालत देवानी वा अदालत फौजदारी वावत उस मुकदमे के वाद इस इकरारनामे के होई औ मारफत साहेव अजैंट के जारी होवै तावेदार रहौ। किसी तरा सै हंगामा फिसाद न करै—

दफे ४

चौरौ वा ठगौ के ताई वीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल कोई रयैत सरकार की कौ वा मुसाफ कौ हमारे गावन से चोरी जाई या लूट जाई तौ जिमीदारौ उस गाव के से तागीद करकै माल चोरी का देलादेई कै जिमीदारौ कौ सरकार मै सौंपदेई या चोर डकैत कौ पकर कै वीच सरकार दौलतमदार के पहुचाई देई औ कोई वीच मुलक सरकार के षुनी या गुनाहगार होकै हमारे देहात जागीर के आवै उसके ताई भी पकरकै सरकार मैं पहुचाई देई—

दफे ५

मौजे कामता वगैरा की अब जागीर मै पाया है। अव तक अदालत के हूकम मै था। अगर डिगरी कोई मुकदमे की रैयत वा जिमीदारौ मौजे मजकूरौ के नाम भई होई औ उसके जारी करने कौ हूकम मारफत साहेव अर्जेट की पहुचै माफक हूकम के अमल मै ल्यावै उजर वाहेर होना हूकम अदालत का न करै वा ग्रेक आदमी अपनी तरफ से मुषत्यार करकै सरकार मै हाजिरे रैषै—

दफे ६

मौजे कामता वगैरा की जागीरे पाया है। कुछ वाकी मालगुजारी वा तकावी सरकार की जिमे जिमीदारौ के होई उसकौ वसुल करकै सरकार मैं पहुचावै। कुछ उजर न करै। तारीष ४ जुलाई सन १८११ ईसवी मुताविक असाठ वदि १० संवतु १८६९*

१२२

इकरारनामा लिष दयौ चौवे गया परसाद—आगे मुलक वुदेलषड सरकार कंपिनी के षालसे मै आयौ। करारनामा तावेदारी का दाषिल करने पर सरकार से सनध जागीर देहात परगने कालीजर वगैरा वा किला समेत पुस्तदरपुस्त कौ मिला था। हमारी सलाह से करारनामा वा सनध चौवे दरियावसिंघ के नाम हूवा था। लेकिन चौवे मजकूर वा हमसे वा और साझियौ से नावाकफी के वाइस तावेदारी जैसी चाहियत तै वौ सरकार के मेहरवानगी के लाइक थी सो न हूई। तिसपर भी सरकार ने हमारे कसूर की भूल चूक वूझकै की जिसके रहने से वेहूकमी होती रही। सो किला सरकार ने लैकै वदला जागीर का हमारे दरषास्त माफक मौजै तराव वगैरा परगनै भितरी वा कोनहस वगैरा दिया। इस वास्तै ग्रा इकरारनामा दाषिल करते है की सव कलमवंदी पर काइम वा सावित रहै—

दफे १

साथ सरदारै मुलक वुदेलषंड के जो कोई तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार की से फिरै अगर नतैत हमारा भी होई तौ उसे मिलाप लिषा पठी चिठी पाती माकुप करै औ कोई मुतवंसिल वा लरके वाले उसके कौ अपने जागीर के गावन मै रहने को जंगा पनाह न देई—

दफे २

अगर किसु मुतवंसिल सरकार दौलत मदार के से झगरा वा कजिया न करै। अगर वै सव हमारे साथ पलस करै दुनौ सुरत मे इतलाह सिरदारन सरकार के करै।

*Foreign Dept., July, 1812, No. Nil., CB.p. 304

सिरदारै सरकार दौलत मदार के आपुस के कजिया कौ दरियाफ्त करकै रफा कर देई—

दफे ३

वदोवस्त घाटी इलाके अपने के इस तरा का करै की कोई फिसादी वा लुटेरा वा दुसरे सरारती उस राह से आने जाने न सकै औ किसी तरामे कोइी फसादी को न छोडै की उस राह से मुलक सरकार मे या मुलक मुतवंसिलै सरकार के जाइकै फिसाद वरपा करै। अगर कोई सरदारै तरफ मुलक महरु सै सरकार या मुतवंसिलै सरकार से फौज सुंधा राह इलाके हमारे से कस्त मुलक सरकार के करै षवर उसका पहिले पहुचनै नजीक इलाके अपने के सिरदारै सरकार के पहुचावै औ अपनै मकदूर माफक उसके वंद करने मै कोसिस करै—

दफे ४

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार कै घाटी राह इलाके हमारी की सै उपर घाटी के या किसी तरफ जावै हरगिज मना मुजाहिमत न करै वलक आदमी मातवर वाकिवकार साथ करै तौ जिस राह से चाहै जाई औ जव तक फौज सरकार दौलत-मदार की हमारे इलाके मे या इलाके दुसरे के नगीच हमारे रहै रसद असवाव जरुरी लसगर मै पहुचावते रहै—

दफे ५

अपने जागीर के गावन मै लरके वाले सुंधा रहै। अगर कोई राजा वा मुतवंसिल सरकार के तिनके गावन मै जागा मे रहै घर वनावै तौ पहिले सरकार से हूकम लै लेई। वे हूकम सरकार के दुसरी जागा न जाई—

दफे ६

साथ कोइी फिसादी वा लुटेरा वा वटपार दुसरे हरामषोरै वाहेर वा भितरे मुलक वुदेलषंड के वा दुसरे मुमालिक महरुसै सरकार दौलतमदार कै साजस ना करै औ वीच गावन जागीर अपने के वा अपने हिमाइत मे रहने न देई पनाह न देई वलक जव षोज फिसादी मजकूर का पावै षवर हजूर सरकार दौलत मदार के तुरत पहुचावै वा अगर पकरना उन्हौ का हमारे मकदूर के भीतर होई उसमे कसूर न करै औ लिषा पठी वा सव मामला उन सवौ से माकूफ करै औ नोकरै वा मुतवंसिलै सरकार दौलतमदार के दुसमनागी न करै। अगर दरम्यान मुतवंसिलै सरकार दौलत मदार के कोई तरा सै काजिया होई मँदत किसी की वे हुकम सरकार के न करै। अपने घर वैठे रहै औ हमेसा फुरमावरदार सरकार के रहै वा किसी तराकी तावेदारी वा फुरमावरदारी से वाहेर न होई—

दफे ७

गर कोइी रैयत सरकार दौलत मदार की हमारे जागीर के गावन मै भाग कै आवै उसकी ताई पकरकै वर वषत तलव हवाले नौकरै या अहिलकारै सरकार के करै। अगर सरकार के आदमी उसके पकरने कौ आवै उसे मुजाहिम न होई वलक सरकार

के आदमियौ के सामिल हो कै उन सवौ को पकरै औ वीच मुकदमै अदालत देवानी वा अदालत फौजदारी वावत मुकदमे के वाद इस इकरारनामे के होई औ मारफत साहेव अजंट के जारी होवै तावेदार रहै। किसी तरा से हंगामा व फिसाद न करै—

दफे ८

चौरौ वा ठगौ के ताई वीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल्ल कोई रैयत सरकार की कौ वा मुसाफर कौ हमारे गावन से चोरी जाई या लुट जाई तौ जिमीदारौ उस गाव के से तागीद करकै माल चोरी का देलाई देई कै जिमीदारौ कौ सरकार मै सौपदेई ग्रा चोर डकैत कौ पकरकै वीच सरकार दौलत मदार मे पहुचाइ देई औ कोई वीच मुल्क सरकार के षुनी ग्रा गुनागार होकै हमारे देहात जागीर के आवै उसके ताई भी पकरकै सरकार मे पहुचाई देई—

दफे ९

तराव वगैरा की अव जागीर मै पाया है अव तक अदालत के हुकम मै था। अगर डिग्री कोई मुकदमे की रैयत वा जिमीदारौ मौजे मजकुरौ के नाम भई होई औ उसके जारी करने कौ हुकम मारफत साहेव अजंट की पहुचै माफक हुकम के अमल मे ल्यावै उजर वाहेर होना हुकम अदालत का न करै वा येक आदमी कौ अपनी तरफ से मुषत्यार करकै सरकार मै हाजिर रषै—

दफे १०

मौजे तराव वगैरा की जागीर पाया है। कुछ वाकी माल गुजारी वा तकावी सरकार की जिमे जिमीदारौ के होई उसकौ वसुल करकै सरकार मै पहुचावै। कुछ उजर न करै—

तारीष १९ माह जुन सन १८१२ ईसवी मुताविक असाढ सुदि १० संवतु १८६९ सन १२१९ फसली—*

१२३

करारनामा लिष दयौ चौवे नवल किसोर वा कवीला भरथ जु चौवे के—आगे मुलक वुदेलषंड सरकार कंपिनी के षालसे मै आयौ। करारनामा तावेदारी का दाषिल करने पर सरकार दौलत मदार से सनध जागीर देहात परगने कालीजर वगैरा किला समेत पुस्तदरपुस्त कौ मिला था। हमारी सलाहन सै करारनामा वा सनध चौवे दरियाव सिंघ के नाम हुवा था। लेकिन चौवे मजकूर वा हमसे वा और साझियौ सै नावाकफी के वाइस तावेदारी जैसी चाहियतै वा सरकार के मेहरवानगी के लाईक थी

*Foreign Dept., July, 1812, No. Nil., CB.p. 325

सो ना हुई। तिस पर भी सरकारनै हमारे कसुर की भूल चूक वृझ कै की जिसके रहने से वेहूकमी होती रही। सो किला सरकार ने लैकै वदला जागीर का हमारे दरखास्त माफक मौजे मैंसौत वगैरा परगने भिलरी वा कोनहस के दिया। इस वास्तै या इकरारनामा दाषिल करते है की सव कलमवंदी पर काईम वा साबित रहै—

दफे १

साथ सरदारौ मुलक वुदेलषंड के जो कोई तावेदारी वौ फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार की सैं फिरैं अगर नतैत हमारा भी होई तौ उसै मिलाय वा लिषापठी चिठी पाती माकुप करैं औ कोई मुतवंसिल वा लरके वाले उसके कौ अपने जागीर के गावन मै रहने कौ जगा पनाह न देई—

दफे २

अगर कोई मुतवंसिल सरकार दौलत मदार के से झगरा वा कजिया न करैं अगर वै सव हमारे साथ षलस करैं दुनौ सुरत मैं ईतल्लाह सिरदारन सरकार के करैं। सिर-दारैं सरकार दौललमदार के आपुस के कजिया कौ दरियाफत करकै रफा कर देई—

दफे ३

वदोवस्त घाटी ईलाके अपने के इस तरा का करैं की कोई फिसादी वा लुटेरा वा दुसरे सरारती उस राह सैं आने जाने न सकै औ किसी तरासे कोई फसादी को न छोडैं की उस राह से मुलक सरकार मै या मुलक मुतवंसिलै सरकार के जाई कै फिसाद वरपा करै। अगर कोई सरदारै तरफ मुलक महरुसै सरकार या मुत-वंसिलै सरकार से फौज सुंधा राह इलाके हमारे से कस्त मुलक सरकार के करैं षवर उसका पहिले पहुचनै नजीक ईलाके अपने के सिरदारैंसरकार के पहुचावैं औ अपने मकदूर माफक उसके वंद करने मै कोसिस करैं—

दफे ४

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार कै घाटी राह इलाके हमारी की से उपर घाटी के या किसी तरफ जावैं हरगिज मना मुजाहिमत न करैं वलक आदमी मातवर वाकिवकार साथ करैं लौं जिस राह से चाहैं जाई औ जव तक फौज सरकार दौलत मदार की हमारे इलाके मे या इलाके दुसरे के नजीक हमारे रहैं रसद असवाव जरुरी लसगर मे पहुचावते रहैं—

दफे ५

अपने जागीर के गावन मैं लरकै वाले सुंधा रहै। अगर कोई राजा वा मुतवंसिल सरकार के तिनके गाव जागा मै रहैं घरवनावैं तौ पहिले सरकार सैं हुकम लैलेई। वेहुकम सरकार के दुसरी जागा न जाई—

दफे ६

साथ कोई फिसादी वा लुटेरा वा बटपार दुसरे हरामषोरै वाहेर वा भितरे मुलक वुंदेलषंड के वा दुसरे मुमाल्कि महरुसै सरकार दौलत मदार के साजस न करै औ वीच गावन जागीर अपने के वा अपने हिमाइत मे रहने न देई पनाह न देई वलक जव षोज फसादी मजकुर का पावै षवर हजुर सरकार दौलत मदार के तुरत पहुचावै वा अगर पकरना उन्हौ का हमारे मकदूर के भीतर होई उसमे कसूर न करै औ लिषा पढी व सव मामला उन सवौ से माकुप करै औ नोकरै वा मुतवंसिलै सरकार दौलतमदार के दुसमनागी न करै। अगर दरम्यान मुतवंसिलै सरकार दौलतमदार के कोई तरामे कजिया होई मंदत किसी की वेहुकम सरकार के न करै। अपने घर वैठे रहै औ हमेसा फरमावरदार सरकार के रहै वा किसी तराकी तावेदारी वा फुरमावरदारी से वाहेर न हो—

दफे ७

अगर कोई रैयत सरकार दौलत मदार की हमारे जागीर के गावन मैं भागकै आवै उसकी ताई पकरकै वरवषत तलव हवाले नोकरै या अहिलकारै सरकार के करै अगर सरकार के आदमी उसके पकरने को आवै उसे मुजाहिम न होई वलक सरकार के आदमियौ के सामिल होकै उन सवौ को पकरै औ वीच मुकदमे अदालत देवानी वा अदालत फौजदारी वावत उस मुकदमे के वाद इस इकरानामा के होई औ मारफत साहेव अजंट के जारी होवै तावेदार रहै। किसी तरासे हंगामा फिसाद न करै—

दफे ८

चोरौं वा ठगौ के ताई वीच देहात जागीर अपने के रहने न देई। अगर माल कोई रैयत सरकार की कौ व मुसाफर कौ हमारे गावन से चोरी जाई या लुटजाई तौ जिमीदारौ उस गाव के से तागीद करकै माल चोरी का देलाई देई कै जिमी-दारौ कौ सरकार मैं सौपदेई या चोर डकैत कौ पकरकै वीच सरकार दौलत मदार के पहुचाई देई औ कोई वीच मुलक सरकार के षुनी या गुनागार होकै हमारे देहात जागीर के आवै उसके ताई भी पकरकै सरकार मैं पहुचाई देई—

दफे ९

भैसौत वगैरा की अव जागीर मै पाया है अव तक अदालत के हुकम मे था। अगर डिगरी कोई मुकदमे की रैयत वा जिमीदारौ मौजे मजकुरौ के नाम भई होई औ उसके जारी करने कौ हुकम मारफत साहेव अजंट की पहुचै माफक हुकम के अमल मैं ल्यावै उजर वाहेर होना हुकम अदालत की न करै वा येक आदमी कौ अपनी तरफ से मुषत्यार करकै सरकार मैं हाजिर रंषै—

दफे १०

मौज भैसौत वगैरा के की जागीर पाया है कुछ वांकी मालगुजारी वा तकावी सर-कारकी जिंमे जिमीदारौ के होई उसकौ वसुल करकै सरकार मैं पहुचाव। कुछ उजर न करै—

ता: १९ माह जुन सन १८१२ ईसवी मुताबिक जेठ सुदि १० संवत् १८६९ सन १२१९ फसली*

१२४

करारनामा लिष दयौ चौवे दरियाव सिघ—

आगे मुलक वुदेलषंड सरकार कंपिनी के षालसे मै आया। करारनामा तावेदारी का दाषिल करने पर सरकार से देहात परगने कालीजर वगैरा व किला समेत हम कौ पुस्तदरपुस्त कौ मिला था। हम सेवा हमारे साझियौ से नावाकफी के वाइस तावेदारी जैसी चाहियेतर्तै व सरकार के मेहरवानगी के लाइक थी सो न हुई। तिस पर भी सरकार नै हमारे कसूर की भूल चूक वुझिकै की जिसके रहने से वेहुकुमी होती रही। सो किला सरकार ने लैकै वदला हमारे दरषास माफिक मौजे पालदेव वगैरा परगने भिगरी व कोनहस वगैरा दिया इस वास्ते या इकरारनामा दाषिल करते है की सब कलंबंदी पर कायाम व सावित रहै—

दफै १

साथ सरदारै मुलक वुंदेलषंड के जो कोई तावेदारी व फरमावरदारी सरकार दौलत मदार की से फिरै अगर नैतत हमारा भी होइ तौ उसे मिलाप व लिषा पठी चिठी पाती माकुफ करै औ कोई मुतवंसिल व लरकेवाले उसके कौ अपने जागीर के गाउन मै रहने कौ जगा पनाह न देइ—

दफै २

अगर किसुं मुतवसिल सरकार दौलतमदार के से झगरा व कजिया ना करै अगर वै सव हमारे साथ षलस करै दुनौ सूरत मै इतलाह सिरदारन सिरकार के करै। सिरदारै सरकार दौलत मदार के आपुस के कजिया कौ दरियाफत करकै रफा कर देई—

दफे ३

वदोवस्त घाटी इलाके अपने के इस तराका करै की कोई फिसादी व लुटेरा व दुसरे सरारती उस राह से आने जाने ना सकै औ किसी तरासे कोई फिसादी कों न छोडै उस राह से मुलक सरकार मै या मुलक मुतवंसिलै सरकार के जाइकै फिसाद वरपा करै। अगर कोई सरदारै तरफ मुलक महरुसै सरकार या मुतवंसिलै सरकार से फौज सुधा राह इलाके हमारे से कस्त मुलक सरकार के करै षवर उसका पहिले पहूचने नजीक इलाके अपने के सिरदारै सरकार के पहूचावै औ अपने मकदूर माफक उसके वंद करने मै कोसिस करै

*Foreign Dept., July, 1812, No. Nil., CB.p. 347

दफै ४

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार कै घाटी राह इलाके हमारी की से उपर घाटी के या किसी तरफ जावै हरगिज मना मुजाहिमत न करै बलक आदमी मातवर वाकिबकार साथ करै तो जिस राह से चाहै जाइ औ जब तक फौज सरकार दौलति मदार की हमारे इलाके मै या इलाके दुसरे नगीच हमारे रहे रसद असवाव जरुरी लसगर मै पहुचावते रहे—

दफै ५

अपने जागीर के गावन मै लरके वाले सुषा रहै। अगर कोइी राजा व मुतवंसिल सरकार के तिनके गाउ जागा मैं रहै घर वनावै तौ पहिले सरकार से हुकुम ललेइ। वेहुकुम सरकार के दुसरी जागा न जाइ—

दफै ६

साथ कोइी फिसादी व लुटेरा व बटपार दुसरे हरामषौरे वाहिर व भीतरे मुलक वुदेलषंड के व दुसरे मुमालिक महरुसै सरकार दौलतिमदार के साजस न करै औ वीच गावन जागीर अपने के व अपने हिमाइत मै रहने न देइ पनाह न देइ बलक जब षोज फिसादी मजकूर का पावै षवर हजुर सरकार दौलति मदार के तुरत पहुचावै या अगर पकरना उन्हौ का हमारे मकदुर के भीतर होई उसमै कसूर न करै। लिषापठी व सब मामला उन सवौ से माकूफ करै औ नौकरै व मुतवंसिलै सरकार दौलत मदार के दुसमनागी न करै। अगर दरम्यान मुतवंसिलै सरकार दौलति मदार के कोइी तरा से कजिया होई मदत किसी की वेहुकुम सरकार के न करै अपने घर वैठे रहै औ हमेसा फरमावरदार सरकार के रहै औ किसी तराकी तावेदारी व फरमावरदारी से वाहेर न होइ—

दफै ७

अगर कोइी रैयत सरकार दौलत मदार की हमारे जागीर के गावन मै भाग कै आवै उसकी ताइी पकरकै वरवषत तलव हवाले नौकरै या अहिलकारै सरकारके करै। अगर सरकार के आदमी उस के पकरने कौ आवै उसे मुजाहिम न होइ वलक सरकार के आदमियौ के सामिल होकै उन सवौ कौ पकरै औ वीच मुकदमे अदालत दिवानी व अदालत फौजदारी वावति उस मुकदमे के वाद इस इकरारनेमे के होइ औ मारफत साहेव अर्जेट के जारी होवै तावेदार रहै। किसी तरासे हंगामा व फिसाद न करै

दफै ८

चोरौ व ठगौ की ताइी वीच देहात जागीर अपने के रहने न देइ। अगर माल कोइी रैयत सरकार की कौ व मुसाफिर कौ हमारे गाउन से चोरी जाइ या लुटिजाइ तौ जिमीदारौ उस गाउ के से तागीद करकै माल चोरी का दिलाइ देई कै जिमीदारौ कौ सरकार मै सौपिदेइ या चोर डकैत कौ पकर कै वीच सरकार दौलतिमदार

के पहूचाइदेइ औ कोई बीच मुलक सरकार के षुनी या गुनागार होकै हमारे देहात जागीर के आवै उसके ताई भी पकरकै सरकार मैं पहूचा देइ—

दफै ९

पालदेव वगैरा की अव जागीर मैं पाया है। अव तक अदालत के हुकुम मैं था। अगर डिगरी कोई मुकदमे की रैयत व जिमीदारी मौजे मजकुरी के नाम भई होइ औ उसके जारी करने कौ हुकुम मारफत साहेव अजैंट की पहुचैं माफक हुकुम के अमल मैं ल्यावैं उजर वाहिर होना हुकुम अदालत का न करैं व येक आदमी कौ अपनी तरफ से मुषत्यार करकै सरकार मैं हाजिर रषैं—

दफै १०

मौजे पालदेव वगैरा की जागीर पाया है। कुछ वाकी मालगुजारी सरकार की जिमैं जिमीदारौ के होइ उसको वसुल करकै सरकार मैं पहूचावैं कुछ उजर ना करैं— ता: १९ माह जुन सन १८१२ ईसवी मुताविक जेठ सुदि १० संवत् १८६९ सन १२१९ फसली—*

१२५

चौधरियान व कानुगोयान वा जिमीदारान वा तालुकदारान परगने कोटरा वा पवई वा अजेगढ मुलक वुदेलषंड के मालुम होई वाद आवने मुलक वुदेलषंड का सामिल मुलक सरकार दौलतमदार कंपिनी अगरेज वहादुर के महाराजा बषतसिंघ वहादुर पंती महाराजा जगतराज के की रईस हंकदार इस मुलुक है तावेदारी की राह से सरदारैं सरकार के पास हाजिर हुयैं। सरदारैं सरकार ने नजरपरवरिस वा रियाईत सिरदारजादौ के की रिवाज इस सरकार दौलतमदार का है छंतीस हजार रुपैया सालियाना वास्ते षर्च जरुरी राजा मौसूक के मुकर्रर किया औ उस वषत दरम्यान सरदारैं सरकार वा राजा मौसूफ के आवाद हुवा था की और राजा हंकदार की तरह परगना वा तालुका राजा मौसूफ को भी वदले सालियाने के दिया जाई सो माफक दरषास्त राजा मौसुक वा पुरा करना अवादा मजकुर के माह जून सन १८०७ अगरेजी के वाद दाषिल करने इकरारनामा तावेदारी के परगना कुटरा वा पवई औ वाद जपती जागीर लछमनसिंघ दौवा की देहात—अजेगढ के की मिलकियत वा उनन कदीम राजा मौसूफ का था वदले वाजेगा वा परगने पवई के सिरदारैं सरकार ने राजा मौसूफ कौ दिया। ज्यौ पहिली सनध मैं तफसील नाम गावन के ना लिखे गये थे इन दिनौ राजा मौसूफ ने दरषास्त सनध इक जाई वा तफसील नाम गावन परगनात मजकुर के की। राजा मौसुफ के दषल वा

*Foreign Dept., July, 1812, No. Nil., CB.p. 402

कवजा मे हौ किया। इस वास्ते सनध माफी गावै तफसील नीचे के मालवा साईर वा आवकारी वा सव हंक हकुक सुंधा पुस्तदरपुस्त साप दर साप को राजा मौसूफ कौ सरकार से दिइी गइी। जव तक की राजा मौसूफ आल औलाद उनकी इकरा-रनामा की दफै पर सावित रहैगे किसी तरा गावन मजकुर से मुजाहिमत ना होगी। वीच तसंरुफ राजा मौसुफ वा औलाद उन के कौ वहाल वरकरार रहैगा चाहिये की चौधरी कानुगो वगैरा राजा मौसूफ कौ मालिक औ मुषत्यार गावन म (खंडित) ार का जानै औ राजा मौसूफ कौ मुनासिव या है की गावन मजकुर कौ तरंदुत आवाद कर के रेयत को राजी रप कै महासल उस का सरकार के पैरपाही वा तावेदारी मे तंसरुफ करै

येकत्र मौ:
६०८

असली	दाषली		
४१४	१९४		

देहात परगने कोटरा ५००

असली	दाषली		
३२८	१७२		
तंपे हवेली	तंपे वडवार		
१४७	११७		
जसली	दाखली	असली	दाखली
७६	७१	७६	४१
कस्वा कुटरौ	नचरौ	वडवार खास	तिधष
१	१	८	१
छुटेही	मुटमुड	वडवार	वुनहाई
२	२	१	
छुटेही	रानी चौरा	सिरदई	गदहला
१	१	१	१
भितरी	कछगवा	वाघा	मारा
२	१	१	१
कुल गवा पटना मे सा: १	पटना वाजपेई ४	मझियारी १	मनका १
पटना	सिंघनाप		
१	१		
दरदहाई	कंगाली	धरमपुर	मुषौर
१	१	१	१
छिजौरा	मटेवरा	वरौडा	रतगवा
१	१	१	१
रीछल	जुडी	पडरिया पाटांला	फुलवारी
५	३	१	१

रीछल टेठा जुडी
१ १ १

महुवाखेर रिलाकुय मारीमाटी डुवहिया सिमरी वैसन की
१ १ १ १ १

नैगवा वाबुपुर मझटौला इटवातिलहा
१ १ १

भालेग भारत कौ
१

नवांमाव कोटा सुदरा फूलददी
४ १ ५ २

नवांगोव भरौडी सुदरा वडरा फूलदरी मुहौरा
१ १ १ १ १ १

रमनगरा काटीमाटी उठकी सुँदरी
१ १ १ १

कोनी
कोनी
१

वधौरा आसौरी भिलसाऔ पिपरी जिमी भिलसा ग्रेंकी
३ १ ८

वघौरा वधेवर भिलसा वोदा
१ १ १

मरिगवा वमुरहा पडरिया
१ १ १

वमुरहा पडरिया
१ १

दिवहरा उसराडी
१ १

कचनारौ चौकी मझगवा वैरागढ
३ १ १

कचनारौ पचौरा वधौरौ डटिन
१ १ ९ १

सिमरी
१

सथरिया घरवारौ वधौरो महार
४ ४ १ १

सथनिया अमकोला घरवारी सिजहदी माल्टन कारविराह
१ १ १ १ १ १ १

मुसौर वगैहा भठिया चहकोर इटवा मझिया
१ १ १ १ १ १

ईमलिहा अमवा समानौ कतरन
१ १ १ १

मरिगवा उहनिया
१ १

हिनौता जमुनिहाई
१ १

बभरा पिपरिया पाकरि मझगवा
१ १ १ १

मंदहा मंदहिया विरवाही वमुरहिया
१ १ १ १

ईसुरा लमडूल गठिया गोल्टी पुरुद दुदकी
१ १ १ १

महवा घेरौ वल्दवारौ जमराऔ मुडिया गोल्टी वुजरक
२ ३ १

अजवकी
२

जमराऔ खेवरा वदहिया
१ १ १

विरहा जमुनातोर
१ १

सेलहा टिपारी जिगरदहा वमुरी
१ १ ३ २

भठिहा दुरेहौ जिगरदहा नौगवा वमुखी वडौथी
२ ११ १ १ १ १

तलपुरा
१

डुरेहौ कपुरी
१ १

उनेही मलपुरा उडवरिया सिमरी वुजरक
१ १ ३ १

मजरा बहिरवा उडवरिया
२ १ १

वगदारा चौरा गुरगवा
१ १ १

चिरचिरा ठुलवजा वगली
१ १ १

तिघरी वगुला
१ १

सिमरी विसई की — सलेहौ — चापा — भटहरखरगिनकी
१ — ६ — १ — १

सलेहौ खिरवा भटहर कोठिवर की भटहर दुवेन की
१ १ १ १

मानिकपुर तिवरा
१ १

मलेहौ सटवा निदुनहाई सेमरडाडौ
१ १ १ १

मुटरा सलेहे कीज की — वम्हौर — बंजरिहा — मौहारो
१ — १ — १ — १

वछरवादौ — मछरिहा — सुपंथा — निमहरी
१ — १ — १ — १

वमुरहू — उजनेही — करहिया पुर्द — खपटिहा
१ — १ — १ — ३

खपटिहा रैगवा
१ १

मतसुका
१

छपरवारौ — हिनौती — डोभकी
४ — १ — १

भूलगवा
१

छपरवारौ — सिहलौन
१ — १

सटिया विडहारी सरहजा सरहजी
१ १ १ १

रटवा — करहिया वुजरक — टेथा — देवरी वुजरक
१ — १ — २ — २

पल्हरी — नटनवारौ — देवरी साडो
१ — १ १

डुँडहा — पतौरा — पडरियाषास — ददौरा
१ — ३ — १ — १

पतौरा करहिया — विलहा वुजरक
१ १ — २

इटौरा — विलटा सिकटा
१ — १

रिछौडी — रिछौडा — भटगवा — घनोखर
१ — १ — १ — २

घनोटवर चमडवा
१ १

सुवरहा ९
सुहरहा १ चौकडी २
वहरासर २ मझियारी २
वंजारा १ कमलपुरा २
कठवरिया ६
कठवरिया १ उठकी १
नीमी १ टेंपी १
मुगाव १ खंदिर १
माल्टन जमुनिया २
तिलहरी १
मानकपुर १
मडौसा १
मगरेला वुजरक अचारजन कौ १
लूका १
विलहाई १
सिडौली वहरौड २
लुहर गाव हडिया २
कुसेदर १
विलहा अंतरवेदिया २

ककरहाई १
भौरहा कुठवरिया की जीमी में १
सुरकीताल १
करतरिया १
मझियारी १
मगरेला खुर्द उमंडराई का १
भिटारी १
उमरी १
वभुरदेवा प्रोहित देवी सिं० १
पठराडीवनगवा २
औरीडरिवी २
हरीरा १
कस्वागंज १

अंतरवेदिया १
झिरिया १
परेडी २
देवरी षुर्द वेदुवनरी १
रमपुरा १
सुखवाहा १
नचनौडा २
अलहा भटगवा की जिमी से १

मझवाही १
सुरदहा १
कचनारी रंजोर का १
मकरी १
कोठार १
मठोई १
ककरहटा १
अमचूई १

तपे गुनौर
१०४

असली
६०

दापली
४४

गुनौर षास
२

छिपगवां
१

गुनौर वेला
१ १

हरदुवा
१

सिल्गठा
१

मझियारी
१

सरवारौ
१

सुनौरा
१

मठा टोला
१

दिधौरा
१

मलगठा
१

गभौरा
१

पुरैना वुजरक
३

वुरैना गुंजहाई
१ १

डी घी
१

वहिरासर
४

सिमरी वुजरक सुरत वा:
४

वहिरासर सटवा
१ १

सिमरी करौदी
१ १

कछरवा जुझार
१ १

घौर वैरहा
१ १

वरहाखुर्द

सिधासर
६

सिधासर तरायेता
१ १

लुडई करौहिता
१ १

जमुनिया इटवा
१ १

सेमरिया घाट का
१

नैगवा
१

तपे जसो
५१

असली
४६

दापली
५

जसोषास
३

कौरी
१

जमो चापा
१ १

गौरा
१

रैकरी
१

भिटारी
१

कलावलखुर्द
१

बरेडा
१

करहिया
१

मझगवा
१

सकरहट
१

माडनपुषरा
१

भैरहा वुजरक
१

भरहा खुर्द
१

खडहरा वुजरक
१

कलावल वुजरक
१

गरलगा
१

गरलगी
१

तिल्गवा
१

वेलहाई वुजरक
१

वेलहाई पुर्द
१

ईसरा
१

सिमरी मस्तराम
१

सिमरी नषसिरवा
१

गडरा
१

गडरी
१

पटनाखुर्द टिकरिया करतहा उभरी
१ २ १ १

सहजनी पलका बुजरक
१ १

बकुलहा पलकाखुर्द लुटाहर पटिया
१ १ १ १

सिली बिडरवाली गिरवारौ बुजर: गिरवारौ खुर्द
१ ५ १ १

बिडरवाली नौराही
सिली बहचुवा १ १ अमसिल बुजरक अभामिलखुर्द
१ १ सौराहौ पहरा १ १
१ १

बंजारी पासी उमरहाई
१ १ १

मठिया इमिलिया रटौरा बुजरक जोगिया
१ या छारे की १ १
१

ईमिली पाड: बसौरा सिलुगी तिघरा
तारे की ३ १ १
१

बसौरा गोपालपुर
१ १ खाऔ रैंगठ

छटहा १ ४
१ रैंगूठ भडरा
१ १

अकौना गोरोरा कोडर मझगवा
२ ३ १ १

गोदौरा महडवा
१ १

भुसडी
१

महिलवारौ बेलावेली इटवा बुजरक डुडहा
१ २ १ १

पटना बुजरक भमटा पुरैना कुलुवा
१ १ १ १

जमुनिया बरहा बुजरक
२ ३ बडहराखर्द धरमपुर काप

जमुनिया महोई बरहा सिमरी १ १
१ १ १

निदानी
१

हरदुहिया — सटवा
१ — २

सटवा पाली
१ १

पाली — गिरवाही — चौडा — देवरा — भौरीपाली
१ — १ — १ — १ — २

मुहगी
३

मुहगी — परसवा — वगरा — वरसोभा — किन्ना
१ — १ — १ — २ — १

खोपा — वरसोभा
१ — १

राइकाटौला
१

महेवा — असली — दा:
१० — १ — ९

महेवा — गठेवरा — नकरवा — पुरैना — वुठा — उदैपुरा
१ — १ — १ — १ — १ — १

करिया — करौदी — बुरी — हिनौला
१ — १ — १ — १

सहिलवारौ — अंतरवेदिया — खरपुरा — डोमा
१ — १ — १ — १

हरदवाही — हेनौती — देवगाअै — जुडी रंजोर पटेल की
२ — १ — १ — १

हरदवाही — वेलर — सकरवारौ — भगैपुर
१ — १ — १ — १

तपे पठार—८१—

असली — दाषली
७० — ११

छपरवाह — खेलसारी — सौनई — गाजी — जुडा
१ — ३ — १ — १ — १

खेलसारी कुंडन — जनपुरा — वरवाही — वम्हरिया
१ १ — १ — १ — १

गड्डवा
१

आमाझोर — सकतरा — महुली — गजमल — नोनतला
१ — १ — १ — १ — १

फदवारी — आमाडुगरी — कंवदा — वहमरिया
१ — १ — १ — २

वमरिया १ — बीनाडीडी १

औरड़ी वुजरक १ — औरडी खुर्द १ — मगरदहा १ — गोवरहा १ — लिनवार १

वछवन ३ — कुटकी वुजरक १ — कुटकी खुर्द १ — सरकुटी १

वछवन १ — मरहा १ — हरदुवा डमझिर २ — जैतपुर १ — खम्हरिया १

लवालोट १

लवाकपार १ — कैली १ — महुवाडोल १ — ककरी १ — चरगवा १ — गुरजी १

जमुनिया १ — वरहौ १२ — मडरी १ — उलीचीडलीचा १

खभरी १ — अस १२ दाख × — कल्हरागोरखपुर २ — पुरैना १

वंझिर १ — पोडी ३ — भअवक — पटारी १ — खखरा १

रहुनिया — टिकरी पोडी ३

नकझिर १ — मैनहा १ — पिपरिया १ — वरगठी १ — दिवरी १

हरदुवा वुजरक १ — छवौल ६ — कोटरही — कटरिया १ १ — सुवरगुडा १ १

हरदुवा खुर्द १ — वंजारी — देवरी — मझगवा — कदिया ३

पिथौरा १ — मरहा १ — दरवई १ — केलावने १ — कडिया १ — गिदरहा — देवगना १

परना १ — संराकुल्हरवा २

देहात परगने अजेगढ—८३—

असः ६८ — दाख : १५

तपे अजेगढ वो सर ४२ — तपेवीरा २६

असः ३४ — दाषः ८ — अस : १५ — दाः ७

अजेगठ कस्वानवो इमटहट
१

सहर खांस
१

निजामपुर सिमरा
१ १

वाराडा डेकौ पिटारी वनहरी
१ १

भोपतपुर पारहा
१ १

कोडई नाहरपुर
१ १

रवरा रावपुर
१ १

सिंघपुरमरछाहार विमता
२ १

वरिआरपुर देवगाव
१ १

पटतापपुर तरौनी राधापुर
१ १ १

वरैडा कुवरपुर
१ १

लुहरपाई पहारीरवेरा कोठाटोला
१ १ १

झिरना पुरवान सुबा—१७

अ: दा:
१० ७

वीराखस वेलहाई
१ १

वीरा खम्हरिया
१ १

कडरहा सुनौरा वरम दानौ
१ १

अडडपुर लौलासु
१ १

मैरागुमानगंज विहरवारौ
१ १

कल्यानपुर रामनगर
१ ११

हररजेनी चदरावल
१ १

भखुरी वरकोलावुजरक
१ १

मकरी वरकोला खुर्द
१ १

खरौनी रामनई
१ १

खितर कटरी
३ १

महाराजपुर हरीआ
१ १

राजापुर आलमपुर
१ १

देहात खदानै हीरन कै
१५

दमचुवा परचुवा मटुली
१ १ १

कुहीवगला	गुजार	पालीवखतपुर		
१	१	१		
गोदी	करौडी	विजवारौ	पाठा	पलथरा
१	१	१	१	१
खिरवा	भैसमुडा	सिरसी	ईम्रतकुंड	
१	१	१	१	

देहात परगने पवई
२५

असली	दाखली
१८	७

आमघाट		गिरहटा		गमियारीमठा		देवरी	
३		२		२		३	
अस :	दाख :	अस :	दाखल :	असली	दाखली	अस	दाख
१	१	१	१	१	१	१	२

गोल्टी	कनचौरा	ककरा		रतनपुर
१	१	२		१
		अस :	दाख :	
		१	१	
जुडी	नराइनपुर	जमुनी		मरदा
१	१	१		१
परौठी	षटवार	भडार		षम्हरिया
१	१	१		१
षौडा	घौरा			
१	१			

तारीष २३ माह अकतूवर सन १८१२ ईसवी मुताविक कातिक वदी ३ तीज संवत १८६९*

१२६

चौधरियांन वा कानुगोयान वा जिमीदारान परगने पनवारी वा पवई वगैरा मुताल्कै मुलक वुंदेलषंड के मालुम करै आपर राजा केसरी सिंघ जैतपुर के सिरदार हंकदार इस मुलक के औलाद राजा जगतराज के ई सै पहिले सरकार दौलतमदार मै हाजिर हो कै करारनामा तावेदारी दफे आठ का अपने मोहर दसषत से दाषिल कर कै वावन गाव परगने पनवारी के माफी मै पाये थे सो सरकार के तावेदारी

*Foreign Dept., 14th September, 1812, No. Nil.

षैरपाही मैं हाजिर रहैं। इस वास्ते ता: १५ जुलाई सन १८०४ ईसवी को देहात परगने पवई के औ ता: १२ सितंबर सन मजकुर कौ देहात षास हरिन के भी वा मंद नजर हंक राजा मौसूफ के परवरिस वा मुतवसिल नेवाजी की राह से राजा मौसूफ कौ इनाइत हुवा। इन दिनौ राजा मौसूफ दरषास्त इकताई होने की किया। इस वास्ते सनध माफी देहात मुफसले जैल साविक वाहाल के राजा मौसूफ को दिही गई। जब तक राजा मौसूफ वा आल औलाद उनके इकरारनामे के दफेन पर की हाल मै गैरा दफे का दाषिल किया है साविक वा काईम रहैगे देहात मुफसले जैलके सब हंक हकुक माल वा साईर वा आवकारी सुंधा पुस्तदरपुस्त वा साषदरसाष कौ वहाल वरकरार रहैगा। चाहियै की चौधरी कानुगो वगैरा राजा मौसूफ को मालिक मुषत्यार मजबूत गावन का जानौ औ राजा मौसूफ को लाजिम है कि गावन मजकुर कौ तरंदुत आवाद करकै रैयत कौ राजी सुकरगुजार रष कै अमल उस का सरकार के तावेदारी वा षैरषाही मै रहि कै अपने तसंरुफ षर्चे मे करै—

पंचत्र मौजे
१५०

देहात परगने पनवारी—
५२

जैनपुर १	अजनर १	आरी १	वंचवरा १
वमनौरा १	पोही १	कंरा १	म (गरि) या १
वडखेरा १	पुरवा १	नगारा १	षुरदा १
वुदवारौ १	सगुनिया १	इदाहटा १	विजौरी १
अमरपुरा १	टिकरिया वुज: १	रजौनी १	हसूला १
थुरहट १	लमौरा १	वुदौरा १	पचा (स) १
कैथौरा १	ममरौल वुज: १	गुठा १	मुडारी १
सारंगपुरा १	दादरी १	मवैया १	महुवाबांध १
(माह) रिया १	लोहेडी १	पेरिया वुजरक १	रामपुरा १
पिपरा १	अकौना १	षेरिया षुर्द १	वछे (परवर)

अरगटमड	भगारी	रगौलिया वुज:	वगौरा
१	१	१	१
अतनिया	जैलवारौ	परानरायन	छितरवारौ
१	१	१	१
(वो) रा	घुटई	भगौरी	भुजपुरा
१	१	१	१

देहात परगने पवई—————
८३

सिमरिया गठी सु:	तिवरा	विरासिन	चडरा
३	२	२	१
हीरापुर	वडरषेरा	नादिन	कुलुवा
२	२	६	१
लिदरी	वनभई	निवारी से वाईस नध राजा केसो रास:	मजरा
२	१	१	१
हरदुवा	घुटरिया	गरलगा	टहनगा
१	१	१	१
षैरी	षैरा वगराम ललारौ		पिडरिया
१	१ १		१
पटनाषुर्द	रैंकरा	ठिमरी	कोनी
१	१	१	१
वैरगठा	सरापुरवा	हरदुवाक्यानपार	मडानवा मिसरिया
१	१	२	२
तिरहुपिपरिया	झरकुवा	वडरिया खुई	सौगरा
१	२	१	१
जैतुपुरा	छीपाजसुतपुरा	षिरवासे : सन राजा किसोर सिंघ	जजगल
१	१२	१	१

छिवलासे : स :

राजा किसोर सिघ	षटारी	ककराही	वरदाकेवरवा
१	२	१	४
		जमुरिया,	कोथी
		१	१
		इटहाखरो	आवरीखेरो
		१	१
सिगरा	रकासिहावुटा	भैसवाही	वाधा
१	२	१	१

करहरी	षजुरी	सपतैया षु वु:	घरकपाटी
१	१	२	१

पुरहटा	पैरखादौ
१	१

देहात परगने परहोव पेरष दानै हरिन को—
१५

सतरहो	नैरा	सिषुपुरा	पटी	षम्हरिया	भभका
१.	१	१	१	१	१

चौडरा	सिलददा	कल्यान पुर सै: टपकना सं. रा: किसोर सि०	वो सरार
१	१	१	१

तरीछा	मडग वाराजवान	सलैया	अकला
१	१	१	१

ता: २० माह सितंवर सन १८१२ ईसवी मुताविक भादौ सुदि १५ संवत १८६९ सन १२१९ फसली—*

१२७

चौधरियान वा कानुगोयान वा जिमीदारान परगने पतवारी वा पवई वगैरा मुतालकै मुलुक वुदेलषंड के मालुम करे आपर राजा केसरी सिंघ जैलपुर के सिरदार हकदार इस मुलुक कै औलाद राजा जगत राज के ई सै पहिले सरकार दौलतमदार मै हाजिर हो कै करारनामा तावेंदारी दफे आठ का अपने मोहर दसषत से दाषिल कर कै वावन गाव पनवारी के माफी मै पाये थे सो सरकार के तावेदारी षैरषाही मै हाजिर रहे। इस वास्ते ता: १५ जुलाई सन १८०९ ईसवी को देहात परगने पवई के औ ता: १२ सितंवर सन मजकुर का देहात षान हीरन के भी वा मंद-नजर है के राजा मौसूफ के परवरिस वा मुतवंसिल नेवाजी की राह पे राजा मौसूफ को इनाइत हुवा। इन दिनौ राजा मौसूफ दरषास्त सनव इक आई होने की किया। इस वास्ते सनद माफी देहांत मुफसले जैल साविक वा हाल के राजा मौसूफ कौ दिइी गइी जव तक राजा मौसूफ वा आल औलाद उन के इकरारनाम के दफेन पर की हाल मै गैरा दफे का दाषिल किया है सावित काईम रहैगे देहात मुफसले जैल के सव हंक हकूक माल वा साईर वा आकारा सुवा पुस्तदरपुस्त वा साष दर साष कौ वहाल वरकरार रहैगा। चाहियै की चौधरी कानुनगो वगैरा राजा मौसूफ कौ मालिक मुषत्यार मजवूत गावन का जानौ औ राजा मौसूफ कौ लाजिम है की गांवन मजकूर कौ तरदुत आवाद कर कै रैयत कौ राजी मुकरगुजार रष कै अमल उसका सरकार के तावेदारी वा षैरषाही मै राहि कै अपने तसरुफ पर्च मे करै—

*Foreign Dept., 20 Sept., 1812, No. Nil.

येकत्र मौजे १५०

देहात परगने पनवारी
५२

जैतपुर १
षोही १
नगारा १
विजौरी १
थुरहट १
मगरौलबुज: १
मवैया १
रामपुरा १
अरगटमुड १
जैतवारी १
भगौरा १

अजनर १
कंरा १
पुरहा १
अमरपुरा १
लमौडा १
मुग १
मुहवावांध १
पिपरा १
भगारी १
परानरायन १
भुजपुरा १

आरी १
मगरिया १
बुढवारौ १
टिकरिया बुज: १
बुदौरा १
मुडारी १
वसहडिया १
बकौना १
रगौलियाबु १
छिलवारौ १

बचेवरा १
बडषेरा १
(म) गुनिया १
रजौनी १
षचारा १
सारगपुरा १
लोहेडी १
षेरियापुर्द १
वगौरा १
वौरा १

नमनौरा १
पुरवा १
इंदाहटा १
हसूला १
कैथोरा १
दादरी १
वेरिया वुजरक १
बछेछर बुज० १
अतमिया १
छुटई १

देहात परगने पवई
८३

सिमरियागनसु ३
हीरापुर २
वनभई १
षुटरिया १
पैरा १

तिखरा २
बडषेरा २
नेवरी सेवाई सनध राजा किसोर सि: १
गरलगा १
वगरामंल्लवारौ १

नादिन ६
मजरा १
टहनगा १
षिडरिया २

विरासिन २
कुलुवा १
हरदुवा १

चडरा १
लिदरी २
षैअ १
पटनाषुर्द १

रेकस	ठिमरी	कोनी	वैरगठा	संरापुरवा
१	१	१	१	१
हरदुवा बगलपार		मझगवा पिपरिया		तिरहुपिपरिया
२		२		१
करकुवा	पडरियापुर्द	सौगरा		जैनपुरा
२	१	१		१
छीपाजसुनपुरा	षिरवा से : स : राजा किसोर सिंघ			जजगाव
१२	१			१
छिवला से : स : राजा किसोर सिंघ	पचारी	ककराती		नरदा के पुरवा
१	२	१		४
		जमुनिया		कैथी
		१		२
		इटहाखेरा		आवरीषेरो
		१		१
सिंगरा	रकसिदावुढा	भैंसवाही		वाधा
१	२	१		१
करहरी	षमूरी	सर्वत या षुवु		धरकवाटी
१	१	२		१
पुरहटा	षैरवारौ			
१	१			

देहात परगने वरहो पचेर षदानैहीरन की
१५

सतरहो	मैरा	सिंघुपुरा	पटी	षम्हरिया
१	१	१	१	१
भभका	चौडरा	सिलररा		कल्यानपुर मै : स : रा : किसोर सि :
१	१	१		१
टपकनां	वोसरार	तरौछा		मझग वा राजषान
१	१	१		१
सवैया	अकला			
१	१			

ता : २० माह सितंवर सन १८१२ ईसवी मुताविक भादौ सुदी १५ संवतु १८६९ फसली—*

*Foreign Dept., September, 1812

१२८

आपर हम राजा केसरी सिंध जैतपुर के की सिरदार हैकदार मुल्क बुदेलषंड के औलाद राजा जगत राज के है। जबसे करारनामा तावेदारी दफे ८ आठ का वषत मिलने वा बनगाव जैतपुर वगैरा परगने पनवारी सरकार दौलत मदार कंमिनी अगरेज बहादुर से बीच सरकार मौसफ के अपनी मोहर दसषत से दाषिल करकै तावेदारी सरकार कै दिलजान से अषत्यार करकै सरकार के मुतवैसिलौ तावेदारौ मै दाषिल भये औ अब तक करारनामा के दफेन पर काइम सावित रहि कै थोरी वा बहुत तावेदारी वा फुरमावरदारी से वाहेर नही भये बीच वषत इकतदारूदौलै मुतजैमुलमुल्क मिस्तर जान रचारडसेन साहेब बहादुर बसालत जैग के गावै परगने पवई वगैरा का की सरकार से परवरिस मुतवैसिलनेवाजी के राह से हमको मिले। साहेब मौसूफनै दुसरा करारनामा तावेदारी का हमसे मागा। सो वास्ते मजबूती तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार कंपिनी अगरेज बहादुर के करारनामा दफे आठ ८ का ८ साविक के वाद दफे ३ हालके ग्रेकत्र दफे ११ मोहर दसषत अपने से सरकार मै दाषिल करकै करार करते है की इस करारनामा की दफेन पर सावित काईम रहिकै कधी ई से तफावत ना करै——

दफे अवल

१

किसी वाहिर वा भितरे मुलक बुदेलषंड से फसादी के साथी न होई औ हमेसा तावेदार वा हुकमवरदार सिरकार दौलतमदार अगरेज बहादुर के रहै छोटी वड़ी तावेदारी हुकमवरदारी ना छोडै——

दफे दोयम

जो हमारे कुवर भैया नतैत अगरेज बहादुर की जागा मौ फिसाद करै तौ मने करै कदा व ना मानै तौ अगरेज बहादुर के फौज मै भेले होकै सजा देई——

दफे ३

जो सरकार दौलत मदार की रैयत भाग कै हमारी जागा मै आवै उसको पकरकै सरकार के नोकर के आदमिन के हवाले करै। अगर सरकार के मानस उसके पकरवै कौ हमारी जागा मै आवै हम रोक टोक ना करै बलकिन उनके साथी होकै भगैया को पकर देई

दफे ४

चोर वा ठग कौ अपनी जागा मै रहने ना देई। अगर माल कोई सौदागर वा राहगीर कौ हमारी जागा मै चोरी जाई या लूट जाई उस गाव के जिमीदार पर तागीद करकै माल चोरी वा लुटे का दिलाई देई या चोर वा लूटने वाले कौ

पकरकै सरकार दौलतमदार मे पहुचावै औ जो कोई सरकार के मुलक मै षून करकै या दुसरे तरासे गुनागार होकै हमारे गावन मै आवै तौ उसको पकरकै सरकार मे पहूचाई देई——

दफे ५

सिरदारै मुलक वुंदेलषंड के जो कोई तावेदारी वा फुरमावरदारी सरकार दौलत मदार के से फिरै अगर नतैत हमारा भी होई तौ उसे मुलाकाद लिषा पढी माकुप करै औ कोई मुतवंसिल वा लरके वाले उसके कौ जगा रहने को ना देई——

दफे

६

अगरेज वहादुर के किसी मुतवंसिलान से झगरा न करै औ मुतवंसिलान कोई हमसे झगरा करै सरकार के सिरदारन कौ सुनावै तौ सिरदारै सरकार के उस कजिया कौ मालुम करकौ फिसाद रफा कर देई————

दफे

७

फौज सवार प्यादा की माफ्क जलूस सवारी वा तहसील गावन के रेषै ज्यादा ना रैषै। ज्यादा सरकार के सिरदारन की परवानगी विगर नौकर ना रेषै————

दफे

८

इकरार करते है हम औ रजावंदी षूसी से लिषे देते है की कवहू जैतपुर के किले से किसी तरा इलाका ना रषै औ अपने आदमिन कौ आस पास किले के फटकने ना देई। हम औ मरंमत किले मजकूर की ना करै हासिल या है की किसी तरा का इलाका अपना किले के साथ ना रैषै। हम अगर वरषलाफ इस करार के कोई वात जाहिर होई तौ लिषे देते है की सव गाव हजूर की सनध मै लिषे है फिर सरकार दौलत मदार मै जपत होई———

दफे

९

वदौवस्त घाटी इलाके अपने की इस तरासे करै की कोई फसादी वा लुटेरा वा दुसरे सरारती उस राह से आने जाने ना सकै औ किसी तरा से कोई फसादी कौ ना छोडै की उस राह से मुलक सरकार मै या मुलक मुतवंसिलै सरकार के जाई कै फिसाद वरपा करै। अगर कोई सरदारै तरफ मुलक महरु सै सरकार से फौज सुधा राह इलाके हमारी से कस्त मुलक सरकार के करै षवर उसका पहिले पहुचने नगीच मुलक अपने के सिरदारै सरकार के पहुचावै औ अपने मकदूर माफक उसके वंद करने मै कोसिस करै———

दफे

१०

जिस वषत फौज सरकार दौलत मदार कै घाटी इलाके हमारी से उपर घाटी के या किसी तरफ जावै हरगिज मना मुजाहिमत ना करै वल्क आदमी मातवर वाकिव-

कार साथ करें तौ जिस राह से चाहै जाईं औ जव तक फौज सरकार दौलतमदार की हमारे इलाके मै या इलाके दूसरे के नजीक हमारे रहै रसद असवाव जरूरी लसगर मे पहुचावते रहै——————

दफे

११

येक आदमी मातवर मुर्करर करै की हमेसै सरदारै सरकार के पास हाजिर रहिकै वतौर वकालत वीच वजा ल्यावने हुकम सरकार के हाजिर रहै औ किसी सवव से सरदारै सरकार के वीच वदले उसके फुरमावै तुरत उसको हम वदल कै और को मुर्करर करै औ या इकरार नामा दफे गेरा का अपनी मोहर वा दसपत से दापिल दफदर सरकार के किया हम करार करते है की दफात मजकुरैन के हमेसै अमल करै उसे तफावत ना करै——————

तारीष १३ सितंवर सन १८१२ ईसवी मुताविक भादौ सुदि ७ सं० १८६९ सन् १२१९ फसली*

१२९

मोहर अदालत फेजदारी दारल-खलफे सहजनाहा-वाद समंत १८६९

हुकुम इस्तहार और ढढोरा दिया जाता है कि कोई वीच मुलक सरकार दौलत मदार अगरेजी लौडी और गुलाम परीदारी न करे और इस कांम बुरे सै परहेज करे। और वर तकदीरसानि नहाल लिषने तारीष इस्तहारनामे की सै कोई मुलक सरकार के लौंडी और गुलांम और जगैसै ल्याय कै वेचेगा और जो षरीदेगा दोनो वेचनेवाला और षरीदनेवाला लायक सजा के होगा और वाद लिपने के लौडी और गुलांम सरकार के मुलक सै ल्यावेगा और उसकू वेचना कहेगा या वेच देगा तो उस्सै उसकू अजात किया जायगा। वोह मालिक है। इसमै ताकीद जानो।।इति।।

२ सितंवर सं १८१२ ईसवी २४ स्यावान

१२ भादों दिन वुधे सं १८६९ विक्रमी

व जुनाव षुरसैंदरेकाव नवाव मोस्तता मालादेलकाव असरफुल असराफ जनाव गवरनर जनरल साहव वहादुर दाममुलकहु†

*Foreign Dept., Oct., 1812, C B. p 1181

†Foreign Dept., Persian Letter Received 8th Nov., 1812, No. 572

१३० (क)

१

नकल श्री साहेब वाला मुनाकिव श्री साहेब आलीसान श्री मिस्तर जान वाकिफ साहेब वहादुर जु येते सिधि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा वहादुर जैय सिह देव जू देव के वांचनै। आपर आपके स्माचार भले चाही। इहा के स्माचार भले है। षत आवा। हवाल मालूम भा। डाक के वास्ते लिषा सो आपके तरफ से सव वात कै षातिर ज्मा है। वा लेकिन या मुलक वेसमुझ है। डाक के आदमिन ते औ कौनौ जिमीदार ते ना वनै तो इलजाम सव हमारे उपर आवै। येही वास्ते आपकौ कईउ वेर लिषते है। औ हमारी कंपिनी की दौस्ती पुसतैन चली आई है। अव हमारै वीच का अहदनामा होईगा। अव याकै तते कौनौ वात का जुदाना समझ औ आपके तरफ का सव वात कै षांतिर ज्मा है। औ उजियार सिह वास्तै लिषा सो उहा टिकै न है। रही दुई चारि रोज मा वकील इहाते आई सो लसगर दाषिल होई। कवितान साहव का कौनौ वातते अटक ना होई। आपन दोस्त जानि षत लिषत रहव पौष सुदि १ का सं० १८६९ मुकाम रीमा*

२ (ख)

नकल श्री मेजर वाला मुनाकिव श्री कवितान पाटीसेन साहेव वहादुर जू येते श्री महाराजधिराज श्री माहाराजा वहादुर जैंसिघदेव के वाचनै। उहाके स्माचार भले चाही जै। इहा के स्माचार भलै है। पाती आई। हवाल मालूम भा। डाक के वास्ते लिषा सो जेतना हदनामा मा लिषा है ते मा हम काईम है वो रहवल। श्री वडे साहिव के पत ते मालूम होई। अपना दोस्त जान कै हर हमेस षत लिषत रहना और चारि रोज का श्री उजीयार सिघ कै विदा कै देव सो कुछ हवाल करै का है और हवाल मजकुर के कहे ते जानव। पुस वदि ४ संवतु १८६९ मुकाम रीमा————

३ (ग)

नकल श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री मिस्तर जान वाकिव साहेव वहादुर जु येते सिधि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा वहादुर जैंसिघदेवजू देव के वाँचनै। आपर आपके स्माचार भले चाहि। इहा के स्माचार

*Foreign Dept., January, 1813, Nos. 90—98

भले हहि। आपर षत आवा। हकीकत सव जाहिर भै। सो हमारि औ अगरेज कै दोस्ती पुसतैन चली आई है। ते पर अव अहदनामा लिषिगा और दोऊ कैतते कवूल भा। सो हमै वहै वात करै का है जे मा दोस्ती पूरि होई। औ जेतना अहदनामा मा लिषिगा है हमै ओतनै करैका है। सो नवई दफा मा साफ लिषा है कै जहा पिंडारन की राह बंद होई चदियाकौडिया के नगीच की और घाट मा जहा हमारे औ साहेव कमान के सलाह मा आवै तहा छावनी होई। हमारे मुलुक मा होई या और के अमल मा होई जहा ते राह बंद होई तहै छावनी होई। सो हम तेही वात पर जागा निरुप कीन। भले आदमी पठवाते जागा निरुपि आये। सो येकतौ पहारी वेलदरा वहुत अछी जागा नदी के उपर वीच राह मा औ येक जागा चदिया के लगे वडा गाव है। हमारे वीच मुलक मा है। तहा वहुत अछी जागा है। ते दुई जागा मो जहा सल्लाह मा आवै तहा वडे आदमी व कील फौज मा पठवा सो पहारी वेलदारा के छावनी मा हमारि मंदत पहुचति औ मैहर कै मदन पहुचति औ उचहरा कै मंदति पहुचति। औ हमारे मुलक मा औ वीच राह मा है सो जगा देखि आये। रहा या ना जाना धौका। सलाह किहिनि धौका हेते ना मने आवा औ दुसरी जागा जौन चदिया के लगे है तहाभरिकोऊ-गावैनाभा। उहाते दोउ राह बंद होती है। औ वीच हमारे मूलक मा है। सो वहुत तराते कहा। हमारा कहा ना मानि निवहुरि कै षरवाही के नगीच डेरा किहिनि औ ईहैं छावनी कै ततवीर करैं लागी या हम ना समझा की हमारी सलाह मेटि के धौके के सलाह ते इहा छावनी विचारिनि औ हमै या अजम दिहिनि की अपने मुलुक मा छावनी नही करे दैति औ परवाही ते छा कोस राह है ते छा कोस कै षवरिनि ना पैहै। राह को रोकी। सो जव ईन ना कहा मना तव अपनाका लिषा काहेकीजे मा अपने का इलजाम ना आवै। औ रसद गेल्ला का हमका लिषिनि सोह हम ततवीर कैहीन रहा। या वडा अंदेसा है की इहा की छावनी मा कुछ ठिकान नही आई। पिंडारेन कै षवरिन ना मिली औ जो हमईहाछीदी तौ जवरई तागै। दोस्ती मा वीच परै ते अधिक नही कहा। अपनै का लिषा औ रसद गैला सव पहुचाये गयल सो हमारी सलाह मा तौ अस आवत है की येक जना भला आदमी अपने हजूरते विदा करी औ येक भला आदमी हम विदा करी। जहा अछी जागा होई औ पिडारै औ फिसादी कोऊ होई तिनकरि राह बंद होई और फौज वहुत षुसी मा रहै। औ जहा जस काम लागै तहा तस हमारि मंदति पहुचै। सो जागा निरुपकै तहै छावनी होई। सो सलाह कै कै काहू भले आदमी कै विदा करवनेह मा हमार साच औ षिलाफ मालुम होई। औ फारसी वाला इहा नही रहा तेहते षत कै दिरंगी भै। और ईहा सव अछा है। औ अपने इहा का हवाल मेहरवानगी समेत लिखावत रहव। मि: पौष वदि ८ सुके कह संवत १८६९ के मुकाम रीवा——————

१३१

श्री साहिब वाला मुनाकिब श्री अलीसान श्री मिस्तर जान वाकिब साहेब बहादुर जु येते श्री महाराज कोमार श्री दिवान बहादुर गोपाल सिंघ जु देव के बांचने। आपके सुभ स्माचार सदा भले चाहिजै। ता पीछे इहाके स्माचार भले है। आपर षत आयौ। महिरवानगी जानी। मौजे नरेडी बावति मरजी आइी के स्यासा बारे राव अनुधसिंघ नै अरजी दइी ताकी हकीकति पाहै कै मौजे मजकूर हमइजारे लये है सो जो परवीन आगे कौ मेडौ है तिहि बावति जुवाब स्वाल करो है। मो कजाति सिरकार कौ उनकौ उसइी बगसवे मैं आवै तौ हमैं का करने है इजारे माफक ज्वाब स्वाल करो हतो अरु आजतै उननै अरजी मौजे मजकूर बावति सरकार मैं दइी अरु छै सात सौ की जिमी सालटकी स्वासा मैं दवी है अरु सु पालाडपुर करहरा मै जिमी दवी है सो चार गाउ मैं मौजे मजकुर की जिमी दवी है सो गाउ तो सरकार हमैं दये हैं अरु जिमी चार गाउ मैं दवी है सो अमल नौ जिमी लौ होत है सो नाउ मात्र तौ गाउ हमकौ सरकार दये है अरु अमल चार गाउ मै होत है। सो सरकार इी विचार देष है अरु अरज तौ मेडन वावति हम कैइक बार लिषी है सो मेडन कौ हिसाब सरकार कौ कर दवो चाहिये अरु राजा रघोजी की जिमी के ठोरन बावति मरजी आइी अरु मरजी आइी कै कंपिनी वहादुर की ताबेदारी बरमुजम करो चाहिये। इकरारनामा मैं लिषी है ताकौ परसाल मैं जब हम बांदे गये है तब दो बात की सरकार सौ हम आगे बिनती करी हती कै नागपुर वारेन हमारे घोरे लै लये है सो सरकार कौ दिवाइ दवो चाहिये अरु रीवा वारेन घोरे लै लये है सो दिवाइ दवो चाहिये सोउ हम इकरारनामा मै लिष दइी है सो सरकार समुझि लै है कै हम अकरारनामा बरमुजम विनती ज्वाब स्वाल करतहै की गैर मरजी की करत है। सो सरकार अकरारनामा समुझि देषि है गयर मरजी की हमसो कवहु नही होने है अरु जब हमकौ गडरौली करहरा की जिमी बगसी हती तव हम बडे साहेव सौ विनती करी हती कै सरकार नै जिमी वकसी सो हम लइी पैंहि तैंहि जीमीपर हमारे लरका मानस नाही पहूचि सकत आइ बसवे कौना हमारे आइीबंदन तैत पहुचि सकत आइ तब बडे साहेब की मरजी दिवान जु पर हवै गइी कै जो इनके भाइी भतीजे नतैतन की छीरैं बाषरैं कुया बगौचा है सो षुलासा कर दवो चाहिये अरु हमारे बैठक के गवन की मरजी होइ गइी हती षुलासा की सो हमैं बरस रोज सरकार की तावेदारी करत होगयौ सो हमारे लका (? लरका) मानस भाइी बैधन के मानस डागमैं डरै है सो जो लौ बडे साहेब दिवान जु चलन लगे है तौ लौ हमारे उकीलन सो कहत रहे है कै छीरैं बाषरैं बगौचा अरु बैठक के गाउ षुलासा करवाये देत है अरु और जीमी जो तुम्हारी है तीकौ सबकौ दुरस्ता करवाये देत है सो जैसी मरजी हमारे

उपर दीवान जी करे हते सो सरकार कौ सव वाकिफ है। सो विनती हमारी उछल आगे रही है वडे साहेव की वोली सव तराहोगइी हती कै पाच सात महीना मै तुम्हारी सव जिमी कौ दुरस्ता होजै सोउ अकरारनामा मै लिषी है सो सरकार समुझि लैहै अरु जव हम गुसाइंन कौ रिसालौ सौपिवे कौं गये हते तव हम वेली साहेव सो भेट करि आये हते सो सरकार कौ सव वाफिक है सो सरकार कौ छान करलवो चाहिये कै राजा छत्रसाल के आगे से जिमी या हमारी आई कै राजा वषत सिंघ सो रही है सो राजन राजन सों सरकार इि वात कौ छान करलेहै अरु जीलरा की हमारौ चलाव है अरु षैवे कौ जुरत है सो सरकार कौ जाहिरहु है सो विनती तौ हम दो येक वषत लिषी है मो जे हमारे वकील उहा है सो सरकार कौ जाहिर करत है कै नाही करत है अरु वधा धाई रे पाइ आगे विनती लिषी हती की राजा किसोर सिंघ नै हमै चाकरी मै दये हते सो दो महीना भयेराउ विना पकराइनै हमारे मानस उठाइ दये। अपने मानस वैठारे अरु राजा निरंद सिंघ नै हमारे दो असवार मारडारे हते अरु घोरे लय ल्ये है। सो विनती तौ हम सरकार कौ लिषी है कजति हम वे मरजी कौनहू जुवाव स्वाल करै तौ सरकार इी कहै कै गैर मरजी की करत हौ तीसै सरकार कौ सव लिषी है। सो कैतौ सरकार को विनायक राउ के इिहासे गाउ षुलासा कराइ दवो चाहिये कै मरजी आवैं तौ हम षुलासा करलेइ अरु हमको सरकार की भेट की वडी इिछा है सो वे मरजी तौ हमसो आवत नही वनत है। मरजी आयै तौ भेट कौ हाजिर होइ अरु जो विनती करने आइ है सो रोवकार करि है। जव तै सरकार की तावेदारी मै रहे है तवसे वे-मरजी की करी हूहै तौ उतही जहरषाने मै सरकार डराइ देहै अरु मरजी की करी हू-है तौ अरु करिहै तौ सरकार हमारी विनती अरज सुनि हौ शिषापन होइ सो हमेस फूरमइवे मै आवै पौष सुदि २ संवतु १८६९ मु: परना———*

१३२

श्री श्री वासुदेव राये सहाऐ
वजुनाव पुरसैदरेकाव नवाव मोसत
ताव माला ऐलकाव असरफुल असराफ़
जुनाव गवरनर जनरल साहव वहादुर
दाम मुलकहुके अरज पहुंचावता है—

सरकार का षैरसलाह मोदाम का वेहतर चहिऐ जिस्तें हमारा भला होऐ। सरकार के अकवाल तें इहा षैर सलाह है—आगे परवाने सरकार दौलत मदार के अजराह तमाम

*Foreign Dept., February, 1813, No. 135

सफराजी वो वंदेनेवाजी के कपीतान साहव खोदावन्द कपीतान रफसज साहव वहादुर का मारफत तामसें हमारे सादिर हुआ—वजुरुग उतर ना पाआ वहुत वहुत मोमताजी वो जेआदे जेआदे नेआदतमंदी अपना हासिल किआ—वो मजमुन सें हुकुम के दरिआफत हुआ के अैआम खमा का करीव है मायेद सवारान पीडारे कस्ततापता राज करने मुलुक महरुसे सरकार दौलत मदार अंगरेज वहादुर का करता है वास्ते मसरुफ ले जाने हमारे वो विच आषरी लवाजमा वो वोफादारीइआतमाद तमाम जो के हजूर सो तसौअर हुआ है —सो वमौजीव हुकुम हजूर के हम वास्ते उस्तवारी निगाहरह गुजर वो जवन जगह के मोकरर वाकऐ जीमीदारी हमारे के वो वाज रपना पींडारे हाऐल वा जमा उस्तवार वो होसिआर विवअमल मो लाके—जो कुछ के अहकामात कपीतान रफसज साहव वहादुर का सादिर होगा उसके ताइ आपरी पहुचा के वो अकीन जान के अपने जाफसानी सो इअह मरातिव विच हजूर जनावआली के अरज पहुंचावते रहेंगे—जनाव माआलाइल काव के नेक नजर पावीन्दी ऐनाऐत सो हम अपने वेहतरि के उमैदवार रहते हैं—जेआदाहद अदव————

अरजी माहाराजा श्री श्री गोविन्द नाथ साह देव जिमिदार प्रगनात नागपुर वोगैरह जिले रामगढ माह कातीक सुदी १४ रोज सम्वत १८६९ साल सन १२२० फसली*

१३३

श्री १

खोदावंद गरीपरवर श्री नवाव श्री गवरनर

जरनैल श्री साहेब वाहादुर संलामती—

गरीपरवर हजुर से षीलत वो परवांनां मेंरे वास्ते मेंहर्वानगी से आया सो माथे पर चढ़ाय लीये। आप मुलक का वातछाह हो। मैं आप का लडका हो वो हजुर का ऐता मेंहर्वानगी मेंरा पर है सो मेंरा वडा भागी है। जो हम सें खीजमंत हो सकेगा सो खीजमंत में मैं कसुर नंही करोंगा। मै केवल जुनाव आली का कदंम कों ध्याऐ वैठा हों। मीती चैत्र वदी १४ वुधवार रोज संमत १८७० के साल का————

*Foreign Dept., 1st April, 1813, No. 196

अरजी राजा जुझार सीघ प्रगने रायगढ

खोदावंद गरीबपरवर नवाव श्री श्री गवरनर जनरैल साहेव वहादुर के हुजुर अरजी दाखीलि करना*

१३४

हुकुम ईश्तहार का ईअह

आगे मवाजीआत वो ज्मीन तपा नोनउर प्रगने शेमरौन वो तपा वहास वो तपा वलथर प्रगने मझौआ सरकार चंपारन मौजा कमूवे वीहार मो तअलुके सरकार दौलतमदार कंपनी अंगरेज वहादुर दामऐकवालहु का अमले राजे नेपाल ने दफेआत पादर १५ फसली मोतावीक स० १८०९ ईशवी मो टोले आदापुर वोगैरह मो तअलुके मौजे तरकटीआ वो स० १२१६ फसली मोतावीक स० १८०९ ईसवी मे ज्मीन मौजे मौराका वो स० १२१९ फसली मोतावीक स० १८१२ ईसवी मे वाईस २२ मौजे तपा नोनउर का कुंप दे अपने कवजे मो लाऐ थे। आगे वहुत मी दोस्ती दोनो सरकार मे मुदतसो मजवुत था। ईस वास्ते सरदारान ने सरकार फैज आसार कंपनी अंगरेज वहादुर दामऐकवालहु अपने वुरदवारी वो मरजाद वो तमकनत वो सुभाव रेआस्त वो मीलजवामरदी का है। ईस वास्ते तदारुक दस्तअंदाजी वो कोतह अंदेसी अमले नेपाल का वेतहकीकात खीलाफ आईन दोस्ती वो ईनसाफ का जानी के पहीले सभ हरकत का ईतलाऐ राजे नेपाल को लीपा गआ वो माफी दरषास्त राजे नेपाल के दो दफे अमीन दोनो सरकार से तकरारी ज्मीन पर पहुच के ईजहार गोआही गोआहान दोनो तरफ का वोई सनाद वो कागज रुवकार कै के दावा दोनो सरकार का खुव तहकीकात कीआ। रवैआ ईस सरकार अजमतमदार मे जो चाह ईनसाफ का है सो दोनो तरफ का कागज वो रुवकारी वडे गौर सो मोलाहीजा कर के तहकीकात दोनो सरकार का तकरारी ज्मीन पर कीआ। सो मातवर सनद के रुई वोगआहोव के गोआही से हक सरकार फैज आसार कंपनी अंगरेज वहादुर दामहुसमतहु का लाकलाम सभ वोजह से वो आईन से से सावीत वो तहकीक हुआ। ईस वास्ते ईस तरफ से ई सनाद मोकमील वो दलील पकी मारफत कारपरदाजान वो अमीनान के राजे नेपाल कने भेज कर के दरषास्त वरपास्तनामे का मवाजीआत वो ज्मीन तकरारी से वनाम अमले राजे नेपाल के वो सपूरद करने को मवाजीआत वो जमीन तकरारी सरकार दौलतमदार कंमपनी अंगरेज वहादुर के अमले के हुजूर मो कीआ। लेकीन अमला राजे नेपाल का

*Foreign Dept., 29th June, 1813, No. 338

सरकार कंपनी अंगरेज वहादुर के हक सावीत होने पर जानवुझ के वुर पीलाफ आईन ईनसाफ के आष छपाआ। आगे सरकार कंमपनी अंगरेज वहादुर मे हीमाएेत वो रेआईत मजलुमो का वो रखेआ नेगाहवानी रैअत की वो ईनसाफ गुरवो का जो सरकार के पनाह मो है सो वाजीव वो लाजीम है। ईस लीऐ वास्ते रफाहीअत वो वेहतरी रैअत गरीवो के वो सावीत होने हक सरकार कंपनी अंगरेज वहादुर के कवुजा करना मवाजीआत वो ज्मीन तकरारी पर तैनाती फौज का जरूर हुआ। सो वीसेष कै वास्ते तसली वो दीलजमई वो परवरीस वो आराम रैअत रहने वाले मसालीक महरु से ईस मुलुक के वतौर ईस्तहार के लीषा जाता है जो सभ कोई खुसी वो फरागत वो आराम तमाम सो रहै। कुछ अंदेसा न करैं। वो षेवके तरद्दुद वो अपने पेसे के धंधा मे मसगुल रह के सुकूर भगवान का वजाऐ लावे। ता० २० माह मई स० १८१४ ईसवी मोतावीक ता० १६ जेठ सं० १२२१ सा०———*

१३५

नकल श्री साहेव वाला मुनाकव श्री साहेव आलीसान श्री मिस्तर जान वाकिप साहेव वहादुर जू येते श्री महाराज कोमार श्री लाल सिवराज सिंघ जू देव कै जै रावे ऋस्त। आपके स्माचार भले चाहि सदा स्र्वदा दिन प्रत घरी घरी कै। ता पीछे ईहा के स्माचार भले है। आपके मेहरवानगी तैं आगे षत आवा हवाल मालुम भा। आप लिषा की जगंधारी कौ तुम अंछी तरह तैं समुझावौ। सो आपके लिषेते हम ईहाते वकील पठवा श्री लाल गुरदंतसिंघ कौ औ लिषा की डोगरा तुम छोडि देव औ जे रीत से रहे आये हौ ते रीत ते रहे आवौ। हमारि मरजी सेवा करौ। जस लरिका आव। फैल फिसादि अव ना करौ। राजि रीत रकम दये जाव या वात कै पैंकाईति कै देउ तौ हम श्री वडे साहव सौ कहि है। गुनाह तुम्हारी माफ होई जई। अपने घर षुसी नामा सौ वैठ रहौ। ते पर जगंधारी ज्वाव दीन कहा की डोगरा हम ना छाडव। ना राजिरीत करव। ना मरजी करव। जो हमार डोगरा कै पैंकाईत के देव की तुम डोगरा मा टिके रहौ औ गाव धनहे डोगरा के नीचे है सो देउ औ जागा हमारे की पैंकाईति कै देऊ तौ तुम्हारि सेवा मरजी करन डोगरा न छाडव। चाहै श्री अगरेज वहादुर कै फौज चढि आवै गैरै चाहा तुम चढि आवागेराविना लरे मरे ना छाडव। या ज्याव दीन्हेंनि सो हम आपकी मरजी माफिक औ अपनी समुझ माफिक समुझावा। जगंधारी की नजरि षातिर ना आवा। उलटिकै हमै का दाव दै पठईनि की आपनि जागा ठौर ना षोवौ। सो हमतौ श्री अगरेज वहादुर के तावेदार हन। जेतनी मरजी

*Foreign Dept., 3rd Jan., 1814, No. 343

आपकै होई सो करने है। चाहे बनै चाहे विगरै हमै तौ आपके मरजी की करले है। मरजी कीन्है वनवै करी विगरी ना हमारे या बिस्वास है। मरजी सिषांपनु होई सो लिषन रहव। माघ सुदि ७ संवतु १८७० के मु: पतौरा अरु उमराव सिंघ हलकारा कौ हम दुई तीन रोज टिकाये रहे है। अपनी षुसी नही रहै सो ईन पर ईतराजी ना होई———*

१३६ (क)

नकल हुवा

नकल श्री साहेव वाला मुनाकव श्री साहेव आलीसान श्री मिस्तर जानवाकिव साहेव वहादुर जू येतौ सिघ श्री महाराजाधिराजा श्री राजावहादुर जैसिह देव जू देव के वाचनै। आपकै स्माचार भले चाहिजै। इहा के स्माचार भले है। आपका षत आवा हवाल मालुम भआ। आप लिषा की षिलत आपके वास्ने कलकते से आई है सो उस पत में हम आपका लिषा रहै सो पिलत के मुंदे का आम कछुना लिषां सो हम उस पत मे आपकौ सव वातौ का जवाव लिषा रहै। रहा आप निगाह नही किहिन यौ श्री नवाव गवरनल जरनैल वहादुर मेहरवानगी सहित षिलत भेजिन तौन सुनिकै हमरे वहुत वडी षुसी भै। रहा हम आपन काम काज सव श्री वावु विस्वनाथ सिह का सौपदीन है सो जो मेहरवानगी हमारे पर होति है सो मेहरवानगी उनके पर होई। षिलित उनका देई। उई षिलत पहिरैलाईक है। आपकी मेहरवानगी से आपकै दोस्ती उठावै लाईक है। उनके लिषल पहिरे से हम वहुत पुसी होईगें सो मेहरवानगी सहित जो षिलत कलकंते से आई है सो उनही का पहिराउ व जस जस उनके पर आपकै मेहरवानगी होई तस-तस हमारे वड़ी षुसी होई वा मेहरवानगी हमारिन आय और जिस मुंदे पर हम ईहा आयेन है सो आपका मालुमै है सो आपकै मेहरवानगी हर हमेस अैसै उनके पर वनी रहै। पत मेहरवानगी से हमेस लिषावत रहव मिती पौष सुदि ७ वुधे कह सवंत १८७० के मुकाम वेउहारी———

(ख)

नकल हुवा

नकल श्री साहेव वाला मुनाकव श्री साहेव आलीसान श्री मिस्तर जान वाकप साहेव वहादुर जू येते सिंघि श्री महाराजाधिराजा श्री महाराजा श्री राजावहादुर जै सिह देव जू देव के वांचनै। आपके स्माचार भले चाहिजै। इहा के स्माचार भले है। आपर आपका मेहरवानगी का पत पहुचा हवाल मालुम भया। आप लिषां की आप षिलत

*Foreign Dept., 31st January, 1814, No. 89

पहिरने का वेपरवाही रखते हौ सो आपका षिलत नवाव गवरनर जरनैल बहादुर के मेहर की बकसी दोस्ती से भरी हुई हमारे वास्ते आई तिसको पहिरना क्योंकर नाकबूल करैंगे। अगर जो या लिषते है को वावू विसूनाथ सिंह जू को षिलत देई तौ ईस वास्ते लिषते है की हम तावेदार वादसाह के है यदि वादसाह के है सो कलम दान वादसाह का आप पै है। आप वादसाह के वरोवर हन। अव जहान मे वादसाहत आपकी है। वावु विसुनाथ सिह जू को षिलत पहिरने को ईस वास्तै लिषते है की हमारे मजहमम या लिषता है की गुसैंया की तवरुप पुस्तदरपुस्त को होती है सो हमारे पुसति दर पुस्त वावु विसुनाथ सिंह है आपकी षिलत तवरुप की बराबर समझते है। ईस वास्तै लिषते है आप या लिषा की जो षिलत पहिरता है तेके उपर नवाव गवरनर जरनैल वहादुर की दोस्ती नित नित वनी रहती है सो जेती दोस्ती मेहर की भरी आपकी वावु विसुनाथ सिह जु पर होईगो तेती हमको हजार हजार सूरत से षुसी होती जाईगी औ आप लिषा की वावू विसुनाथ सिंह लिषते है की सव राजि का अकतियार नही दिहिनि सो हम आपन कुल अकतियार राजि का काम काज दरोवस्त राजि का मुकत्यार नामा वावू विसुनाथ सिह का सौपदीन है। हम उनकी सलाह ते जितने काम पर ईहा आयेन है तेतई करते है औ आप अैसा लिषा की हमारे अगरेज के घर मा या जापता है की जिससे दोस्ती करते है तिसे पुरी करते है सो हमारे भी दिल मे पुषषातिर है की आप दोस्ती पूरी करैंगे। लेकिन हम जो वा कौलनामा आपको लिषा था सथनी वा चुरहट सजा करने वास्तै की हम मंदत ना करैंगे सो हम कर दिया लेकिन जगा वा हमारी है और सव सेगरान षाली होगया। इटार सथनी उमरी पनगवा औराई सव षाली होईगे। सोई जगा सव वावु विसुनाथ सिह जू का सौप देई आई कै छावनी पर डेरा करियैं व षिलत क्यौ करना लेईगे औ जेती वातै हम आपको ईकरार नामा मैं लिष दिया तेती पुरी कै दिया। आपतौ वडे हौ क्यौ कर ना पुरी करैंगे औ जो आप या फुरमाईयै की हम कलकंता को लिषते है जो कलकंते ते लिषा आवैगा तैसा होईगा। सोईहा हमारे मालिक आपई हौ। हमारी षातिर ईसी से होती है उई तौ लरिका है आपके मेहरवानगी करै लायक है। अपने हजुर का हेवाल मेहरवानगी कै कै लिषाई पठउव। ज्यादा सुभ मिती माघ वदि ४ सोमे का संवत १८७० के मुकाम वेउहारी ——

दसषत श्री वकसी भगवानदंत वकील श्री महाराजा जैसिंघ देव जू देव के मिती माह वदि १२ भोमे कह संवत १८७० के मु: कोठी

नकल हुवा

(ग)

नकल हुवा

नकल श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री आलीसान मिस्तर जान श्री वाकप साहेव वहादुर

जू ये तौ सीथ श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा वहादुर जैसिंह देव जू देव के बांचनै। आपर आपके स्माचार भले चाही। ईहा के स्माचार हुंहि। आगे आपका पत आवा मेहरवानगी भरा सव हवाल मालूम भावा। लिषां की राजि का काम काज सव वड़े वावु विस्वनाथ सिह का सौपदीन औ अमर पाटन के वा कैति सव काम काज तुम्है कर त्याहै। अैसी उलटी पुलटी वातन मा सुभा होत है। दूसर या लिषा की विना अगरेज की मरजी दुसरे राजा रईस कोई होई ने सो लिषा पठी ना करन या अहदनामा म दुसरे कलम मा लिषा है सो अपना मालिक आहे पहिल अहदनामा अपनै वकसा पुनि जव उमरोमा भेट भै तव दुसर अहदनामा वकमा औ जेह तरा हमारी अगरेज कै दोस्ती चली आई है तेही तरा मेहरवानगी कीन। सथनी चुरहट कैसजा हमसों लिषाई लीन औ हमका वीरा दैकै कुच कीन सेमरिया मा छावनी कराई गयन। सो तवतै आजु भरे हम अहदनामा के वाहेर येक वात नही कीन। अहदनामा रोजु पठा करित है या समुझित है की वडेन का लिषा छाप मुरतक समेत या कवहुं आनि तरा ना होई औ जव भरि अपना नही आयन तव भरि जौन करनैल साहेव हुकुम देत रहे सो करत रहेन और राजिका काम काज वावु विस्वनाथ सिंह का या जानिकै सौपा है की अहदनामा के वाहेर येक वात ना करिहै औ मरजी राउरि हमै ने सेवाई अधिक करिहै सो अपना समझिनि लीन होई काहे की जव आयन तव या सुभा कौन की सेगरा ने का पैंछ कीन्है है सो अपना का जाहिरै है। पुनि सेवा का वलावा तव मझिले वावु दाषिल भे पुनि जेठे वाबु का वलावा तव वोउ दाषिल भे राउरि किस्ति भरिन अव हमारि सुभा कीन की पिंडारेन सों लिषां पठी करिति है औ सौहागपुर वावति नागपुर कैन सौं लिषां पठी करति है। सो तौ नैकै हकीकत असि है की हमार सुहागपुर नागपुर के अमल लिहिनि औ हमका या केति आवै का सावकास ना मिला। तव किला के गिर्द कै आगा उजरिगै तेके ततवीर का हम ईहा आयन सो जिमीदार रैयति चाकर सव वला वाते हजार दुई हजार मलई जुरिगा तव नागपुर कैन के सुभा भा तव हलकारे ईहा पठईनि औ षत लिषिनि तौने का जवाव हम लिषि पठवा की सोहागपुर के जवाव स्वाल का हम नही आयेन जव हमै सौहागपुर का जवाव स्वाल करै का होई तव हमार मालिक अगरेज है हम उनही सो कहव औ राउर चपरासी ईहा रहै तिन सो सव हवाल कहा। उनही के आगे विदा कीन फेरि कवहू येक षत नही लिषा औ पिंडारेन के वकील कातिक मा आये। तैते या वतानि की चालीस हजार असवारते सेवा करव औ सौहागपुर छडाई देव औ उपरा जिमा हीसा देव हमका राह ना रोकी। तव हम उनहुका जवावदीन की अगरेज कै हमारि दोस्ती है जो उनके आगा पर जैहा तौ हम लरव जाई ना पैहा या जवावदीन फेरि उनकर कोउ नही आवा औ हम लिषवै काहे का करी सो हमारि चालु तौ या है अरू वडेन कै रैति असि आई की जौने वात का सुभा होई तेका निरष करी तौने माफिक रीझषीझ करी काहु का कहा ना मानी। सो अपना का हमका लिषी काहे की रौरे अहदनामा की कलमन पर नही निगाह करित सथिनी चोरहट कैस जा लिषी रहै औ सगल रोगरान लाई दीन। पचास हजार का

अकाम हमार होईगा पुनि डेग आगे रीवा का गिर्द सब उजरिगा हमका साल भरे का अकाल परिगा तेपरि लरिकन का मरजी देईत है की पांच हजार कै जागा जगमोहन सिंह का देह की अपने ते वाहरे के देह औ अहदनामा मा या लिषा है की भाई चाकर असामी हम काहू कै ना सुनन जो कोउ तुम्हारा मामला ना देई औ सेवा ना करै तेसो तुम जौन मने आवै सो करा। हम मदत ना करव। सो लिषितौ या दीन औ जगमोहन सिंह हमार मामला नहीं देति औ सेवा नही करति तिनका या हुकुम देईत हैं सो हम कौन विती करी काहे की दोस्ती हमारि राउरि मै औ मालिक हमार अपना ते विती हमै अपनै सो करे कीते रौरे हमारि नही सुनित हमरे भाई जिमीदार कै सुनित है औ जो हम नवाव गवरनर जलनर वहादुर का अरजी लिषन तौ अपना के वीच मा सयान ठहरै सो अव हम अपने सुभा का लिषन कागद तौ पुस्तदरपुस्त मा लिषा है औ सालै भरे मा या जवाव स्वाल करै लागेन। सो ये कर सलाह सिषावनु जौन होई सो मेहरवानगी समेत हमका लिषव हम अहदनामा के वाहेर येक वात ना करव जो अपना अहदनामा के वाहेर हुकमदेव तौ लरिका औ राजि रौरे का सौपदीन है। अपना के जौन मने आई सो करव हम अहदनामा लीन्है कलकत्ता के दुवारे परे रहव। हमका अगरेज का दुवार छाडिकै दुसर दुवार नही देषै का आई सो हमारे षातिरी का पत जरुर लिषव। जव जवाव आई तव हम ईहाते कूच करव। मि: माघ वदि ३० गुरौ का संवत १८७० के मुकाम वेउहारी———

(घ)

नकल हुवा :

नकल श्री साहेव वाला मुनाकिव श्री साहेव आलीसान श्री मिस्तर जान वाकप साहेव वहादुर जू ये ते सिधि श्री महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री राजा वहादुर जै सिंह देव जू देव के वांचनै। आपर आपके स्माचार भले चाही। ईहा के स्माचार भले हैंहि। आगे आपका पत आवा मेहरवानगी भरा सो सव हवाल जाहिर भा सो मालिक अपना हम हमै सेवाई अपना कै मरजी दुसर नही करै का आई। हमार मतलव सव राउर आई चाही वनाई चाही विगारी हमै सव तरा तै तावेदारी करै का है सो विती हजूरै मा करव आई औ जौन आवै मा कुछु दिरंगी भै सो पहिले तौ कुछु अपमान समुझौ रहैन याकै तिसु दिन ना वना तेह ते ठेरि होईगै अव सामार का हमार कूच होई सो हाजिर होईत है और वनावै का सव अपना का है जौन चाही तौन अपने हजुरते वनाई जौन चाही तौन नवाव गवरनर जनरल वहादुर दाम अकवालहु क लिषि कै वनाई। हमार मालिक अपनै हन। हम दुसरे का नही जानित। मेहरवानगी समेत पत लिषावत रहव। मि: माघ सुदि २ रवौ कह संवत १८७० के मुकाम वेउहारी———*

* Foreign Dept., 10th Feb., 1814, No. 112—21

१३७ (क)

मुर्मंदियान कामकाज हाल ईस्तकवाल परगने मैहर के मालुम करै जो जो वमैन के अहिदनामै वमुजव ठहरा व ठहरा दरम्यान सरकार दौलत मदार कंपिनी अगरेज बहादुर वा श्रीमंत पंडित परधान सवाई बाजुराव पेशवा वहादुर के तिस वमोजिव वाजे परगने मुलक वुंदेलपंड के सरकार दौलतमदार के अहिलकारन के कवजे मैं आये अरु षालसे मे दाषिल भई। ठाकुर दुरजनसिंघ छोटे बेटा बेनी हजुरी को जो मैहर के परगने मैं उपर घाटी के हाकिम था राहरीत चिठी पंत्री के भेजने की हमसे रंषी अरु सरकार दौलत मदार के आहिलकारन की तावेदारी वा फुरमावरदारी जाहिर करत रहे अरु जो माहिवान आलीसान अगरेज वहादुर वा वास्तेदार वा असवाव उन का जो नागपुर कौ मैहर के रस्ते आया वा गया हमेसा ठाकुर मजकुर से सेवा मैं हाजिर रहे रछया वा वडे रप पते से अपने ईलाके की सरहद से नागपुर की सरहंद से नागपुर की सरहंद तक पहुचावते रहे। जो अब हम दुसरी वेर हजुर पुरनुर नवाव मुस्ततावमुअंलाअलकाव असरफुल उमराव सरजार्जिहिरलुवार लुवारलट गवरनर जनरल बहादुर दामइकवालहुंन के हुकम वमोजिव वास्ते वदौवस्त ईस मुलक के मुकरर हो कै आये ठाकुर मजकुर ने वकील मातवर अपने भेजे औ सनध अपने इलाके की सरकार दौलतमदार सैं चाही अरु करारनामा पाच कलमन का तावेदारी वा फुरमाविरदारी लानै हमैं लिष दिया और जो सरकार दौलतमदार के अहिलकारन कौ हमेसा रेछ्या वा पालना वास्तेदारन का वा तावेदारन का मंजुर रहता है ईस वास्तै परगना मैहर का तफसील जैल के गावन सूंधा जव से सरकार दौलत मदार का अमल वुंदेलषंड के हुवा अरु आज तक वै गाउ उन के कवजे मे थे सरकार दौलतमदार से भी माफ हुये। जव तक ठाकुर मजकुर राहरीत तावेदारी वा फुरमावरदारी की मैं सचाई वा पंकाईत वने रहै उनके औ औलाद उन की से पुस्तदरपुस्त वीच परगने औ गावन मजकुर से अहिलकार सरकार दौलतमदार के कोइ भात मुजाहिमत ना करैगैं

मौजे	असली	दाषली
७००	२६५	४३५

तंपे मैहर		तंपेविलदरा	
६१		९१	
असली	दाखली	असली	दाखली
१७	४४	३६	५५
तप अजवाईन		तंप रंगवा	
१०२		५१	

असली दाखली	असली दाखली
३० ७२	३१ २०
तंपे पलौहा	तंपे इंटौरो
१२	३६
असली दाखली	असली दाखली
१० २	१३ १३
तंपे छिरिया	तंपे जुकेही
५२	१६
असली दाखली	असली दाखली
१८ ३४	७ ९
तंपे गौडेरा	तंपे डोली
१२	१०
असली दाखली	असली दाखली
४ ८	२ १०
तपे गैनराई	तंपे सिकरी
६	१६
असली दाखली	असली दाखली
१ ५	६ १०
तंपे भैंसवाही	तंपे देवरा
२२	१३७
असली दाखली	असली दाखली
६ १६	५६ ८१
तंप नदावन	
७४	
असली दाखली	
२८ ४६	

मरकुम तारीष १८ नवंबर सन १८०६ ईसवी मुताविक तारीष दरमजान सन १२२१ हिजरी माफक कातिक सुदि ८ सं: १८६३———

(ख)

श्री राजे श्री अली वहादुर के सरकार ते सनध कर दई ये ते दुरजन सिंघ जु कौ आवर परगने मैंहर किलौ वा गढी जागा आगे ते तुम सो रही आई है सौ वहाल है। तुम अपनी भीर सुंधा सरकार की सेवा मे हाजिर रहौ। ये का नीस्ट सो सेवा करो। तुम्हारी जागा सौ कोउ मुजाहिम कौनहु वात से नाहु है। मिती वैसाष सुदि १ संवत १८५८ मुकाम जैतपुर. . . . (हस्ताक्षर जो पढ़े नहीं जाते).

(ग)

आपर हम ठाकुर दुरजन सिंघ जागीरदार परगनै मेहर मुतालके मुल्क बुंदेलषंड के आगे से तावेदारी वा फुरमावरदारी अहाली सरकार दौलतमदार की जाहिर करते थै और साहिबान आलीसान अगरेजबहादुर के औ इनके मुतवसिलौ औ असबाव के नागपुर के तरफ मैहर के राह से आवने जाने मे सेवा मै हाजिर रहि कै वहुत निगहवानी से अपने ईलाके की सरहंद से नागपुर के सरहंद तक पहुचावते थे। जब से मुल्क बुंदेलषंड का सरकार दौलतमदार कंपिनी अंगरेज बहादुर के दषल मै आया सरकार के तावेदारी मे काईम वा साबित रहे किसी तरा से सरकार के पैरषाही वा तावेदारी से ना फिरे औ ईतमादुंददौला अफजलुंलमुंलक जान वेली साहेव वहादुर के वषत अपने मातवार वकील भेज के सरकार दौलतमदार से दरषास्त अपने ईलाके की सनध कौ किया औ ईकरारनामा पांच दफे का तावेदारी वा फुरमावरदारी का गुजरात मै साहेव मौसुफ के दसषत मोहर से सनध हासिल किया था सो सनध मजकुर कै तफसील गावन के नाम की नही लिषी गई। सो ईस वास्ते ईन दिनौ मै तावेदारी वा फुरमावरदारी वा पैरषाही सरकार दौलत-मदार कंपिनी अगरेज वहादुर के पंचाईत के वास्तै या इकरारनामा नौ दफे का अपने मोहर दसषत से साहेव आलीसान जान वाकिप साहेव वहादुर मुषत्यारकार के हजुर मै दाषिल कर कै दरखास्त सनव अपने कवजे के गावन के नाम की तफसील सुंधा किया। इस वास्ते ईकरार करते है औ लिषे देते है की ईस ईकरारनामे के दफौ पर साबित रहि कै हरगिज तफावत वान जाउज नही करैगै—

दफे पाहिली

सब कोइ फिसादी वाहिर वा भितरे मुल्क बुंदेलषंड के से मिलाप ना करै। ईन सबौ कौ कोई तरा से जगा औ पनाह ना देई औ लरके वाले उनके कौ ना छोडै जो हमारे ईलाके मे रहै औ पाती चिठी सब मामलात के ताई उनसे छोड देई औ साथ मुतवंसिलीत वा नोकरान सरकार दौलतमदार के से दुसमनागत ना करे औ अगर कोई मुतवंसिलौ से सरकार के सिरदारौ वा राजौ मै ईस मुलक के वावत महाल या गाव या कोई तरा मामला के हमारे साथ तकरार करै तौ हम उस तकरार के ताई वीच हजुर सिरदारन सरकार के जाहिर करैगै। दरषास्त फैसले का करै जो कुछ सरकार सै फैसला होई सो कबुल मंजुर करै। उसे तफाउत ना करै औ वदले तकरार के अपनी तरफ से लराई ना करै और विगर हुकम सरकार के ईनसाफ अपने हाथ से ना करै औ हमेसै फरमावरदार सरकार दौलतमदार के हर काम मै रहै

दफे दुसरी

वदोवस्त घाटी ईलाके अपने साई सतरा करै की फिसादी वा लुटेरे वा दुसरे सरारती करन वाले नीचे उपर आने जाने ना सके औ कभी कोई फिसादी वा

वदचाली केताई ना छोडै की उस राह से सरकार के मुलक मै दषल हो कै फिसाद सुरु करै औ अगर कोई सरदार साहिवान फौज मुलक के सरकार के हमारे मुलक हो के आवै जव तक हमारे मुलक के नजीक पहुचै षवर उस का पहिल पहुचने से सरहंद इलाके अपने सरकार के सिरदारन कौ पहुचावै औ माफिक मगदुर अपने वीच वंद कर के मेहनत करै

दफे तीसरी ३

जिस वषत फौज सरकार दौलतमदार का घाटी से ईलाके हमारे के उपर घाट या कोई दुसरी तरफ जाई कभी मने मुजाहिमत ना करै वलिक आदमी मातवर वाकिवकार साथ करै तौ जिधर चाहै तिधर जाई औ जिस वषत लसगर फौज सरकार का ईलाके हमारे या हमारे सरहंद पर दुसरे के मुलक मे रहै असवाव जरुरी लसगर मे पहुचावते रहै

दफे चौथी ४

अगर कोई रैयती मुलक सरकार दौलतमदार के भाग कै वीच देहात ईलाके हमारे मे आवै सितावी दरषास्त से अहिलकारन सरकार के हवाले करै औ अगर कोई रैयतौ जिमीदार मे ईलाके हमारे के भागि कै वीच मुलक सरकार के रहै तफसील-वार दरषास्त अपने मुकदमा की वीच हजुर सिरदारन सरकार के गुजरानै माफक आईन ईनसाफ के जो कुछ हुकम फुरमावै वीच अमल के ल्यावै आप कस्त पकरने उस के का ना करै—

दफे पाचई ५

चोर वा ठग वीच देहात ईलाके अपने के रहने ना देई। अगर माल कोई सौदागर का वीच कोई गाव मै कवजा हमारे से चोरी जाई या लुट जाई गाव गाव के जिमीदारौ पर तागीद कर कै माल लुट औ चोरी गये के ताई उसे दिलावै या चोटे वा लुटेरे कौ पकर कै सरकार दौलतमदार मै पहुचावै औ जो कोई वीच मुलक सरकार के षुनी या कोई तरा से दुसरा गुनागार हो कै वीच कोई गाव ईलाके हमारे मै आवै उस के ताई भी पकर कै सरकार मै पहुचावै औ ना छोडै की राह इलाके हमारे दुसरी तरफ वा वाहिर जाई

दफे छठवा ६

जोन जगरा गावन कवजे अपने का हजूर मैं गुजरान कै माफक उस के सनध सरकार से पाया है ईस वास्तै ईकरार करते है की अगर गावन मजकुर से कोई गाव मिलकियत दुसरे किसी की सावित होई या यह जाहिर होई की वीच वषत नवाव अली वहादुर के हमारे कवजे मे ना था वीच मुकदमे जो कुछ की सरकार से वात तजवीज हो कै हुकम होई सो अमल मे ल्यावै। कुछ उजर ना करै

दफे सातई ७

सन १८१२ अगरेजी मुताविक सन १२१९ फसली कौ येक भरि पिडारौ की चदनपुर के घाट ईलाके हमारे से उतर कै सरकार के मुलक मे जाई कै लुट

किआ है सो बंद करना। अैसे लुटेरो के आवने की राह अपने मुलक औ सरकार के मुलक वा सब मुतवंसिली के मुलक के रयपतो के वास्ते वाजिब वा लाजिम है। ईस वास्तै ईकरार करते है औ लिषे देते है की भीर सिपाहियो की जेतना मुनासब होई लुटेरौ मजकुर के आवने की राह बंद करने के वास्तै मदनपुर के घाट पर हमेसै तैनाथ रषैगै औ अैसी ततवीर पेकी करैगै की लुटेरे मजकुर हमारे ईलाके की कोई राह सै उतर कै सरकार के मुलक मै जाई ना सकै

दफे आठई ८

जो गावै मजकुर लिषे हुये सनथ मिलकियत कवजा हमारे के है औ उस पर कवजा हमारा है ईस वास्ते करार करते है वाद मिलने सनथ सरकार से दरषांस्त दषल दिलाउने कोई गाव ईलाके पर ना करै औ वास्ते वदौवस्त उस के सरकार से तलव ना करै———

दफे नवई ९

अेक आदमी मातवर अपना मुर्करर करै की हमेसै वतौर वकालत के वास्तै वजा ल्यावने हुकम वा षिजमत सिरदारन सरकार दौलतमदार के हाजिर रहै औ उसे कोई तरा से सरदारै सरकार के वा सवव कोई कसूर के नापुस होई तुरंत उस को हम अपने पास वुलाई लेई अेवज उसकी और को मुकंरर करै। यह ईकरारनामा दफै नौ का अपने मोहर दसषत से दाषिल दफदर सरकार के किया। करार करते है की उपर दफात मजकुरैन के हमेसै अमल कर कै कुछ उसे तफाऊत ना करै—

तारीष १३ फवरवरी सन १८१४ अगरेजी मुताविक फागुन वदि ९ संवत १८७० मुकाम षरवाही—*

१३८ (क)

श्रीराम १

नकल चीठी व मोहर वो दसषत

राजा मानीक सेन राजे मकवानि

श्री श्री श्री महाराजेज्यु

भूली राउत थानेदार कोतवाली चवुतरा गढ सेमरौन के आसीष। आगे ऐह तरफ का चौधरी कानूनगोऐ का लीखला से मालुम भैल की तुहरा जवाव सरह देहली के ऐहू तरफ मौजे भगवानपूर का आसामी के मसूल छे कलह से मोनासिव नाहि। अपना अपना सरहद भर दुनो तरफ का अमला का रहै कै मोनासीव है। ईह उसे वेतीआ लीखल जात वाट संवत् १७८४ माह चैत वदि ता० १—

* Foreign Dept., 14 March, 1814, No. 181—6

(ख)

श्री राम १

नकल षत मोहरी राजा मानीक सेन
राजे मकवानी वनाम राजे ध्रुव सीह
राज वितिआ

स्वौस्ती श्री प्रताप नारायेनोत्यादि वीवीध वीरुदावली वीराजमानोन्नत श्री महाराजाधीराज श्री श्री श्री मन्महाराज ध्रुवसींह देवेषु सदा समर वीजयी षू ईतस्यस्ति श्री रुपनारायेणेत्यादि वीवीध रुदावली वीराजमान मानोन्नत श्री महाराजाधीराज श्री श्री श्री मन्मानीक सेन देवानां सदा समर वीजयीना कस्य प्रणाम। ईहा कूसल आन्दं है। आप का कूसल आनंद चाहीऐ जीसे षुसी होऐ। वहुत दीन भआ कूसल आनंद का पत्र नही आया ईसे जीव लगा है। कूसल छेम का पत्र लीषीऐगा जीसे षूसी होऐ। उ प्रांत ईधर के जीमीदार चौधरी के लीषने से मालुम हुआ जो आप के त्रफ के गंगाराम वोझा थानेदार अलउ के राज वांध सरहद का दो कदीम है लाघी के ईस तरफ के मौजे अठरहा के असामीऔ पर वीदत करते है वो मासूल करवाऐ लीआ वो भूली राउत थानेदार कोतवाली चउतरा गढ सेमरौन के मौजे भगवानपुर ऐह तरफ राजवांध के है ताहां के असामी पर जोर जुलुम करते है। सो ईहां उहां के दोस्ती मो अैसा वात नही चाहीऐ। सो अपने थानेदार को लीषीऐगा जो इस तरफ के अमलदारी मो वीदत न करै। जेआदे अपना कूसल छेम लीखीऐगा। ईती सम्वत १७८४ साल माह चैत वदि ता० १३

(ग)

श्रीराम १

नकल चीठी व मोहर वो दशषत
राजा मानीक सेन राजे मकवानी

श्री श्री श्री महाराजय कस्य पत्रमीदं भाराशामरथ गंगाराम वोझा थानादार अलउ के कूसलाही पूर्वक पत्रमीदं। उपरांत ऐह तरफ का चौधुरी का लीषला से मालूम भैल जे रौरा मौजे अठरहा के अशामीन के मसूल रोकीले से रौरा राज वाध सरहद लाघी के ऐह तरफ का अशामीन पर वीदत करिले से अछा नाही। रौरा अपना मन से रोक टोक जो करत होइ तो हाथ उठाइवी नाही। वेतीआ का हुकूम से करत हो इतो से लीषव। संमत १७८३ शाल माह फागून सूदि ता० १०

(घ)

राम १

नकल षत मोहरी लछन गीर तरफ नेपाल बनाम भैरो दत
तहसीलदार तपै नोनउर तरफ राजा वीर के सौर सीष—

स्वोस्ति श्री लाला भैरव दत कौं श्री गोसाइंजी लछण गीरि का आसिर्वचण। ईहा कूसल है। तांहा तुम्हरा कूसल चाहिव जो षूसि होय। पत आया सूरत मालूम हुआ। तुम्हो ने लिषा जो मौजे अमवा वरवा वगैरह लूट कीआ है वो फुक दिआ है सो हमारा सरहद वरवा वीजैगढ तक है। मो. २२ तर्फ परोहा का आगे से दवाऐ रषा है सो अमल करने को हमने नेपाल सो हुकूम ले के आय है। सो जीस तरह होगा उस तरह अमल करेंगे। बार बार सीवाना का बाद केआ लीषते हव। हमारा सिवाना वरवा वीजैगढ तक है। जेतणे दिन तक मौजे २२ तहसील कीआ है सो तुम्हे देना होगा। जीस तरह देवगे उस तरह लेंगे। अव हम लेने पर तैयार हुए सो जाननां। सवत १८६८ साल मीति असाढ वदि ५ मो० लसकर—

(ङ)

श्रीराम १

नकल षत मोहरी लछन गीर तरफ राजे राऐ पाल बनाम भैरो
दत तहसीलदार तपा नोनउर तरफ राजा वीर कीशोर शिष—

स्वोस्ति श्रि लाला भैरोदत्त को श्री गोसाइ लछनगीर का आशीरवचन। इहा कूशल है। ताहा तुम्हारा कूशल चाहीये जो षुशी होय। षत आया सूरत मालूम हुआ। लीषा जो जगह फूकते हौ लूटते हौ शो वेजाय है। अपना कानूनगोय चौधरी भेजी देव इधरा का कानूनगोय चौधरी हाजीर है। शीवाना सरहद रफा होय। शो हम शीवाना करते नही आये है। तपा रौतहट तरफ परोहा का मौजे २२ आगे शे भी दवाऐ रषा है शो मौजे २२ हम लेने को आये है। जीश तरह होगा उश तर लेगे। शो जानना। शम्वत् १८६८ साल मीती ज्येठ सुदी १० मोकाम लशकर*

१३९

राम १

आगे कैफीयत नैपाल अमल करने का लोग फोडे बीना नही वनी परेगा सो लोग फूटेगा। जब नैपाल के पंच परधान को इह परतीती होवे जो अगरेज अब कस्त

---

*Foreign Dept., 19th March, 1814, Nos. 191—209

वाधा तव लोग फूटेगा। सो कस्त का परतीती तव होगा जो तरीआनी अगरेज साहेवान दषल करे तव नैपाल का लोग फूटेगा। तव सहज शो अमलदारी नैपाल होगा। लोग दुइ आदिमी रंगनाथ भीमशेनी तीन वाप पुत भाइ छाडि के सभ लोग फूट शकता है जव तक राजा साहव का षुद हुकूम नही चलता है। राजा साहेव का षुद हुकूम चलने पर कोइ पंच परधान नही फूटी सकेगा। वे दुन फूटे अमलदारी का वंद नहि लगेगा। आगे गाडी चलने माफीक पहार मो रास्ता हमारे बूझते कहइ नही। पऐदर हाथी आर वंदूक समेत जाने का रास्ता भालू षोला षाडा-धार माहा भारथ पनवंती चारी रास्ता दे के फौज जाऐ सकता है। कोइ कंपीनी से मोपतार होऐ के तैआर होऐ तव अमल होऐ शकता है। वुटवली सिसा पानी दे के शीधूली दे के ऐह रास्ता वहत वीहड है। इस रास्ते नही जाने सकता है———*

१४० (क)

करारनामा लिष दयौ कुवर सोरे साहजु देव ने आगे साहेव आलीसान येकतदारुं-दौलै मुंतजेतुलमुलक मिस्तर जान रवारडसेन साहेव वाहादुर साहेव अजंट के हजुर सै वास्तै छोडने मौजे भैरापिपरिया वेडरी औ सोप देने मौजे मजकुर राजा रतनसिंघ साहेव विजावर वालै को हम को हुकम दुसरा हुवा था। माफक उस के वकीले हमारे ने करार छोड़ देने मौजे मजकुरैन का किया वा छुट चिठी हमारे नाम को लिष कै साहेव मौसुफ के हजुर गुजरानी था वा हुकूम दुसरा माकुप कराया। अव माफक अरजी वकीलौ हमारे के वास्तै तहकीकाद वा तजवीज हुजुर के हुवा। ईस वास्तै हम करार करते है औ लिष देते है की वाद तहकीकाद वा तजवीज उजर हमारे के फैसला सरकार का राजा मौसूफ के हैक मे होय तोई तारीष जारी होने हुकम पहिलै के लगाइत वषत छोडनै तक जो पैसा गाव से वसुल कर लेई सो राजा मौसुफ को फेर देई। कुछ हीला वहाना ना करै। इस वास्तै करारनामा लिष दिया की वषत पर काम आवै। ताः १६ माह दिसंवर सन १८१२ ईसवी मुतावीक अगहन सुदि १३ सं० १८६९

(ख)

श्री स्हेश्र वाला मुनाकिव श्री साहिव अलीसन श्री मिस्तर जान वाकीव साहिव वाहादुर जु ये ते श्री माहांराजकोमार श्री कुवर सोने साहि जू देव के वाचनैं। आपर हजूर के स्माचार सदा सर्वदा भलै चाहिजै। ता पिछै इहां के समाचार भले

*Foreign Dept., 10th May, 1814, No. 275

है। हजूर की मेहिरवांनगी तैं आवर षत आयौ। सिषापन जांनौ। भैरांपिपरीया वैहड़रा पाइ इकिरारनामा आयौ। छाप करवाई वै को इहां तैंहि कारनामा प छाप करवाई है सो हाजिरहु है। रंही गाव जागा है सो हजूर ही के आइ ताकौ श्री माहाराजधिराज श्री महाराजा श्री राजा छत्रसालजू देव के वषत तैं वा नवाव आली वाहादुर के वषत तैं अर हजूर के वषत लौ विजाउरवारीन को कवजा ये्क वरस ये्क महिना ये्क दिन जौ कवहु रहौ होइ तौ हजूर षूव तरा सैं तहवीकात कर लैवे मैं आवै। हमारे गौरनर आपई है। सिषापन होई सो हमेस फुरमाइवे मैं आवै। इहांते मरजी माफिक होने। पौष वदि १३ सं: १८६९———

(ग)

श्री महाराजकोमार श्री कुवर सोने साहि जू देव ये्ते श्री दौलत राधाक्रात जु पं० श्री सुकल राम कृस्न जु पं० श्री दुवे भारे लाल श्री महाराजकोमार श्री कुवर संम्हरसीवजुदेव के वांचनै। आपर अपने स्माचार भले चाहीजे। ईहा के स्माचार भले है। आपर ईहा चौथ सुदि कौ श्री देवान नासर अलीजु सौ रदवदल भई। अपनौ सिषापनु आयौ तो सो कहयौ अरु अपनी तरफ ते विंती करी सो उनकी मरजी ये्ही भई कै ये गाव नाही रहने है। हम तुम्हारी भलाई चहने है ता कौ ईहा तैं सरकार के मानस आये है सो गावन मैं वैठार दैवी। कुवार सुदि ५ संवत १८६९ मु: वांदा*

१४१

श्री सहिव वाला मुनाकिव श्री साहिव आलीसान श्री मिस्तर जानवाकिव साहिव वहादुर जू ये्ते श्री महाराज कोमार श्री देवान धीरज सिंघ जू देव के वांचनै। आपर आपके स्माचार सदा भले चाहिजै। आपकी मेहरवानगी तैं इहाके स्माचार भले है। आपर ईन दिनन मैं अवस्ता हमारी और है। व्रधापन है। सरकार की तावेदारी मैं पहूच नाही सकत है। तातैं हम सरकार मैं उमेदवार है कै हमतौ कहू तीरथ मौ वैठकै भगवान कौ भजन करैं। जी तरह सनध सरकार तैं हमारे नाउ पुस्त दर पुस्त कौ वगसवे मैं आई है तेहू तरह सनध सरकार तैं कुवर सिरदार सिंघ के नाउ वगसवे मैं आवैं। जी तरा हम तावेदारी मैं हाजिर रहे है तिसी तरह तावेदारी मैं हाजिर सरदार सिंघ रैहै और हकीकत हमारे भले मनुष पं श्री लाला षांडेराई श्री लाला धीर सिंह जाहिर करहै। षत स्माचार महिरवानगी कर लिषवे मैं आवै। वैसाष वदि १३ संवत १८७१ मुकाम लुघासी†

---

*Foreign Dept., 16th May, 1814, No. 296

†Foreign Dept., May, 1814, No. 327

१४२ (क)

श्री साहिववाला मुनाकिव श्री साहिव आलीसान श्री मिस्तर जान वाकिव साहेव वहादुर जू ये ते श्री महाराज कौमार श्री दिवान धीरज सिंघजू देव के वांचनै। आपर आपके स्माचार भले चाहिजै। इहां के स्माचार भले हैं। आपर आप कौ पत आयौ मीहरवांनगी जानी। आप नै लिषी के तुम अपनी सनध की दरपास दई कै सनध सरदार सिंघ के नांउ कर दीजे हम बैठ कै—(यह स्थान मूल में खाली है) कौ भजन करै। ता पर हम गवरनर जरनल वहादुर कौ लिषी हती सो उहा तै हुकुम आयौ कै तुम उन कौ वहुत समझाइयौ। अपनै जेठे लरका के नांउ लिषावै तो वहुत षुसी है। ताकौ जेठे लरकन जैसी षुसी की करी है तैसी आप के दफदर मैं लिषी धरी है सो दरयापत कर लैवी अरु साहव रजीमैन नै कुवरन कौ तीन हूं गांउ तीनहु कुवरन कौ लगाइ दऐ हते नव उन डंडी करी हती सो दफदर मे लिषी धरी है सो दरयापत कर लीवी अरु इन के लिषे करारनामा लिषौ है उ तह दफदर मौ है। सिरदार सिंघ की मुषत्यारी आगे तैं है साहिव के दसकत अरजी पै है सो नकल आप कै है और काम काज सम्हारवे लाइक अपनी तावेदारी लाइक नांही है तातैं अरज सिरदार सिंघ के नाउ करी है। जव मरजी मैं आवै तव इन के नांउ सनध वगसवे मैं आवै। सांउन वदि १४ संवतु १८७१ मुकाम लुघासी———

(ख)

श्री साहिववाला मुनाकिव श्री साहिव आलीसान श्री मिस्तर जान वाकिव साहिव वहादुरजु ये ते श्री महाराजकोमार श्री देवान धीरजसिंघजू देव के वांचनै। आपर आप के स्माचार भले चाहिजै। आप की मेहरवानगी तै इहा के स्माचार भले है। आपर आप कौ पत आयौ मिहरवानगी जानी। ता कौ कुंवर सिरदारसिंघ के उपर आपकी मिहरवानगी भइ। उनके नाम का पत इकरारनामा भेजा। ताकौ इकरारनामा पर कुवर मजकुर की सही मुहर अपने लिषे माफिक करकै भेजा है सो पहुचहै। ता कौ जी तरह आगे सनध हमारे नांउ वगसवे मै आई हती तिसी तरह कुवर सिरदार के नांउ सनध सरकार तै छाप मुहर सै वकसवै तर आवौ। जिस तरह हम तावेदारी मै हाजिर रहे है इसी तरह तावेदारी मै हाजिर वे रहैगें। दुती भादौ वदि ७ संवत १८७१ मुकाम लुघासी———

(ग)

श्री साहिववाला मुनाकिव श्री साहिव आलीसान श्री मिस्तर जांनवाकिव साहिव

वहादुर जु ऐ तें श्री महाराजाकोमांर श्री कुवर सिरदारसिंघ जु देव के वांचनै। आप कौं स्माचार भले चाहिजै। इहां के स्माचार भले हैं। आपकी महिरवानगी तैं आपर आप कौ षत आयौ। महिरवानगी जांनी। कृपा कर इकरारनांमां दसकतन कौं भेजौ सो सही मुहर कर कैं दैं पठवायौ है सो पहुचि है। सा कौ जौ आप की इनांइत महिर-वांनगी हमारे ऊपर भई है तौ जी तरह सनध ठाकुरन कौं आंगै हजुर तै वगसवे तर आई हती तेहू तरह पुस्त दरपुस्त कौं छाप मुहर सैं हजुर तैं सनध हमारे नाउ वगसवे तर आवै। जी तरह तावेदारी हजूर की हमारे ठाकुर करत आऐ है तेहु तरह तावेदारी मै हम हाजिर रैहै। दुती भादौ वदि ७ संवत १८७१ मु: लुघासी———

(घ)

करारनामा लिष दयौ सरकार दौलतमदार अंगरेज
वहादुर कौ सरकार मैं ये ते कुवर पदमसिंघ ने

आपर सरकार दौलतमदार अगरेज वहादुर के अहाली ने हम कौ लुगासी सैं जागीर का मालीक होने कौ जो देवान धीरजसिघ हमारे पिता हम कौ वकसा मरजी किया इस वास्तैं हम करार करतै है औ लिषे देते हैं की हम जो सव सरते औ कौल करार जो कुछ हमारे पिता नैं सरकार मौसूफ के साथ किया है सरतै मजकुर हमारे पिता के कौलकरार के रुह से हमने अपने उपर क्यौं की मालिक जागीर के होने के रुह से असल मे हम पर पहुचता है कवुल किया औ वजा ल्यावैं की और कवहू की मौजे भदेसर संवत १८६९ मैं जुदा कर कै हमारे वडे भाई कुवर पदमसिंघ कौ दिया है। हम कौल वा ईकरार करते है ईस सुरत से की कवहु कुवर पदमसिंघ अपने वडे भाई कौ उस जमीन के तर्सरूफ से हटकैगे नही औ हमेसै कुवर पदमसिंघ कौ मौजे मजकुर के मालिक रहने कौ उन सरतौ पर जो की पहिले औ असल मैं कुवर मजकुर कौ दिया गया है राजी सुकरगुजार रहैगै। ईस वास्तै या इकरारनांमां लिष दिया। तारीष ६ सितंवर सन १८१४ ईसवी मुताविक दुती भादौ वदि ७ संवत १८७१———*

१४३ (क)

श्री साहिववाला मुनाकिव श्री साहिव आलीसान श्री मिस्तर जान वाकिव साहिव वहादुर जू ग्रेतै श्री महाराज कोमार श्री देवान धीरज सिंघ जु देव के वांचनै। आपर आपके स्माचार भले चाहिजै। आपकी मेहरवानगीतैं ईहा के स्माचार भले है। आपर आपकौ षत आयौ मेहरवानगी जानी। ताकौ कुवर सिरदार सिंघ के उपर आपकी मेहरवानगी भई। उनके नाम षत ईकरारनामा भेजा। ताकौ ईकरार-

*Foreign Dept., Sept., 1814, No. 644—51

नामा पर कुवर मजकुर की सही मुहर अपने लिषे माफिक करकै भेजा है सो पहुच्च-है। ताकौ जी तरह आगै सनथ हमारे नांउ वगसवे मै आई हती तिसी तरह कुवर सिरदार के नांउ सनथ सरकारतै छाप मोहर सैं वगसवे तर आवै। जिस तरह हम तावेदारी मै हाजिर रहे है ईसी तरह तावेदारी मैं हाजिर वै रहैगै। दुती भादौ वदि ७ संवतु १८७१ मुकाम लुघासी—

(ख)

श्री साहिवुवाला मुनाकिव श्री साहिव आलीसान श्री मिस्तर जांन वाकिव साहिव वहादुर जू एते श्री महाराज कोमांर श्री कुवर सिरदारसिंघ जू देव के वांचनै। आपके स्माचार भले चाहिजै। इहा के स्माचार भले है। आपकी मिहरवानगी तैं आपर आपकौ षत आयौ। मिहरवानगी जांनी। कृपाकर इकरारनांमा दसकतन कौ भेजौ सो सही मुहर कर कैं दै पठवायौ है सो पहूचिहै। ताकौ जो आपकी इंनाइत मिहरवानगी हमारे ऊपर भई है तौ जी तरह सनथ ठाकुरन कौ वगसवे मैं आई हती तेहू तरह पुस्तदरपुस्त कौ छाप मुहर सै हजूर तैं सनथ हमारे नांउ वगसवेतर आवै। जी तरह तावेदारी हजुर की हमारे ठाकुर करत आऐ है तेहू तरह तावेदारी मै हम हाजिर रहै है। दुती भादौ वदि ७ संवतु १८७१ मु: लुघासी—

(ग)

करारनामा लिषदयौ सरकार दौलतमदार अगरेज वहादुर के सरकार मै ग्रेते कुवर सिरदारसिंघ नै। आपर सरकार दौलतमदार अगरेज वहादुर के अहाली ने हमकौ लुघासी सैं जागीर का मालिक होने कौ जो देवान धीरजसिंघ हमारे पिता ने हमकौ वकसा मरजी किया ईस वास्तै हम करार करते है औ लिषे देते है की हम जो सव सरतै औ कौलकरार जो कुछ हमारे पिता नै सरकार मौसूफ के साथ किया है सरतै मजकुर हमारे पिता के कौल करार के रुह से हमरे उपर क्यौ की मालिक जागीर के होने के रुह से असल मैं हम पर पहुचता है कवुल किया औ वजा ल्यावै की और कवहू की मौजे भदेसर संवत १८६९ मै जुदा करकै हमारे वडे भाई कुवर पदम-सिंघ कौ दिया है हम कौल वा ईकरार करते है ईस सूरत से की कवहू कुवर पदमसिंघ अपने वडे भाई कौ उस जमीन के तसंरुफ से हटकंगे नही औ हमेसै कुवर पदमसिंघ कौ मौजे मजकुर के मालिक रहन कौ उन सरतौ पर जो की पहिले औ असल मै कुवर मजकुर कौ दिया गया है राजी सुकार गुजार रहैगै। ईस वास्ते या ईकरारनामा लिप दिया—तारीष ६ माह सितंवर सन १८१४ ईसवी मुताविक दुती भादौ वदि ७ संवतु १८७१—*

*Foreign Dept., 12th October, 1814, No. 678—82

१४४

श्री साहिब वाला मुनाकिब श्री साहिब आलीसान श्री मिस्तर जान वाकिब साहिब बहादुर जू ऐते श्री महाराज कोमार श्री दिवान धीरज सिंघ जू देव के बांचनै। आपर आपके स्माचार भले चाहिजै। इहां के स्माचार भले हैं। आपर आपकौ षत आयौ। महिरवानगी जानी। आपनैं लिषी कै तुम अपनी सनध की दरषास्त दई के सनध सरदार सिंघ के नांउ कर दीजे हम बैठ कैं भगवान कौ भजन करैं। तापर हम गवरनर जरनल बहादुर कौ लिषी हती सो उहां तैं हुकुम आयौ कै तुम उनकौ बहुत समझा दयौ अपनैं जेठे लरका के नांउ लिषावैं तौ बहुत षुसी है। ताकौं जेठे लरकन जैसी षुसी की करी है तैसी आपके दफदर मैं सब लिषी धरी है सो दरयाफ्त कर लैवी अरु साहिब रजीसैन नैं कुवरन कौं तीनहूं गांउ तीनहूं कुवरन कौं लगाइ दऐ हते जब उन हुंडी करी हती सो दफदर मै लिषी धरी है दरयाफत कर लैवी अरु इनके लिषे इकरार नांमां लिषौटे उतहूं दफदर मैं है सिरदार सिंघ की मुषत्यारी आंगे तै है। साहिब के दसषत अरजी मै है सो नकल आपकै है और काम काज सम्हारवे लाइक अपनी तावेदारी करवे लाइक नांही है। तातैं अरज सिरदार सिंघ के नाउ करी है जब मरजी मैं आवै तब इनके नांउ सनध बगसवे मैं आवै। सावन वदि १४ संवतु १८७१ मुकाम लुवासी—*

१४५

उप्रान्त कार्तीक सुदी १४ सुक्रवार का दीन वडहर गामा सुर्ज उदऐ देषी पहीले गोली चल्या लडाई भवो। सर्दार प्रभृति षेत मा आआ: मपक्री कैद मा पर्‌या। फौज दीन् प्रदीन थपीन लाग्यो रहे छ:। वो तरह देषता सर्कार को बहुत बीग्रन्या वुझी और मैले लाई षुवा उन्यां चोपदार ज्मादर गैर्‌हा छे मैले साहब छेउ केही कुराग्र ना छन मन्सी छेउ भनी देउ भनीषा ७६ के भन्दां मुन्सी ले मेर्ज साहब छेउ प्रवानगी ली:। मछेउ आआमलाई १ चीठी लेखना को हुकुम को प्रवानगी गराई देउ भन्दां साहब छेउ अर गरी मलाई साहब छेउ पुआई दीआ। साहब छेउ मलाई हुकुम भआ १ षत लेषुता हुं मैन्दां हाम्रा भन्वा अब लेषुन्या वालुचीत् गन्वी कुरा कै हीरहवा का छैन। नसीवा ऐ लडनु मुलुक अमल गर्नुती मीले लेषन भआ। तीम्रा षातीर प्रवानगी दीन्छुं भनी लेषुना को प्रवानगी दीआर हजुर मा अर्जी लेष्या को छ। जा जाहा को तरह भन्या

* Foreign Dept., Oct., 1814, No. 748

पूर्व देषी पछमि सलह दीसम तमाम फौजई लागीन रहेछ। षजाना प्रनी पहाड मां चढन्या सबै तैयार देषीन्छ। ए सब पत मां सब बात को बीचार गरी साहब सील बातचीत न गन्या। वात अब रव बीन्चो तराई भन्या छुटी गयो पहाड कोपनी तदबीर हौन लाग्यो। बीग्रला बीगरूया पछी पस्याताप मात्र होइन्ना सेवक ले देष्या बुझ्या को बीन्ती गर्न्या। हो भनी बहुत उपाऐ गरी प्रर्वानगी ली बीन्ती लीष्या कोछ। अधी बात्चीत् गर्न्या ले वो बीचार न राषंता आहा सम परुझो अझपनी श्री जरनैल भीमसेन थापा लाई मर्जी भए। पहाड का कोही जगा मा आई उरा कहानी ग्रआ केही वात रहला की भन्या चीन्तले देखछ जो मर्जी हुजुर का पुरी चलेमी। नौमी वदी अग्रहन रोज सामवार—*

१४६

हुकुम ईस्तहारआके

आगे राजे नेपाल के लोगो ने शरकार कंपनी अगरेज वहादुर के नोकरो के शाथ काम वद डांका वो षुन का तरफ तराई शरकार गोरखपुर के कीआ। इश वदकीर-दारी की खबर शुनी के ता: २७ अगस्त सन १८१४ ईशवी मोतावीक ता: २६ माह भादो सन १२२१ शाला मो ईस्तहार नवाब गव्ररनर जनरैल वहादुर का हुआ था। उश ही शे मोफशील जाहीर है। ईश वास्ते मवाफीक हुकुम नवाव गवरनर जनरैल वहादुर दामएकवालहु के तमाम तराइ मीला हुआ शरहद शरकार चंपारन के जो कवुजे राजे नेपाल के था शो वीच कवुजे शरकार कंपनी अंगरेज वहादुर के दर आआ। ईश वास्ते ईस्तहार दीआ जाता है वो तमाम रैअत फतह कीऐ गऐ मुलु(क) का अपना जीव जान शो वो शाफ दील शो हुजुर मो हाजीर होऐ अपना जांमीनी शरकार फैज अशल मे दाखील करके मालगुजारी वो तावेदारी वो फरमांवरदारी शरकार का करो। इश करने शो वीच शाऐ वो हीमाऐत पनाह नेगाहवानी शरकार दौलतमदार करहैगा वो हर शुरत शे वेहतर होगा। अगर हाजीर न होगा अदुल हुकुम् करैगा तव वीच गरोहवगी के दाखील होऐ के वदले अपने वदकीरदारी के गीरफतार वो कैद होगा वो माल मताऐ वो अशवाव शभ जपत शरकार मे होगा। तहरीर ता: २६ नवअमर शन १८१४ मशीहे मोतावीक ता: २९ माह कातीक सं: १२२२ शा०—†

*Foreign Dept., 22nd Dec., 1814, No. 930

†Foreign Dept., Dec., 1814 No. 947

१४७

हुकुम इसतहार आये

आगे राजे नैपाल के लोगो ने सरकार कंपनी अंगरेज वहादुर के नौकरो के साथ कामवद डाका खुन का चठ तराइ सरकार गोरखपुर के कीआ। इस वद कीरदारी के खवर सुनी ता: २७ अगसत सन् १८१४ इसवी मोतावीक ता : २६ माह् चादोश सन १२२१ साल मो इसतहार ठौआव गवरनर जनरैल वहादुर दाम अकवालहु का हुआ था मोफसील उसही सो जाहीर है। इस वासते माफीक हुक्म ज्नौ आव गौरनर जनरैल वहादुर दाम अकवालहु के तमाम तराइ मीला हुआ सरहद सरकार चंपारन के जो कवजे राजे नैपाल के था मो वीच कवजे सरकार कंपनी अंगरेज वहादुर के दर आआ। इस वासते इसतहार दीआ जाता है जो तमाम रैअत मुतेइ कीए गए मुलक के अपने जीव जान सो वो दील साफ सो हजुर मो हाजीर होए अपना अपना जामीन सरकार फैज असल मे दाखील करके मालगुजारी तावेदारी फरमा-वदारी सरकार का करे। इस करने सो वीच साए हीमाएत पनाह मे नीगाह-वानी सरकार दवल ज्मदार के रहेगा वो हर सुरत से वेहत्र होगा। अगर हाजीर न होगा अदल हुकुमी करेगा तव वीच गरो हंवग कि दोखील होऐ के वदस आपने वदकीरदारी के गीरफतार वो कद होगा वो माल मताए असवाव सरकार मे जवत होगा। तहरीर ता: २६ नोअमर सन १८१४ मसीही मोता० २९ कातीक सन १२२१ साल—*

१४८

श्री = १

स्वस्ति श्री सर्वोपमा योग्येत्यादि सकल गुण गरिष्ट हरिहर हरेम्बद्वन्दनीय चरण श्री श्री श्री श्री श्री श्री वावाज्यू चन्द्रशेखर उपाध्याय का चरण तल इत उमाकान्त उपाध्या को कोटि कोटि दण्डवत्सेवापूर्वक पत्रमिदं कृपाले जाहाँ कुशल छौं तहां तपाइ को चरण कुशल मंगल सर्वदा चाहिये। आगे आंहां को समाचार भलो छ उप्रान्त तपाईं ले मार्ग वदि १० रोज माच चड़हाइ पठाया को अर्जिआइ पुग्यो। श्री जर्नेल साहवलेहा मिलाइपनि हजूर मालैगि अर्जि चड़हाउनुभयो। लेष्या माफिक को विस्तार हजूर मा जाहर भयो। अंगरेज संग अधिदेषि का दोस्तिमा

*Foreign Dept., Dec., 1814, No. 948

तक्रार बढांइ हवै सरकार को वेहत्तरी देषिदैन। आज सम्म दर्म्यान कामानि सूदात्यि-पर्नजांदा। आंहां सम्म भयो अझ पनि दोस्ति कायम् राषन्या पाठ ठहर्छ भन्या मकवानपुर सम्म श्री जर्नेल साहव भीमसेन थापाः पहाडमा आइ मज्वूति संग वस्या। षत षतूत को आमदरफ्त पनि होला वात्चित् पनि उनै संग हुनन् भन्या वूझ मेजर वराट साहव को वूझिन्छ। हुकुम भया। श्री जर्नेल भीमसेन थापा आउनुभयो भन्या दोस्ति होला कि भन्नया वूझूर आप्ना चित्त ले वूझ्या को विन्तिगरी पठाउनु भये छ। सर्कार मा जाहर भयो सर्कार वाटप्रत्युत्तर जवाव लाल मोहर आया को छ तसैले विस्तार वूझन होला। वटवलूका तरफ श्री रंगनाथ पंडितज्यूले वातचित वन्दोवस्त गरिआछु भनि विन्ति पाया पछि इनैले अवता सलूक को पाठ भयेन उन्का तर्फ वाटवे जाइ पर्‌यो। एस् तरफ वाट पनिहात छोडनै पर्‌यो भनि सभ भारदार को सल्लाह लि सहिहलाइ सर्कार मा विन्ति पारी। श्री जर्नेल अमर सिंह थापा लाइ हाम्रा मुलुक मा आइ तहसील गर्न लाग्या पछि काटि दिनु भनि चिठिलेषि पाठाउन्या पनि इनै हुन भाई गोरषपुर पुगी आयो। मेजर वराट साहेवले सुल्लह को पाठल्पायेनन्। अव हान्नै पर्छ भनि सर्कार मा विन्ति पार्न्या पनि श्री जर्नेल अमर सिंह थापा लाइ चांडोगरीहान भनि लेषन्या पनि सर्व काम इनैले एस्तो पार्‌या को छ सो तपाइले जान्नै को छ। इनैले तक्रार वढाउन्या अर्थ पाया दोस्ति का दर्म्यान मा एस्तैएस्ता आदमी ले चमक पार्दा दोहरै चमक् पर्नगया को हो। मेजर वराट साहव उमर का पाका आगा पीछा देषन्या एस्तरफ का सरसिवानाका काम्मा मुष्तार भै आया का दाना आदमी छन्। एस् सर्कार वाटपनि अघि देषि दोस्ति भैआया का जगह मा तक्रार वढाउन्या मुनासिव न देषि सलुक् गर्न्या हो भन्न्या वूझि तोफा ताहाद षलिता पत्र समेत लि. तपाइ जानुभयै कोथियो। दोस्ति का मजवूति लाइ सर्कार वाट तपाई जानु भयै कोथियोल तपाइ संग पनि दुवै सर्कार को वन्न्या दोस्ति का वात् चित् हुन्यैहुन् सो पाठले मेजवंराट साहेव का को दिलजमै हु दैन श्री जर्नेल साहव आया भन्या वात्चित् हुनर भन्न्या पाठ मेजवंराट साहेव का चित्त मा आया। श्री जर्नेल साहव सर्कार का काजमा दोस्तिका दर्म्यान मा मकवानपुर सम्मता क्या आंहा भन्यो तांहि आइ सकनु हुन्छः। श्री जर्नेल साहव आइ जो दोस्ति को वन्दोवस्त होला सो वात अटल् पनि होला। दोस्रो वात पनि छुन जौवन। लेकिन मेजर वराट साहव को आसय जमीन सरसिवाना का मोकछिमा मा. तक्रारी कति जगहको कौन् कौन वात् को नेपाल वाट इलाका छोडि दिया दोस्ति रहन्या वूझ छ। तपाई ले भन्न्या वूझन्या काम् जस् प्रकार ले हुन्छ-वूझन हवस्र। मेजर वराट साहेव ले चित्त षोली कन एति वात को वन्दोवस्त भया। सुल्लह हुंछ भन्न्या कुराग्या भन्या लेषि पठाउन हवस्र सर्कार मा विन्ति गर्न्या कुरा विन्तिगरी कदीम को दोस्ति कायम रहन्या पाठ मा. श्री जर्नेल साहव पनि. आउन होला। एस्को जवाव मेजर्वराट साहव छेउ विन्तिगरी पठाइदिनु भयावढिया होला। मुद्दत देषिका दोस्तिका दर्म्यानमा. दोहरै षजाना फौज धराव हुन्या तक्रार वढन्या पाठ अंगरेज साहवान वाट पनि. नहवस् एस्

सर्कार बाट पनि हर्बैन दोस्ति कायम् रापन्या पाठ होला.। कुसल छेम को विस्तार लख्या का मुहु जुवानी बूझनु होला.। विशेष किमधिक। मिति मार्ग सुदि १ रोज २ मुकाम कान्तिपुर शुभम्—*

१४९

श्री दुर्गासिहाय १

श्री चरणरज रण

श्री जगन्नाथ जी

स्वस्ति श्री काजि रणधज थापा कस्य पत्रम्.................. आगे धोविषोला पूर्व नागरि गढि सम बाट घाट का अमालिदार चौकि जगा तिर्गैह के पथोचित्त उप्रान्त............पुरी बाट रामानुजदास महन्त ले. सर्कार मा बर्‌हार पठाया को महा प्रसाद लिआउन्या वैरागि लक्ष्मीदास दरबार बाटविदा भै.। लाल मोहर चिठिर गैंडा का तनुषा को मोहर लि. मुवा जयन्त बन्नि छेउ जान्छन उता बाट गैडाली जान्याछन। तप्सील माफिक का मानि सलाह् जाचि बुझि चिठि पत्र समेत सरारस जान देउ रोक ठोक नगर—

तप्सिल

लक्ष्मीदास वैदय	जना १	वर्ष ५१	वर्न कालो
मनोहर दास	जना १	वर्ष ४०	वर्न कालो
सिताराम दास	जना १	वर्ष ३५	वर्न गहुं गोरो
लछिमन दास	जना १	वर्ष ३०	वर्न कालो
प्रहलाद दास	जना १	वर्ष २२	वर्न कालो
रामचन्द्र दास	जना १	वर्ष २७	वर्न कालो
हनुमान दास	जना १	वर्ष ३२	वर्न गहुं गोरो

इति संवत १८७१ साल चैत्र सुदि ७ रोज १ शुभम्†

*Foreign Dept., 1814, No. Nil.

†Foreign Dept., 1814, No. Nil.

रघुजी भोंसले का लेसली साहब के नाम पत्र

जमींदार देव नाथ साह का अगरेजो को पत्र

नागपुर के ज़मींदार देव नाथ साह का अगरेजो को

1796 Aug. 26 .. 303

कुछ जुलाहों को बिहार अदालत में बुलाने के लिए लिखे गए एक पत्र का अंश

बिहार जिला अदालत के जज की घोषणा

(२७ जुलाई, १७९६ ई०)

सिरगुजा के बन्दोबस्त के संबंध में यंकोजी (अंकोजी)
भोंसले का ककरेल साहब के नाम पत्र

[illegible]

ाव होल्कर की ओर से राजा बख्तावर सिह के
फिरंगी से मुकाबला करने के संबंध मे पत्र

अँगरेजों की ओर से ख़िलत मिलने पर छोटा नागपुर के गोविदनाथ माह देव का गवर्नर-जनरल को धन्यवाद-प

[illegible]

रीवा के राजा जयसिंह जू देव का आन वाकिफ
(Wauchope के नाम पत्र

चंपारन की सीमा से तराई-भाग अँगरेजों के अधिकार में आने और प्रजा की रक्षा आदि के संबंध में घोषणा
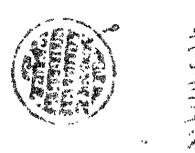
ल्कर की ओर से राजा बख्तावर सिंह के नाम लिखे गए पत्र की मुहर

रायगढ़ के राजा के एक पत्र का अन्तिम भाग
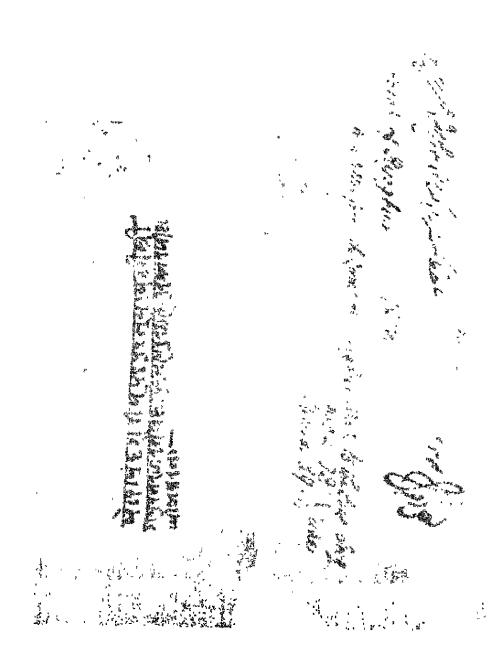
दनाथ साह देव के एक पत्र का अन्तिम भाग

INTRODUCTION

I
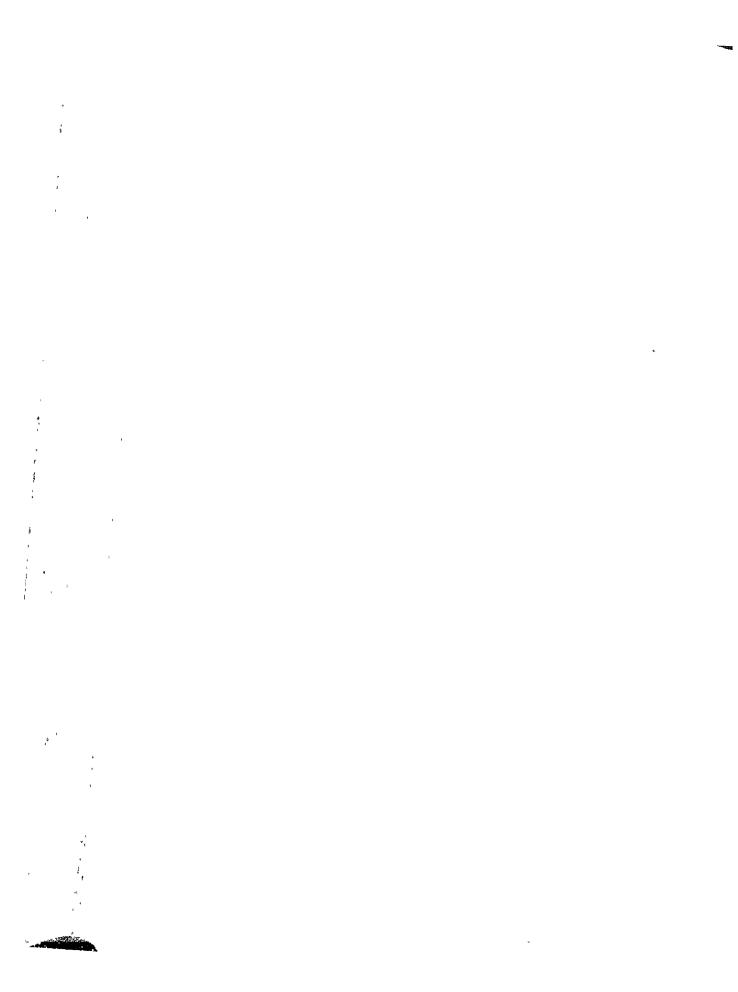
It is now a number of years that the work of editing the Hindi letters was entrusted to the Hindi Department of the University of Allahabad. For various reasons avoidable and unavoidable it has been unduly delayed, which is very much regretted.

Broadly speaking, these letters deal with (i) some aspects of the developments in Sirguja, Sambhalpur and Patna States, particularly during the period of uncertainty caused by the weakening of the Maratha hold on them, and the gradual establishment of the British authority in that region and (ii) the expansion of the British authority in Bundelkhand. An attempt has been made in the following pages to analyse the documents within the framework of known historical facts. In the case of the first section a good deal of information is original; whereas in the case of the second section there are a number of documents which are not to be found in Vol. V of the Treaties, Engagements and Sanads. The number indicates the number of the document which is in print in Hindi and the numbers of pages refer to Vol. V of the Treaties, Engagements and Sanads. The remaining documents have been interpreted in the third section.

In the form in which they have been printed, and this is exactly what had been received from the National Archives in transcription, it proved an irksome task to integrate them together topic-wise, and the difficulty was further enhanced by the intermixture of Indian and Christian eras. Every effort has been made to stick to the chronological sequence, but occasionally for the sake of sustaining the continuity of the narrative, departures have been made from this rule, for which apology is solicited.

The Anglo-Bhonsla relations form an interesting interlude during the stormy period of Lord Wellesley's Governor-Generalship. Raghoji, who had ascended the *gaddi* of Nagpur in 1788, was a young and ambitious ruler who watched with wrathful jealousy the rising power and growing influence of the English. He was distressed at the Sindhia-Holkar rivalry. He exerted his utmost to stop it; but all his efforts proved fruitless. He scrupulously avoided the network of diplomacy spread far and wide by the authorities of the E. I. Company in securing allies against Tipu. The Nizam and the

Peshwa joined the confederacy but Raghoji refused to have to do anything with it; nor was he prepared to extend support to the British to bring down the power of the Sindhia.

But the destruction of Tipu was only a prelude to more momentous developments. Instead of dispelling the gloom from the political horizon of the Deccan it intensified it all the more. The next victim of the British aggression were to be the Maratha Chiefs, but they were to be dealt with in detail. Accordingly, it was deemed desirable to continue wooing Raghoji, inspite of the eagerness of the British to snatch away portions of his possessions in Orissa to link up the Presidencies of Madras and Bengal. Though outwardly friendly approaches were made to the Bhonsla, secretly the feudatories of Sirguja, Sambhalpur and Patna were abetted in their attitude of defiance towards him.

In fact, at the moment this region was in a state of great alarm and much uncertainty. The feudatory Chiefs had sensed the inevitable; and they were finding it difficult to decide whether to throw in their lot with the Maratha or the English. And for the latter, it had become customary to fish in the troubled waters. The letters included in this collection unfold the story of transactions between 1801 and 1807. They reveal the caution and care with which the British dealt with the Bhonsla, prior to the outbreak of the Second Maratha War; their unscrupulousness during the period of the War, their eagerness to placate their erstwhile enemy the Bhonsla after the War when their object had been achieved; and their relentless repudiation of the solemn agreements and engagements they had entered into with the feudatory Chiefs who found themselves in hornets' nest.

Upto this point in the history of Modern India neither the Central Provinces nor the Province of Orissa had assumed shape They were in a formative stage. Broadly speaking, what later on came to be known as the Subah of Cuttack, consisted of four groups of States, viz, Sirguja, Sambhalpur, Patna and Cuttack, each in the hands of a Chief enjoying considerable influence and commanding the support of a number of subordinates.

Taking advantage of the disturbed state of affairs, the small and big Zamindars banded themselves into groups; the strong pouncing upon the weak and the rival parties appealing for the help either to the Maratha or the English as suited their interest. And in this context Sirguja proved to be the storm-centre. Its Zamindar, Balbhadra Sahi, a minor, at the instigation and with the active support of Sangram seized Burwey and plundered several other parganas of Chota Nagpur, which fell within the British jurisdic-

tion. The matter was brought to the notice of the British authorities by Deva Nath Sah who requested prompt steps against the aggressors.

Upon this a letter of protest was despatched to Venkoji Bhonsla who reprimanded Balbhadra Sahi for his unwarranted action and ordered him to restore the booty which he had seized. The British also wrote directly to Balbhadra Sahi asking him to refrain from aggressive activities, to withdraw his troops from Burwey, to surrender the 17 Caheros who were the source of mischief, and to promise and undertake that he would not allow his men to trespass into the British territory, and would hand over to the British authorities fugitives from their territory. Prompt was Balabhadra's response to this communication. He repudiated all the charges levelled against him, adding that he was a feudatory of the Bhonsla, that he did not harbour any fugitives, that Burwey rightfully belonged to him, and that he was ready to submit his claims to a board of arbitrators.

The reply instead of easing the tension aggravated it further. Raja Kalyan Singh of Udeypore now made common cause with Balabhadra Sahi and began to intercept communication and create disorder in the neighbouring districts. He and Balabhadra Sahi were asked to wait upon the officers of British Government, failing which the Governor-General issued a proclamation sanctioning the sack and plunder of Udeypore. Moreover, an agreement was signed by Colonel Jones with the representatives of the Bhonsla, stipulating that during the period of Balbhadra's minority the administration of Sirguja be carried on by Lal Jagarnath; and that in the event of Balabhadra's dying without a male issue, Lal Jagarnath's son would be seated on the gaddi of Sirguja.

In this way there arose bitter rivalry between Lal Jagarnath, the protege of the English, and Balabhdra Sahi who had behind him the secret sympathy of the Bhonsla, besides the open and active support of a large number of feudatory chiefs like Lachhman Singh, Bhukan Singh, Bhagwat Siva Bakhsh Singh, etc. Thus the group which now had pitted itself against Lal Jagarnath was not only formidable but also very resourceful. Efforts, therefore, had to be made to weaken it. In persuance of this object the Governor-General sent to Lal Jagarnath three sets of Parwanas: the first was addressed to the friends and allies encouraging them to continue their cooperation and support; the second set was addressed to the followers of Sangram Singh with the object of weaning them away from his side; and the third set was addressed to Hulas Singh and Dayal Das, the former a trustworthy employee of the British, and the latter a re-

presentative of the Bhonsla. They were to assist Lal Jagarnath in discharging his duties.

But the position of Lal Jagarnath did not improve, because the local Zamindars were withholding co-operation and support from him One more effort was made to win the latter's sympathy, and *parwanas* were addressed to Balinath Sahi and six other Zamindars reminding them of the debt of gratitude they owed to the British for the pro tection of their life and property, and the terms of agreement they had entered into. They were reprimanded for pursuading Sangram Singh to plain a raid on Sirguja, thereby upsetting the arrangements made for its administration with the full concurrence of and in consultation with Raghoji Bhonsla. In the end they were warned of the dire consequences in case they persisted in their hostile activities. Likewise, a *parwana* of almost the same contents was sent to Sangram Singh asking him to abandon Sirguja, failing which as a consequence of his contumacy even his family and children would be made to suffer. Furthermore, he was required to surren der Balbhadra Sahi to Lal Jagarnath.

But neither threats nor temptations produced any effect on the followers of Balbhadra Sahi. They remained as adamant in their opposition to Lal Jagarnath as ever. They closed round him from all sides driving him to abject desperation and disappointment. So that, on October 1, 1802 he wrote a very pathetic letter to Mr Russel saying, "Sangram Singh and Balbhadra Sahi are creating much trouble. They together with the other Zamindars of Sirguja are threatening my life and property. They are blockading me from every side and are intercepting the supply of provisions. I live in constant fear of them." And he requested speedy relief.

In the end, it became impossible for him to hold on any longer On October 30, 1802 he wrote a long letter to Captain Russel in forming him of the events which had occurred in quick succession He said that with the exception of four Zamindars who had accept ed the *parwanas,* others had joined the rebels and that he was appro ached by some persons who had offered to mediate between him and Sangram Singh, but he cold-shouldered them saying that he was pre pared to seat Balbhadra Sahi on the *gaddi* provided he came over to him. Those men retorted that they recognised only the Maratha authority and that they would have nothing to do with the English He added that it was in obedience to the demand of Raghoji Bhonsla that he had surrendered Sirguja to the opposite party; that Hulas Singh had advised resistance, but it was futile partly because of the paucity of his resources and partly because of the prospects of his losing favour with the Maratha. The same day Lala Din

Dayal also wrote to Captain Russel informing him of the forcible occupation of Sirguja by Sangram Singh and expulsion of Lal Jagarnath. He requested that the rebels should be effectively punished.

Speedy action being out of question, the Governor-General resorted to a mixed policy of coercion and persuasion. On the one hand, a contingent of troops was sent to Palamau to extend protection to the fugitive family of Lal Jagarnath; on the other, it was announced that preparations were being made for punishing Sangram Singh; and towards that end in view a British army had been dispatched to Kotem Nagpur. The local Zamindars were forbidden from paying revenue to the rebels or extending support to them in any shape or form whatsoever. Further, a message was sent to Nagpur to ascertain the reaction of Raghoji to the events which had occurred.

Sangram Singh was now in a distinctly advantageous position. He had occupied Sirguja. Its lawful chief was with him; and above all this, most of the local Zamindars were on his side. He began to coerce the remaining ones into submission. When Umrao Singh and Daljit Singh were pulled up by the British authorities for collusion with the rebels, the former confessed that he was being subjected to irresistable pressure by Sangram Singh; while the latter protesting his loyalty to Lal Jagarnath denied having paid any revenue to Sangram Singh. These instances go to show that the cause of the enemy was gaining ground, which is confirmed by the terms of the letter dated January 25, 1803 addressed by the British to Sangram Singh. He was informed of the arrival of the British troops at Nagpur, and of the negotiations which were in progress with Raghoji. He was asked to desist from oppressing the followers of Lal Jagarnath, particularly Bakhtawar Singh and he was warned not to be deceived by the delay in action against him, which was due to the fact that the concurrence of the Bhonsla was being awaited.

As to Lal Jagarnath, his plight was far from enviable. After his expulsion from Sirguja, he had taken refuge with the English. So when Kesho Govind, the Maratha Subehdar of Chhattisgarh, sent for him, he found himself in a rather delicate position. He could neither declare openly for the Bhonsla and leave the protection of the British, nor could he cut his long-standing connections with the Marathas. In fact the British at this moment were feeding him with the hopes of speedy restoration of his authority in Sirguja.

With a view to remaining in the good books of both the parties Lal Jagarnath wrote back to the Subehdar of Chhattisgarh that he had carried on the administration of Sirguja with the co-operation

and advice of Lala Din Dayal, and that it was on his suggestion and in order to save his life that he had surrendered his charge to the enemy. He expressed his inability to leave the British protection without permission, which only the Bhonsla Raja could obtain for him. To avoid misunderstanding on the part of the British, he wrote to Major Breton to inform him that it was Pitambar Sahi who had brought the Marathas to Sirguja, and that the latter were realising the revenue there. He added that they had sent a messenger to him asking him to repair to them, but he had declined their overtures.

It appears that while the British were still sitting on the fence, a Maratha army led by Sankar Sahi Babu made its way to Sirguja, expelled the trespassers and occupied it on behalf of Raghoji. This was the event alluded to by Lal Jagarnath in his petition to Major Breton The event opened a new phase in the changing fortunes of Sirguja Sankar Sahi soon got rid of Pitambar Singh and requisitioned from the British the services of Lal Jagarnath with whose help, he said, he would manage the affairs of Sirguja. Sankar Sahi went to the length of making a direct approach to Lal Jagarnath. He sent his messenger who met the Lal at Hazaribagh. But as ever, the Lal played a double game. On the one hand he placated the Marathas with hopes and promises, on the other he communicated every detail to Major Breton and Captain Roughsedge, even forwarding to them the originals of letters received from Kesho Gobind and Lala Din Dayal.

But Sangram Singh was not yet prepared to give up the game as lost. He began to collect the local Zamindars round him. He even went to the length of sending his agent Baba Dharam Das to Lal Jagarnath, proposing joint action against the Marathas for the restoration of the claims of Balbhadra Sahi. Other Zamindars, like Hari Har Sahi, Vijaya Singh, Ali Sahi, Daljit Singh and Bali Nath Sahi wrote to the same effect, requesting Lal Jagarnath to forget the past and take up the cause of the actual owner of Sirguja. But Lal not only proved impervious to all such overtures from his erstwhile enemies, but to expose them he sent their letters to Captain Roughsedge. In fact, he had been warned earlier by Lala Din Dayal that he would be approached by Pitambar Sahi and Sangram Singh, and had been advised to remain firm in his loyalty to the Calcutta Government.

Perhaps, Sankar Rao let loose a reign of terror. He came into conflict with Bharthi and Dhan Singh, fought with them and wounded them. Then he plundered a number of *thanas* Upon this the local Zamindars sent a joint petition against him to Raghoji, who

made amends for the mischief with kindly treatment. Ultimately the British troops marched to Sirguja and occupied it.

The relations between the English and Raghoji Bhonsla were fast deteriorating and conditions for open and final clash were mounting to a head. Perhaps, in the course of Sirguja affairs some kind of understanding had been reached between Kesho Gobind and the British. Therefore, to sound his attitude towards the impending war Babu Kumar Singh was sent with a letter to Chhattisgarh. In a document dated November 1, 1803 written instructions were given to him indicating in detail as to how he was to conduct himself in discharging the mission entrusted to him. At first, he was not to reveal his identity to Kesho Gobind. He should deliver the letter to him like an ordinary messenger. In the subsequent oral talk, he should try to probe into the inner feelings of the Subedar, whether he was inclined towards Venkoji with whom the British were secretly in league, or he was loyal to Raghoji against whom war preparations were being made. The text of the letter addressed to the Subehdar forms an interesting reading in spite of its obscure phraseology. It is symbolic of the diplomatic language of that period.

Kumar Singh's mission proved a failure, and Kesho Gobind could not be weaned away from his loyalty. When during the course of the war the British occupied Sambhalpur, the Subehdar of Chhattisgarh asked Jujhar Singh, the Zamindar of Raigarh, to collect men and bar the path of the enemy in lieu of which remission of revenue was promised to him Similarly, Khande Rao Nilkantha wrote to Pratap Rudra of Khairgadh assuring him that the power of the Bhonsla was still intact, that he had closed the Ghats on the British who at Poona and Hyderabad had been replaced by the French, adding that anybody daring to plunder Sambhalpur on behalf of the English would be severely dealt with.

The speedy occupation of Sambalpur by the British was helped by the anti-Maratha feeling prevailing among the local Zamindars there. The fact of the matter is, that although the Maratha had over-run the whole of Northern India, with the exception of a few pockets, nowhere did their hold prove to be stable. They were dreaded and bitterly hated No wonder, therefore, that Rani Ratan Kumari of Jaitgadh, Jujhar Singh of Raigadh (133), Bishwanath Singh of Sarangadh and others through a joint petition submitted to the overlordship of the British. They were loud in their complaints of Maratha high-handedness and extortion, and they expressed their readiness to pay revenue according to any fixed and reasonable assessment.

Consequent upon the conclusion of the second Maratha war and the signing of the treaty of Davagaon, the position of the feudatory chiefs once more became unstable, because of the absence of any definite stipulations defining their status and relationships vis-a-vis the Bhonsla and the English. This state of affairs continued till August 24, 1806 when Sambhalpur was gratuitously restored to Raghoji in view of the serious depletion in his revenue resources caused by vast territorial cessations which he had made to the British. But during the interval preceding the restitution, the local Zamindars were permitted to retain their ancestral lands and were guaranteed protection from Maratha depredations on condition that they continued to pay the government dues with regularity Encouraged by the prospects of safety and security Raja Ram Chandra Dev of Patna, Mahapatra Pratap Rudra Dev of Khariar, Raja Ajit Sahi of Phuljhar and Raja Akbar Shahi accepted the British overlordship, expressing their readiness to pay the revenue, but requesting remission thereof for two years in view of the havoc caused by the Maratha extortions.

Their example was followed by Rani Ratan Kumari of Sambhalpur and her feudatories like Raja Jujhar Sidh of Raigarh, Raja Vishwanath Singh of Sarangadh, Mahapatra Prithvi Singh of Sonepore, Raja Indra Sridhar Deva of Gangpur, Raja Tribhuwan Singh of Baroda, Raja Indra Deva of Bani, Diwan Siva Singh of Sakte, Thakur Ajit Singh of Badgadh, and the chief of Raidakhol. They not only agreed to accept the British suzerainty, but also promised to make every possible effort to uproot the Maratha ascendancy.

Naturaly, grave was their consternation and severe their disappointment, when they were informed through a letter dated March 26, 1804 that a treaty of peace having been concluded between the British and Raghoji Bhonsla, according to which they could exercise the option of either reverting to their former status of dependency to the Marathas, or remaining under the British protection on the conditions stipulated before. But Rani Ratan Kumari, Raja Ram Chandra Deva and others replied that they were not prepared to opt out of the British protection.

Perhaps in the hope that the intended restitution of Patna and Sambhalpur, the proposal for which was mooted about January 1806, would hardly ever materialise, the feudatory chiefs even expressed their readiness to abandon their hereditary possessions in lieu of adequate compensation in the form of land within British jurisdiction. They also accepted monetary assistance to enable them to undertake the journey to their new destinations.

In these circumstances, the notification dated 10. 7. 1806 gave

a rude shock to Rani Ratan Kumari and her associates. And although the treaty of restitution was not completed till August 24, 1806, preliminary steps had to be undertaken before its terms could be actually implemented. It was with that end in view that the Rani and her feudatories and friends were asked to decide once for all whether they would stick to their hereditary lands, in which case suitable recommendations would be made in their favour to Raghoji Bhonsla, or otherwise they would choose to come under the British protection on the terms indicated earlier. In fact such a decision on their part had been hanging on for the last seven months

Rani Ratan Kumari was further informed that suitable letters had been sent to Nagpur to secure the release of Raja Jit Singh and Prithvi Singh Mahapatra. Her feudatories were reminded that they by their conduct and behaviour were exposing themselves to the charge of breach of faith, because they had promised to quit their respective territories when the waters of the Mahanadi had subsided. They were also warned that in case they tarried any longer, they would not only fall into the hands of the Maratha, but would also have to return the money advanced to them Finally, they were informed that Jane Pant was coming from Nagpur to take over the charge of Patna and Sambhalpur.

The tone of the letters and the information they conveyed proved to be very upsetting, and the feudatory chiefs found themselves in acute mental struggle. They were reluctant to abandon their ancestral lands to which they were bound by ties of sentiment. They were mortally afraid of the Marathas, not to speak of the prospects of settling in a strange land. Therefore, they put forth pretexts and excuses. Raja Ram Chandra Deva wrote back to say that the original agreement had contemplated the departure of the chiefs in a body, but none of them had so far moved even one step, and that the restitution of Patna was tantamount to breach of agreement which had previously been entered into. Raja Prithvi Sahi of Phuljhar said that he was prepared to leave only if Raja Ram Chandra gave the lead. Raja Bishwanath Sahi of Sarangadh referred to the solemn undertaking given by the British authorities, while seating Rani Ratan Kumari on the gaddi of Sambhalpur and placing the feudatory chiefs in her charge, and he begged to be excused Only Thakur Ajit Singh of Bargadh expressed his unequivocal intention of leaving his patrimony irrespective of the attitude of other Zamindars. Whereas Raja Rudra Pratap Deva of Khariar explicitly stated that he was not prepared to abandon his homeland and that he was ready to remit the money advanced to him. Raja

Jujhar Singh of Raigadh appealed to be saved from the muddle, and to be allowed to remain under the British protection.

But the condition of Rani Ratan Kumari was indeed very pathetic. Her son and husband were in Maratha captivity, and yet she was being deprived of her ancestral possessions. She made frantic appeals to the British sense of justice and fairplay. She reminded Captain Russel that it were the British who had restored her possessions to her and had raised her from dust to the position of authority, and that in utter disregard of their earlier promises they were throwing her to the wolves, driving her into wilderness, helpless and protectionless as she was. In desperation she declared that she would not abandon her hearth and home until her near and dear ones had been restored to her

But the British were impervious to all pleadings; they were wedded to their self-interest only Patna and Sambhalpur were restituted to the Bhonsla in utter disregard of the agreements and understandings given to the feudatory chiefs and of the prospective sufferings that they would be subjected to by the Marathas. It appears that when the latter began to establish themselves in their restituted territories, Rani Ratan Kumari took certain steps of protecting her honour and property, which appeared to the Marathas as open defiance of their authority. Upon this they referred the matter to Mr. Russel, who addressed a letter to her. calling for an explanation of her conduct. She wrote back to say that she had acted in self-defence and she was in correspondence with the Bhonsla and Mr. Elphinstone with a view to obtaining their sanction for the retention of her ancestral possession on conditon of regular payment of revenue. And for this purpose she had sent Mukund Babu to Nagpur and two trustworthy agents to talk the matter over with Janu Raghunath Panth and Deva Rai Pandit who had entered and occupied Sarangadh.

Gobind Nath Sah Deva was the chief of Chhota Nagpur who, like other feudatories of that region, had tendered obedience to the British In March 1808 he was required by the Government to co-operate with Captain Roughsedge in apprehending certain criminals. He carried out the instructions to the best of his ability (81). In 1801 a robe of honour was conferred on him, and he gratefully acknowledged its receipt (98). In 1811-12 his assistance was sought in preventing the Pindari incursions into the British territory, and he whole-heartedly gave it (132).

II

The treaty of Bassein *occasioned* a severe and wide-spread explosion in the heavily charged political atmosphere of the central and eastern regions of India. While, on the one hand, the aim of the British authorities was to obtain the link between the Presidencies of Bengal and Madras, on the other, they were equally anxious to circumscribe the sphere of Maratha activity, by excluding them altogether from Bundelkhand, the major portion of which had been reduced to subjection by Ali Bahadur, a grandson of the Peshwa Baji Rao He worked in collusion with a local chief. Himmat Bahadur, and obtained speedy success. But very much like Sher Shah of the 16th century, Ali Bahadur met with determined resistance at Kalinjar, during the siege of which he lost his life in 1802. Naturally his conquests reverted to the Peshwa who ceded portions of it to the British.

In this way the task of establishing peace in Bundelkhand devolved on the shoulders of the E. I Company. It was rendered both easy and difficult by the consequences of the Second Maratha War—easy in so far as the victory had enhanced the British prestige and correspondingly the fear of their authority; and difficult in so far as the defeated parties, moved by feelings of frustration and humiliation, began to encourage resistance on the part of unsocial elements. Fortunately for the British, their recent enemy, the Marathas, did not command either the respect or love on the part of the Chiefs of Bundelkhand, who wanted to exploit the existing turmoil to their best advantage in recovering and re-asserting their local independence.

The British handled the situation with tact and firmness. First of all they attempted to feel the pulse of the Bundela Chiefs, and they shaped their policy towards them accordingly. Fully appreciating their susceptibilities, they guaranteed to them as large a measure of independence as was compatible with the requirements for the maintenance of peace and tranquillity in that region, which was being seriously threatened by the underhand activities of the enemy as much as by the wide-spread depredations of Pindaris Indeed the Holkar had suggested to the Bhonsla that Shamsher Bahadur, the elder son of the late Ali Bahadur, should be directed to lead an expedition to the districts of Mirzapur and Banaras through Bundelkhand, which would serve the double purpose of recovering the territories which he had lost and that of alarming the British. But in mooting his proposal the Holkar committed the fatal mistake of counting too much on the dash and initiative of Shamsher Bahadur, and of ignoring the vested interests of Himmat Bahadur, the ally of the late Ali Bahadur. The latter (Himmat Bahadur) con-

cluded an agreement with the British in September 1803. Mr Baillie, the Agent to the Governor-General, addressed a letter to Shamsher Bahadur promising him a provision for life and for his family in perpetuity, of 4 lacs of rupees in land or money, to be set apart from the revenue of Bundealkhand by the British Government in concert with His Highness the Peshwa. It was left to Lord Minto to accept the *Wajib-ul-Arz* of the Nawab on December 31, 1812

The lead given by Himmat Bahadur opened the way for negotiations and settlements with other States of Bundelkhand, most of which were in the hands of the descendants, legitimate and illegitimate, of Chhattrasal. Their territorial rights were duly recognised. Treaties of friendship and alliance were concluded with the chiefs of the western portion of the province, they being treated as independent, in contradistinction with those of the Eastern region who were nominally subordinate to the Peshwa of Poona.

The documents (in this collection) relating to Bundelkhand consist either of the *Iqrarnamahs* given by the chiefs and the corresponding *Sanads* granted to them, or letters which were addressed by them to the successive Agents to the Governor-General for the settlement of disputed issues, or as explanations of their conduct. With a few exceptions, the *Sanads* and *Iqrarnamahs* included in this collection are available in Volume V of Mr. Aitchison's work. It is, therefore, unnecessary to reproduce them, unless reference to any article in them be required to elucidate certain point or points. In fact, it is the correspondence (which is one sided) which is more interesting than the *Sanads* and the *Iqrarnamahs* which are of a uniform pattern with a few variations.

Upto the stage indicated by the documents, Bundelkhand and Baghelkhand had not been separate, and so inter-state relationship can form an interesting subject of study, but the material at hand is not adequate for the purpose. Therefore, the narration given below is statewise instead of being topicwise.

(1) *Charkhari*—Raja Vikramajit Bijai Bahadur Singh, the son and successor of Khuman Singh, lost the state to his rivals during the dissensions which occurred among the descendants of Chhatrasal. He threw in his lot with Ali Bahadur who recovered the state for him and handed it over to him on his entering into an engagement of fidelity and allegiance. The memorandum of the grant includes the names of 208½ villages yielding a revenue of Rupees four lacs, four hundred and eighty eight. As an ally of Ali Bahadur the Raja began to increase his influence. He took under his protection Raja Kesari Singh of Bijawar (73i), assuring him that he would protect his lands and property (73iii) which had been in his possession

since long time past. The Raja also seized Parganah Khatola from its Zamindar; but Ali Bahadur had it restored to its original owner (73ii). He won over Maharaj Kumar Nirand Singh Deva, Maharaj Kumar Nirpat Singh Deva, Maharaj Kumar Anirudh Singh Deva, Pandit Bhola Purani, Shri Tilwar Mahraja, Shri Bethuria Bakht and Shri Khawas Man Rakhan, promised them grants of land on condition that they refrained from joining the British (91).

It appears that with the death of his benefactor, Bijai Bahadur became nervous, because he was the first Bundela chief to submit to the British authority. He presented his *Wajib-ul-Arz* to Captain Baillie in 1804-5, through his representatives Diwan Man Singh and Maharaj Kumar Diwan Arjun Singh Deva It indicated the details of the territories belonging to Bijai Bahadur, particularly the villages of Kodar and Bihgaon (73iv). In lieu of the *Iqrarnamah* dated 27.8.1804 (49) the *Sanad*, dated 29.1804 was granted to him. In continuation and amplification of the latter document, on September 14, 1804 an order (50) was issued giving the names of the villages and mahals granted to the Raja (vide Appendix III, Vol. V).

(2) *Maihar*:—About 1800 A.D. Raja Ali Bahadur granted to Durjan Singh, the younger son of Beni Huzuri, the fort and *ghati* of Maihar on condition of active service (137); but when the British troops entered Bundelkhand, he tendered his submission to them, and on Oct. 17, 1806 signed an *Iqrarnamah* (p 259, Vol. V). Accordingly he was granted the *Sanad* dated November 18, 1806. (137 and p. 260, Vol. V). Subsequently another *Sanad* dated March 18, 1814 was granted to him comprising a list of the names of all villages in his possession (103 & p. 263, Vol. V).

But he died soon after (102), and then his sons began to quarrel among themselves. To resolve the situation Maihar and its fort was assigned (May 1814) to the elder son Thakur Bishan Singh, and the remaining property was divided in equal shares between the latter and his younger brother Thakur Prag Das who fixed his headquarters at Bijaraghogarh. Prag Das signed an *Iqrarnamah* of 5 articles, and therefore a *Sanad* detailing the name of 402 villages was granted to him (102). Likewise Thakur Bishan Singh also submitted an *Iqrarnamah* and the *Sanad* dated May 1, 1814 was granted to him on the same terms (104 & pp. 267-7, Vol. V).

(3) *Garauli*:—Its ruler Dewan Gopal Singh was an active and daring military adventurer, who resisted the establishment of the British authority in Bundelkhand. To bring him down to his knees and to isolate him from others, a number of chiefs were required to stipulate in articles of their *Iqrarnamahs*, an undertaking to refrain from extending to him any help and protection. As instances in

point, may be cited the cases of Lal Sivaraj Singh (87), Lal Amar Singh (95), Raja Kishore Singh of Panna (p. 116, Vol. V), and Sheoraj Singh of Unchhar (87). The same stipulation occurs in 101A, the document which bears no name.

In sheer distress Gopal Singh turned to the various British officers. He approached Major Kelley, oral negotiations having been carried through Jawhar Harkara (108). He wrote to say that he had complied with the demand made upon him of presenting himself at Banda. In the first instance when he had gone there, he was accom panied by five or six thousand men, whereupon he was asked to wait upon the Agent with only 100 men. But when some one hinted to him that this was a trick to arrest him, he took to his heels. When he was sent for the second time by Mr. Leadbeater and responded to the invitation, the same thing happened again. The fact of the matter is, he continues, "that Raja Ram (of Garauli) and Raja Bakht Bali are my enemies and they do not want that I should make up with the British Government."

In order to impress the authorities with his sense of honesty and sincerity he said that he was once in the service of the chief of Patna, and then in the service of Raja Himmat Bahadur, and everywhere he performed his duties loyally and faithfully. His cup of misery was full, because he says that he had been without any possessions for the last two years or so, driven almost to starvation. He expresses his helplessness by saying that there was no place where he could take refuge 'because the entire Jambudwip is under the authority of the British.' In reply to the letter of Colonel Warren he refers to the earlier offers made to him when he was told that land yielding an income of Rs. 400/- p.m. would be assigned to him, but such a paltry sum was far inadequate for his requirements (108 & 110).

Letters of the same purport were addressed by him to Mr. Richardson. Very pathetically does he remark in one of them: "You have confiscated the land of so many chiefs, but have driven none of them into exile. Only I and the Thakur of Kanraihya have been driven into wilderness (100)." In another letter, while requesting for a suitable grant of land, he says, "What harm have I done to the Government, that it has contemplated to punish me. I have no resources left for offering resistance (101)".

After protracted negotiations the British authorities relented. It was in 1812 that he was permitted to present his *Wajib-ul-Arz* (pp. 200–203, Vol. V) and sign an agreement of 7 articles (116, and pp. 204-5, Vol. V) dated February 24. The second article imposes upon him the condition that in future "he or his brother's children or

brothers or any of his adherents shall never be guilty of plunder or excesses in the parganah of Kotra, etc., the possessions of Raja Bakht Singh, or the possessions of any of the dependents of the British Government." These formalities having been completed, the *Sanad* of grant was issued in his favour (112 and p. 206, Vol. V).

It appears that even after the grant of the *Sanad* certain matters still remained unsettled. One of them related to the demarcation of the boundaries of his state; the second, to the surrender of the territories which had been granted to him by Raghoji Bhonsla; the third to the high-handedness of Raja of Rewa who had lifted some of his horses; and the fourth to his quarrel with Raja Kishore Singh (Panna) and Raja Nirad Singh (131).

Sohawal:—It was originally a part of Rewah, but about the middle of the 16th century, it separated itself from the parent state. Subsequently, it became subordinate to Panna. But when the *Iqrarnamah* of allegiance dated July 16, 1809 was submitted by Lal Aman Singh (95 and pp. 269–271, Vol. V) a *Sanad* dated 18. 7. 1809 was granted to him confirming him in his possessions.

Lugasi:—At the time of the British occupation of Bundelkhand, the chief of this State was Diwan Dhiraj Singh, a grandson of Hirdey Shah. He was confirmed in his possessions by the *Sanad* dated December 9, 1808 (pp. 122–25, Vol. V). Owing to his inability to run the administration because of the infirmity of old age, he sought the permission of the Government to retire in favour of his younger son Sardar Singh (141). But at first his proposal did not meet with the approval of the authorities (144), but when he referred to the understandings given to him and which were on record (144), the Governor-General gave his consent, on condition that the interests of the elder son were guaranteed from encroachments in future. Sardar Singh gave the requisite undertaking (143 ग) relinquishing the village Bhadesar in favour of his elder brother Padam Singh. The latter also gave a corresponding undertaking dated 6. 7. 1814 (142 च) to abide by the terms and conditions laid own by his father. Accordingly separate *Sanads* were granted to the two brothers which were duly forwarded to them and received by them (143 क-ग). Dhiraj Singh expressed his thanks for the approval of his proposal by the Governor-General and wrote to say that he was forwarding the *Iqrarnamah* duly sealed and signed (142 ख). and Sardar wrote to the same effect (143 ख).

Naigawan Rabai:—It was in the possession of Kunwar Lachhman Singh entitled Himmat Bahadur *faujdar* (to distinguish him from Raja Himmat Bahadur Anup Giri), a bandit leader of Bundelkhand. Negotiations for his surrender on promise of pardon dragged on for

a considerable time. The British authorities demanded that he should evacuate his fort for which he had perhaps given an oral undertaking to Mr. Baillie. When subsequently he was faced with it, he wrote back to say that the Agent to the Governor-General had assured him that the fort would be taken from him two years after his submission to the Government, and that he was occupying it, because it belonged to him, it was his very life-blood

But Mr. Richardson was not the man to put up with such excuses. He directed Diwan Nasir Ali to press for it. Upon this Lala Rakhan Lal, the Diwan of Lachhman Singh, sent word that his master was ready to evacuate the fort after being given an opportunity to discuss the matter, and for this purpose he requested the Government to send two men to escort him (the Diwan) to Banda (86 क). To this Nasir Ali replied that the time for prevarications and delay had gone and that the requisition be complied forthwith (86 ख). This was followed by a communication dated 13. 2 1807 from Mr. Richardson couched in very strong language.

Having thus been cornered Lachhman Singh submitted his *Wajib-ul-Arz* on 13. 9 1807 (85) and signed an *Iqrarnamah* dated September 19, 1807 (77, and pp. 209-10, Vol. V). Accordingly he was granted a *Sanad* at Banda (78 and pp. 210-211. Vol. V). It was mentioned in it that Lachhman Singh had been accompanied by Raja Bakht Singh.

Chhatarpur:—Kunwar Sone Sah, a servant of Hindupat, the grandfather of Raja Kishore Singh of Panna, was the ruler at the time of the expansion of the British power. He commanded so much influence and popularity that the Government considered it discreet to placate him with easy terms, in the interests of the pacification of that region On March 16, 1806 he presented a paper of requests (p. 171, Vol. V); in the following April, when he had executed an *Iqrarnamah* (pp. 174-5, Vol. V), the *Sanad* dated March 19, 1806 was granted to him, according to which he ceded to the Government the town of Chhatarpur and the four *chowkies* which were in his possession during the lifetime of Ali Bahadur, together with the towns of Mow and Salat and the villages dependent on them.

It appears that in 1809 disputes arose between Kunwar Sone Sahi and Kesari Singh of Bijawar with regard to the possession of Kharoi, Khura, Satai (91 क), Dharampur (91 ग) and Bajna (91 घ) Kesari Singh referred the matter to Mr. Richardson who asked for explanations from Sone Sah. The latter justified his aggression by saying that Kharoi along with other villages had been granted by him to his feudatory Dhakan Khawas; and Satai had been assigned by him to Kunwar Achal Singh, both of whom had changed their

loyalties, the latter going over to Kesari Singh, and the former having gone over to the chief of Silaun. (It may be mentioned that formerly Achal Singh was a feudatory of Bir Singh Deo, father of Raja Kesari Singh) (91 ङ). As to Dharampur, he said he had been holding it ever since the time of Ali Bahadur, as such Kesari Singh could have no claim on it. And Bajna belonged to one of his feudatories Gandharp Singh who had lost his life in a scuffle with Kesari Singh's men, and therefore it should revert to him (91 ङ). (Gandharp Singh had signed an agreement in the court of Kesari Singh, promising him his allegiance on condition that the possession of Bajna would be confirmed to him. This, in reality, was the genesis of the dispute. Sone Sah concludes with the remark that he had already brought to the notice of Mr. Baillie the contumacy of their chiefs.

In another letter, when Mr. Richardson reminded him that he had not remitted the revenues of Baghauta and other villages to Kesari Singh, he replied that the position was just the reverse of it in so far as it was the latter who owed him money (91 ख). In addition to it, he represented to the Agent to the Governor-General that Kesari Singh had seized some of his villages, and requested that steps be taken for their restoration to him (91 क).

Kesari Singh died in December 1810 and was succeeded by his son Ratan Singh. Sone Sah now began to quarrel with him about the possession of the villages Bhairapiparia, Bedri, etc Perhaps the situation had become so acute as to compel Mr. Richardson to intervence by asking Sone Sah to sign an *Iqrarnamah* dated 16. 12. 1812 to the effect that he would abandon the disputed villages (140 क) till the final decision on the part of the Governor-General. But Sone Sah was not the man to be silenced so easily. He sent another representation that those villages had belonged to him ever since the time of Raja Chhatrasal and Raja Ali Bahadur (140 ख).

In a personal letter from Banda (140) Shri Dikshit Radha Kant and others informed Sone Sah that having had a talk with Diwan Nasir Ali, they had come to the conculsion that the villages would not be restored to him (140 ग).

On the basis of information received from Kotah by the British Resident in the Court of Sindhia to the effect that Sone Sah was in correspondence with Amir Khan, when Mr. Richardson pulled him up for it, the chief of Chhatarpur made loud protestations of his loyalty, vehemently refuting the charge levelled against him (97 ख).

Unchahra:—The ancestors of Lal Sheoraj Singh, who were descendants of Parihar Rajputs, had been in occupation of the State even

prior to the advent of Chhatrasal, and they had never been ousted when an *Iqrarnamah* dated March 11, 1809 (87 and pp. 253–55, Vol V) had been presented and approved, the *Sanad* dated March 20, 1809 was granted to him (88 and pp. 255–56, Vol. V). Besides the usual terms incorporated in such documents, a special article (No. 7) dealt with Gopal Singh Bundela and Bahadur Singh Parihar, who had become a terror to Rajah Bakht Singh and Raja Kishore Singh, requiring him not to extend protection and help to him.

In a letter (from Nagod) the Lal informed Diwan Nasir Ali about the sack of the Katra (market) of that place (82). In another letter (135) he wrote to inform the Agent that although in accordance with his instructions he did send his Vakil, Lal Gurdatta Singh, to persuade Jagdhari to abandon Dogra and to revert to a life of submission and obedience, not only did he reject all such overtures, he even uttered threats against him (Sheoraj Singh).

Jaitpur:—Its chief, Kesari Singh, a descendant of Jagat Raj, son of Chhatrasal, submitted to the British Government in July, 1805, when he signed an *Iqrarnamah* of eight articles dated July 4, 1805 (51). According to the last clause he agreed to abandon the fort of Jaitpur and to prevent his men from going near it or repairing it. In case of breach of the undertaking he stipulated that it would be open to the Government to forfeit his entire grant. The day the *Iqrarnamah* was signed the *Sanad* was granted to him indicating the names of 52 villages which were to remain in his possession (52).

Satisfied with his continued fidelity, the Government, on July 15, 1809, added to his jagir certain villages in the pargana of Pawar; and in September of the same year he received in free gift the diamond mines of Harin. In 1812 the Rajah requested the Government to consolidate his grant. Upon this, he was required to execute a fresh *Iqrarnamah* of 11 articles (128 and pp. 76–78, Vol. V) and the *Sanad* dated September 20, 1812 was granted to him (126 & 127, pp. 72–5, Vol. V).

Khadi:—It was a small jagir fetching a revenue of Rs. 15,000/- which was granted to Parasram, the leader of a group of bandits, who submitted to the British Government with the mediation of Raja Bakht Singh. He presented a *Wajib-ul-Arz* dated October 7, 1807, (pp. 78–79, Vol. V) and an *Iqrarnamah* of 6 articles on the same day (76). Consequently the *Sanad* was granted to him confirming him in his possessions (pp. 81–82, Vol. V) which he enjoyed till his death in 1850.

Beri :—Diwan Jugal Prasad was a descendant of Jagat Raj in the female line. He signed an *Iqrarnamah* (dated August 23, 1809)

consisting of 4 clauses (93 and pp. 166–8, Vol. V). He was granted the *Sanad* dated August 25, 1809 (94 and pp. 168–9, Vol. V). In the latter document explicit mention was made of the Diwan's claim on the villages Chillee and Dadree situated in the paraganahs of Jalalpur and Kirki respectively, which on investigation were found to be in order. Ganesh, son of Tilok Singh Kayastha, the gomashta of the Qanungo, stated that Chillee was in the possession of Diwan Jugal Prasad; whereas Dadri had been confiscated by the Government. When questioned on the basis of the entries in his Jamabandi, Anant Ram, the Qanungo of Kharka, deposed that according to his records, Dadri was originally in the possession of Khuman Singh, who passed it on to Diwan Jugal Prasad who held it during the regime of Ali Bahadur, after which it was confiscated by the Govenrment. Besides the oral evidence, the Diwan also produced the written order (dated 1799) of Ali Bahadur granting him Umari and Chillee (90). These proofs irrefutably upheld his title and the Governor was compelled to make amends for the injustice it had done to the Diwan by assigning the disputed villages to Nana Gobind in lieu of certain territory in Kalpi. Accordingly, the villages Badhur Buzurg with Gatha, and Baretha in the paragana Jalalpur were granted to Jugal Kishore. The *Sanad* of 1809 was revised two years later in 1811.

Kothi:—The founder of the state was Jagatraj Singh Baghela. His successors continued in uninterrupted possession of it till the time of Lal Duniyapat who signed an *Iqrarnamah* on Aug. 16, 1810 (101 and pp. 281–84) and was granted a *Sanad* after the approval of his *Wajib-ul-Arz* on Aug. 16, 1810. According to the article 7 of the *Iqrarnamah* the Lal promised neither to help nor protect Gopal Singh Bundela who was plundering the territories of Raja Bakht Singh and Raja Kishore Singh.

Ajaigarh:—Its chief, Raja Bakht Singh, had a very chequered career having been completely deprived of his possessions by Ali Bahadur who drove him to such a state of abject penury that he agreed to accept a stipend of Rs. 2/- a day from his oppressor. His fortune took a turn for the better when the British occupied Bundelkhand, and fixed on him an annual stipend of Rs. 36,000/- till such time as suitable lands could be given to him in lieu thereof. It was to redeem this promise that upon the confiscation of the property of Lachhman Deva, a military adventurer who had seized the fort of Ajaigarh, that in 1807, on Raja Bakht Singh's executing a deed of loyalty and obedience dated June 8 (pp. 147–50, Vol. V), the parganahs of Kotra and Pawai were assigned to him according to the *Sanad* issued at Banda (p. 151, Vol. V). The execution of the

Iqrarnamah and grant of *Sanad* had been preceded by the submission of *Wajib-ul-Arz* (pp. 145–147, Vol. V).

But as the *Sanad* did not contain a detailed list of villages assigned to the Raja and in view of the fact that he had represented the need thereof, another *Sanad* dated October 23, 1812 was granted to him (125–pp. 157–58 and appendix VI, Vol. V).

Bihat:—Its chiefs at the time of British occupation of Bundelkhand were Maharaj Kumar Aparbal Singh and Diwan Chuttaray. The former had in the past received 5 villages from Maharaj Hindupat, a grandson of Hirdey Sah. Maharaj Anirudh Singh had also granted to him some villages. Similarly, Diwan Chuttaray had been the recipient of favours at the hands of Maharaj Srinet Singh and Maharaj Anirudh Singh. (74 and 75).

Diwan Aparbal Singh and Diwan Chuttaray presented their *Wajib-ul-Arz* on September 22, 1807 and executed an *Iqrarnamah*, according to which they were granted the *Sanad* on the same day (pp. 186–90, Vol. V).

Rewah:—Shortly after the conclusion of the treaty of Bassein, Raja Jai Singh Deva of Rewah was approached with the proposal of entering into an engagement with the British Government, but he did not accept it. It appears that with the pacification of Bundelkhand, his position did not remain as invulnerable as before; it was positively compromised when a body of Pindaries raided Mirzapur in 1811-12 through Rewah. "The Raja was believed either to have abetted the enterprise through deliberate design, or to have countenanced it through weakness."

Once more pressure was brought to bear on him to conclude a treaty. Mr. Richardson wrote to him a letter both in Hindi and Persian which the Raja acknowledged by sending his representative, Bakhshi Bhagwandas, to him to discuss the matter personally. In his letter he protested his loyalty to the British and expressed his desire to receive a letter from the Governor-General (117क). In a subsequent communication to the Agent, the Raja expressed the hope that the Bakhshi must have reached him and conveyed his intentions to him (117ग).

As to the Pindari raid, he wrote to say that the report received by the Agent was correct. The real facts, the Raja stated, were that when he was encamping at Simaria, information was brought to him that Mir Khan at the head of 20,000 horse and 600 foot had raided Kari Talao and had entered Maihar. Thereupon he marched post-haste to deal with them; but the raiders had taken to their heels during the night, without tarrying in his country even for a second. The following morning he pitched his camp at Makund-

pur, posted guards at Ramnagar and Amar Patan. He even sent a *harkara* towards the Deccan who reported that not a trace of the Pindaries was to be found upto the Narbada. Finally, the Raja assured Mr. Richardson that he was loyal to the British, that he was guarding the Deccan Chowki and was prepared to face 30 to 40 thousand of the enemy (117 ग). This is how Bir Singh Deo attempted to clear himself of the charge of abetment. But whatever the reality, steps for safeguarding the security of the region were deemed to be imperative, and the first in this regard was to bound the Raja by the terms of a treaty. Seeing that there was no other option left to him, the Raja concluded a treaty of friendship and defensive alliance which was sealed and exchanged at Banda on October 5, 1812. Article 9 of the aforesaid treaty read as follows:

"Whenever the British Government shall deem it expedient to send troops into the dominions of the Rajah of Rewah or to station or canton a British force within the Rajah's territories for the purpose of guarding against or intercepting the retreat of an enemy, or of the Pindaris, or other predatory bodies, it shall be competent to the British Government to detach its troops, and the Raja of Rewah shall give his consent accordingly. The Raja shall also on any such occasion station his troops according to the advice of the officers of the British Government at the Ghat of Chandeah, Kewrreah, or such ghats or passes as the British Commanding Officer shall point out . . . . Whatever materials or supplies may be required for the British Cantonments, or for the use of the British troops during their continuance in the Raja's territories, shall be readily furnished by the Raja's officers and subjects, and shall be paid for at the price current of the bazar"... .

Evidently the terms impugned upon the local independence of the Rajah, and there was a good deal of wrangling in their interpretation. In one of his communications, the Rajah emphasised that the article No. 9 of the treaty was intended to mean that spots of strategic importance for barring the path of the Pindaris shall be selected jointly by him and the Officer Commanding of the British troops. Such spots were to be situated near Chadia, Kowrah ghats and within the jurisdiction of his territory. Accordingly, he, subject to the approval of the Officer Commanding, had selected two places: (1) Pahari Kaldari commanding the river and (2) Badagaon near Chadia. The first place was not only within his easy reach, it was also within reach of Unchhera and Maihar. He regretted to note that his sincerity was suspected by the Officer Commanding and he selected Kharwari in Nibhauri for his encampment, for the alleged reason that he (the Raja) did not want the British troops to canton

in his territory, which allegation the Raja protested was baseless (130 ग).

Perhaps overcome with a sense of frustration and disappointment the Rajah decided to abdicate in fabour of his son, Bishwanath Singh, and when he approached the Agent, Mr. Wauchope, for a robe of honour for his son, he was asked as to why he himself was indifferent about it. He lodged a humble protest against such suspicions (136 क्ष). But the tension between the two parties did not ease. In the end, the treaty of October, 1812 was revised (pp. 242-3) and more stringent terms were imposed upon the Raja. He was required to refrain from engaging in correspondence with any foreign state or chief; to agree to the stationing of a news-writer or agent on the part of the British in his place of residence, to allow *dak chowkies* to be established throughout his territories by the British Government, and to use every means to punish Lal Zabardast Singh of Churhat and help the British Officers doing the same (pp. 242-3, Vol. V).

It was in reference to this treaty that the Rajah wrote to Captain Pattison that he was doing as much as possible with regard to the organisation of the *dak*, and would continue doing the same (130 क्ष). Even then he remained under a cloud of suspicion. Moved by feelings of distress and disgust he wrote a letter to Mr. John Wauchope, explaining the allegations made against him, particularly with regard to his contacts with the Pindaris and the Raja of Nagpur. As to the first, he stated that Sohagpur had been seized by the Bhonsla from him and he could not recover it from him. After the British occupation of Bundelkhand, the lands adjacent to the fort fell into ruins and the Rajah had gone there to revive his contacts. On this occasion about 2000 local men flocked round him, which upset the Bhonsla Chief of Nagpur who addressed a letter to him. To this letter the latter sent a reply informing Raghoji that he had not gone to Sohagpur to recover the fort, and that if he had any such intentions he would have done it through the British Government.

As to the Pindari affair, Jai Singh wrote to say that their Vakil did not wait upon him offering him the support of 4,000 troops and the restitution of Sohagpur, but he had rejected the proposal forthwith telling him that he would fight the enemies of the British and would not yield to them.

And the price which, Jai Singh says, he had to pay for devotion to the British cause was a loss of Rs. 50,000/- caused by the depredation of Rewah by the Pindaris, and a crop of suspicions between him and the British Government who in contravention of the terms of the treaty inclined more towards his opponents and hostile rela-

tives than towards him. And in this context he cites the case of Jagmohan Singh, who having been granted a separate *jagir* of Rs. 5000/-, neither obeyed him nor paid him the stipulated revenue (136 ग).

Again he wrote to Mr. John Wauchope: "You are my overlord. Either cherish me or destroy me. I shall ever remain loyal. Delay has occurred in my departure, because I was suffering from feelings of humiliation. Now, I am leaving this place on Monday. Write whatever you like to the Governor-General" (136 घ). In the end he expressed his happiness at the report informing him about the receipt of a robe of honour from Calcutta, confirming his decision to abdicate in favour of Bishwanath Singh (136 क), who would observe the terms of treaty most scrupulously (136 ग).

Kalinjar:—Throughout the Medieval period and the early Modern period the strategic importance of Kalinjar has always been recognised. It was here that Sher Shah Suri lost his life while besieging it: and almost exactly in the same circumstances Raja Ali Bahadur met his death. At this time, the fort was in hands of Chaubay Dariyao Singh, the most powerful and influential of the seven sons of Chaubey Ram Krishna, the commander of the fort on behalf of Hirdey Shah. His descendants resisted the attempts of Raja Ali Bahadur for ten years, having virtually become independent. But this state of affairs was not to continue after the assumption of the role of the pacification of Bundelkhand by the British.

Of the sons of Chaubey Ram Krishna, the first, to be approached (1803—4) by Captain Baillie has the fourth, Pandit Chaubey Gajadhar Jiyu. He was told that the lands which he had been holding since the time of Raja Ali Bahadur would be confirmed to him. To this he sent a spirited reply saying that his family had been holding the fort ever since the time of the Bundelah and that he understood fully well the methods of the British who refrain from meeting objections. He sent Huzuri Param Sukh to talk the matters over with the Agent to Governor-General (46 क). In a subsequent letter he acknowledged receipt of Captain Baillie's letter in Persian (46 ख).

Chaubey Dariyao Singh executed an *Iqrarnamah* of seven articles (67 and pp. 296—98, Vol. V), dated September 10, 1806, and submitted a *Wajib-ul-Arz* (68 and pp. 293—95). He was granted a jagir of 4 lacs together with 14 diamond mines as had been settled upon him by Shamsher Bahadur, son of Ali Bahanur, when he had come from the Deccan (68). Soon after he was charged by the British Government with complicity with the adventurer Lachhman Deva, and he wrote a very apologetic letter in reply (83 ख). In 1809 the Chaubey

requested Mr. Richardson to assign to Raja Kishore Singh (of Panna) the parganas of Jaipur Barohi and Dharampur which were included in his *Sanad,* but when the Raja has posted his own thanahs (89).

Ambitious and restive as Dariyao Singh was, he could not resist the temptation of fishing into troubled waters, for which he was again pulled up by Mr. John Richardson. Reference in this connection may be made to the case of Sheikh Badal who had kidnapped the son of Siva Das Mahajan of Rewah, because the Maharajah had not paid his salary. The Sheikh held the boy in ransom (106 क). The matter having been referred to the British authorities, the Agent began to press the Chaubey for explanation and settlement, and the latter was compelled to send his vakil Gopal Singh to discuss it at the headquarters (106 ख and ग). When Mr. Richardson insisted that Sheikh Badal be surrendered, Dariyao Singh replied that having made a full investigation into the case he had come to the conclusion that not only Sheikh Badal was not guilty, but it was he who was the aggrieved party in so far as payment of his salary had been withheld (107 क and ख). In the end the Chaubey informed Mr Richardson that the boy had been recovered from Sheikh Badal and sent back to Rewah (113).

Dariyao Singh wrote to Mr. Richardson that the posting of newswriter in the fort on behalf of the Government was a breach of assurance which Captain Baillie had given to him. And when it was pointed out to him that he was exchanging letters with the bandit Gopal Singh, he explained his position by saying that the latter had plundered one of his villages named Jamunihai, and he had gone there to repulse him.

Thus the strain in relations between two parties continued till 1812 when on February 4, Chaubey submitted another memorandum (115 क), and *Wajib-ul-Arz* dated July 4, 1812 (pp. 298–303, Vol. V). When he was asked to surrender the fort Belrai at once (115 क), he replied, when other chiefs were enjoying *nankar* and were holding forts why an exception was being made in his case? He wrote another letter to Mr. John Richardson ridiculing the British authorities for deviating from their solemn promises. But protests and entreaties proved unavailing, and Dariyao Singh was compelled to sign another *Iqrarnamah* dated June 6, 1812 (pp. 306–9; Vol. V) and a new *Sanad* was granted to him on July 4, 1812 (pp 309-10, Vol. V).

Similar agreements were executed and corresponding *Sanads* were granted to the other members of the Chaubey family, viz, Chaubey Saligram (118), Chaubey Phukar Prasad (119), Chaubey

Chhatrasal (120), Chaubey Gaya Prasad (122) and Chaubey Nawal Kishore (123). Nor were the claims of the Vakil Gopal Lal ignored. His case was dealt with at the same time (121).

It appears that Chaubey Chhatrasal suffered in the new set up. He was suspected of having shielded Sheikh Badal Pindari. To explain his position he wrote to Mr. John Richardson that Badal had joined the service of Dalganjan Singh without his knowledge and information, and that when the Agent himself had decided that the Mahajan's son should be restored and given an assurance that the Sheikh's salary would be duly paid, there was no point in finding fault with any one's conduct.

Further, he complained of the slovenly treatment meted out to him. He was the first chief of Bundelkhand to have joined the British who, pleased with his submission, had handed over to him the keys of the fortress of Kalinjar, and the possession of the parganahs of Jaipur had been guaranteed to him in perpetuity. Further, it had been stipulated in the agreement that his rank and dignity would be respected, and that the conditions agreed to would never be altered; but the plighted words had been cast to winds. He was being harassed for no fault of his and in consequence thereof his subjects were being ruined and his villages devastated (111).

In another letter to Mr. John Richardson (114) Chhatrasal informs him that he had conveyed the message to the Qiladar Dariyao Singh who was absent from the fort, having gone away to attend some marriage celebrations. Subsequently, four *sawars* and two *harkaras* were despatched to him but to no purpose. He said that he was getting anxious about the *Qiledar* and requested the Agent to send him information about him if he had received any. He pathetically concluded the letter by expressing his disappointment at his inability to satisfy Mr. Richardson with the justice of his claims in support of which he was prepared to forward the *Parwanahs* and *Sanads* which he had received from time to time (114).

III

Besides the documents cited above, the collection includes a number of others, of miscellaneous character. No. 3 is a sort of summons inviting the members of a panchayat. No. 4 consists of summons for the attendance of Raja Ram and Mohib Ali, and the depositions of Atma Ram and Hanuman Datt, peons of Birbhum Collectorate, who had been directed to serve the summons. No. 5 describes the case of one Radhia who had deserted Mohan on grounds of ill-treatment, whereupon the latter lodged a com-

plaint in the local court involving Darogha Ram Lochan in the affair. And in this connection the statements of several witnesses were recorded. Nos. 53 and 54 are inscribed with the seal of Adalat Faujdari, Gaorakhpur; 105 bears the seal of Birbar Singh, being an agreement between the latter and the Sarkar of Jaunpur for repayment of Rs. 6,500/- in regular instalments. No. 41 is a letter from Bakhtawar Singh to Maharaja Jaswant Rao Holkar expressing his readiness to face the Firangis. 129 is the public proclamation forbidding the sale and purchase of slaves in the British territory (dated 2. 9. 1812).

No. 55 records the statement of Ram Rup Chaubey of Katra, Allahabad, dated November 13, 1805 He was questioned about the antecedents of Wazir Ali who had raided Allahabad with a view to establishing his authority there. According to the version of Ram Rup, Wazir Ali originally belonged to Rewah where he had become friendly with the grandson of Bhawani Das, a trusted servant of the Maharajah, from whom he secured a loan of Rs. 900/- telling him that he was the Wazir of the Nawab of Oudh and that when he had recovered his position, he would return the amount to him. With this money he recruited 60 horses and 300 foot, and appointed Ghulam Mukhdum as their Risaldar. With this following he moved from place to place till he arrived at Allahabad, levied contributions from all and sundry, raising about 106 rupees. Here he was overtaken by the British troops which inflicted a crushing defeat on him (55).

Of arresting interest are the letters referring to Nepal and their purport can only be understood in the context of historical developments both in India and in Nepal. In the second part of the 18th century both the countries witnessed political revolution. Whereas in India the British power began to expand, in Nepal the Newar dynasty was being gradually uprooted by the Gorkhas. These changes were bound to reflect upon Indo-Nepalese relations, the dividing line between the countries being very indefinite and indeterminable.

The territories of Makwanpur were a bone of contention between the Raja of Betiah, the British, his supporters, and the Raja of Nepal. Raja Manik Sen of Makwanpur wrote to request Raja Dhruva Singh of Betiah to direct his officers, Ganga Ram Ojha, the Thanedar of Alau, and Bhuli Rawat, the Thanedar of Chautra Kotwali Gadh Simraon, to refrain from aggression on the villages of the other side of the frontier (138 ग). Manik Sen wrote separate letters to the same effect to Bhuli Rawat (138 क) and Ganga Ram Ojha (138 ख).

In 1763 Raja Dhuruva Singh was succeeded by Raja Jugal Kishore Singh who was given the paraganahs of Majhwan and Sumraon. He defied the British Government, was dispossessed of his lands and driven into wilderness. Soon, however, he was recalled in the interests of the effectiveness of administration. In 1791, he was succeeded by Vir Kishore Singh who played a very active part in the Anglo-Nepalese dispute which finally led to the first Nepalese war.

Warren Hastings had decided that Rautihat and Pachrauta belonged to Makwanpur, and as such fell within the jurisdiction of Nepal, but the 22 villages occupied by Major Kinlock and dependencies of Makwanpur were not restored to the Raja. At the time of the Permanent Settlement, these villages, forming a part of tappa Nanaur were handed over to the Raja of Betiah in whose possesssion they continued till 1810, the year in which the dispute about them reopened, and with acrimony on either side.

Between 1804 and 1811 relations between the British Government and the Kathmandu Darbar became increasingly strained, and in 1811 Lakshmangir, the Gorkha Governor of Rautihat, crossed the frontier with a party of armed men, seized Kewaye, one of the 22 villages in dispute, and plundered and made collections in eight others. It is to these incidents that the letters Nos. 138 घ and 138 ङ refer. They are expressive of the insolent and aggressive tone of the Nepalese officer. But he was not destined to achieve his objective. He was resisted by the Raja of Betiah's men and he was killed in one of the encounters.

The British Government ordered the Assistant to the Magistrate of Saran to proceed to the frontier to make an enquiry on the spot and settle all outstanding disputes. But before he could arrive there, the Nepali reinforcements had seized the 22 villages. New Commissioners were appointed by both the Governments to make thorough investigations with a veiw to coming to a settlement. This was done; but it was found at the end that the British claims were irrefutable. The Nepalese Commissioners evaded implementation of the findings, and left the place on the pretext of having been insulted by their British counterpart (134).

Thus the conditions for war became ripe, and it was declared with disastrous results to the Nepalese. Letter No. 139 unnamed and undated, perhaps, refers to the ways and means which might bring success to the British in the adventure which they had undertaken. It points out that it would be neçessary to pursuade the people and other men of position in Nepal to break away from the Darbar and join the British, and that four roads led into Nepal, but none of

them was negotiable by carts, only elephants, footmen and matchlockmen could pass through them. Letter No. 149 deals with a similar topic.

Department of History,
University of Allahabad,
September, 1959

B. P. SAXENA

SYNOPSES

1. Copy of a letter supposed to be a forgery from the Raja of Berar to Raghuji Bhonsle and forwarded by Mr. Leslie. The original was given to one Bishambher Pandit. The Raja claims his right over Sirguja and the neighbouring territories and extends a warning not to meddle in his affairs.

2. (क) An *arzee* from Raja Deonath Sah, zamindar of Nagpur, to the highest authority of the East India Company. He claims the balance of money spent over the English army and lodges a complaint against Bhoj Rai of Navagarh who, in collaboration with the rajas of Barwari, Sirguja and Jaspur, was plundering his territories. He seeks military help.

(ख) From Raja Deonath Sah, zamindar of Nagpur. He owes his allegiance to the East India Company. The Raja promises to pay the gross revenue due from him and mentions the political turmoil in and around Nagpur vis-a-vis Bhoj Rai of Navagarh (defeated) and the Rajas of Barwai, Sirguja and Jaspur.

3. Letter respecting the conduct of Abdullah in summoning the weavers to attend the Bihar Court.

4. (क) Proclamation issued by A. Seton, Judge of Bihar, on the 27th July, 1796. Under orders from Calcutta, Raja Ram and Muhib Ali, who were originally to appear before the Collector of Beerbhoom, were to appear now in the Court of the Bihar Judge.

(ख) Copy of the examination on oath of Atma Ram Chaprasi in the service of the Collector of Beerbhoom taken by A. Seton, Judge of Bihar, on 12th September, 1796. The chaprasi mentions the circumstances under which the summons could not be served on Raja Ram.

(ग) Copy of the examination on oath of Hanuman Datt Chaprasi in the service of the Collector of Beerbhoom taken by A. Seton, Judge of Bihar, on 12th September, 1796. The chaprasi mentions the circumstances under which the summons could not be served on Raja Ram and Muhib Ali, especially on the latter.

(घ) Deposition of Atma Ram chaprasi taken before A. Seton, Judge of Bihar, on 12 September, 1796. The subject is the same as above.

5. These are the proceedings held in the Court of Bihar on a complaint against Ram Lochan Dutt *darogah* of Raghunathpur.

One Mohan and his wife had beaten Radhia or Radha, a girl brought up by Mohan and his wife. She took shelter with one Noni, a low caste woman. Mohan wanted to take her back to his house. But Radha gave a flat refusal and instead wanted to lodge a complaint against him with the *darogah,* Ram Lochan Dutt. The *darogah,* instead of rendering justice, forcibly detained her in his own house The evidence contained in these proceedings is by Umed Ray, Sheikh Bangu, Kanhai, Giri Majhi, Manorath Bari, Radha, Kanchani and others and it shows that the *darogah* is not guilty.

6. *Arzee* from Raja Deonath Sah, zamindar of Nagpur. He mentions that his territory is lying waste under the depredations carried on by the Marathas. The territory was under the suzerainty of the English and the Raja relied on their protection. But his hopes were belied.

7. Letter from Raja Deonath Sah, zamindar of Nagpur, who represents that nothing had yet been done in order to check the depredations of the Marathas which now extended upto Nagpur itself. The Marathas were gathering forces in Sirguja, with the help of the Raja of Sirguja. The Raja prays that the commander of the English forces be asked to take measures to counter this growing menace.

8. Letter from Raja Deonath Sah, zamindar of Nagpur. It informs us that several *parganas* of Nagpur have been plundered, men and women killed in hundreds and several villages set on fire He depends entirely on the protection of the English. If these chaotic conditions continued to prevail in his territory, how could he pay his revenue.

9. Ankuji Bhonsle writes to Balbhadra Sah, zamindar of Sirguja On receiving information about his depredatory moves through the English agent, Ankuji Bhonsle, who is on friendly terms with the English, disapproves of his actions and asks him to restore the property to the aggrieved party.

10. Letter from Raja Ajit Singh to the Governor. The Raja seeks military help from the English.

11. Letter from Raja Ajit Singh to the Governor regarding the same.

12. Letter from the English to the zamindar of Sirguja, Raja Balbhadra Sah. They remind him of the treaty between themselves and Raghuji Bhonsle and in the light of that treaty remind him of his acts of loot, plunder and murder in and around the territory of Nagpur. The Governor-General orders him to withdraw his forces from the disturbed territory, to make Bhukhan Singh, Horil Singh and

others to surrender to the English, never to carry on acts of depredation in the territory of the English and to pay adequate compensation for such acts of his men, to set free the captives, to restore things looted by his men to the respective owners and to send to the English all the necessary treaties and *Sanads*, etc. Further action was to be taken after these conditions were fulfilled, and, if necessary, even force was to be used against him.

13. The zamindar of Sirguja, Raja Balbhadra Sah, replies to the above letter of the English. He says that the charges brought against him were baseless and the whole case could be referred to a board of arbitration, consisting of one representative each of the English, Raja Bhonsle and of himself. The Raja claims his rights over the disputed territory and says that he is not guilty of looting English territories. He did not even help anybody against them. As regards the orders of the Governor-General referred to in the above letter, the Raja claims his right over the territory said to have been plundered by him and hence no question of compensation, or restoring things to the respective owners arose, and the rest of the questions could be referred to a board of arbitration. He says that he has not done anything against the English. With regard to some other matters, the Englsh were not justified in asking him to do certain things which they have demanded in their letter.

14. A proclamation issued on 9th April, 1802 in Udaipur regarding the affairs of Sirguja in a letter from Lt. Col. Jones, dated 14th April, 1802. It was issued under orders from the Governor-General and Raghuji Bhonsle. Even after repeated attempts Raja Balbhadra Sah did not appear before them and did not ask the wicked Pitambar Sah, Subedar and Sangram Singh to surrender. Even Raja Kalyan Singh, zamindar of *pargana* Udaipur, had indulged in hostile acts. This did not matter much. But they had also killed several men of the Lashkar, had blocked the road, and waylaid a messenger from Raghuji Bhonsle. These were treacherous acts against their chief. *pargana* Udaipur was also looted and burnt. The proclamation asks them to appear before the English and express regret.

15. (क) This letter from Col. Jones consists of eleven articles for the better administration of the territory of Sirguja and was sent to the Vakil of Raghuji Bhonsle. The articles are: not to give countenance to the aggressors, to protect and guarantee the territory against all sorts of enemies and look after the comforts of ryots, any claim on the territory of Sirguja would be heard in the court of the English, after the present heir-apparent, the rights were to be enjoyed by Lal Jagannath Singh, the officer-in-charge was to protect the *jāgīrs* in

his possession, a *karkun* was to look after the affairs of Sirguja so long as necessary, to arrange for the entry of Balbhadra Sah in Sirguja to hand him over to Lal Jagannath Singh, and during that period to preserve the soundness of administration. Balbhadra Sah was to be handed over to Lal Jagannath Singh according to the terms of agreement arrived at between the Governor-General and the Govt of Raghuji Bhonsle, the military expenditure incurred on the aforesaid account was to be realised from the depredators, measures were to be adopted to prevent the depredators from committing their acts, the Governor-General did not agree with the idea of giving collective punishment to the residents of the area, where depredations had been carried on; an oath of allegiance was to be taken, money was to be deposited and loot recovered from the depredators with the help of the *amalas* of the East India Company.

(ख) Sent with his letter by Lt. Col Jones. A true copy of the letter written by Lachhman Singh, Bhukhan Singh etc. to Balbhadra Sah expressing their allegiance to him.

(ग) Information regarding the execution of *kabulnama* from Lachman Singh etc. to Balbhadra Sah.

(घ) Letter from Lachhman Singh etc to the same regarding receipt of a letter from Balbhadra Sah, and the rest when they meet.

(ङ) Letter from Lachhman Singh etc. to the same. Informs Balbhadra Sah that the work as instructed by him has been done.

(च) Letter from Dhudharam etc. to Lachhman Singh etc. Information regarding receipt of a letter. Says that there is nothing to worry about.

(छ) Letter from Dhudharam etc. to Lachhman Singh etc. Informs them about *salam* and other minor things.

(ज) Letter from Lachman Singh etc. to Balbhadra Sah. Informs him about Dewan Vigu Singh.

(झ) Letter from Lachhman Singh etc. to Balbhadra Sah. Informs him about sending the army and about other minor matters.

16. (क) This is a confession and testimony of Bhookhan Singh sent by Lt. Col. Jones. He makes confessions about plunder in Palavu. About fifteen or sixteen months back a *harkara* arrested Lachhman Singh and was being taken to Chatara. He was freed by Bhookhan Singh, Sivraj Singh etc. Lachhman Singh with his family left for Sirguja. Bhookhan, Sivraj Singh, Horil Singh etc., on the other hand, began practising robbery under the impression that only in this way could they receive justice. On being cross-examined, Bhookhan Singh confesses having received plunder and having written some

letters. In all fifteen questions were put to him. It bears the signatures of the following witnesses:—Paltan Singh, Bhawani Bakas Singh and Lal Umrao Singh Dhadiate.

[Letters from ख नं० १ to ख नं० १५ were exchanged between Balbhadra Sah, Diwan Balinath, Bhookhan Singh, Pahalwan Singh, Sangram Singh, Dewan Deva Singh, Lal Umrao Singh, etc., about which references were made in Bhookhan Singh's confession and the testimony cited above. These letters were sent along with the above confession by Lt. Col. Jones. They contain statements about the conditions prevailing in Sirguja and the part played by the above mentioned zamindars in seding troops and *harkaras* conveying information about the arrival of *Firangi* troops, certain money matters and other minor things.]

17. Received along with a letter from Lt. Roughsedge, it is a *parwana* written to the seditious zamindars of Sirguja and several others, with the view of quelling the insurrection at that place. This *parwana* was written on 24th August, 1802 and was meant for Balinath Sah, Jagirdar of Lundra, Pitambar Sah of Bānjpur, Dev Singh and Manohar Singh of Khuthia, Harhar Sah of Ghoghara, Gajraj Singh of Kara, Avadhut Singh, Chamārī Rae, Maniār Singh of Rampur and Jagmohan Singh of Parahgava. It was issued on behalf of the Governor-General after the death of Col. Jones. It says that the zamindars after going back on their oath of fidelity to Lal Jagannath Singh according to the wishes of the Governor-General and Maharaj Raghuji Bhonsle, had broken the bonds of friendship and alliance and had given asylum to the wicked Sangram Singh in Sirguja. Col. Jones had treated them kindly. But even then they committed loot and plunder. So if they did not foresake their evil designs, both the governments, according to the conditions settled for the better administration of Sirguja, would be compelled to take drastic action against them and they would be destroyed.

18. *Parwana* or letter sent to Lal Jagannath Singh, dated 24th August, 1802. Lal Jagannath Singh has been asked to fulfil loyally the responsibilities bestowed upon him for the administration of Sirguja by the Governor-General and Mahārāj Raghuji Bhonsle. Letters were sent to that effect to the persons concerned. Lal Jagannath Singh was to take help from the *jagirdars* who were with him. He would get military help whenever he would require it. He gets assurance of getting every other sort of help which he had sought, or would seek in future.

19. Letter from Lal Jagannath Singh to Col. Jones dated 15th Sawan and received on 26th August, 1802. Informs Col. Jones that

Lal Sangram Singh and Lal Balbhadra Sah have entered Sirguja No zamindar is prepared to help Lal Jagannath Singh. They are afraid of Sangram Singh. There is complete blockade of Sirguja. No information or letter can be sent or received. Everybody is terror stricken. Col. Jones is his only help.

20. Letter from the English authorities to Lal Sangram Singh written on 26th August, 1802. They have extended a warning to Lal Sangram Singh about his committing all sorts of disorderly and predatory acts and revolting against Lal Jagannath Singh in Sirguja If he did not desist from pursuing his evil designs, he would be punished severely, as Sirguja was under the protection of both the British Government and the government of Maharaja Raghuji Bhonsle.

21. Copy of a circular letter written on 21th August, 1802 to Dewan Bijai Singh of Ramkola, Raja Umrao Singh zamindar of Jaspur, Lal Daljit Singh of Khodo, Lal Umrao Singh of Mahari, and others mentioned in the letter, and attached zamindars of Sirguja. It warns the zamindars against their nefarious activities and reminds them of the treaty between Maharaja Raghuji Bhonsle and Col Jones. It asks them to prevent their predatory intentions, to be loyal to Lal Jagannath Singh, and not to give any help or protection to Lal Sangram Singh.

22. Letter from Lal Jagannath Singh zamindar and *mukhtar* of Sirguja to Captain Russel. It is dated 3rd September, 1802. The writer is pained to learn that his representation has been sent to Calcutta and nothing has been done to help him. He informs the Captain that Lal Sangram Singh, along with Raja Balbhadra Sah and other zamindars do not execute his orders and have predatory intentions against him.

23. Letter from Lal Jagannath Singh, *mukhtar* of Sirguja to Captain Russel. He says that the *parwana* sent by the British Government has been accepted by four zamindars, viz., Harihar Sah, Bijai Singh, Kr. Daljit Singh and Umrao Singh. Kumar Singh and Lal Sangram Singh discussed the whole matter with him. They want to owe allegiance to the Marathas and not to the British. The Bhonsla Raja also sent an order to the same effect. This order put Lal Jagannath Singh in a fix. He then informs the British Government of the menacing attitude of Lal Sangram Singh and his associates. He expresses his ardent hope that the British Government would come to his help and this, too, on the evidence of Lala Din Dayal.

24. Letter from Lala Din Dayal, officer of the Raja of Berar dated 7th October, 1802 to Capt. Russel. Informs about the encroachments on the part of Sangram Singh.

25. Letter from Keshav Govind Subadar to Lal Jagannath Singh. He reminds him of the terms of agreement on behalf of Balbhadra Sah which involve some financial commitments. He also requests Jagannath Singh to co-operate with Lala Din Dayal in rendering service to the Sirkar.

26. A circular letter sent by the British Government to all the *jagirdars* of Sirguja asking them not to pay any revenue to Lal Sangram Singh. It tells them of the arrival of the British army also.

27. (क) Letter sent to the four *jagirdars* of Sirguja desiring them not to render assistance to Sangram Singh, but to Lal Jagannath Singh.

(ख) Letter dated the 5th January, 1803 from Kr. Daljit Singh *jagirdar* of Pāl to Lal Jagannath Singh. It states the arrival of the forces against the Maharaja and that the writer had no concern whatever with the circumstances.

(ग) Letter from Lal Unmao Singh *jagirdar* of Mohra in Sirguja to Lal Jagannath Singh, dated 9th January, 1803. It states that the *pargana* Haveli has been taken possession of through forty *sowars* and seeks his help.

28. (क) A circular letter addressed to the well disposed *jagirdars* in Sirguja on 25th January, 1803 by Major E. L. Broughton. It informs them about the arrival of the British forces for the better management of Sirguja and asks the *jagirdars* to stick to the terms of agreement and not to waver.

(ख) An *arzee* from Kr. Daljit Singh of Pāl in Sirguja to Major E. L. Broughton, dated 7th January, 1803. He informs him that the charges brought against him of sending men and revenue to Lal Sangram Singh are baseless. He owes allegiance to Lal Jagannath Singh and sticks to the terms of agreement.

(ग) An *arzee* from Sobha Singh Mukhtar of Mongerpur dated 15th January, 1803 to Lal Jagannath Singh. It is about the settlement of revenue to be paid.

(घ) An *arzee* from Kari Rai, zamindar of Arrah to Lal Jagannath Singh, dated 15th January, 1803. He informs him about the poor condition of Parsiā Mehto and about other financial implications.

(ङ) *Parwana* sent on 25th January, 1803 to Lal Sangram Singh by Major E. L. Broughton. He is informed of the arrival of British forces in Nagpur and is asked not to tyrannize over Bakhtawar Singh, a protégé of Lal Jagannath Singh. It would not be in the best interests of Lal Sangram Singh to continue to tyrannize him.

29. (क) Letter from Lal Jagannath Singh to Babu Sankar Sahi informing him that he owes allegiance to the Sirkar and would act according to the advice given to him by the Sirkar and Lala Din Dayal. He should take care of himself.

(ख) Letter from Lal Jagannath Singh to Major Broughton in which he informs him that nothing has been done for him and he is hardpressed for money. Further, Sankar Babu has sent two agents to him asking him to meet the Marathas. The letter and other necessary papers have been sent to Major Broughton. Lal Jagannath Singh informs him about some other allied matters.

(ग) From Babu Sankar Sahi to Lal Jagannath Singh. He asks Lal Jagannath Singh to be far-sighted to act according to his advice and to meet the Marathas. It is just the time for this.

30. (क) From Sankar Sahi to the British Captain received in camp at Garwah, March 10, 1803. He informs that he has reached the particular place, but is without any help. Also requests him to send Jagannath Singh as soon as possible.

(ख) From Sankar Sahi to the British Captain received in Camp at Garwah, March 10, 1803. Almost the same as above.

31. Letter from Dhundha Ram to Lt. Roughsedge in which he informs that with Lal Saheb (Lal Jagannath Singh) is also seeking his protection, as Lal Sangram Singh and Pitambar Sāhi are after his life.

32. (क) Letter from Raja Ankoji Bhonsle in which he informs that Babu Sankar Sahi, sent to look after the affairs of Sirguja, is no well-wisher of the government. The letter mentions Lal Jagannath Singh also.

(ख) Letter to Lal Jagannath Singh in which he is informed of a dacoity near Mahari, injuries inflicted on several persons and consequent consternation.

(ग) Letter from Keshav Govind received at the British Camp at Mudjia on 26th March, 1803. He refers to some correspondence and administration of Sirguja by Babu Sankar Sahi in consultation with Lal Jagannath Singh.

(च) Babu Sankar Sahi, Subedar of Sirguja, informs the British Captain about the state of affairs in Sirguja and his efforts in subduing Pitambar Singh. As there is no sincere man to help him he wants that Lal Jagannath Singh be sent as soon as possible.

(छ) Babu Sankar Sahi writes to Lal Jagannath Singh that he has written to the British Captain about him and he needs his help in subduing the enemies.

33. Letter from Lal Jagannath Singh to Major Broughton in which he informs him about an attack on Babu Sankar Sahi by Lal Sangram Singh and Pitambar Sahi and consequent loss in men and materials, and that several persons were wounded including Babu Sankar Sahi. He himself is very much perturbed and seeks help from the British Major whom he calls his master

34. Letter from Raja Balbhadra Sahi and Lal Sangram Singh of Sirguja to Lal Jagannath Singh received on July 11, 1803. They ask him not to dote on the past, be friends again with him and to administer the territories in the interest of the state and the people after holding consultations amongst themselves and some other zamindars.

35. Letter from Lal Jagannath Singh to Major Broughton received on July 10, 1803. After observing some formalities he repeats that he depends on his assistance and refers to the letters of subedar Keshav Govind and Lala Din Dayal.

36. Letter from Bhayya Harihar Sahi, Kr. Diwan Daljit Singh and Bijai Singh, Ali Sahi and Valinath Sahi, *jagirdars* in Sirguja to Lal Jagannath Singh, received on July 10, 1803. They write to him that they have now become united and are all one. They should administer the territory in the interest of the state and the people. Dharam Dass is acting as an emissary and shall have talks with the Sirkar.

37 Letter from Lal Jagannath Singh to Roughsedge received on July 11, 1803. He refers to the letters received from Balibhadra Sahi and Sangram Singh, which he has sent to the Captain for his perusal, and the letter of Lala Din Dayal. He says he will act according to instructions received from him.

38. Letter from Lala Din Dayal from the Maratha camp to Lal Jagannath Singh in which he tells him that the British authorities are favourably inclined towards him and that he should not be led away by letters from Lal Sangram Singh and Lal Pitambar Singh. Lal Jagannath Singh should keep in touch with him through correspondence and give some financial assistance to Mohan who

has proved of great help to him (Lala Din Dayal). He gives some information about military matters also.

39. Letter from Thakur Raghu Singh and Sardar Bakhtawar Singh of Sirjuga to Lal Jagannath Singh. They inform him about matters concerning Babu Sankar Sahi, and also that they have not received any letter from him. Does he not believe them?

40. Copy of a *hukumnama* given to Babu Kumar Singh, the Vakil, despatched to Ratanpur with the letter of Keshav Govind, with instructions to carry out orders faithfully and promptly. The *hukumnama* mentions that in the past a treaty of friendship existed between Ankuji Bhonsle and the British Government. But under Nana Saheb the conditions have changed. So Babu Kumar Singh is asked to study the situation thoroughly first without disclosing his identity, and, then, if necessary, openly, and report about the intentions of the Marathas. If they are found favourably inclined towards the British Government they are to be told that the treaty of friendship between them and the British Government will not be made public and the purpose behind stationing the British forces would be kept a guarded secret. When British rule was established they would be adequately awarded.

This *hukumnama* is followed by Keshav Govind's letter in which a reference is made about Babu Kumar Singh Vakil and the treaty of friendship between Ankuji Bhonsle and the British Government, and that the British forces were stationed only in order to protect the territory from the predatory intentions of the enemies and not to occupy the territory.

[The *hukumnama* abounds in diplomatic language and throws light on the diplomatic relations between the Marathas and the British Government.]

41. From Bakhtawar Singh in Laskar in Mewar to Maharaj Jaswant Rao Holkar. He is prepared to face the Firangis.

42. Letter from Keshav Govind, subedar of Ratanpur (Chhattisgarh) to Raja Jujhar Singh of Raegarh in Sambalpur, dated January 2, 1804. After referring to the formal correspondence he says that many zamindars have sided with the Firangis. Their condition is well-known to him. Under Maratha regime the lives of the people were secure. Only one has to pay some revenue to them. But the Firangis also will not forego that. Recently the Firangis have raised their heads and the Marathas are fully prepared to meet them. All those zamindars who care for self-respect will not raise the standard of revolt. The passage of

the Firangi's forces was to be blocked. If the recipient of the letter remained faithful, he would be amply rewarded.

43. Letter under the public seal of Keshav Govind, subedar of Chhattisgarh, sent in the name of Khande Rae Naik, late tahsildar of the District of Pabangarh, to Raja Pratap Rudra, zamindar of Khariad, one of the *parganas* of Patna, dated January 28, 1804. The Firangis are in Sambalpur. Anybody who plunders the Sarkar will be punished. Shri Raghuji Bhonsle has visited Nagpur. The Firangis have entered Hyderabad also. Tipu's son has also established his regime. But there was nothing to worry about so long as the regime of the Bhonsla Raja was there. He is quite strong.

44. Reply of Rani Ratan Kumari and Raja Jujhar Singh (Raegarh), Raja Vishwanath Singh (Sarangarh), Prithvi Singh (Sonepur) and some other principal zamindars of Sambalpur to Col. Broughton, dated March 26, 1804. They have accepted the rule of the Hon. Company without any coercion They have no other protection. Maratha rule never benefitted anybody. Their prestige is in danger under the Marathas. As regards the revenues of the land, they used to pay it to their Raja (feudal lord) and the Marathas used to take it from him. But when the territory came under the direct rule of the Marathas, they used to take it in an arbitrary manner and under force. They are prepared to pay the revenue to the Company. It should, however, be settled on the basis of the actual produce of the land. The Hon. Company is their master.

45. Letter under the public seal of Keshav Govind, Subedar of Chhattisgarh, in the name of Khande Rae to Raja Pratap Rudra of Khariad, dated Feb. 22, 1804. He writes about the movements of the Firangis and their entry in Ratanpur and allied matters He asks him to be loyal to the Bhonsla Raja and not to give any help to the Firangis.

46. (क) From Chaube Gajadhar to John Baillie written in 1804 from Kalinjar. He wants that his rights on the land be protected under the British as they were under the former rulers. He expresses confidence in the sense of justice of the British.

(ख) From Chaube Gajadhar to John Baillie in 1804. Expresses his loyalty to the British.

47. Reply of Raja Ram Chandra Deo, Pratap Rudra Deo (Khariad), Ajit Sahi (Phuljhar) and other principal zamindars of Patna to Major Broughton's *parwana* of March 26, 1804. They are fed up with Maratha rule and the tyrannies perpetrated by them

and have come under the protection of the British. They will never submit to Maratha rule. As regards the payment of revenue, *they* want it to be fixed on a just basis, as the whole territory lay desolate and the Marathas used to charge revenue arbitrarily and forcibly.

48. From Lt. Col. Broughton to Rani Ratan Kunwari and other principal zamindars of Sambalpur, dated March 26, 1804 He reminds them that they were promised concessions only on the condition that they would overthrow Maratha sovereignty and accept British authority They have fulfilled it. But the British Govern ment will be guided by the terms of agreement agreed to between the Hon. Company through General Wellesly, and Maharaj Raghuji Bhonsle and they have to pay their revenue in accordance with those terms. He asks them to be loyal.

49. *Iqrarnama* (agreement) concluded between Maharaj Vik-ramajit Bijai Bahadur (of Charkhari) on behalf of himself, and his heirs and successors (mentioned in Article 8 of the *Iqrarnama*, and Capt John Baillie on behalf of the Company at Banda, Aug. 17, 1804. Bundelkhand had been conquered by the British army in order to root out the rebels. The terms are not to give succour or protection to any person hostile to the British Government, to prevent his brothers or relations from rising against the British Government, not to give shelter to any British subject accused of crimes or to an absconder, to assist in arresting such persons and delivering them to the British Government, similarly in the case of thieves and dacoits, and to help in the restoration of stolen goods; not to meet the enemies of the British Government, not to have enmity towards those friendly to the British Government and to help the troops. Heirs and successors also renounce their claims and take pledge to observe the terms of the *Iqrarnama*

50. *Sanad* toto granted by the British Commander-in-Chief to Raja Vikramajit Bijai Bahadur of Charkhari in 1804. Schedule of *mahals* and villages ceded by the British Government to Raja Bijai Bahadur is attached with the *Sanad*. The Raja accepts British authority completely

51. *Iqrarnama* concluded between Raja Kesari Singh of Jaitpur (Bundelkhand) and William Augustus on behalf of the Hon. Company at Banda, dated July 4, 1805 It consists of eight articles. The terms are almost the same as in No. 49 above.

52. *Sanad* toto granted by the British Commander-in-Chief to Raja Kesari Singh of Jaitpur, dated July 4, 1805. Schedule of *mahals* and villages ceded by the British Government to the Raja

is attached to the *Sanad*. It marks complete occupation of the territory by the British.

53. The letter bears the seal of the court of Gorakhpur, dated 1805. It is written to Puran by Kaila Singh and was produced in the said court. He wants him to come with some men at once and bring a looking-glass, a pair of shoes, paper and ink etc.

54. Letter written in 1805 by Bhagat Vir Faujdar to Babu Kamala Kant and produced in the court of Gorakhpur He says that he has been appointed an *amala* to collect taxes etc. by the British Government and that the same be paid to him henceforward. The former *amalas* were not conversant with their work.

55. *Izhar* (evidence) of Ram Rup Chaube of Katra given in the court of W. T. Smith, magistrate in November, 1805. One Vazir Ali had collected men, money and material and had disturbed the peace of territories held by the Company and had even collected revenue, in Katra. Ram Rup Chaube says, in his evidence, that Vazir Ali had collected money in Rewa fraudulently from several persons and raised a small army Lila Singh, son of the then ruler of Rewa, Jai Singh Dev, tried to prevent him from crossing over to the Company's territories. But he did not succeed and Vazir Ali came over to the Company's territories through Bhatiari Ghat. With the help of Dund Bahadur, he encamped in Katra. Ram Rup Chaube then goes on to say how much revenue Vazir Ali collected from several persons. After that he says how the Company's Telangana soldiers forced Vazir Ali to flee to Vargadh. Vazir Ali had the ambition of even occupying Allahabad.

56. *Arzee* of Rani Ratan Kunwari of Sambalpur, dated June 13, 1806 and addressed to Capt. Russell. Requests that her husband and son be freed from Maratha imprisonment.

57. *Arzee* of Raja Indar Singh of Gangpur addressed to Rani Ratan Kunwari of Sambalpur delivering his consent to relinquish his Zamindari. The *arzee* is dated March 28, 1806. He says that if the Rani leaves Sambalpur, it is not possible for him to remain in Gangpur.

58. Letter from Kunj Behari Lal to Bhuj Singh containing only a few formal sentences.

59. *Parwana* to Raja Ram Chandra Deo of Patna, dated June 18, 1806. The Raja had been asked to reach Sonepur with his family. He had agreed to move but had not actually done so and had waited for the arrival of Raja Pratap Rudra of Khariad. This *parwana* asks Raja Ram Chandra Deo to reach Sonepur at once

without waiting for Raja Pratap Rudra. Rani Ratan Kunwari wanted him, as an elderly person, to reach Sonepur first.

60. *Parwana* to Rani Ratan Kunwari, dated June 29, 1806 Reference is made to the subject referred to in No. 59 above. If Raja Ram Chandra Deo insists that the Rani should move to Sone pur first, then she will have to make a move. The Rani had agreed to reach there first This *parwana* now asks her to act accordingly If she still has any objection, she should send her petition.

61. *Arzee* of Rani Ratan Kunwari of Sambalpur addressed to Captain Russell, dated July 1, 1806. The Rani acknowledges the receipt of the *parwana* (see above). As regards moving out of the fort on Savan 3, the *Munshi* had already conveyed the message to him. She will not delay her arrival on learning that the Rajas of Patna and Khariad had already reached there (Sonepur). She does not consider it proper to move out, so long as they do not reach first She has learnt about Prithvi Singh and the father and the son from Mr. Elphinston at Nagpur. She entirely depends on Captain Russell.

62 This is an *Iqrarnama* of Maharaj Ram Chandra Dev of Patna Navagarh, Raja Pratap Rudra Dev of Khariad, Raja Prithvi Sahi of Phuldpur (-jhar?), Raja Vishwanath Sahi of Sarangarh, Thakur Ajit Singh of Pargana Vargarh addressed to Captain Roughsedge. They, along with their heirs, are prepared to relinquish their rights in favour of the Hon. East India Company. But they want substitution of maintenance in keeping with their rank and splendour.

63. This is a Declaration made to Rani Ratan Kunwari of Sambalpur, Raja Ram Chandra Dev of Patna and others mentioned in the Declaration dated July 10, 1806 and despatched on July 16, 1806. (The rajas and zamindars had given their consent to relinquish their tenants). Under orders of the Governor-General they had promised to cede Sambalpur and Patna, which were in the possession of Raguji Bhonsle, to their owners on two conditions - (1) to submit themselves to the authority of Raghuji Bhonsle or to act as *zamins* and (2) to seek protection of the British for ever. They had agreed to these conditions and many other matters and everything had been reported to the Governor-General. The Governor-General had been pleased to allow them to remain in their territories upto a certain time-limit and then they were asked to move from their respective places. But the rajas and zamindars had not yet complied with the orders and their action was not considered legal. This Declaration threatens that they will again be put under the

authority of the Marathas and the British Government will not bother about their welfare and security. They should, therefore, try to obey orders before it is too late. They are also informed that if Janu Pant Vakil reaches there to take charge of Sambalpur and Patna on behalf of the Marathas their cases will not be heard at all.

64. *Arzee* of Raja Ram Chandra Dev of Patna received by the British Government on July 10, 1806. The Raja acknowledges the receipt of the *parwana* (see above). When other zamindars have not yet left their places, why is he asked to leave first. He is not willing to leave first. The British are his masters. They may enquire into the whole matter.

65. *Arzee*, addressed to Captain Russell, from Rani Ratan Kunwari of Sambalpur, dated July 18, 1806, received by the British Government on July 20, 1806. The Rani refers to the *parwana*. She does not want to forsake the protection of the British Government, and, hence, gets perturbed on the receipt of the letter. She promises to go anywhere on the return of her husband and her son, but expresses her inability to return the money.

66. Letter from Raja Ram Chandra Dev of Patna, dated the 20th and received by the British Government on 23rd July, 1806. He acknowledges the receipt of the *parwana*. He says that all the zamindars of Sambalpur had accepted the terms, but it is said that now they refuse to stick to them. His own Mukhtar will be meeting the Captain very soon.

67. *Iqrarnama* concluded between Chaube Kiledar Dariyao Singh of Kalinjar and the British agent in Bundelkhand, John Baillie, dated September 10, 1806. It consists of seven articles. He agrees not to have anything to do with the marauders, plunderers and other evil doers, to owe allegiance to the Hon. Company, not to allow any passage to the marauders and plunderers, to help the British army, not to claim authority over the mines other than those given to him, not to harbour absconders from British territory, to apprehend such persons and to deliver them up to the Government, not to give protection to thieves or robbers in any village, and to ask his relatives to obey the orders of the Government.

68. This is a *Sanad* granted to Dariyao Singh of Kalinjar by the Governor-General on behalf of the East India Company. The Company in return accepts complete allegiance from the Raja.

With the *Sanad* is attached a *Wajib-ul-Arz* or paper of request presented by the Raja, dated September, 1806. It contains seven

articles with requests and their answers. The Raja requests that the accusations should not be levelled against him without investigation into the matter from the time of his becoming a faithful and submissive servant of the Company, he be not held responsible for the acts of loot and plunder of his servants, that he should be treated according to his rank and splendour, that if any of his relations or tenants lodges any complaint against him it will not be heard, that so long as he remains submissive to the Government his past agreements be honoured, and finally Mirza Saheb and Raja Kishore Singh be treated according to his directions. The British Government accepted his requests, some them with certain reservations. The *Wajib-ul-Arz* was presented at Banda.

Again a *Sanad* and a *Wajib-ul-Arz* was granted to the Raja. The subject matter is almost the same as in the above. Only the answers of the Government are not there.

69. (क) *Arzee* of Raja Ram Chandra Dev of Patna, dated August 15, 1806. Patna was ceded to him and also a *khilat* bestowed on him last year. He had abandoned the patronage of the Bhonsla Raja and sought protection of the British Government. Now he is again asked to accept the authority of the Bhonsla Raja. As he is their faithful servant, he will be obliged to act according to their orders.

(ख) *Arzee* of Pratap Rudra Dev of Khariar, dated August 20, 1806. He also refers to the *parwana* (See above). He says that it is difficult for him to leave his birth place. His territory may be ceded to the Bhonsla Raja, but something must be done to save his prestige. He has collected money according to the *parwana*.

(ग) *Arzee* of Raja Parathi Sahi of Phuljhar, dated August 20, 1806. He also does not want his territory to be ceded to the Bhonsla Raja and seeks protection of the British Government and agrees to obey their orders in this respect.

(घ) *Arzee* of Raja Vishwanath Sahi of Sarangarh, dated August 25, 1806. The Raja recalls the past history and how their rights were conceded to by the British Government. The Raja and other zamindars were given full protection. They were, however, not fully conversant with British customs. They may be pardoned

(ङ) *Arzee* of Thakur Ajit Singh of Vargadh, dated August 25, 1806. He acknowledges receipt of the *parwana* and promises to obey.

(च) *Arzee* of Rani Ratan Kunwari of Sambalpur, dated September 6, 1806. She is willing to act according to the *parwana*

but wants that the British Government should recommend the release of her husband and son from the Maratha detention. She expects much from the Government.

(झ) *Arzee* of Rani Ratan Kunwari of Sambalpur, dated September 15, 1806, addressed to Captain Russel. She expresses her willingness to obey the orders of the Government, but her request remains the same as in (च).

(ञ) *Arzee* of Raja Jujhar Singh of Raegarh, dated August 30, 1806, addressed to Captain Roughsedge. He expresses his complete submission and allegiance to the British Government. He then refers to the Sambalpur affair and expresses his dependence on the Government.

(त) *Parwana* dated September 2, 1806, sent by Captain Roughsedge to Raja Jujhar Singh of Raegarh. It informs him that the territories of Patna and Sambalpur are being ceded to the Marathas, but Raegarh will remain under the protection of the Company, and the Marathas will be informed of the same. The Raja shall have nothing to do with Sambalpur and will henceforward be a protégé of the British Government. The *parwana* asks him to pay the revenues regularly and neither enter the Maratha territories, nor pick up any quarrel with them and to inform the British Government if Maratha armed forces entered Raegarh. Padampur shall belong to Sambalpur. The Raja has to pay a revenue of rupees sixteen hundred in two instalments of rupees eight hundred each. Any latter written to him by the Marathas should be sent to the Government through the Mukhtar. The Mukhtar alone will reply to it. He is asked to observe the terms both in respect of the revenue and the territorial limits.

(ञ) *Arzee* of Raja Jujhar Singh of Raegarh, dated September 12, 1806, addressed to Captain Roughsedge. He feels obliged on receiving the above *parwana* (ञ), but he wants to remain a protégé of the ruler of Sambalpur. Any other course would be against the traditions observed so far. He welcomes the move of ceding Patna and Sambalpur to the Marathas. He refers to the Padampur affair also and says that the British are the lords of the land.

70. Letter of Himmat Bahadur Parasram Dube to John Baillie, British Agent in Bundelkhand. It was written from Varsada (Bundelkhand). He acknowledges receipt of a letter from the British Agent and confirms his loyalty to the Company. If there be any doubt about his loyalty, it may be removed.

71. It is Gulab Rao's original *dastak* dated Aswin *badi* 3, 1863 V.E. in which he informs the *chaudharies* and *qanungos* of Pargana Broach that he is surrendering his rights to the Firangi They should present themselves before the Government.

72. Letter from Rani Ratan Kunwari of Sambalpur, dated January 20, 1807 and addressed to Captain Russell. She acknowledges the receipt of a *parwana* from him. She denies the charge of having blocked the passage and closed the ghats for the Marathas She has acted according to letters written by Captain Russell to Elphinston (Nagpur) and by Keshav Govind (Ratanpur) to herself and had sent her own agent to both of them and to Raghuji, but had received no reply from them. In the meanwhile Babu Dev Rao Pandit came to Sarangarh from Ratanpur with Janu Raghunath and one thousand soldiers. The Rani thought that they wanted to intimidate her and in sheer self-defence she had to post a few soldiers at the ghat. The Captain was informed accordingly She had also sent her agents to talk over the matter with Janu Raghunath Pandit In the meantime the Marathas, with the help of Ajit Singh and Shiva Singh, had been carrying on depradations in her territories and wanted to take possession of her own place which was so dear to her. As regards the revenue she would observe the terms already settled.

73. *Iqrarnama* of Raja Kesari Singh concluded at Chhatarpur, dated August 1, 1807. He promises to be loyal to Raja Vikramajit Ju Dev and never to prove a traitor.

Declaration addressed to the zamindars, *chaudharies* and *qanungos* of *pargana* Khatola, that their *mahals* and villages have been restored to them. They should, however, not pay the *'amal* to anyone else.

Iqrarnama concluded by Raja Vikramajit Ju Dev at Maharajnagar. He promises to extend his protection to Raja Kesari Singh

The above are the proceedings of the Court of Captain John Baillie, Agent to the Governor-General in Bundelkhand and under the signatures of Maharaj Kumar Diwan Mansingh and Maharaj Kumar Diwan Arjun Singh claiming certain villages as belonging to Raja Vikramajit Ju Dev.

List of *mahals* and villages restored to Raja Vikramajit Ju Dev given here.

74. These are copies of the proceedings of the Court of the Agent to the Governor-General in Bundelkhand.

Sanad granted to Kunwar Girdhar Singh and his heirs by the government of Raja Hindupat, dated Katik *sudi* 13, 1832 VE.

Sanad granted to Kunwar Girdhar Singh and his heirs by the government of Raja Sirnet Singh, dated Marg. *badi* 10, 1841 VE.

Declaration regarding restoration of villages and *mafinama* made to Kunwar Girdhar Singh.

75. (क) *Sanad* granted to Diwan Khuman Singh by Raja Hindupat, dated Magh *sudi* 11, 1825 V.E.

(ख) *Sanad* granted to Kunwar Aparwal Singh by Raja Sirnet Singh Ju, dated Bhadon *sudi* 9, 1841 V.E.

(ग) *Sanad* granted to Diwan Chhatare Ju Dev by the government of Raja Sirnet Singh Ju, dated Katik *badi* 7, 1841 V.E

(घ) *Sanad* granted to Diwan Chhatare Ju Dev by the government of Raja Anuradh Singh Ju Dev, dated Asadh *badi*, 1834 V.E.

(ङ) *Sanad* granted to Kunwar Aparwal Singh by the government of Raja Anuradh Singh Ju Dev, dated Phagun *sudi* 7, 1833 V.E.

These *Sanads* were despatched by the Agent in Bundelkhand.

76. *Sanad* granted to Parasram of Khudee. Addressing the *mutasaddies, jagirdars, karories, chaudharies* and *qanungos*, present and future, of the *pargana* of Mataundh in Bundelkhand, it says that on hearing the fame of the justice and benevolence of the British Government, Parasaram has freely and sincerely professed his obedience and submission to the Government and having accompanied Raja Bakht Singh has asked forgiveness for his past offences, and has delivered and *Iqrarnama* or statement of allegiance comprising six articles under his own seal and signature. The Government grants to him villages, mentioned in the *Sanad*, as *jagir* to the said Parasram and the villages, shall remain in his possession in perpetuity if he remains firm in his allegiance to the British Government and true to the terms of *Iqrarnama*.

It is incumbent on Parasram to keep the inhabitants of his *jagir* connected and grateful, to promote their comfort and preserve their affections and to give no asylum to thieves or robbers in any of his villages. It is the duty of the peasantry and inhabitants to consider Parasram as paramount *jagirdar*, and to acknowledge his right to all the duties and immunities pertaining thereto, to offer no opposition or disobdience to him. After obtaining the sanction of the Governor-General this *Sanad* shall be considered as valid.

Iqrarnama or statement of allegiance presented by Parasram He declares and acknowledges the submission of his person to the British Government. The *Iqrarnama* dated October 7, 1807. It consists of six articles. Parasram freely and sincerely professes his obedience and submission to the British Government and, as ample maintenance has been conferred upon him, he engages never to deviate and never to commit any act which shall in any degree violate the terms of the Articles. He agrees to reside with his family in one of the villages of the *jagir*, to have no connection with marauders, plunderers, robbers or other evil-doers, within or without the province of Bundelkhand, especially with Raja Ram, not to allow such persons to reside in his territory, not to have any dispute with any of the dependants of the British Government, not to give protection to absconders, rather to help the Government in apprehending such absconders, to make the zamindar of the village in which property of any inhabitant has been stolen or plundered responsible either for the restitution of the stolen property or for the seizure and delivery of the thief or robber to the officers of the British Government, to collect the revenues of the zamindars in conformity with their existing their eristing *pattas* and *kabuliyats*

77. *Iqrarnama* of Lachhman Singh Laugra, dated September 19, 1807. It consists of six Articles which comprise terms almost the same as in the *Iqrarnama* of Parasram (see No. 76).

78. *Sanad* granted to Lachhman Singh, dated September 19, 1807. The text is almost the same as of the *Sanad* granted to Parasram (See No. 76).

It is a *Wajib-ul-Arz* of Lachhman Singh Laugra, dated September, 19, 1807. It consists of only answers to the requests of Lachhman Singh. He may seek dependence of a friend of the British Government only with the permission of the Government and he has to abstain from all intercourse and connection with the enemies and rebels of the British Government. His co-operation in the event of hostilities between two dependents of the British Government must be guided by the instructions of the officers of the British Government. No civil or criminal suit against him prior to the date of Lachhman Singh's acknowledgement of alligiance will be taken notice of. He shall be subject to the jurisdiction of the Court. As no claims originating before the date of his *Iqrarnama* will be heard against him, it would be improper on the same principle to admit any of his old standing claims against any other person

79. *Iqrarnama* concluded between John Richardson and Sawai Rao Barjor Singh dated January 5, 1808, in which the latter, having

been arrested on the suspicion that he had sided with Bahadur Singh Parihar, but later on found innocent and released, pledges never to take sides with Bahadur Singh Parihar, Gopal Singh Bundela of Paderi and other marauders and insincere persons.

80. Maharaj Kumar Dewan Gopal Singh had been granted ample provision by the British Government through Mr. Richardson. But very soon he had deviated and committed acts in violation of the terms of agreement. He is, therefore, no longer to be believed. But even now if he asks for forgiveness and admits his past offences, the Government will consider his case favourably and his position will not be disturbed. If he puts up his prayer for forgiveness his life and property will be safe.

Maharaj Kumar Dewan Gopal Singh is expected to write to this effect.

81. *Arzee* from Maharaja Gobind Nath Sah of Chhota Nagpur to the Judge and Magistrate of Ramgarh. He acknowledges receipt of the *parwana* dated March, 1808 and informs regarding the despatch of reinforcements to Captain Roughsedge. Pargana Sonepur was in the possession of his uncle Kunwar Harnath Sah. It was due to Chain Singh of Manja Sundari of the same 'pargana' that Dakhin Sahi had absconded on receipt of information. He had posted his men at every Ghat and had got him arrested. Mukund Din was also arrested. It happened long ago. He had been loyal to the Hon. Company and hoped that it would continue to give its protection and kindness to him.

82. Maharaj Kumar Lal Shiva Rao Singh Ju Dev writes to Diwan Saiyad Nasar Ali from Nagaudh (Nagod?). He seeks help from him after the loot of Katra in Nagaudh.

83. (क) Faujdar Himmat Bahadur Lachhman Singh to John Richardson. Possession of the fortress is claimed according to the award of Baillie. More may be known from Lala Rakhan and Parasar Lala.

(ख) Chaube Dariyao Singh writes to John Richardson from Kalinjar, dated Magh *sudi* 1, 1865 V.E. He says that it is not possible for him to enter into alliance with Lachhman. He is sincere in professing his submission and attachment to the British Government. Cognizance of the loot by Lachhman in his (Chaube Dariyao Singh's) *ilaqa* may be taken by the Government itself His men are not in the service of Lachhman.

84. Faujadar Himmat Bahadur Lachhman Singh writes to John Richardson from Ajaigarh. He acknowledges receipt of the message

through Lala Rakhan and refers to the award of Baillie for the possession of the fortress. He has no other place to live in except the fortress. It is the very breath of his life. He is prepared to be loyal to the British Government.

85. *Wajib-ul-Arz* of Lachhman Singh, dated February 8, 1809 He requests that any complaint or suit against him by persons engaged in his service in the fortress may not be heard or admitted, any complaint regarding indebtedness or loot prior to this date may not be admitted, property in the fortress may continue to belong to him, and that he may be treated according to his rank and splendour. The British Government accepts his requests except that all property other than the ammunition etc. will belong to him

Parwana sent by John Richardson to Faujdar Himmat Bahadur Lachhman Singh, dated February 13, 1809. It had been learnt from the letter written to Dewan Nasser Ali through Lala Rakhan that Lachhman Singh wanted to stick to his fortress. He is asked to get out of the fortress and allow the British military post to be posted there. He would be amply rewarded by the Government

86. (क) Letter written to Nasser Ali by Lala Rakhan, dated phagun *badi* 14, 1865 V.E. He informs him about his leaving the fortress.

(ख) Letter written to Lala Rakhan by Nasser Ali, dated Phagun *badi* 14, 1865 V.E. He says that if Lachhman Singh sincerely wants to leave the fortress, he should do so by the afternoon of the aforesaid date.

87. *Iqrarnama* concluded between Lal Shivraj Singh and John Richardson, dated March 11, 1809. It consists of 9 articles. Having sincerely professed his obedience and submission to the British Government, and in consideration of the ample maintenance conferred upon him by the Government, he engages never to deviate and never to commit any act which shall in any degree violate the terms of the said articles. He engages to have no connection with internal or external rebels and marauders and enemies of the British Government, to abide by the decisions and judgment of the Government, to administer the territories in such a way as not to allow shelter to marauders, robbers and other evil-doers and to hand over such persons to the British Government, to co-operate with and help the British forces, to deliver an absconder to the Government and to obey the orders of the Civil and Criminal Courts in all cases, not to harbour thieves or robbers in any of the villages of his *jagir* and to make the zamindar of the village, where loot or

plunder has taken place, either restore the stolen property or deliver the thief or robber to the officers of the British Government, to abide by the judgment of the Government in the case of any such village or villages which do not belong to him, not to give shelter to Gopal Singh Bundela and Bahadur Singh Padhir and to keep the Government informed about their movements, not to claim any village after the *Sanad* has been granted to him, to appoint a vakil on his behalf in the court of the Government and to replace him if he proves undesirable.

88. *Sanad* granted to Lal Shivraj Singh. It is made known to the *chaudharies*, *qanungos*, *zamindars* and *mukadmans* of *taluqa* Uchahara and Nagodh, *pargana* Barmai in the province of Bundelkhand that Lal Shivaraj Singh has sincerely professed his obedience and submission to the Government and has delivered an *Iqrarnama* comprising nine articles; therefore, this *Sanad* has been granted to him and so long as he continues firm in his obedience to the Government and true to the terms of his *Iqrarnama*, the village mentioned in the *Sanad* shall remain in his possession in perpetuity. They should obey his orders. It is incumbent on Lal Shivaraj Singh to keep the inhabitants of his jagir contented and grateful by his good government.

After obtaining the sanction of the Rt. Hon. the Governor-General this *Sanad* shall be considered as valid.

A schedule of *mahals* and villages is attached to this *Sanad*.

89. *Arzee* from Chaube Dariyao Singh Ju addressed to John Richardson, Agent to the Governor-General in Bundelkhand, dated Magh *sudi* 9, 1865 V.E. He claims Jaipur Barahe and Dharampur in his *jagir*, which he wants to be included in the *Sanad*. He is loyal to the Government.

90. Evidence of one Ganesh, servant of Chaudhary Qanungo of Jalalpur and of Ananuram, Qanungo of Kharka regarding Umri, Chili, Dadari held in possession or otherwise by Dewan Jugal Prasad. They say that Umri is in his possession and Chili has been confiscated by the Government. It was confiscated during the regime of Mr. Baillie (in 1860 V.E.). They also give some other information.

Copies of the order and *Sanad* granted by the Government of Ali Bahadur to Jugal Prasad.

91. (क) *Arzee* from Maharaj Kumar Sone Sahi Ju Dev addressed to John Richardson from Rajnagar. He claims possession over

Kharoi, Rakhura, Satai etc. and refers to the authority of John Baillie. He also refers to the Bijawar affair.

(ख) *Arzee* from Maharaj Kumar Sone Sahi Ju addressed to John Richardson from Rajnagar. He was asked to pay rupees five thousand-two-hundred-nineteen annas twelve and nine pies. But he first wants to settle his Bijawar affair.

(ग) *Arzee* from Maharaj Kumar Sone Sahi Ju addressed to John Richardson from Rajnagar. Dharampur had been in his possession since the regime of Nawab Ali Bahadur and he wants to settle the Dharampur affair on the lines of the Bijawar affair

(घ) *Arzee* from Maharaj Kumar Sone Sahi Ju addressed to John Richardson from Rajnagar. He claims possession over Bajna and refutes the claim of Bijawar and refers to the late Gandhrap Singh.

(ङ) Maharaj Kumar Achal Singh acknowledges grant of *jagir* by Maharaj Kumar Sawai Diwan Bir Singh Ju Dev and professes his allegiance to him.

(च) Maharaj Kumar Niraud Singh Ju Dev, Maharaj Kumar Nirpat Singh Ju Dev and others (mentioned here) profess their allegiance to Maharajadhiraj Sawai Kesari Singh Ju Dev.

(छ) *Iqrarnama* executed by Raja Gandhrap Singh Ju Dev in favour of Maharaj Kumar Sawai Diwan Kesari Singh Ju Dev, dated Aswin *badi* 13, 1854. He professes allegiance to Diwan Ksari Singh in return for the grant of Bajna etc to him.

(ज) Diwan Sawath Singh Ju Dev writes to Diwan Baba Ju Sahib, dated Sawan *sudi* 9, 1846 V.E. and informs that he will not be able to pay the revenues for two years for Kharoi and other villages.

92. *Sanad* granted to Lal Aman Singh, dated July 18, 1809. Lal Aman Singh had executed his *Iqrarnama*, comprising nine articles, in favour of the British Government, and, in return, he was granted this *Sanad*.

To the *chaudharies, qanungos, zamindars* and *mukadmans* of Suhawal, Raigaon, Durjanpur and Birsinghpur in the province of Bundelkhand, be it known that as Lal Aman Singh has sincerely professed obedience and submission to the Government, this *Sanad* is granted to him. So long as he continues firm in his obedience to the Government and true to the terms of his *Iqrarnama*, the *Sanad* shall remain in his possession in perpetuity. Lal Aman Singh

should do his utmost to promote the well-being of the inhabitants and Zamindars of his jagir and should be loyal to the Government.

After obtaining the *sanction* of the Rt. Hon. the Governor-General this *Sanad* shall be considered as valid.

A schedule of *mahals* and villages is attached to the *Sanad*.

93. Diwan Jugal Prasad declares and acknowledges that he has submitted in person to the British Government and with a view to confirming his obedience and submission he presents this *Iqrarnama*, dated August 23, 1809, comprising four articles, under his personal seal and signature. He engages never to deviate from the terms of *Iqrarnama* and never to commit any act which shall in any degree violate the terms of the said articles, to have no connection with any marauders, plunderers and other evil-doers and not to harbour any such persons in his villages, to give every information regarding them to the officers of the British Government and not to enter into any dispute with any Government servant, to remain passive in disputes between the Government and any one of his dependants, to seize an absconder and to deliver him to the British Government, not to harbour thieves or robbers in any of the villages of his jagir, and if the property of any of the inhabitants or travellers be stolen or plundered in any of the villages, he engages to make the Zamindar of such village responsible either for the restoration of stolen property or for the seizure of the thief or robber and his delivery to the British Government. If any murderer takes refuge in his *jagir*, he engages to apprehend such person and deliver him to the Government.

94. *Sanad* granted to Diwan Jugal Prasad, dated August 23, 1809. Maujas Umri, Chili, Badhur, Bujarak with Gatha and Mauja Barethi have been granted to him in perpetuity. It is incumbent on him to direct his utmost exertions to promoting the comfort and happiness of the inhabitants of his jagir and to be loyal to the Government.

95. Lal Aman Singh (See No. 92) declares that he has submitted in person to the British Government and with a view to confirming his obedience and submission, he presents his *Iqrarnama*, dated July 16, 1809, comprising nine articles.

[The terms of this *Iqrarnama* are almost the same as in the *Iqrarnamas* of nine articles mentioned above—Nos. 92, 93].

96. *Iqrarnama* concluded between Lal Aman Singh and the British Government, dated July 16, 1809 and comprising nine articles. [The same as No. 95.]

97. Letter written by Kunwar Sone Sahi Ju to John Richardson from Rajnagar and dated Kuar *badi* 3, 1866 V.E. Daulat Rao Scindia had informed the British Government that Kunwar Sone Sahi Ju had corresponded with Amir Khan. He refutes the charge and claims an enquiry into the matter. He confirms his obedience and submission to the British Government.

98. In a letter to the Governor-General dated Chait *badi* 7, 1867 V.E., Govind Nath Sahi, Raja of Chhota Nagpur, returns thanks for the *khilat* confirmed on him by the British Government through Captain Roughsedge.

99. Diwan Bahadur Gopal Singh Ju Dev writes to Rao Ajodhya Prasad on Asadh *sudi* 10, 1867 V.E. His *jagir* was confiscated three years back. He had not done anything against the British Government But still his jagir has not been restored to him. What should he write to the Government? He seeks Rao Ajodhya Prasad's help in the matter.

100. *Arzee* of Diwan Bahadur Gopal Singh Ju Dev addressed to the British Agent in Bundelkhand, dated Bhadon *badi* 8, 1867 V.E. He requests the restoration of his *jagir* confiscated three years back Either the *jagir* should be restored to him or he should be asked to leave his place. But where will he go? There is no body in the Jambu Dwip who will give protection to him.

101. *Arzee* of Diwan Gopal Singh Ju Dev addressed to John Richardson from Niwar and dated Bhadon *sudi* 6, 1867 V.E. The Government had asked him to present himself and he will be allowed maintenance allowance of rupees four or five hundred per month. He says that if everything is to his liking, he will gladly serve the Government. The amount of rupees four or five hundred per month demanded as maintenance allowance is not much. The Government had threatened him that if he did not comply, strict measures would be taken against him after the rainy season. He says that he is not worth it. No other person had been asked to leave Bundelkhand except himself. Where he is to go? He had already sent his prayer through Rao Ajodhya Prasad.

101. (अ) *Iqrarnama* concluded between Lal Duniyapat and John Richardson, dated August 16, 1810. He declares and acknowledges that he has submitted in person to the British Government and with a view to confirming his obedience and submission, he presents his *Iqrarnama* comprising nine articles.

[Terms of the articles almost the same as in other *Iqrarnamas* of nine articles mentioned before.]

102. *Sanad* granted to Thakur Prayag Das, younger son of Thakur Durjan Singh. After the death of Thakur Durjan Singh, his *jagir* was divided between his two sons—Thakur Bisun Singh, his elder son, and, Thakur Prayag Das, his younger son. As Thakur Prayag Das had declared in his *Iqrarnama*, comprising five articles, his loyalty and obedience to the Government, he was granted this *Sanad*. So long as he did not violate the terms of the said articles, this *Sanad* would remain in his possession in perpetuity. He should try to promote the comfort of the inhabitants of his *jagir*.

A schedule of *mahals* and villages is attached to the *Sanad*.

103. Thakur Prayag Das, younger son of Thakur Durjan Singh, had executed an *Iqrarnama* comprising five articles and he was granted a *Sanad* by the British Government (see No. 102 above). Now as the *Sanads* were renewed under the seal and signatures of the Governor-General, Thakur Prayag Das executed another *Iqrarnama* of nine articles and obtained this renewed *Sanad* under the seal and signatures of the Governor-General. He would never deviate and never commit any act which would in any degree violate the terms of the articles and this *Sanad* would remain in his possession in perpetuity.

A schedule of the *mahals* and villages is attached to the *Sanad*.

104. *Sanad* granted to Thakur Bisun Singh, elder son of Thakur Durjan Singh. Thakur Bisun Singh had executed an *Iqrarnama* comprising five articles, professing his obedience and loyalty to the British Government. (Text almost the same as in No. 102.)

A schedule of *mahals* and villages is attached to the *Sanad*.

105. *Kaulnama* executed between the Govt. of Javanpur in the province of Allahabad and Bariār Singh of Newada. The loan of rupees sixty-five thousand and one was to be paid in instalments every year.

106. (क) Chaube Dariyao Singh of Kalinjar writes to the Agent to the Governor-General in Bundelkhand, dated Jaith *badi* 3, 1868 V.E. He acknowledges the letter regarding the son of Sivadas Mahajan of Rewa and his abduction by Sheikh Badal. The Chaube says that Sheikh Badal did not get remuneration for his services from the Raja of Rewa and hence he held Sivadas Mahajan's son in ransom. Now he had received a letter from the Raja of Rewa that Sheikh Badal should come and take his remuneration and release Sivadas Mahajan's son. The matter in going to be settled.

(ख) Chaube Dariyao Singh of Kalinjar writes to the British Agent in Bundelkhand, dated Jaith *badi* 9. 1868 V.E. He professes his loyalty and obedience to the Government and sends Munshi Gopal Singh to convey his message about Sivadas Mahajan's son.

(ग) Chaube Dariyao Singh of Kalinjar writes to the British Agent in Bundelkhand, dated Jaith *badi* 12. 1868 V.E. Bharath Sahi had sent Munshi Gopal Singh in connection with Sivadas Mahajan's son.

107. (क) Chaube Dariyao Singh of Kalinjar write to John Richardson, Agent to the Governor-General in Bundelkhand. After full enquiry into the matter he is sending Sivadas Mahajan's son to the Government. Sheikh Badal should now get his pay. Further he professes his loyalty to the Government. This matter was not included in the articles of the *Iqrarnama* executed by him. But he has done it.

(ख) Chaube Dariyao Singh of Kalinjar writes to John Richardson, Agent to the Governor-General in Bundelkhand, dated Asadh *badi* 4, 1868 V.E. He refers to the Government letter that Sheikh Badal need not be sent to them. But the Government had promised that they would ask the Raja of Rewa to give his pay When Sivadas Mahajan's son had been sent to them, it was but proper for them to help the Sheikh to get his pay.

108. (क) Diwan Gopal Singh acknowledges the receipt of the Government message and promises to do as the Government had asked him to do, if his request is granted. It is dated Asadh *sudi* 11, 1868 V. E.

(ख) Diwan Gopal Singh writes to the British officer in Bundelkhand on Savan *badi* 9, 1868 V E. As desired by the Government he would present himself there. But he wants to go there according to the splendour of his rank. Enquiries may be made from the *jagirdars* of Charkhari, Kalinjar and Uchahara and even from Mr. Baillie. He may be granted maintenance allowance according to his rank and splendour. The British are the lords of Jambu Dwip

109. (क) Chaube Dariyao Singh of Kalinjar writes to John Richardson, Agent to the Governor-General in Bundelkhand on Asadh *sudi* 6, 1868 V.E. He informs him that there is no Sheikh Dost Ali Akhbarnavis in his territory and that he is subject to the jurisdiction of the court. It had been settled like that with Mr. Baillie and also that he would not listen to those relatives who had fallen out with the Government. There is no place for an Akhbar in his territory. He professes to be loyal to the Government.

(ख) Chaube Dariyao Singh of Kalinjar writes to John Richardson on Asadh *sudi* 11, 1868 V.E. He refutes the charge levelled against him that he is in correspondence with Gopal Singh. The matter may be enquired into. A few days back village Jamunihai was looted, but the Government forces reached there in time He had no business to correspond with rebels and marauders. As regards Akhbar, the Government letter is a clever one That is not the British way of doing things. He is loyal to the Government.

110. Diwan Gopal Singh writes to Col. Warren on Sawan *sudi* 13, 1868 V.E. He acknowledges the receipt of the Government letter. Government wants to grant him an allowance of rupees four hundred and he is asked to present himself in person. The Diwan thinks that rupees four hundered are not enough for his maintenance. Whom should he write to, if not to the British Government. They are the lords of Jambu Dwip.

111 Chaube Chhatrasal Ju writes to John Richardson on Magh *sudi* 9, 1868 V.E. He acknowledges the receipt of the Government message through Mishra Durga Prasad. As regards Badal, he says that Badal might have served Dalganjan Singh unknowingly. In his opinion Badal is without any guilt, as far as the Mahajan's son is concerned. As far as the demand for an Akhbarnawis is concerned, he had already been exempted. When the *Sanad* and *Wajib-ul-Arz* were granted to him, he should be awarded maintenance according to his rank and splendour. Government may hold enquiries and go through all the necessary papers. He is sure he will be found without any guilt. He wants Government protection.

112. *Sanad* granted to Diwan Bahadur Singh, dated February 21, 1812. *Musaddiyans*, *jagirdars*, *karoriyans*, *chaudharies* and *qanungos* of *pargana* Panwari in the province of Bundelkhand are made known that as Diwan Bahadur Gopal Singh has voluntarily professed obedience and submission to the British Government, and has asked for forgiveness for his past offences, and has executed an *Iqrarnama* comprising seven articles, the Government, following benevolent principles in showing mercy to offenders and to afford support and protection to all its adherents, has granted this *Sanad* to him. And so long as he remained firm in his obedience to the Government and true to the terms of *Iqrarnama*, the *Sanad* shall remain in his possession in perpetuity. It is incumbent on Diwan Gopal Singh to keep the inhabitants of his *jagir* contented

A schedule of *mahals* and villages is attached to the *Sanad*.

113. Chaube Dariyao Singh writes from Sugara to John Richard son on Magh *sudi* 7, 1868 V.E. The Government asks him to give his explanation, either in person or through his vakil, as to why the Akhbarnawis had gone back on his words regarding Sheikh Badal He says that he is obedient to the Government. Badal is an old resident of this place and has been earning his living by serving others. His serving Dalganjan Singh has been objected to by the Government. So if any body offends the Government, he is reduced to dust. The boy has been sent to the Government. Since the day he executed the *Iqrarnama*, he has not contacted any rebel or marau der in or outside the territory. As regards not keeping the Akhbar navis, he has no intention of offending the Government. Kaki Kesho Rai and Bharath Sahi will make the matter clear.

114. Chaube Chhatrasal Ju writes to John Richardson on Magh *sudi* 9, 1868 V.E. He says he had sent messengers to Kiledar Dariyao Singh, but has not yet received any reply. He is not at fault Government may hold enquiries and consult *Sanad*, *Iqrarnama*, *Wajib-ul-Arz* and other necessary papers, or he may come personally and submit his explanation. He emphasises the point that he is without any guilt and professes his loyalty and obedience to the Government.

115. (क) *Arzee* of Kiledar Chaube Dariyao Singh, dated Feb ruary 4, 1812, in which he states the conditions on which he can surrender his fortress to the Government. He should be given a jagir and Almās mines, be forgiven for past offences, any suit against him for past offences should not be entertained, a *khilat* and a *Sanad* be granted to him, any complaint lodged by his relatives and servants should not be entertained, purchase of grains and saltpetre be paid for by the Government, etc.

(ख) Chaube Dariyao Singh writes to John Richardson on Magh *sudi* 13, 1868 V.E. The Government had written a letter to him on Magh *sudi* 9. Chaube Dariyao Singh had not yet sent his reply. Now again the Government asks him to surrender the fortress of Belrai, otherwise he would not get any favour from the Govern ment, and that he is responsible for the murder. The Chaube says that for the last seven generations the fortress had belonged to him and the Government had also granted a *Sanad* to him which would remain in his possession in perpetuity. What is he to do? The Go- vernment is all powerful. The Government promise should be ful filled. Murder may be enquired into. He professes loyalty and obe dience to the Government.

(ग) Chaube Dariyao Singh writes to John Richardson on Phalgun *badi* 2, 1868 V.E. He says that he has always been loyal and obedient to the Government. They are all powerful. But the fortress is very dear to him.

116. *Sanad* granted to Diwan Bahadur Gopal Singh, dated February 24, 1812.

With it is *Iqrarnama* of the same date executed by him in favour of the Hon. East India Company. It consists of seven articles. He declares and acknowledges that he has submitted in person to the British Government. He promises never to deviate and never to commit any act in violation of the terms contained in articles. He or his relatives shall never be guilty of any act of plunder or excess in the *pargana* of Kotra, etc., or those in possession of Raja Bakht Singh, or those of any of the dependants of the British Government. He promises to reside with his family in one of the villages of his jagir, to obtain permission of the British Government if he wanted to reside in any other place, to have no connection with marauders, plunderes etc., or to give them protection, not to give protection to any absconder, to help the Government in the apprehension of the fugitive and to obey the orders of the Civil and Criminal Courts, not to harbour thieves or robbers etc., and only from the beginning of the Fasli year 1220 he shall make his own settlement with the Zamindars of the villages forming his jagir, and that he shall have nothing to do with settlements made till the end of Fasli year 1219 by the Collector. He shall not molest the proprietors of rent-free lands and shall abide by the judgment of the Courts of Justice. He shall keep a vakil with the Agent to the Governor-General.

117. (क) Raja Bahadur Jai Singh writes from Gatha to John Rudgsen on Baisakh *badi* 13, 1869 V.E. He informs him about the Pindaris. When Mirkhan entered Kari Talao and then Mathar, his forces were in Semariya. The Pindaris did not take shelter in his territories. Then he encamped in Mukandpur and stationed his forces in Ramnagar Amar Patan and sent his Harkara to the south. There were no Pindaris as far as the banks of the Narmada. He is now alert. He is a well-wisher of the Company. He wants that letters written to him should be in Hindui.

(ख) Raja Bahadur Jai Singh Dev writes from Gatha to Rudgsen on Baisakh *sudi* 4, 1869 V.E. He acknowledges receipt of a Government letter in Persian and *Hindui*. He is now sending his message through Bakshi Bhagwan Datt. He is a friend of the

British Government. He wants that letters written to him should be in Hindui.

(ग) Raja Bahadur Jai Singh Deva writes from Gutha to Richardson on Baisakh *badi* 8, 1869 V.E. He acknowledges the receipt of a Government letter, dated Baisakh *sudi* 13, 1869 V.E. Bakshi Bhagwan Datt will convey everything to the Government. He professes obedience to the Government.

118. *Iqrarnama* concluded between Chaube Saligram and the British Government, dated June 19, 1812. It consists of ten articles. In pursuance of an obligation of allegiance, a *Sanad* was granted to Chaube Dariyao Singh with the concurrence of Chaube Saligram and a *jagir* in *pargana* Kalinjar etc. and the fortress were given to him. And though he has failed to adhere to the terms of obligation of allegiance strictly and faithfully, yet the Government in pursuance of their benevolent principles have granted him the *jagir* of Bhitari etc. in lieu of the fortress. So this *Iqrarnama* is presented with a view to confirming obedience and submission to the Government. He engages not to have any contact with the enemies of the Government, even though they may be his relatives, not to quarrel with the dependants of the British Government, not to give shelter to marauders and plunderers and help the officers of the British Government in this respect, and not to allow passage to the marauders and plunderers, to help and guide the British forces to reside with his family in one of the villages of his *jagir* and to take permission of the Government if he wanted to reside anywhere else, not to harbour thieves and robbers and to inform the Government of any such persons, to be loyal to the Government, not to allow absconders to take refuge in his jagir and to help the officers of the British Government in capturing them, to render a zamindar responsible for the restitution of looted or stolen property, to abide by the orders of the Agent, and to collect revenue and *taqavi* and to deliver it to the Government.

[*Iqrarnamas* in precisely similar terms, mutatis mutandis, were presented for their respective shares by Puhkar Prasad, Chhatrasal and his mother, Gopal Lal—omitting articles III to VI—Gaya Prasad, Nawal Kishore, and the relict of Bharat Ju and Dariyao Singh himself].

119. *Iqrarnama* executed by Chaube Puhkar Prasad in favour of the British Government, dated June 19, 1812. He and Chaube Dariyao Singh had not adhered to the obligation of allegiance strictly

and faithfully. He therefore, presents this *Iqrarnama* comprising ten articles.

[Text and terms of the articles are the same as in No. 118.]

120. Ikrarnama executed by Chaube Chhatrasal and his mother in favour of the British Government, dated June 19, 1812. They and Chaube Dariyao Singh had not faithfully fulfilled the terms of the obligation of allegiance. They, therefore, present this *Iqrarnama* comprising ten articles.

[Text and terms of the articles are the same as in Nos. 118 and 119.]

121. *Iqrarnama* executed by Gopal Lal in favour of the British Government, dated July 4, 1811 (? 1812). He had a *rasmi jagir* under Chaube Dariyao Singh. Now under British Government he gets K mta and Rajaula, *pargana* Bhitai and Konahas in its place. He, therefore, executes this *Iqrarnama* comprising six articles. In brief, he engages never to have any contact with the enemies of the British Government, not to give shelter to absconders, not to harbour thieves, robbers etc., to abide by the decision of the Court of Justice, to collect balance of revenue and deliver it to the Government.

122. *Iqrarnama* executed by Chaube Gaya Prasad in favour of the British Government, dated June 19, 1812. He and Chaube Dariyao Singh had not faithfully adhered to the obligation of allegiance. He, therefore, presents this *Iqrarnama* comprising ten articles.

[Text and terms of the articles are the same as in Nos. 118, 119 and 120.]

123. *Iqrarnama* of Chaube Nawal Kishore and the relict of Bharat Ju, dated June 19, 1812. They and Chaube Dariyao Singh had not faithfully adhered to the obligation of allegiance. And now, therefore, present this *Iqrarnama* comprising ten articles.

[Text and terms of the articles are the same as in Nos. 118, 119, 120, 122.]

124. *Iqrarnama* of Chaube Dariyao Singh, dated June 19, 1812. He and others (mentioned above) had not faithfully adhered to the obligation of allegiance, and had, therefore, to present this *Iqrarnama* comprising ten articles.

[Text and terms of the articles are the same as in Nos. 118, 119, 120, 122, 123. From 118 to 124 are *Iqrarnamas* of the Chaube-family headed by Chaube Dariyao Singh.]

t —

125. *Sanad* granted to Raja Bakht Singh under the seal and signature of the Rt. Hon. the Governor-General in Council.

To the *chaudharies*, *qanungos*, *zamindars* and *taluqdars* of the *parganas* of Kotra, Pawai and Ajaigarh, in the province of Bundelkhand be it known: Whereas after the annexation of the province of Bundelkhand to the British dominions, Raja Bakht Singh, the great-grandson of Raja Jagat Raj, and one of the hereditary chiefs of Bundelkhand appeared before the officers of the British Government for the purpose of submitting himself with loyalty to its control and governance, the British Government, persuing benevolent principles, granted to the said Raja a pension of Rs. 36000/- per year and whereas, at that time a promise was made to the said Raja that in common with the other recognised Rajas of this province, he also should receive a territorial provision in lieu of the aforesaid pension accordingly, with a view to the fulfilment of the above promise, in the month of June, 1807, after having delivered his *Iqrarnama* or written engagement binding himself to loyalty and obedience to the British Government, he received from the Government the *parganas* (mentioned in the *Sanad*). As in the *Sanad* formerly granted to the Raja, the villages granted to him are not detailed, and as the Raja has now made a request for a *Sanad* which shall include in detail all the villages now in his possission in the *parganas* mentioned above, for that reason a single *Sanad* granting rent-free villages (detailed below), together with their *mal*, land revenue, transit duties, *abkari* duties on spirituous liquors, and all other rights and appurtenances thereunto belonging for ever, generation after generation, has been bestowed upon the Raja by the bounty of the British Government. The Raja and his heirs and successors shall enjoy possession of the *parganas* to long as he and his adherents continue to fulfil the terms of the *Iqrarnama*. The *chaudharies* etc., should consider the Raja to be the proprietor and sole controller of the villages detailed in the *Sanad* and the Raja shall cultivate and improve the villages in question and protect and satisfy the cultivators and inhabitants by every means in his power, and enjoy the produce of the said possessions in loyalty and due obedience to the British Government.

A schedule of villages is attached to the *Sanad*.

126. Sanad granted to Raja Kesari Singh of Jaitpur, dated September 20, 1812. The Raja, a hereditary descendant of Raja Jagat Raj, had previously delivered an *Iqrarnama* of obedience, loyalty and submission to the British Government consisting of eight articles. He received fifty-two villages in the *pargana* of Pawai

rent-free. On July 15, 1809 the Raja received in gift certain villages in the *pargana* of Pawai, and on September 12 in the same year he also received as free gift certain diamond mines in consideration of his situation and claims to the favour of the British Government. Now the Raja having made a request for a *Sanad* including the whole of grants, a *Sanad* is, therefore, granted to him. So long as he remains loyal to the British Government, and to the terms of the *Iqrarnama* of eleven articles he has now executed, he shall enjoy the possession of the same generation after generation. The duty of the Raja is to promote the well-being of the cultivators and inhabitants of his *jagir*, and enjoy the produce with good wishes and prayers for the prosperity of the British Government.

A schedule of villages and diamond mines is attached to the *Sanad*.

127. *Sanad* granted to Raja Kesari Singh of Jaitpur, dated September 20, 1812.

A schedule of villages and diamond mines is attached to it.

128. *Iqrarnama* of Raja Kesari Singh of Jaitpur, dated September 13, 1812. Whereas from the time that he delivered his *Iqrarnama*, and obtained in *jagir* fifty-two villages in the *pargana* of Panwari from the British Government, he loyally discharged his obligations and was admitted amongst the dependants of the British Government; during the administration of Mr. John Richardson, certain villages and possessions in the *pargana* of Pawai were granted to him for his sustenance, and the aforesaid gentleman required from him a fresh *Iqrarnama* to confirm his submission and loyalty to the Government, he now delivers the present *Iqrarnama*, consisting of the eight articles and of three new articles, in all elven articles, under his seal and signature, and he promises and engages that he shall never deviate the least bit from those articles in letter, spirit or tendency. He will never side with the enemies of the British Government, even if they are his own children and relatives, never give shelter to deserters from the British territory, never protect or allow to remain in his villages any robbers or thieves and make the zamindars restitute the looted or stolen property of merchants or travellers, seize them and deliver them to the British Government, not to have friendly communications with the rebel chiefs, never quarrel with a chief friendly to the Government, not to retain in his service a greater number of troops than may be absolutely necessary without the permission of the Government, never have any concern with the fort of Jaitpur,

guard all the passes through the Ghats under his authority and prevent all marauders, plunderers, and ill disposed persons from ascending or descending the Ghats, or from entering the British territories through any of these passes and help the officers of the British Government in every possible manner, help the British troops while ascending the Ghats, keep a vakil with the officer of the British Government and if disapproved by the Officer, agrees immediately to appoint another in his place.

129. Proclamation, dated September 2, 1812 for abolishing slave trade in the dominions of the British Government. From the date of the issue of this Proclamation both the parties, seller and purchaser, will be punished, and all the slaves will be set free.

130. (क) From Raja Bahadur Jai Singh Dev of Rewa to John Wauchope, dated Paush *sudi* 1, 1869 V.E. (1813 A.D.). He informs the recipient that *dak* people and zamindars are not on good terms, and professes his friendship and loyalty towards the British Government.

(ख) From Raja Bahadur Jai Singh Dev of Rewa to John Wauchope, dated Paush *badi* 1, 1869 V.E. (1813 A.D.). He informs about the establishment of *dak* in the area mentioned in the *Ahadnama* and professes his friendship towards the British Government.

(ग) From Raja Bahadur Jai Singh Dev of Rewa to John Wauchope, dated Paush *badi* 8, 1869 V.E. (1813 A.D.) regarding interception of Pindaris. The Raja professes his friendship towards the Government and also refers to the *Ahadnama* and shows his sincere desire to abide by the terms of the *Ahadnama*. According to article 9 of the said *Ahadnama* he has to station his troops according to the advice of the officers of the British Government at the Ghat of Chandiah, Kawriah, or such Ghats or passes as the British Commanding Officer shall point out. He has fulfilled this promise. The Raja suggests two other places—Beldara and Chadiya. At Beldara, besides his own help, help from Maihar and Uchahara will also be available. But the Commanding Officer, ignoring his advice, stationed his troops near Kharwahi and brought infamy to him. He is therefore writing this so that he may not be held responsible. He had arranged for the materials or supplies required for the British cantonments. The Raja advises as to what to do in order to intercept the Pindaris and other predatory forces. He is prepared to help and professes his friendship.

131. From Diwan Gopal Singh Ju Dev to John Wauchope, dated Paush *sudi* 2, 1869 V.E. On a complaint lodged by Rao Anirudh

Singh with the British Government that he (Diwan Gopal Singh) had usurped the territory of *mauja* Naredi, the Diwan says that the Government had originally granted the *mauja* to him and he had already executed an *Iqrarnama*. He has been loyal to the Government. He refers to the authority of Mr. Baillie and Raja Chhatrasal and wants that a thorough enquiry may be made into the matter. He had lodged a complaint regarding the actions of Raja Kisore Singh and Raja Nirand Singh. He wants to meet John Wauchope.

132. *Arzee* of Raja Govinda Nath Sah Dev, zamindar of Chhota Nagpur, Zila Ramgarh, dated Katik *sudi* 14, 1869 V.E. (1813 A.D.) and addressed to the Governor-General. He promises to help the Government in their drive against the Pindaris and to obey the orders of Captain Roughsedge.

133. *Arzee* of Raja Jujhar Singh, *pargana* Raigarh, dated Chait *badi* 14, 1870 V.E. and addressed to the Governor General. He thanks the Government for conferring *khilat* on him and professes his complete submission and loyalty to the Government.

134. Declaration issued by the British Government, dated May 20, 1814. The Raja of Nepal had taken possession of certain villages (mentioned in the declaration) in Champaran, Bihar. The Government, therefore, says that as friendship existed between the Raja and the Government, the Raja was informed of the wrong done by him and all possible enquiries were made in order to meet the ends of justice and the possession of the British Government over the territory under dispute was proved beyond doubt. But the Amala of the Raja of Nepal had intentionally gone against it. Therefore, in the interest of the well-being of the poor inhabitants and in persuance of the principles of justice, the Government has been forced to station troops there. It is hereby declared that people should remain content and should lead their lives peacefully.

135. From Lal Shivaraj Singh Ju Dev to John Wauchope, dated Magh *sudi* 7, 1870 V.E. (1814 A.D.). He informs that as per letter of the Government, he has written to Jagdhari and has sent his Vakil Lal Gurudatt Singh and has asked him to leave Dogra, to live peacefully and to ask forgiveness for his past offences. He says that Jagdhari has refused to accept his offer. He first wants his villages otherwise he will do whatever he likes, even if he is put to death.

136. (क) From Jai Singh Ju Dev, Raja of Rewa to John Wauchope, dated Paush *sudi* 7, 1870 V.E. (1814 A.D.). He feels obliged for the *khilat*, but wants that it be conferred on Babu Biswanath

Singh. The Raja would feel happy over it and professes his loyalty to the Government.

(ख) From Jai Singh Ju Dev, Raja of Rewa of John Wauchope, dated Magh *badi* 4, 1870 V.E. (1811 A.D.) In reply to John Wauchope's letter as to why he should refuse to accept the *khilat* the Raja says that he has already given all the rights to Babu Biswanath Singh. Why should he refuse it? He himself had never violated the terms *Iqrarnama*. He professes loyalty to the Government.

(ग) From Jai Singh Ju Dev, Raja of Rewa to John Wauchope, dated Magh *badi* 30, 1870 V.E. (1811 A.D.) In reply to John Wauchope's accusations against him, he says that he has never violated the terms of his *Ahadnama*. He reads it daily He has given all the rights to Babu Biswanath with the hope that he too will not do anything against it. He refutes the charge that he is in correspondence with the Pindaris and to the zamindar of Sohagpur, (Nagpur). Both to the Pindaris and to the zamindar of Sohagpur, he has made it clear that he is loyal to the Government. He also refers to certain zamindars who do not obey him. He has given both his territory and son to the Government. He is loyal and obedient to the Government.

(घ) From Jai Singh Ju Dev to John Wauchope, dated Magh *sudi* 2, 1817 V.E. (1814 A.D.). He expresses his loyalty to the Government. He is leaving his place on Monday in order to meet him

137. (क) *Sanad* granted by Capt. Baillie to Thakur Durjan Singh, dated 18th November, 1806.

To the *mutsaddis* for transacting public affairs, both present and future, it is made known, that whereas, by the Treaty of Bassein concluded between the British Government and His Highness the Peshwa, certain lands in Bundelkhand were ceded and permanently annexed to the British Government, and whereas British troops having been detailed for the purpose of occupying those lands, and Thakur Durjan Singh, youngest son of Beni Hazuri, and the established ruler of the *pargana* of Maihar above the Ghats having professed his friendliness, obedience and submission to the British Government, Captain Baillie, again deputed by the Hon. Sir George H. Barlow, Bart., Governor-General, for the settlement of the affairs of this province, and the said Thakur having sent his Vakils to solicit a grant for his lands, and having delivered to him an engagement comprehending five articles declaratory of his submission to the Government, hereby grants the pargana of Maihar along with the under mentiond villages. So long as the Thakur shall firmly

follow the path of obedience and submission, the British Government will never offer any molestation to him or to his heirs and successors.

A schedule of villages is attached to the *Sanad.*

(ख) *Sanad* granted by Nawad Ali Bahadur to Thakur Durjan Singh, dated Baisakh *sudi* 1, 1858 V.E. *Pargana* Maihar granted to the said Thakur.

(ग) This is an *Iqrarnama* signed by Thakur Durjan Singh on February 13, 1814. The Thakur having professed his obedience and submission to the Government, and having afforded every possible comfort and safety to the English gentlemen and their attendants in passing through his jurisdiction on their route to and from Nagpore, and whereas his former *Sanad* granted by Captain Baillie did not comprehend details of the villages contained in his *jagir,* he now solicits another *Sanad* to cotain a list of all the villages in his possession, and with a view to confirming his fidelity to the British Government, he now executes an *Iqrarnama* comprising nine articles and delivers it to Mr. John Wauchope, Superintendent of Political Affairs in Bundelkhand. He promises never to infringe nor deviate from them in any respect.

[Terms of the articles are, mutatis mutandis, almost the same as in *Iqrarnamas* of nine articles mentioned before, except that according to article 7 he engages to station a body of troops at the Ghat of Madanpur sufficient to obstruct the passage of the Pindaris and to make efficient arrangements to prevent inroads of the Pindaris into British territory through any part of his *jagir.*]

138. (क) On Chait *badi* 1, S. 1784 Raja maniksen of Makwani to Bhuli Rawat. He wants that every body should remain within his territorial limits. What is being done in *mauja* Bhagwanpur is not proper. Bettiah also is to be informed.

(ख) From Raja Maniksen of Makwani to Raja Dhruva Singh Dev of Bettiah, dated Chait *badi* 13, S. 1784. He says that according to information received by him Ganga Ram Ojha *thanadar* of Bettiah has crossed the border to his side and is collecting taxes and offering molestation to the people and Bhuli Rawat, *thanadar* Kotwali Chautara Ghar Semron is tyrannizing over the people of *mauja* Bhagawanpur. As both of them (i.e. the Rajas) are on friendly terms, it is not proper. The *thanadar* should be forbidden to indulge in such acts.

(ग) From Raja Maniksen of Makwani to Ganga Ram Ojha *thanadar,* dated Phagun *sudi* 10, S. 1783. He wants to know if he is collecting taxes etc. of his own accord or under orders from Bettiah.

(घ) Gosain Lachhan Giri of Nepal to Bhairo Datt, *tahsildar* of Nonur (on behalf of Raja Vir Kishore Singh), dated Asadh *badi* 5, S. 1868. Bhairo Datt had plundered and burnt maujas Amwa, Barwa etc. The Gosain says that he is there under orders from Nepal and his territorial limits extend upto Barwa Bijaigarh. Bhairo Datt shall have to return the revenue collected by him. He is bent upon claiming it back.

(ङ) Gosain Lachhan Giri (on behalf of Raja Rae Pal) to Bhairo Datt, *tahsildar* of Nonur (on behalf of Raja Vir Kishore Singh), dated Jeth *sudi* 10, S. 1868. It is not proper for Bhairo Datt to indulge is loot and arson. Let *qanungo chaudharies* of both the sides meet and settle the territorial dispute. Bhairo Dat has already grabbed Rautahat. But he is bent upon claiming back the revenue which he has illegally collected.

139. Information collected by Major Bradshaw (?) regarding Nepal. Unless the people of Nepal are divided, it is not possible to conquer Nepal. If the Panchas have faith in the British, only then it can be conquered. And so long as the Raja rules, the Panchas cannot be won over. The army can pass through Bhalakhola etc. The passage via Butwal is not easy one. The presence of a Mukhtar from the British side is necessary.

140. (क) *Iqrarnama* executed by Kr. Sone Sahi Ju Dev in favour of John Richardson, Agent to the Governor-General in Bundelkhand, dated December 16, 1812. He engages to return Mauja Bhaira Pipariya etc., and also the collections to Raja Ratan Singh of Bijawar after the enquiries and judgment by the Government.

(ख) Kr. Sone Sahi Ju Dev to John Wauchope, dated Paush *badi* 13, 1869 V.E. He acknowledges receipt of *Iqrarnama* regarding Bhaira Pipariya etc. duly signed and sealed. He wants thorough enquiries to be made into the matter.

(ग) Radhakant Dixit, Sukal Ram Krishna, Dube Bhare Lal, Kr. Sambhar Singh Ju Dev to Kr. Sone Sahi Ju Dev, dated Kuar *sudi* 5, 1869 V.E. They inform him that they could not retain the villages and that Government-men have arrived.

141. From Diwan Dhiraj Singh Ju Dev to John Wauchope, dated Logassi. Baisakh *badi* 13, 1871 V.E. (1814 A.D.). He says that he has become old and is no more able to fulfil his duties towards the Government loyally and, therefore, expresses his desire to go on a pilgrimage. He wants that the *Sanad* may now be granted to Kr Sirdar Singh. The Kunwar will also remain loyal and obedient to the Government.

142. (क) From Diwan Dhiraj Singh Ju Dev to John Wauchope, dated Logassi, Sawan *badi* 14, 1871 V.E. The Government had written to him enquiring as to why the *Sanad* is not granted to his eldest son. He says that papers regarding his three sons are with the Government. They may be looked into. *Mukhtarnama* in favour of Sirdar Singh had already been executed. Moreover he will be more loyal than others.

(ख) From Diwan Dhiraj Singh Ju Dev to John Wauchope, dated Logassi, Bhadon *badi*, 7, 1871 V.E., He acknowledges Government consent in favour of Sirdar Singh with thanks. The *Iqrarnama*, duly executed under the seal and signatures of the said Kunwar, will be despatched. The *Sanad* may be granted to him. The said Kunwar will be loyal to the Government like him.

(ग) From Kr. Sirdar Singh to John Wauchope, date Logassi, Bhadon *badi* 7, 1871 V.E. He informs that the *Iqrarnama* has been despatched and the *Sanad* may kindly be granted to him. He professes his loyalty.

(घ) *Iqrarnama* executed by Kr. Padam Singh (?Kr. Sirdar Singh), son of Diwan Dhiraj Singh, in favour of the British Government, dated September 6, 1814. In return of the grant and confirmation of Logassi as his jagir, he engages to be loyal to the Government and never to violate any of the terms agreed to by his father. He also promises not to question the authority of his elder brother Kr. Padam Singh as regards his own *jagir* of Bhadesar etc.

143. (क) From Diwan Dhiraj Singh Ju Dev to John Wauchope dated Logassi, Bhadon *badi* 7, 1871 V.E. He requested that the *Sanad* may be granted to Kr. Sirdar Singh.

(ख) From Kr. Sirdar Singh to John Wauchope, dated Logassi, Bhadon *badi* 7, 1871 V.E. He informs that the *Iqrarnama* has been patch of his *Iqrarnama* and professes loyalty to the Government.

(ग) Kr. Sirdar Singh's *Iqrarnama* in which he promises never to violate the terms agreed to by his father and never to question the authority of his elder brother regarding his *jagir.*

144. From Diwan Dhiraj Singh to John Wauchope, dated Logassi, Sawan *badi* 14, 1871 V.E. He recommends to the Government that on retirement from the active administration of his *jagir*, the *Sanad* may be granted to his son, Sirdar Singh.

145. Letter written by some correspondent from Nepal. He says that the battle took place before sun-rise, the commanders had been arrested and reinforcements had arrived. With the permission of the Major he has secured this *'parwana'* with great difficulty. The trea-

sury is being sent to some hilly tract. The situation is serious. They have lost the Tarai area and they are in danger of being attacked again. General Bhimsen Thapa may be requested to visit the place somehow and review the whole situation.

146. Declaration issued by the East India Company on November 26, 1814. Whereas the subjects of the Raja of Nepal misbehaved towards the servants of the Company and indulged in acts of loot and murder near the Gorakhpur border, and whereas the Governor General had issued his order on August 27, 1814 which gives the details of the whole matter, the people are hereby informed that the entire Tarai area adjacent to Champaran, heretofore in the possession of the Raja of Nepal, has been brought under the administration of the Company, and, therefore, it is incumbent on the people of this area to settle their revenue accounts and express their loyalty to the Government. Anybody who disobeys the order of the Government will be arrested and his property confiscated.

147. [Same as No 146.' It is important from the point of view of textual variations.]

148. Letter written by Uma Kant Upadhyaya from Kantipur, on Marg *sudi* 1 to Baba Chandra Shekhar Upadhyaya. He says that his (Chandra Shekhar Upadhyaya's) application has reached him and has been despatched to the General. There is no good in antagonizing the British. General Bhimsen Thapa is in Makwanpur and the British Major may not meet him. Ranganath Pandit has come to arrange talks between them. If General Amarsingh Thapa begins to collect revenue, he may be done away with. It is due to him that the Nepali people and the British are against each other. The British Major is quite an experienced man. General Bhimsen is prepared to forge link of friendship with them and arrive at a settlement as regards the disputed territories. The British and Nepal Governments should be friends.

149. Kaji Ranadhwaj Thapa, on Chaitra *sudi* 7, 1871 V.E. informs the *amaldars* from Dhobikhola to Nagarigarhi that Bairagi Lakshmi Das has been sent by the Darbar to bring the *mahaprasad* sent by Ramanuj Das Mahant from Pusi. Lakshmi Das, with a sealed letter, will also go to Suba Jayant Chhetri and from there will proceed to Gaindali. He, along with the following persons, whose details are given in this letter, may be allowed to pass.

[Details of persons given.]

परिशिष्ट १

रियासतों और जागीरों के आधार पर पत्रों का वर्गीकरण

(संख्याएँ पत्रों की हैं)

परिशिष्ट २

नामानुक्रमणिका